लोकभारती प्रकाशन
१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग इलाहाबाद

रवीन्द्र कालिया
खुदा सही सलामत है

अग्रज कथाकार
अमृतलाल नागर
तथा
अमरकांत के लिए

.खुदा सही सलामत है

मन्दिर में है चाँद चमकता, मस्जिद में है मुरली की तान।
मक्का हो चाहे वृन्दावन, होते आपस में कुर्बान॥

●

तवायफ़-सभा काशी की अध्यक्षा

हुसनाबाई का भाषण—

प्रिय बहनो!

आप ने आज मुझे इस सभा में सभापति का स्थान देकर जो मेरी इज्जत बढ़ाई है उसके लिए मैं आपका तहेदिल से शुक्रिया अदा करती हूँ और उम्मीद करती हूँ कि इस काम को अंजाम देने में आप लोग हमेशा इसी तरह की इम्दाद देती रहेंगी।

संस्कृत जबान में हम लोगों को 'गणिका' और फ़ारसी में 'तवायफ़' तथा 'परी' नाम से पुकारा गया है। पुराने ज़माने में हम लोगों को सर्वत्र उत्तम स्थान मिलता आया है। इन्द्र की सभा में, राजाओं के स्वयंवर में, यज्ञ में, बड़े-से-बड़े बादशाहों के दरबार में, रईस और गरीबों में, मन्दिर तथा मस्जिदों में—सर्वत्र हम लोगों की इज्जत होती आयी है। मैंने पण्डितों से यह भी सुना है कि शास्त्र में लिखा है कि राजा और गणिका के दर्शन से फल होता है। सब शुभ कार्य में हम लोगों का भाग निकाला जाता था। और कहीं-कहीं रजवाड़ों में यह रिवाज अब तक जारी है। गायन और नृत्य हमारा ख़ास पेशा है। जन्नत की हूर और पुराणों की 'अप्सरा' हमीं हैं। शकुन्तला भी एक अप्सरा ही से पैदा हुई थी जिसके पुत्र राजा भरत का नाम आज भी तवारीख़ों में सोने के हरूफ़ों में लिखा है। हमारी जाति और गुणों का वर्णन बहुत-सी पुस्तकों में मौजूद है। उसे देखा जाय अथवा लिखा कर प्रकाशित किया जाय तो आप बहन और भाइयों को अच्छी तरह मालूम हो जाय कि हम लोग किस दर्जे पर थीं और हमारा महत्व क्या था। बड़े लोगों से यह भी सुनने में आया है कि बड़े रईसों के लड़के—विशेषकर जौहरियों के—हमारे घरों पर पढ़ने के लिए आते थे और होशियार होने के बाद वे लौट जाते थे। एक समय की बात है कि एक महाजन का लड़का एक गणिका के यहाँ पढ़ता था। एक दिन एक मनुष्य उस गणिका के यहाँ गया, और उसने उस लड़के से 'शराब' लाने के लिए कहा। उस समय रात का एक बजा था। शराब कहीं मिल नहीं सकती थी। लड़के ने विचार किया कि बाई जी तो

शराब पीती नहीं, इस बेवकूफ़ को इसकी जरूरत है। यह सोच कर लड़का गया और गधे का पेशाब बोतल में भर लाया और मतवाले के सामने रख दिया। सुबह यह बात जब बाई जी को मालूम हुई तब उन्होने शागिर्द की पीठ ठोकी और उसे घर जाने की आज्ञा दी। यह कहानी हमारे गौरव तथा बड़ाई को आज भी जाहिर कर रही है। इससे यह भी मालूम होता है कि बाई लोग शराब नही पीती थी।

इन बातों के अलावा हम लोगों मे विद्या का प्रचार भी इतना था कि दरबारों में राजा या बादशाहो की आज्ञा होते ही नये-नये पदों की रचना कर गाना पड़ता था और जिस गायक के उत्तम पद होते थे, उसे उत्तम इनाम मिलता था।...हमारा ख़ास रोज़गार गाना-बजाना और नाचना है, परन्तु इसका बहुत कुछ लोप हो गया है। लड़कियो को गाने और नाचने में पूर्ण पण्डित नही बनाया जाता। उन्हे संगीत विद्या की उच्च शिक्षा नही दी जाती। इधर-उधर से दस-बीस गाने सीख कर पेट भरने की पड़ जाती है। इससे हमारी सर्वगुणमयी संगीत-विद्या के ह्रास के साथ हमारा भी पतन हो चला। यह हम लोगो के लिए बड़े ही लज्जा की बात है। इसके अतिरिक्त अश्लील गानों तथा कई एक कारणों से देश में तवायफ़ो का नाच-मुजरा बन्द कराने की कोशिश बहुत से लोग कर रहे हैं। और यह बिल्कुल सच है कि कई एक मुकामो पर जहाँ आज से चार साल पेश्तर तवायफ़ों का नाच होता था, वहाँ अब नही होता। इसके बहुत से सबूत हैं।

इस वक्त देशवासियो का झुकाव राष्ट्रीय गीत की ओर है। इसलिए हम लोगों को भी राष्ट्रीय गानों को याद कर मुजरों तथा महफ़िलों में गाना चाहिए। इससे हमारी प्रशंसा होगी, रोज़गार बढ़ेगा। हम लोगो को जो बहुत से लोग हिक़ारत की निगाह से देखने लग गये है, सो भी कम हो जायगा और लोग इज्जत की निगाह से देखेंगे, क्योकि जिधर की हवा बहे उसी तरफ़ सबका जाना फ़र्ज है और संसार का भी यही नियम है। इसी में हमारी तरक्की होगी। राजनैतिक गानो की बहुत-सी पुस्तकें बन गयी हैं, उसे मँगा कर गाने याद कीजिए। जिसे पुस्तक न मिले, विद्याधरी बहिन के यहाँ से मँगा ले।

अब मैं आप लोगों का ख्याल शराब की ओर दिलाती हूँ। हम लोगों में शराबख़ोरी इतनी बढ गयी है कि इसने अर्थ और धर्म····दोनों का नाश कर दिया है। मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि शराब पीना हिन्दू और मुसलमान दोनों ही कौमो के मजहब के खिलाफ़ है। हमने कही लिखा देखा है कि यदि मुसलमानों के जिस्म के किसी हिस्से पर शराब का कतरा गिर पड़े तो उसे उस हिस्से को काट कर फेंक देना चाहिए····यदि वह सच्चा इस्लाम धर्म मानने

वाला है। ऐसा ही हिन्दुओं के यहाँ भी है। परन्तु बड़े शर्म की बात है कि हम लोग खुदगर्जी के जाल में फँस कर अपने धर्म पर चोट पहुँचा रही है। अत: हिन्दू हो अथवा मुसलमान, उसे शराब को हराम समझ कर उसका पीना शीघ्र ही बन्द कर देना चाहिए।

हमारी जीविका याचना है और हम लोगों को याचक भी कहते है। हमारी आमदनी तब बढ़ेगी, जब हमारा मुल्क धनी होगा और छोटे-बड़े सब सुखी होंगे। जब सब काम से पैसा बचेगा तब लोग हमारा गाना-बजाना सुनेंगे। हिन्दुस्तान धनी हो इसके लिए हमें ईश्वर से सदैव प्रार्थना करनी चाहिए, परन्तु हम यह देखते हैं कि हमारा मुल्क बहुत गरीब हो गया है। यहाँ का धन अनेक रूपों में विलायत पहुँच गया। चीनी के खिलौने, शीशे-काठकबाड़ तथा ग्रामोफ़ोन बाजे वगैरह में लाखों रुपये हमसे दूसरे मुल्क वाले लूट ले गये। इन चीजों में सबसे बड़ा हिस्सा कपड़े का है। करीब ६६ करोड़ रुपया हर साल हमारे मुल्क से दूसरे देशों में कपड़े के व्यापारी ले जाते हैं। एक रुपये की तीन और चार सेर की रूई हिन्दोस्तान से खरीद कर उसी का कपड़ा बना सोलह और बीस रुपये सेर में हिन्दोस्तान के ही हाथ बेचा जाता है। मियाँ की जूती मियाँ के सिर'''वाली कहावत चरितार्थ की जाती है। आबरवा, मखमल, अद्धी और तन्जेब ने हमारे मुल्क को बरबाद कर दिया। लाखों बच्चे तथा करोड़ो गौ-बैल भूख से मरने लगे। हज़ारों पशु गोरे सैनिकों के लिए कटने लगे, जिससे घी और दूध महँगा हो गया, जो कि बच्चों की मृत्यु का एक प्रधान कारण है। हमारी बहुत-सी बहिनें गरीबी से कष्ट उठा रही है। उनके साथ हम लोगों को हमदर्दी करना चाहिए। उन्हें चरखे कातने तथा कपड़े बुनने की शिक्षा देनी चाहिए जिससे उनकी गरीबी कटे और देश की भलाई हो। महात्मा गाँधी जी की आज्ञा से अब भारत ने स्वाधीनता और स्वराज्य की घोषणा कर दी है। भारत को आज़ाद करने के लिए विलायती माल का व्यवहार बन्द करना जरूरी है। मैं आज से विलायती माल न खरीदने की प्रतिज्ञा करती हूँ और उम्मीद करती हूँ कि आप लोग भी आज से ही विलायती माल लेना बन्द कर देंगी और अपने बच्चो से कह देंगी कि मरने पर हमारे पाक जनाज़े में नापाक विलायती कपड़ा मत लगाना। मेरी बहनें मुझसे यह सवाल कर सकती हैं कि यदि विलायती कपड़ा सस्ता होगा और देशी महँगा तो हम उसे कैसे ख़रीदेंगी। इसके जवाब में हमारी प्रार्थना यह है कि विलायती से देशी अधिक दिन तक चलता है। इसमे हमारे मुल्क का फ़ायदा होगा। गरीबों को पेट भरने का एक रोज़गार मिल जायगा, हिन्दुस्तान बहुत जल्द आज़ाद हो जायेगा, इसलिए साल में चार कपड़े की जगह तीन ही काम में लाइए''''पर देशी लाइए।

अब मैं आप लोगों का ध्यान उन स्त्रियों की ओर दिलाती हूँ, जिन्होंने अपने मुल्क और मजहब की भलाई के लिए अपना प्राण तक दे दिया है। पन्द्रहवी शताब्दी में जिस समय अंग्रेज शासक फ्रान्स में बेतरह जुल्म कर रहे थे, उस समय फ्रान्स की सोलह वर्ष की बालिका 'जॉन आफ़ आर्क' ने फ्रांस को आजाद करने के लिए कौमी झण्डा उठाया था, जिसके लिए उसे यहाँ तक तकलीफ़ सहनी पड़ी थी कि उसके सुकुमार हाथों और पैरों में हथकड़ी डाल दी गयी और बड़े ही बेरहमी के साथ रस्सियो में बाँध कर फ्रांस के अंग्रेज शासकों द्वारा जीते जी जला दी गयी। परन्तु वह अपने सिद्धान्तो से जरा भी विचलित न हुई।

इसी तरह चित्तौड़ की रक्षा के लिए कितनी ही वीर बालाओ ने लड़ाई के मैदान में अपने प्राणो की आहुति दे दी। तेरह हजार स्त्रियों ने एक ही समय अपने ही हाथो से चिता लगा कर अपने को भस्म कर दिया, परन्तु अपने मुल्क को जीते जी गुलाम न होने दिया। संसार में स्त्रियों और पुरुषों का अधिकार बराबर है। भारत पर पुरुषो से ज्यादा हक स्त्रियों का है। यदि पुरुष आजादी के लिए लड रहे है तो हम भी उनके साथ प्राण देने को तैयार है। यदि वे जेल जा रहे है तो हम भी उनकी पूजा करने के लिए पहले से बैठी हैं। क्या आप भारत को गुलामी से मुक्त करना चाहती हैं? यदि चाहती हैं तो क्या उसके लिए आप सोने के गहनो के जगह लोहे की जंजीरें पहिनने के लिए तैयार है? क्या अन्य बाजों के सहारे न गाकर जंजीरो की झनझनाहट के साथ राष्ट्रीय गीत गाने के लिए तैयार हैं? क्या आप मखमलों की सेज के बदले कम्बलो पर सोने के लिए तैयार है? यदि हाँ तो मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि वह दिन करीब है, जिस दिन हम लोग भारत को आजाद देखेंगी।

अन्त मे मैं विद्याधरी बहिन को हार्दिक धन्यवाद देती हूँ, जिन्होने मुझे इस कार्य को करने मे अग्रसर किया तथा एक बार आप लोगों को भी इस मान को देने के लिए धन्यवाद देती हूँ।

खुदा सही सलामत है

• •

वह एक संकरी-सी गली थी। बेलन के आकार की। बीच में अचानक गुब्बारे की तरह फूल गयी थी। नदी के बीचोंबीच उग आये टापू की तरह। दूसरे आम चुनाव से पहले गली के मुहाने पर नगर महापालिका की ओर से एक छोटा-सा नल लगा दिया गया था। शुरू-शुरू में लोगों को नल का पानी बहुत फ़ीका लगा। लोग-बाग नल के पानी से कपड़े वग़ैरह तो धो लेते मगर पीने से परहेज़ करते। पीने के लिए कुएँ से ही पानी निकालते। जाने क्या हुआ कि कुछ ही वर्षों में कुआँ बेचारा इतना तिरस्कृत हो गया कि उसकी सतह पर काई जमने लगी और नल पर पनघट का माहौल दूनी शान-शौकत से पैदा हो गया। सुबह हो या शाम, कमर में एक तरफ़ बच्चा और दूसरी तरफ गगरा लिये औरतों का जमघट लगा रहता। बुर्का ओढ़े स्त्रियाँ हों या लुंगी-बनियान पहने पुरुष—सब अपनी बारी की हड़बड़ी मे बेचैन नजर आते। कभी-कभार मार-पीट भी हो जाती। पानी लेने की जल्दबाज़ी में बहुत से लोग थाने-अस्पताल पहुँच चुके थे। क्या दूसरे आम चुनाव के पूर्व कुआँ ज़रूरत भर का पानी मुहय्या करता रहा होगा—यह एक शोध और आश्चर्य का विषय था।

गली के बीचोबीच एक बड़ा-सा अहाता था और अहाते के बीचोंबीच नीम का एक पुराना पेड़। लगता है पेड़ के नीचे कभी एक कुआँ रहा होगा, जिसे भर कर उसके ऊपर एक चौतरा-सा बना दिया गया था। चौतरे का अपना सामाजिक महत्व था। ईद के मौके पर ईद-मिलन और होली के अवसर पर होली-मिलन के रंगारंग कार्यक्रम इसी चौतरे पर आयोजित किये जाते। दोनों ही त्योहारों पर रात-रात भर कव्वाली होती। दोनों तरफ़ के आयोजकों की कोशिश रहती कि कार्यक्रम की अध्यक्षता के लिए जिलाधीश अथवा पुलिस

अधीक्षक तैयार हो जाएं। इस से छुटभैये नेताओं को जिला प्रशासन के सम्पर्क में आने का अवसर मिल जाता था।

मगर चौतरे का एक और इतिहास भी था। गली के बड़े-बूढ़ों का दृढ विश्वास था कि इस नीम और कुएँ पर भूतों का डेरा है। भूतों के डर से लोग-बाग रात दस बजे के बाद से अपना रास्ता बदल लेते थे। मुहल्ले की कुँआरी कन्याओं को कुएँ से पानी भरने की मुमानियत थी। रात-बिरात नीम के नीचे से अकेले गुजरना तो दूर, भाई लोगों ने यहां तक प्रचारित कर रखा था कि जहाँ-जहाँ तक नीम का साया पड़ता है, कोई औरत सुखी नहीं रह सकती। भूतों को लेकर जितनी भी कहानियाँ सुनी जाती थीं, उनसे लगता था कि इन भूतों की दिलचस्पी केवल स्त्रियों और बच्चों में है। कुएँ के इतिहास मे एक-से-एक कारुणिक त्रासदियाँ बावस्ता थी। शीरीं ने इसी कुएँ में कूद कर आत्म-हत्या की थी। शीरीं ने फरहाद के लम्बे इन्तजार से आजिज आकर अपनी जान की बाजी लगा दी थी और सरला को दहेज का यही अन्धा कुआँ निगल गया था। अमावस की रात को लोग सूरज डूबते ही अपने-अपने घरों में बन्द हो जाते, क्योंकि उन्होंने सुन रखा था कि अमावस की रात को कभी तो शैतान के अट्टहास की तरह आवाजें उठती हैं और कभी किसी औरत के सिसकने की। किस्से यहीं खत्म नहीं होते। पार्वती ने शादी के रोज अपने को इसी कुएँ के हवाले कर दिया था।

पार्वती को आप नहीं जानते। पार्वती शिवलाल चक्की वाले की दूसरी पत्नी थी। नीम के नीचे खाट बिछाये यह जो शख्स करवटें बदलता दिखायी देता है शिवलाल उसी का नाम है। शिवलाल की समझ में आज तक नहीं आया कि पार्वती क्यो उसे इतनी बड़ी दुनिया में यकायक अकेला छोड़ गयी, इधर एक दिन उसे सपने में दिखायी दिया कि शीरीं और सरला मिल कर पार्वती को भी कुएँ की तरफ़ घसीट रही है और पार्वती है कि चिल्ला रही है। शिवलाल पार्वती को बचाने की कोशिश करता है, मगर उसकी टांगों में कुव्वत नहीं। जब वह बहुत कोशिश के बाद भी नहीं उठ पाया तो वहीं खटिया पर औंधा गिर पडा है। कुएँ में गिरने से पहले पार्वती उसकी तरफ़ बहुत आशा और अपेक्षा से देखती है, मगर शिवलाल चाह कर भी कुछ नहीं कर पाता। एक तरफ़ पार्वती को कुएँ में धकेल दिया जाता है और दूसरी तरफ़ शिवलाल खटिया के पाये से अपना माथा फोड़ लेता है।

शिवलाल ने सपना देखा तो दहशत में आ गया। वह खटिया पर बैठ गया। नीम के पत्तों से छन कर आती हुई चाँदनी उसकी खटिया पर बिखर रही थी। चारो तरफ सन्नाटा था। वह कुछ भी तय न कर पाया। पार्वती

की याद उसके सीने पर एक वज़नी सिल की तरह सुबह तक पड़ी रही। सुबह तक उसे लगता रहा, जाते-जाते भूत यह कह गये हैं—नीम के नीचे से चक्की उठा लो शिवलाल! शिवलाल ने नय भी कर लिया था कि वह चक्की उठा कर कहीं दूर चला जायेगा, मगर इस बीच कुछ ऐसी घटनाएँ हुईं कि वह वहीं पड़ा रह गया। एक दिन नगर महापालिका ने अचानक कुआँ भरना शुरू कर दिया और शिवलाल की माँ शिवलाल का एक जगह रिश्ता भी पक्का कर आयी।

इस बीच देश ने बहुत तरक्की की। मगर इसे इस गली का ही दुर्भाग्य कहा जायेगा कि देश में हो रहे विकास कार्यों का बहुत हल्का प्रभाव इस गली के वासियों के जीवन पर पड़ रहा था। गली के औसत आदमी के घर में आज भी न पानी का नल था, न बिजली का कनेक्शन। शाम होते ही घरों में जगह-जगह जुगनुओं की तरह ढिबरियाँ टिमटिमाने लगतो। अगर भूले-भटके गली में दो-एक जगह सड़क के किनारे वल्व लगा भी दिया जाता तो बच्चे लोग तब तक अपनी निशानेवाज़ी की आज़माइश करते रहते, जब तक वल्व टूट न जाता। दरअसल गली के लोग सदियों से अँधेरे में रह रहे थे और अब अंधेरे में रहने के आदी हो चुके थे। अब उजाला उनकी आंखों में गड़ता था। यही वजह थी कि अगर बच्चों से वल्व फोड़ने में कोताही हो जाती तो कोई रोशनी का दुश्मन चुपके से वल्व फोड़ देता। रोशनी में जीना उन्हें ऐसा लगता था जैसे निर्वसन जीना। रोशनी से बचने के लिए लोग टाट के पर्दे गिरा देते।

टाट इस गली का राष्ट्रीय परिधान था। दरअसल टाट चिलमन भी था और चादर भी। टाट पायजामा भी था और लहंगा भी। टाट बिस्तर था और कम्बल भी। अक्सर लोग टाट पर सोते थे और टाट ओढ़ते थे। टाट के साइज़-बेसाइज़ के परदे छोटी-छोटी कोठरियों के बाहर जैसे सदियों से लटक रहे थे। टाट के उन पर्दों पर टाट की ही थिगलियाँ लगी रहती थी।

साँझ घिरते-घिरते गली में आमदोरफ़्त बढ़ जाती। मस्जिद से अज़ान की आवाज़ सुनायी दी नहीं कि लोग जल्दी जल्दी बावज़ू होकर मग़रिबकी नमाज़ में मशगूल हो जाते। बड़ी-बूढ़ी औरतें दालान में एक तरफ़ चटाई बिछा कर नमाज पढ़ने लगती।

दिया बत्ती का समय होते ही छोटे-छोटे बच्चे पुश्तैनी बोतलें थामे मिट्टी के तेल की कतार में जुड़ जाते। किसी बोतल की गर्दन टूटी होती या नीचे से पेंदे की एक परत। इन्हीं बच्चों को सुबह आंखें मलते हुए टेढ़े-मेढ़े गिलास

अथवा कुल्हड़ लिये दूध लाते देखा जा सकता था। प्रति परिवार पाव-लीटर दूध और आधा लीटर किरासिन चौबीस घण्टों के लिए पर्याप्त होता।

अधिकांश घरों में पाखाने की भी कोई व्यवस्था न थी। सुबह मुंह अँधेरे पूरी गली सार्वजनिक शौचालय का रूप ले लेती। ख़ुदा न ख़ास्ता किसी को दस्त लग जाते तो अज़ीज़न बी का ज़ीने के नीचे बना पाख़ाना काम में लाया जाता। पाखाने की चाबी नफ़ीस के पास रहती थी और चाबी लेने के लिए नफ़ीस की बहुत चिरौरी करनी पड़ती थी। नफ़ीस ख़ुश हो जाता तो न केवल चाबी बल्कि सनलाइट का छोटा-सा टुकड़ा भी दे देता। मगर लोगों ने इन तमाम अभावों के बीच जीने का एक ढर्रा ईजाद कर लिया था। चुनाव के दिनों जब गली को झण्डियों और फूल-पत्तियों से सजाया जाता तो लगता जैसे कोई बूढ़ी वेश्या लिपिस्टिक पोते इतरा रही है।

शहर की ख़ुशहाल बस्तियों में शाम के समय जो जंगल की वीरानी और श्मशान का सन्नाटा छाया रहता है, वह इस गली में दूर-दूर तक नहीं मिल सकता था। इस लिहाज़ से यह गली एक भरे-पूरे परिवार के आबाद आँगन की तरह महकती थी। दीवाली हो या ईद, मुहर्रम हो या होली यह गली रतजगे पर उतर आती। दिवाली के दिनों पूरी गली मिठाई के डिब्बों का कारख़ाना बन जाती। रोज़ों के दौरान रात भर चहल-पहल रहती और अलसुबह जब बागी 'सहरी का वक़्त हो गया है, ख़ुदा के बन्दो जागो' की बाँग देता तो बर्तनों की खनक के साथ एक नये दिन की शुरुआत हो जाती। होली पर रंग बेचने वाले इसी गली से रंगों के पहाड़ ठेलों पर लादे हुए निकलते। रात-रात भर पिचकारियाँ बनतीं। मुहर्रम के दिनों नीमतले पेट्रोमैक्स की रोशनी में छुरियाँ तेज़ होतीं—किर्र किर्रर्र किर्र ·· ····

•

टाट गली का राष्ट्रीय परिधान था तो बीड़ी उद्योग राष्ट्रीय रोज़गार। स्त्रियाँ, बच्चे और बेकार नवयुवक रात भर राष्ट्र के लिए पत्तों में तम्बाकू लपेटते। सुबह-सड़े-गले पत्तों को जला कर उनके ताप से चाय बनाते।

शिवलाल की चक्की गली के मुहाने पर ही थी, इसलिए वह एक तरह से गली का 'गेटकीपर' था। उसे मालूम रहता था कि इस समय नफ़ीस इमामबाड़े के पास खड़ा पान चबा रहा है या गुल को लेने विश्वविद्यालय गया है। हज़री बी चमेली के पास बैठी है या पंडिताइन की जुएँ बीन रही हैं। कोई

अजनबी अगर किसी का अता-पता पूछता तो शिवलाल न केवल अता-पता बता देता बल्कि संक्षेप में उस व्यक्ति का इतिहास भी।

शिवलाल के बहुत कम दोस्त थे। एक पंडित शिवनारायण दुबे था और दूसरे एक मौलाना थे। मौलाना शफ़ी। पुराने रईस। मगर अब हालात बिगड़ चुके थे। इधर रद्दी की खरीदोफरोख़्त का कारोबार करते थे। अपनी पुरानी रईसी के किस्से वह .ख़ुद इस अन्दाज से सुनाते थे कि शिवलाल को बहुत मजा आता। जब मौलाना बताते कि उन्होंने बम्बई में ग्राण्ट रोड पर का मकान सिर्फ़ सात हज़ार रुपये में बेच दिया और अब उसका दाम डेढ़ लाख है तो शिवलाल के सारे बदन में खुजली छिड़ जाती। वह बेचैन होने लगता। जब मौलाना बताते कि सात हज़ार रुपया भी उसने सात दिन में तबाह कर दिया तो शिवलाल और बेचैन हो जाता।

"अमाँ यार ज़िन्दगी भी एक ड्रामा है। एक वक्त था मौलाना शफ़ी का नाम सुनते ही दोस्तों की भीड़ लग जाया करती थी और एक ज़माना यह है कि मौलाना शफी दिन भर रद्दी बटोरता घूमता है और खर्च लायक दस-बीस रुपये कमाने में अच्छी-खासी मशक्कत हो जाती है। शिवलाल, तुम्हें क्या बतायें एक ज़माना था कि कागज़ की कतरन ढाई रुपये किलो थी। गेहूँ और कतरन दोनों का एक दाम था। आज वही कतरन कोई अस्सी पैसे में नहीं पूछ रहा। जितना पैसा एक क्विण्टल माल खरीदने पर बचता था, आज तीन क्विन्टल में भी नहीं बचता।"

मौलाना शफ़ी नमाज के वक्त का हमेशा ख्याल रखते थे। बात बीच में ही छोड़ कर चल देते। पाँचो वक्त की नमाज़ से उनकी रूह को चैन मिलता था। उन्हें याद है जब तक उन्होंने नमाज़ की तरफ़ ध्यान नहीं दिया था उन्हें अजीब-सी दहशत दबोचे रहती। उन्हें लगता कोई उनका पीछा कर रहा है। वे अपनी साइकल पर हाँफते हुए आते और शिवलाल के पास ही साइकल खड़ी करके उससे पानी पिलाने के लिए कहते। पानी पीने के बाद वे बुदबुदाते, "शिवलाल भाई, कैसा ज़माना आ गया है। कल एक प्रेस से रद्दी उठाई। घर जाकर छँटाई में लगा तो क्या देखता हूँ, दसियों सेर सीसा मिस्त्री ने रद्दी मे मिला रखा है। रद्दी का भाव दो सौ रुपये और सीसे का दो हजार रुपये। मैंने उसी वक्त कपड़े पहने और जाकर सीसा लौटा आया। हराम की कमाई मेरी ज़मीर ने ही क़ुबूल नहीं की। वरना, क्या सीसा बेच कर मैं एक अच्छी-ख़ासी रकम खड़ी नहीं कर सकता था? तुम आज भी किसी से मेरे बारे में दरियाफ़्त कर लो, सब लोग तफ़सील से मेरे बारे में बतायेंगे! सब लोग हैरत में हैं कि एक नेकदिल ख़ुदातरस इन्सान के पीछे वे लोग क्यों पड़

गये हैं ? आप ही की तरह सब पूछते हैं कि कौन हैं वे जो तुम्हारे पीछे पड़े हैं ? हम क्या बतावें ? कोई सामने आवे तो बतावें। बस छिप-छिप कर इशारे करते हैं और जीना मुहाल किये है। किसी ने किसी का कान भरा हो तो वही जाने। मेरी जिन्दगी का तो फ़लसफ़ा है कि इन्सान बनके जीओ और दूसरों को जीने दो। चन्दरोज़ा जिन्दगी को यों ही वर्वाद न होने दो। मुनि, दरवेश और फ़कीर की कीमत कोई ही समझ सकता है। जाहिल इन्सान यह सब नहीं जानता। मैं इसे उसकी जहालत ही कहूँगा जो बेसबब अपना वक़्त जाया कर रहे हैं। मुझ जैसे मुफ़लिस से उन्हे क्या हासिल होगा ? कोई उनको सामने लाकर खड़ा कर दे तो हम बता दें कि हर इन्सान का एक मैयार होता है। गलती भी न बताओ, उसके पीछे पड़े रहो, यह कहाँ का दस्तूर है ? दिन भर इन्ही ख़्यालात मे डूबा रहता हूँ कि उनका मक़सद क्या है ?'

शिवलाल की आत्मा हमेशा संतप्त रहती थी। अपने आसपास किसी गैरत वाले आदमी को देख कर उसे बहुत तसल्ली होती। उसे सारी दुनिया एक शोषक के रूप में नज़र आती थी। उसे लगता पूरे समाज की आँख उसकी छोटी-सी जमा-पूँजी पर है, चाहे उसकी अम्मा हो या उसका भाई। मौलाना शफ़ी ही उसे एक ऐसा व्यक्ति लगता था जो इस षड्यन्त्र में शामिल नहीं था। मगर मौलाना की बातो से उसे बहुत उलझन होती, डर भी लगता। कोई उसके भी पीछे न लग जाये। क्या भरोसा इस दुनिया का ! कौन कब किसके पीछे पड़ जाये, कौन जानता है। वह बहुत देर तक इस समस्या पर विचार करता रहता। जब उसका मन न मानता तो वह हुक्के का एक लम्बा कश लेता और दोबारा पूछ ही बैठता—

'मगर वे क्यों आपके पीछे पड़े हैं ?'

'अपना मतलब हल करना चाहते है। यही मकसद हो सकता है कि तरक्की न करने पावे। बच्चों की शादी न करे।'

'इसके पीछे कोई वजह तो जरूर होगी ?'

'मैं दिन भर सोचता रहता हूँ। मेरी समझ में .खुद कुछ नही आता। क़ुरानशरीफ की कसम, मैं कुछ नही जानता। घर से निकलता हूँ तो उनकी आवाजें सुनायी देती हैं। दस आदमी-बारह आदमी का हौवा लाकर खड़ा कर देते हैं। हमारा दिल कहता है कि हमको देख कर बकना शुरू कर देते हैं कि इसके दिमाग को खराब करो। गलती भी न बताओ, इसके पीछे पड़े रहो। यह तो गलत है, सरासर ग़लत है। वे नही जानते कि बुलन्द ख़याल लोग ही अच्छी जिन्दगी बसर कर सकते हैं। बुरी चीज़ को रोकने के लिए ही अच्छे लोग पैदा होते हैं। .खुदा खूब वाकिफ है किस पर क्या गुज़रती है।'

शिवलाल परेशान होने लगता। यह सीधा-सादा धर्मभीरु इन्सान क्यों इतनी तकलीफ़ पा रहा है। कौन लोग है जो इसके पीछे पड़े है! इस लिहाज से उसे शिवनरैन के साथ वक्त गुजारना अधिक अच्छा लगता था। शिवनरैन पंडित की नगर महापालिका में एक दुकड़िया नौकरी थी मगर वह जीवन के प्रति हमेशा आशावान् रहता। छोटी-मोटी परेशानी उसे व्यापती नहीं थी। होली-दिवाली पर वह मुहल्ले में पानी का छिड़काव भी करा देता। वह अपने को अत्यन्त सफल आदमी मानता। किसी अफ़सर की बीवी अगर ज़रा भी दयालु स्वभाव की होती, तो साहब के वर्षों पहले उतारे कपड़े उसे उपहार-स्वरूप मिल जाते। पंडित की आत्मा को परम सन्तोष मिलता। शिवलाल को वह बड़े गर्व से बताता, 'यह कमीज जो इस समय पहने हूँ, प्रसाशक जी की है, खुश हो गये मेरे काम से और बोले, पंडित जी, भेंट तो नया कपड़ा करना चाहते थे, मगर अब यही तुच्छ भेंट स्वीकार कर लीजिए।'

मौलाना शफ़ी से बातचीत करके शिवलाल को बहुत घबड़ाहट होती थी। मौलाना के जाने के बाद वह शिवनरैन की प्रतीक्षा में जुट जाता। कन्धे पर हथौड़ा और रैंच आदि का बोझा उठाये ज्यों ही शिवनरैन गली में प्रवेश करता, शिवलाल ज़ोर-ज़ोर से हाथ हिलाने लगता, 'आइए पण्डित जी! धन्य भाग है हमारे।'

पण्डित उसकी खटिया पर अपना सामान पटकता कि शिवलाल वहीं बैठे-बैठे होटल वाले को आवाज देकर दो उंगलियाँ दिखा देता यानी कि दो चाय।

'कहिए पंडित जी, और क्या समाचार हैं?'

'सब आपकी किरपा है शिवलाल जी। लगता है नये प्रसाशक जल्दी ही मुझे पलमामेंट करने जा रहे है। आज अपने पास बुलवाये रहे, बोले, देखो पंडितजी दफ़्तर का अनुसाशन कितना बिगड़ गया है। जिस बाबू को बुलाता हूँ, सीट पर नहीं मिलता। आप ही कुछ निदान कीजिए। मैंने कहा, आप रहमदिल अफ़सर हैं, सब सिर पर सवार हो गये है। जरा अपने स्टाफ़ को खीच कर रखिए। इनकी हड्डियों में आलस घुस गया है। हरामखोरी की लत यों ही नहीं छूटती प्रसाशक जी, उसके लिए लात से काम लेना पड़ेगा। ये लातों के भूत है।'

पंडित ने अपनी कत्थई बत्तीसी की प्रदर्शनी लगा दी और बोला, 'और बताइए शिवलाल जी स्वास्थ्य तो ठीक है न?'

शिवलाल का मन अत्यन्त अशान्त था। बोला, 'आप श्रेष्ठ कुल के ब्राह्मण हैं। सुन्दरकाण्ड की कुछ पंक्तियाँ सुना दीजिए। आत्मा को बड़ी शान्ति

भूत की कहानियां सुन-सुन कर वह इतना डर गया कि उसकी पीठ में दर्द रहने लगा। वह इस कद्र खौफ़ज़दा हो गया कि उसने न केवल अनाप शनाप दाम में चक्की बेच दी वल्कि मन लगा कर पांचों वक्त की नमाज भी पढ़ने लगा। उसने एक दर्जन रिक्शा खरीद लिये और उनके भाड़े से वेफ़िक्र जिन्दगी बिताने लगा। शिवलाल दूसरे कैड़े का आदमी था। भूत-प्रेत पर उसे विश्वास न था। मगर जब उसकी पत्नी कुएं में छलांग लगा कर चल बसी तो वह भी सशंकित हो गया। उसने आत्मविश्वास से काम लिया और साल भर के भीतर ही गुलाबदेई को ब्याह लाया। गुलाबदेई शिवलाल को रास आयी। वह सलोनी-सी गुड़िया थी। बात-बात पर मुस्करा देती, हिरन की तरह कुलांचे भरती—शिवलाल भौचक्का-सा उसकी तरफ देखता रह जाता। उसे लगता था वह उसे छू देगा तो मैली हो जाएगी। एक दिन तो वह दातौन तोड़ने पेड़ पर चढ़ गयी। काम करने में भी वह शिवलाल से उन्नीस न पड़ती थी। मुस्कराते हुए ही बीसियों किलो गेहूँ पीस देती और चेहरे पर शिकन तक न लाती। परिश्रम ज्यादा पड़ता तो पीठ पर से ब्लाउज भीग जाता जिससे शरीर और भी मांसल लगने लगता। गुलाबदेई के आते ही शिवलाल का धन्धा भी कुलांचे भरते हुए बढ़ने लगा। हर वक्त ग्राहकों की भीड़ लगी रहती। पास में अब्दुल की चक्की थी वहाँ हर वक्त सन्नाटा खिंचा रहता।

शिवलाल की चक्की छोटी-सी कोठरी में थी। वहीं वह रहता था, सोता था, खाता था। चक्की में ही गुलाब देई के पाँव भारी हो गये। शिवलाल भागा-भागा अपने छोटे भाई के यहाँ से माँ को बुला लाया। अब माँ आटा पीसती और शिवलाल वाहर सड़क पर खटिया डाले हुक्का गुड़गुड़ाता रहता। जब तक गुलाब देई चालीसवां नहाती, शिवलाल ने माँ को दुत्कार कर निकाल दिया। जिन्दगी फिर उसी ढर्रे पर चलने लगी। गुलाबदेई ने चक्की संभाल ली और शिवलाल ने बच्चा।

रात बिना किसी पूर्वाग्रह के, पूरे जोबन के साथ गली में उतरती थी। चाँदनी रात में नीम के पेड़ से छन कर आती चाँदनी में गली की टूटी-फूटी सड़कें भी अच्छी लगती। जब चारों तरफ़ सन्नाटा हो जाता तो शिवलाल कोठरी से एक और खटिया निकाल कर वाहर डाल देता। फिर वह बड़ी सावधानी से चक्की को अलीगढ़ी ताला लगा कर चाबी अपने जनेऊ में बाँध लेता। जब तीन-चार-बार ताले को खींच कर उसे इतमीनान हो जाता कि ताला ठीक तरह से बन्द हो गया है तो वह खटिया पर लेट जाता।

गुलाबदेई बग़ल में बिस्तर लगा लेती और बच्चे को अपने साथ चिपका कर सो जाती। इसी तरह गली के मुहल्ले पर रुई धुनने वाली अपने पोते

पोतियों को समेट कर सो जाती। बूढ़ा रुई वाला डाक्टर मुस्तफ़ा की दुकान के चौतरे पर एक रजाई बिछा कर सो जाता। उससे ज़रा ही दूर पर शिव-लाल की चक्की थी। फ़र्क सिर्फ इतना था कि रुई वाले के बहू-बेटे अन्दर एक ही कोठरी में होते और हर साल कोठरी के अन्दर नये बच्चे के 'उआँ-उआँ' से कोठरी आबाद दर आबाद होती जाती। सारा मुहल्ला आश्चर्य-चकित था कि कैसे रुई वाले ने एक ही कोठरी में दो जवान बेटियां और तीन लड़कों और उनकी बहुओं को बसा रखा था। रुई वाली मुर्गी की तरह बहुत से पोते-पोतियों को गली की नुक्कड पर एक तख्त डाल कर पूरी सुरक्षा प्रदान करती।

गुलाबदेई दिन भर की बामशक्कत कैद से इतनी निढाल हो जाती कि लेटते ही सो जाती। मगर शिवलाल को देर तक नींद न आती। वह घण्टों यों ही करवटें बदलता रहता। उसे लगता अभी कोई बदमाश आयेगा और उसकी पत्नी को कन्धे पर उठा कर भाग जायेगा। जब उसे कुछ देर तक नींद न आती तो वह बहकने लगता 'साली को कोठरी काटती है। वहाँ महारानी जी का दम घुटता है। खुली हवा का इतना ही शौक था तो मेरे पल्ले क्यों पड़ गयी ?'

'पड़े-पडे क्या बड़बड़ाते रहते हो, सो क्यों नहीं जाते ?' गुलाबदेई आजिज़ आकर कहती और करवट बदल लेती।

शिवलाल के लिए लेटना मुहाल हो जाता। वह उठ कर टहलने लगता या लेटे-लेटे बीड़ी सुलगा लेता। गुलाबदेई के पास सोने की एक अँगूठी थी और चाँदी का एक जोड़ा पाज़ेब। शिवलाल की घबराहट बढ़ती तो वह बक्सा खोल कर देख आता कि चीज़ें अपनी जगह पर हैं या नहीं। इन्हीं चिन्ताओं में उसकी रात कट जाती। शायद यही वजह थी कि दिन भर वह नींद में ही झूलता रहता और आटा पीसने का सारा काम गुलाबदेई को करना पड़ता।

कभी-कभी पंडित रात के ग्यारह साढ़े ग्यारह बारह बजे शिवलाल के पास आ बैठता ! पंडित के चेहरे से ही लगता था कि वह एक शरीफ़ आदमी है। पंडित रात को लौटता तो अपने साथ बहुत-सी कहानियाँ लेता आता।

'शिवलाल बाबू अभी मैं फुव्वारा बन्द करके लौट रहा था कि क्या देखता हूँ एक लड़की पान की दुकान की बग़ल में खड़ी थी। दो आदमी मोटर-साइकिल पर आये और उसे बीच में बैठा कर देखते देखते गायब हो गये।' इसके बाद-पंडित शिवनारायण रामायण का कोई प्रसंग उठा लेता और सहसा चौपाइयाँ गाना शुरू कर देता। शिवलाल खटिया से उठ कर बैठ जाता और बड़े भक्ति भाव से पंडित को सुनता।

'पंडितजी आपकी वाणी सुन लेता हूँ तो बड़े चैन की नींद आती है। दिन भर की हाय हाय से आप मुझे मुक्ति दिला देते हैं। कल भी लौटते समय जरूर आइएगा।'

पंडित के अहम् को बड़ा सन्तोष मिलता। वह अपनी व्यस्तता बताते हुए कहता, 'क्या करूँ शिवलाल जी, इधर लाइफ़ बहुत बिज़ी हो गयी है। डी० एम० साहब तो किसी दूसरे पंडित पर भरोसा ही नहीं करते। कल उनके सुपुत्र का उपनयन संस्कार है, पाठ के लिए मुझे ही बुलवा भेजा है। एस० पी० साहब का नल है कि हर दूसरे दिन लीक करने लगता है और उधर अपने दरोगा जी पीछे पड़े हैं कि इस बार सतनारायणजी की कथा मैं ही सुनाऊँ। मैं इस शहर में अकेला पड़ा हूँ। बच्चे देहात में हैं। कई बार सोचता हूँ कि यहीं ले आऊँ। दान-दक्षिणा से ही पल जायेंगे।'

'ऐसी भूल कभी न करियो।' शिवलाल पंडित को राय देता—'ढोर गंवार शूद्र पशु नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी।'

'यह तो ठीक कहते हो भइया, मगर जब गृहस्थ जीवन अपना ही लिया तो जिम्मेदारी से कब तक दूर रह सकता हूँ।'

'यह औरत जात आदमी का पूरा सुख-चैन सोख लेती है।' शिवलाल ने बड़ी नफ़रत से अपनी पत्नी की ओर देखता। अगर कहीं गुलाबदेई का पल्लू उसके वक्ष पर से हट गया होता तो वह बात बीच में छोड़ कर उसके बालों को मुट्ठी में लेकर झंझोड़ते हुए बेकाबू हो जाता, 'हरामज़ादी यह नुमाइश किसके लिए लगा रखी है?'

गुलाबदेई पल्लू संभाल कर करवट बदल लेती।

यह आश्चर्यजनक ही था कि इतनी घुटन और वर्जनाओं के बीच गुलाबदेई पर निरंतर निखार आता जा रहा था। ताजा नारियल की तरह वह दिखती। चेहरा आग की तरह दप-दप करता। देखते ही देखते उसके गाल सुर्ख हो गये थे, सारा बदन गदरा गया था मगर शिवलाल उसी अनुपात में बूढ़ा होता जा रहा था। एक-दो दांत भी गिर गये थे और गाल पिचके जा रहे थे। वह प्रायः भूतों के अस्तित्व पर सोचता रहता और कहता, 'मैं दावे से कह सकता हूँ कि इस नीम के पेड़ पर आज भी शीरीं का भूत रहता है। आधी रात को मैंने उसे नीम पर दबे पांव चलते सुना है!'

'अरे वह बिल्ली थी।' गुलाबदेई कहती।

'तू यहाँ क्या कर रही है, चल अन्दर।' वह डाट कर उसे भगा देता।

हालत यह हो गयी थी कि गुलाबदेई के सर से पल्लू सरका नहीं कि वह गाली बकने लगता था। बात-बात पर ग्राहको से भी उलझ जाता। एक दिन उसने तैश में आकर खाँ साहब का कनस्तर सड़क पर फेंक दिया। खाँ साहब ने सिर्फ इतनी शिकायत की थी कि पिछली बार गेहूँ जरा मोटा पिसा था। खाँ साहब ताज्जुब मे उसकी ओर देखने लगे कि क्या यह वही शिवलाल है जो गली में से गुजरने वाले हर उस आदमी को आदाब करता था जिससे उसकी आँखें चार होती थीं। अब वह किसी की तरफ़ पलट कर भी नही देखता था। मुहल्ले के लौडे दातौन के लिए अगर नीम पर चढ़ जाते तो शिवलाल व्यग्र हो उठता। उसे लगता लौडे जरूर गुलाबदेई से आँख लड़ा रहे है। वह खटिया पर लेटे-लेटे बच्चो पर यों चिल्लाता रहता जैसे खेतों से कौवे भगा रहा हो। नीम का पेड चक्की के ऊपर हहराता रहता मगर उसके अन्दर कोई हलचल नही होती थी। तालाब के पानी की तरह उसकी ज़िन्दगी एक जगह ठहर कर रह गयी थी। मुहम्मद शफ़ी उसे दिखायी देता तो वह पूछता, 'क्यों मौलवी साहब, भूत-प्रेत के बारे मे आपकी क्या राय है?' अपने हिन्दू ग्राहकों से उसे हमेशा यही शिकायत रहती थी कि वे उसकी चक्की पर न जाकर अब्दुल की चक्की से आटा पिसाते है! मुसलमान ग्राहक को देखते ही वह 'सलामो अलैकुम' कहता और फिर धीरे मे फुसफुसाता, 'मुआफ़ कीजिए भाई जान, यह हिन्दू कौमें बडी काइयाँ कौम है। आप भी तो आटा पिसाने आते हैं, मगर खुदा कसम तौल को लेकर कभी चख-चख नही होती। मगर यह हमारी कौम बड़ी नामुराद है। दो-दो बार तौल करवायेंगे, ऊपर से हुज्जत करेंगे मगर टेंट से पैसा निकालते बहुत तकलीफ होगी। मेरी चले तो मैं उनका आटा पीसने से साफ़ इनकार कर दूँ। मगर यह पापी पेट...' वह दोनों हाथों से अपना पिचका हुआ पेट थपथपाता—'मगर यह पापी पेट जो करवा ले कम है।'

मुहल्ले के तमाम लोग उसकी इस आदत से परिचित थे। इसमें साम्प्रदायिकता की गन्ध नहीं आती थी, उसकी मासूम व्यवसाय-बुद्धि का ही परिचय मिलता था। फारूकी साहब ने तो एक दिन इस बात पर उसे इतनी डाँट पिला दी कि शिवलाल की घिग्घी बँध गयी। वह बार-बार यही कहता रहा— 'हुज़ूर मेरी बात का मतलब यह नही था।'

वास्तव मे शिवलाल की किसी चीज़ में दिलचस्पी नही रह गयी थी। वह दिन भर यही प्रार्थना करता रहता कि किसी तरह उसकी इज़्ज़त बची रहे। गुलाबदेई का सौन्दर्य उसके लिए एक बवाल बन गया था। वह दिन भर

गुलाबदेई को लेकर तरह-तरह की आशंकाओं की कल्पना करता रहता।

आखिर एक दिन उसकी आशंका ने साकार रूप ले ही लिया। चाँदनी रात थी। नीम की सर-सर और खुली हवा में बैठते ही शिवलाल की आँख लग गयी। उसने यह भी नहीं देखा कि गुलाबदेई कितनी लापरवाही से सो रही थी। वक्ष पर से पल्लू हट गया था और एक टाँग उघड़ गयी थी। रात को सिनेमा देख कर लौट रहे कुछ लौंडे सहसा ठिठक गये। किसी मनचले ने गुलाबदेई का वक्ष भोंपू की तरह दबा दिया। गुलाबदेई चौंक कर उठ बैठी और जब तक चिल्लाती लोग आगे बढ़ गये। दो-तीन लौंडे थे उन्होंने पीछे मुड़ कर देखना भी गवारा नहीं किया, चुपचाप इत्मीनान से चलते रहे। शिवलाल अभी कच्ची नींद में ही था। खट-पट सुन कर उठ बैठा। गुलाबदेई ऊँची आवाज़ मे चिल्ला रही थी। शिवलाल ने पहले तो उत्तेजना में सोचा कि पास पड़ा बड़ा-सा पत्थर उठा कर लौंडों के सिर पर दे मारे। मगर पत्थर छूते ही उसके हौसले पस्त हो गये। आत्मविश्वास धोखा दे गया। आत्म-विश्वास से धोखा खाकर उसने चिल्लाने की कोशिश की। वह इसमें भी असफल रहा। उसे लगा कि जैसे उसकी ज़ुबान तालू से चिपक गयी है। शीघ्र ही उसने शुद्ध हिन्दुस्तानी तरीके से सब्र का एक लम्बा घूँट पी लिया—जो होना था हो गया। अब चिल्लाने से कुछ प्राप्त नहीं होगा, केवल बदनामी हाथ लगेगी। वही शिवलाल जो कुछ क्षण पूर्व अपने को ठगा, पिटा और लुटा-सा महसूस कर रहा था पत्नी का चेहरा देखते ही शेर हो गया। उसने आव देखा न ताव पीछे मुड़ कर बीवी के मुँह पर उल्टे हाथ से ऐसा जोरदार झापड़ रसीद किया कि वह गिरते-गिरते बची। अपना प्रथम प्रयास सफल होते देख वह दोनों हाथों से बारी-बारी जहाँ जगह मिलती पिटाई करने लगा, 'बोल ! बोल हरामज़ादी ! कौन था वह तेरा आशिक जिससे मुँह काला करवा रही थी। बोल !'

गुलाबदेई रोने लगी, 'बदमाशों पर बस नहीं चला तो मुझे ही बदनाम करने लगे। तुम कैसे शख्स हो ! हिम्मत हो तो जाकर उनसे निपट लो।'

शिवलाल तर्क की मनःस्थिति में नहीं था। उसने हाँफते हुए चक्की का दरवाज़ा खोला और गुलाबदेई को निहायत फ़िल्मी अन्दाज मे अन्दर धकेल दिया, 'अब तू इसी कोठरी में बन्द रहेगी। ज्यादा चूँ-चाँ की तो यहीं दफ़ना दूँगा।'

शोर सुन कर बच्चा भी जग गया था। शिवलाल ने उसे भी उठा कर गेंद की तरह कोठरी में फेंक दिया। पड़ोसियों ने खिड़कियों से झाँक कर देखा—वे आश्वस्त हो गये कि मियाँ बीवी का आपसी झगड़ा है। कोई

सड़क पर नहीं आया।

इस घटना के बाद गुलाबदेई हमेशा के लिए बन्द हो गयी।

शिवलाल चौकीदार की तरह दिन भर दरवाजे पर तैनात रहता। गर्मी की दुपहरिया में नीम के नीचे सुस्ता रहा कोई खोमचे वाला अगर यकायक जग कर चिल्ला पड़ता, 'लइया दालपट्टी-ताजा मूँगफली' तो शिवलाल भड़क जाता, 'आराम करने देगा कि नहीं, सर पर काहे को चिल्ला रहा है?'

'यह सड़क और नीम तुम्हारे बाप की नहीं है।'

'नीम तो नहीं मगर चक्की तुम्हारे बाप की है।' शिवलाल लड़ने पर उतारू हो जाता। उसका खयाल था कि उसकी चक्की की वजह से ही इस नीम का नाम चकैंया नीम है, जबकि बड़े बूढ़ों का कहना था कि चक्की तो क्या शिवलाल भी पैदा नहीं हुआ था, जबसे इस नीम को चकैंया नीम के नाम से पुकारा जाता है। वास्तव में नीम चकई के आकार की थी, इसलिए चकैंया नीम के नाम से जानी जाने लगी। कुछ लोगों ने यह भी उड़ा रखा था कि मुहल्ले की एक खूबसूरत लड़की सईदा की आत्मा चकई के रूप में इस नीम पर बसती है।

गुलाबदेई को घर के सामान में पुराना ट्रांजिस्टर हाथ लग गया। वह फ़ुर्सत में ट्रांजिस्टर सुनती। शिवलाल से यह बर्दाश्त नहीं हो रहा था। वह चाहता था गुलाबदेई अन्दर कोठरी में पड़ी रोती रहे। गाना बजाना तो तवायफ़ों का शौक है, वह मन ही मन कहता, कुलीन घरों की औरतें कहीं फिल्मी गाने सुनती हैं। दोपहर को एक लइया वाला नीम के साये में बड़ी देर से खड़ा था। अन्दर कोठरी से फिल्मी गानों की धुनें उठ रही थीं। लइया वाला हर गाने पर झूम रहा था और पाँव से थाप दे रहा था। शिवलाल कुछ देर उसे ताकता रहा, फिर अन्दर जा कर गुलाबदेई के पास बाँह चढ़ा कर खड़ा हो गया। गुलाबदेई पंखे से हवा कर रही थी और विविध भारती से फिल्मी संगीत सुनने में मग्न थी।

'यह किसको रिझा रही हो?'

'तुम्हें।' गुलाबदेई बोली।

शिवलाल ने पास पड़ा बाँस उठा लिया और लगा उससे गुलाबदेई को पीटने।

'बता किसको रिझा रही थी ?' शिवलाल ने कहा और लगा पीटने।

गुलाबदेई बचाव के लिए इधर-उधर भागती रही। कोठरी का दरवाजा शिवलाल ने अन्दर से बन्द कर लिया था। गुलाबदेई के शरीर पर जगह-जगह नील पड़ गये। आखिर उसने शिवलाल के हाथ का बाँस दूसरी तरफ से मजबूती से थाम लिया। शिवलाल ने बाँस छुड़ाने की कोशिश की मगर कामयाब नहीं हुआ। गुलाबदेई ने उसके हाथ से छीन कर बाँस चबकी के उस पार फेंक दिया। उसका पूरा शरीर पसीने से तरबतर हो गया था और साँस फूल गयी थी। शिवलाल की आँखों से चिनगारियाँ फूट रही थीं। मौका पाकर उसने एक लात जमा दी। बोला, 'लगता है तुम्हारे दिन भी पूरे हो गये हैं और नीम का भूत तुम्हारे ऊपर सवार हो चुका है।'

'इस मुगालते में मत रहना कि मैं भी कुएँ में कूद कर मर जाऊँगी।' गुलाबदेई क्रोध और अपमान से जलती हुई बोली, 'तुम्हारे जुल्म ही भूत हैं। मैं अब जिन्दा भूत बन कर तुम्हारे सीने पर मूँग दलूँगी। मैं अच्छी तरह से जान गयी हूँ कि भूत-प्रेत और कुछ नहीं, तुम मर्दन के दिमाग का ही फतूर है।'

□□

• •

सुबह का समय था। शिवलाल नीम से दातौन तोड़ कर गली के मुहाने पर लगे नल के पास बैठा दातौन कर रहा था। सुबह-सुबह नल पर खूब भीड़ रहती थी। वह अक्सर पानी का एक लोटा भर कर पास ही बैठ जाता और घण्टो दातौन करते हुए मलाई वाली या रुईवाली से बातें करता। मलाईवाली अस्सी से भी ऊपर थी। शाम को एक थाली में सेर भर मलाई रख कर अपनी कोठरी के बाहर बैठ जाती। शिवलाल को मलाई से बहुत इश्क था। वह शाम को खाना खाने के बाद सडक तक आता और सौ ग्राम मलाई के ऊपर सौ ग्राम चीनी मिला कर मलाई वाली अम्मा के पास बैठ कर ही मलाई खाता।

अम्मा सुबह पूजा-पाठ करके शाम के लिए अपना थाल देर तक चमकाती। शिवलाल अम्मा के चौतरे पर बैठा दातौन कर रहा था कि पुलिस का एक दीवान उसके पास आकर खड़ा हो गया, 'यहाँ शिवलाल वल्द छोटे लाल कहीं रहता है?'

'शिवलाल वल्द छोटेलाल या शिवलाल वल्द श्यामलाल?'

दीवान ने फाइल देखते हुए कहा, 'शिवलाल वल्द छोटेलाल।'

शिवलाल के चेहरे पर हवाइयाँ उडने लगी। उसके हाथ काँपने लगे। उसने जल्दी से कुल्ला किया और बोला, 'जरूर कोई गलती भई है हुज़ूर। शिवलाल तो मेरा ही नाम है।'

'वल्द छोटेलाल?'

'जी।'

'आपके नाम वारंट है।' दीवान जी ने कहा, 'आपको मेरे साथ थाने चलना होगा।'

शिवलाल ने सोचा, यह हरामज़ादी गुलाबदेई की ही कोई काली करतूत सामने आने वाली है।

'मगर हुजूर, मैं तो एक शरीफ़ इन्सान हूँ। आप मुहल्ले में किसी भी मर्द मे दरियाफ़्त कर देखिए, मुझसे किसी को कोई शिकायत न होगी।'

'आप पर चोरी का माल खरीदने का इल्ज़ाम है।'

'चोरी का माल ?' शिवलाल भौचक्का रह गया, 'हुजूर, मेरे पास कोई माल ही नही सिवाय एक छोटी-सी चक्की के, जिसकी रसीद मेरे पास महफ़ूज़ है।'

'फिज़ूल की बात करके मेरा और अपना वक्त ज़ाया मत करो। चलो जल्दी से तैयार हो जाओ।'

पुलिस को देख कर अम्मा की कोठरी के सामने भीड इकट्ठा होने लगी। गुलाबदई भी दौड़ती हुई आयी—'का भवा ?'

'शिवलाल पर चोरी का इल्ज़ाम है।' भीड़ में से किसी ने कहा।

'सुनो दीवानजी।' गुलाबदेई ने आगे बढ़ कर ललकारा, 'इनको आपने हाथ लगाया तो अभी मुहल्ले में फ़साद हो जायेगा।'

'यह मुँहज़ोर औरत कौन है ?' दीवानजी ने पूछा।

'मेरी घरवाली है हुज़ूर।'

'लगता है, इसे भी चोरी करके ही लाये हो।' दीवान जी ने कहा।

भीड़ में कुछ लोग मुस्कराये। मगर अम्मा भड़क गयी, 'आपको सरम नही आती दीवानजी, जो औरत पर उँगली उठाते हो।'

इस बार अम्मा की बात का भीड़ पर जादुई असर हुआ। पीछे से कोई लौंडा भीड मे झुकते हुए चिल्लाया, 'मारो साले को।'

'इसने औरत की बेइज्ज़ती की है।'

'मारो मारो''''।' भीड़ में से कई लोग चिल्लाये।

दीवानजी ने भीड़ को अपने खिलाफ़ होते देख अम्मा के पैर थाम लिये, 'अम्मा शिवलाल को मेरे साथ जाना होगा।'

'इसने गुलाबदेई की बेइज्जती की है मुहल्लेवालो। यह पूरे मुहल्ले की इज्जत का सवाल है।' बुढ़िया अपनी झीनी धोती सम्हालती हुई खड़ी हो गयी।

तभी पीछे से एक पत्थर गिरा और दीवानजी के कान को छूता हुआ दीवार पर जा लगा।

सब लोग जान गये कि नफ़ीस के अलावा कोई यह जुर्रत नही कर सकता।

दीवान ने फ़िलहाल वहाँ से खिसक जाना ही मुनासिब समझा। मगर वह व्यूह में घिरा हुआ था। भीड़ धीरे-धीरे बड़ी होती जा रही थी।

'यह वही है जो एक दिन गुलाबदेई को नोच कर भागा था।' भीड में से किसी ने कहा।

'मारो साले को। घुसने न दो मुहल्ले मे।'

इतने में मुहल्ले के युवा नेता सिद्दीकी साहब मजमें में आगे बढ़ गये, 'देखिए दीवान साहब।। आप किसी इन्सान की बेइज्जती नहीं कर सकते। मे अभी डी० एस० पी० साहब को फ़ोन मिलाता हूँ। आप जबसे इस थाने मे आये है, मुहल्ले वालों का जीना हराम कर रखा है। कौन नही जानता कि आप चोरो, डकैतों, जुआरियों से सरेआम पैसा लेते हैं। मैं देखता हूँ आप कैसे शिवलाल को हाथ लगाते है।'

'सिद्दीकी साहब !'

'जिन्दाबाद !'

'दीवान की गुण्डई !'

'नही चलेगी ! नही चलेगी !' बच्चा लोग चिल्लाये।

सिद्दीकी साहब हुजूम का नेतृत्व करते हुए कोतवाली की तरफ चल दिये।

सिद्दीकी साहब किसी बात से दीवानजी से चिढे हुए थे। वे भीड के आगे अपने दप-दप करते धोबी-धुले कुर्ते पाजामे में तेज़ कदमो से चल रहे थे।

पास मे गुजरती हुई एक मोटर साईकिल को रोक कर दीवानजी उस पर मक्खी की-सी तत्परता से सवार हो गये।

.

शिवलाल बेहद डर गया था। उसका दिल बेतरह धडक रहा था और वह बार-बार अपने खुश्क होते जा रहे होंठों को अपनी खुश्क जुबान से तर करने का प्रयत्न कर रहा था। मालूम हुआ, मौलाना शफी के माध्यम मे उसने चक्की के लिए जो पट्टा खरीदा था, वह चोरी का था।

'ऐसा क्यो घबरा रहे हो। किसी का खून तो नही कर दिया।' गुलाबदेई बोली, 'पैसा देकर पट्टा खरीदा था, मुफ्त में तो नही।'

'चुप रह हरामज़ादी।' वह बोला, 'अब तेरे मन की मुराद पूरी हुई। अब जेल में चक्की पीसूँगा तो तुझे सान्ती मिलेगी।'

गुलाबदेई को अब तक विश्वास ही नहीं आ रहा था कि चोरी का पट्टा खरीदने पर शिवलाल को जेल हो सकती है।

शिवलाल के पास एक लोहे की टूटी कुर्सी थी। वह चक्की के अन्दर एक कोने में दुबक कर बैठ गया। वह अपमान की आग मे सुलग रहा था। चारों

कोनो में उसकी बदनामी हो जाएगी। हर कोई उसके नाम पर थू-थू करेगा और गुलाबदेई को रंगरेलियाँ मनाने का सुनहरा मौका मिल जायेगा। इस वक्त मौलाना शफ़ी उसे दिख जाता तो वह उसकी दाढ़ी नोच लेता। उसी ने एक दूसरे कबाड़िए से परिचय करवाया था। जाने किस गुण्डे मुस्टण्डे से परिचय करवा दिया।

अचानक शिवलाल ने चक्की पर से पट्टा उतारा और कुएँ में फेंक दिया। उसके पास एक पुराना पट्टा पड़ा था। वह उसे जोड़ने लगा कि तभी ख़याल आया कि यह भी कबाड़ से ही खरीदा था। उसने भाग कर वह पट्टा भी कुएँ की नज़र कर दिया। शिवलाल की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था कि वह अपने प्राण कैसे बचाये। सौ का एक नोट उसने बहुत दिनों से बचा कर रखा था। उसने एक लौंडे को घूमते हुए देखा तो बोला—'ऐ रफ़ीक, जा ज़रा भाग कर चार इंची का बारह फ़ुट पट्टा और पैंतालिस नम्बर का काँटा लेते आओ। रसीद भी बनवा लाना।'

तभी सिद्दीकी मियाँ भीड़ के आगे-आगे मुस्कराते हुए आते दिखायी दिये।

'मैंने साले का ट्रांसफर करा दिया।' सिद्दीकी साहब ने कहा, 'मगर तुमने चोरी का पट्टा खरीदा ही क्यों?'

'क्या बताऊँ सिद्दीकी साब, मति ही मारी गयी थी। उस बूढ़े शफ़ी ने मुझे गलत आदमी से मिला दिया।'

'बहरहाल घबड़ाओ नहीं,!' सिद्दीकी साहब ने पास खड़ी गुलाबदेई की तरफ देखते हुए कहा, 'जो दरोगा जी तफतीश कर रहे हैं, वह मेरे दोस्त हैं। मगर मुझे लगता है, साला कबाड़िया खुद तो खिला पिला कर बरी हो जाएगा, तुम्हारे जैसे चार गरीब मारे जाएँगे।'

दरअसल सिद्दीकी साहब बहुत व्यस्त किस्म के नेता थे। राजनीति में उन्होंने यह सोच कर कदम रखा था कि एक दिन वे प्रदेश के मुख्यमन्त्री बनेंगे। मगर मुख्यमंत्री तो क्या वे कॉर्पोरेटर भी न हो पाये। राजनीति के चक्कर में सर के आधे बाल सफ़ेद हो गये और वे कुँआरे रह गये। दो मकान गिरवी पड़े हैं और ऊपर से उनके बारे में मशहूर है कि बिना पैसा लिए छोटा सा भी काम नहीं करवाते। यह भी नहीं कि इस बात में सचाई न हो। बहुत से लोग यह कहते सुनाई पड़ते हैं कि सिद्दीकी साहब ने मकान के एलाटमेंट के लिए पाँच सौ लिए थे, ट्रांसफर के लिए एक हज़ार, नौकरी दिलाने के लिए

दो हज़ार। सिद्दीकी साहब के निकटतम दोस्तों का विश्वास था कि उन्हें कोई ऐब नही है—किसी को उनके मुंह मे कभी शराब की बू नही आई, किसी ने उन्हें कभी कोठे पर नही देखा। ताश तो दूर वे लूडो तक खेलना नहीं जानते थे। तब फिर यह पैसा जाता कहाँ था ? उनकी चप्पलें, उनका कुर्ता पायजामा इस बात की दुहाई देते थे कि वे एक ईमानदार शख्स हैं।

यह भी समझ में नही आता था कि सिद्दीकी साहब इतने बुरे नेता हैं तो इतने लोग उन्हे हर वक्त क्यो घेरे रहते हैं। किसी का ट्रासफर रुकवाना है किसी का करवाना है, किसी का मकान खाली करवाना है, तो किसी को 'पर्जेशन' दिलवाना है। किसी को 'स्पिरिट' का लाइसेंस चाहिए तो किसी को सिनेमा हाल का। एक जान हज़ार बवाल। उनको देखकर यही शीर्षक दिमाग में कौधता था।

सिद्दीकी साहब न विधायक थे न सांसद, फिर काम कैसे करवा लेते थे, यह लोगों के लिए एक आश्चर्य का विषय था। कई बार तो ऐसा भी हुआ था कि सासद, विधायक आदि ने क्षमा मांग ली थी और सिद्दीकी साहब काम करवा लाए।

सिद्दीकी साहब की उम्र भी ज्यादा नही थी। उनके पैर दौड़ते दौड़ते इतने बुढ़ा गये थे कि पैर देखकर उनकी उम्र पचास से ऊपर ही बतायी जा सकती थी। उनके बाल इस तेजी से पक गये थे कि उनके बाल देख कर भी यही नतीजा निकलता था। मगर उनकी सूरत, उनके सर्टिफिकेट उन्हें तीस का बताते थे। अगर भविष्य में उनकी शादी होगी तो उसका आधार यही दो चीजें रहेगी।

दरअसल सिद्दीकी साहब के नेतागिरी के कुछ मौलिक सिद्धान्त थे। नगर में प्रधान मन्त्री, मुख्य मन्त्री, केन्द्रीय मन्त्री, प्रदेश का मन्त्री, कोई भी आए, उसकी अगवानी करने के लिए जो लोग हवाई अड्डे या रेलवे स्टेशन पर दिखायी देते, उनमें सिद्दीकी साहब ज़रूर होते। सिद्दीकी साहब अपने किसी 'क्लायंट' से जीप मँगवा लेंगे और हवाई अड्डे फूलो के हार लेकर ज़रूर पहुँचेंगे। वर्षों के अनवरत क्रम और श्रम के कारण कुछ छुटभैये मन्त्रियों से उनकी पहचान भी हो गयी। रेलवे स्टेशन से वे सर्किट हाउस तक जाते और वहाँ से तब तक न टलते जब तक मन्त्री जी हाथ जोड़ कर आभार न व्यक्त कर देते। मन्त्रियों के साथ उन के सचिव और उस महकमे के स्थानीय अफ़सर भी होते। मन्त्रीजी से हाथ मिलाते समय वे बड़े फख्र के साथ उन अफ़सरों की तरफ़ देखते जैसे कह रहे हों कि देख रहे हो तुम्हारे विभाग का मन्त्री मुझ से हाथ मिला रहा है। अच्छी तरह से देख लो कहीं ऐसा न हो कि मैं तुम्हारे

दफ्तर में आऊँ और तुम मुझे पहचानने से इनकार कर दो। अगर उन्हें लगता कि सम्बन्धित अफ़सर इनकी तरफ़ ज्यादा ध्यान नही दे रहा है तो वे मन्त्री जी का हाथ तब तक न छोड़ते जब तक अफ़सर की निगाह न पड़ जाती। अफसर उन्हें भूल न जाये, यह सोचकर वे अगले ही रोज दफ्तर में प्रकट हो जाते, 'आप से मन्त्री जी बहुत खफ़ा चल रहे है।' सिद्दीकी साहब कहते, "मगर मैंने आज तक आपकी कोई शिकायत नही सुनी। फौरन कह दिया, लगता है विधायक जी नाराज हैं। जरूर कोई गैरकानूनी काम करवाना चाहते होंगे। आप को मैं जानता हूं, कैसे कह देता कि गुप्ताजी भ्रष्ट अफसर हैं।"

अफसर सिद्दीकी साहब की तरफ गौर से देखता। सूरत से लगता था कि उनका बृहस्पति केन्द्र में है। वह फौरन घंटी बजा कर चाय मँगवाता। सिद्दीकी साहब चाय के पहले घूँट के साथ लखनऊ पहुँच जाते। गुप्ता जी के विभाग के सचिव से उनकी पुरानी दोस्ती निकल आती। फिर क्या था, गु ा जी और सिद्दीकी साहब में दोस्ती स्थापित हो जाती।

शहर में नया कोतवाल आता तो सिद्दीकी साहब कोई न कोई बहाना खोजकर कोतवाली के आगे छोटा-मोटा प्रदर्शन जरूर करवा देते। इससे शहर कोतवाल से उनका अनायास परिचय हो जाता। सौ पचास आदमी जुटाना सिद्दीकी साहब के लिए बडा काम न होता। यह भी अक्सर देखा गया है कि प्रदर्शन के दो चार रोज बाद या ईद के मुबारक मौके पर शहर कोतवाल उन के यहां भोजन करता हुआ नजर आता। भोजन मे गोश्त, मुर्ग-मुसल्लम के अलावा सिवैंयां वगैरह भी होती! इसके बाद सिद्दीकी साहब अक्सर कोतवाली मे नजर आते। किसी की जमानत करवाते, किसी को हवालात से छुडाते या किरायेदार और मालिक मकान के झगड़े निपटाते।

शिवलाल के मामले में वे इसीलिए यकायक सक्रिय हो गये थे कि शहर में नया कोतवाल आया था। लोगों की भीड़ देख कर कोतवाल साहब बाहर आये तो सिद्दीकी साहब को पहचानने में जरा देर न लगी कि ये वही शिवमूर्ति दुबे थे जो चार पांच साल पहले किसी मामले में निलम्बित हो गये थे और सिद्दीकी साहब की ख्याति सुनकर उनके पास सिफ़ारिश के लिए आए थे। सिद्दीकी साहब उनके लिए कई बार लखनऊ गये थे और अन्ततः डी आई जी रेंज तक सिफारिश पहुँचाने मे सफल भी हो गये थे। इसके बाद उनकी दुबे जी से भेंट न हुई। आज यकायक उन्हें सामने पा कर उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। अपने थाने के दरोगा से वह ऊब चुके थे और आजकल इसी कोशिश में थे कि किसी तरह उसका तबादला कराया जाये।

दुबेजी दोनों हाथ फैलाये सिद्दीकी साहब की तरफ़ लपके। सिद्दीकी साहब भी उसी मुद्रा में आ गये। फिर क्या था, जुलूस भौचक्का रह गया। सिद्दीकी साहब ने भीड के सामने दुबेजी की तारीफ़ में बड़ा ओजपूर्ण भाषण दिया कि अब दुबेजी के आ जाने से शहर की कानून व्यवस्था सुधर जाएगी। दुबेजी जिस थाने में भी गये, गुण्डों का सफ़ाया ही किया। दुबेजी शहर मे गुण्डों, जुआरियों और असामाजिक तत्त्वों के लिए यमराज बन कर आए है। सिद्दीकी साहब ने जेब से दस दस के दो नोट निकाल कर फ़ज़ल अली को दे दिए कि सब लोगो को चाय नाश्ता करवाओ।

भीड़ ने सिद्दीकी साहब के लिए दो चार नारे बुलन्द किए और फ़ज़ल अली के पीछे पीछे गली में लौट गई।

सिद्दीकी साहब ने अन्दर घुसते ही थानेदार की शिकायत की और कहा कि वह औरतो से बदसलूकी करता है। आज आप यहाँ न होते तो दंगा हो जाता।

'मैं देख लूंगा, आप परेशान न हों।' दुबेजी की आँखों मे चमक आ गयी, "आप किस औरत की बात कर रहे है?"

"अरे निहायत शरीफ़ औरत है।' सिद्दीकी साहब बोले. "मुहल्ले की ही है। आप फ़ोन कर के एस० ओ० को फौरन हिदायत कर दें कि उक्त दरोगा को हमारी बीट से हटा ले।"

सिद्दीकी साहब ने बड़ा आसान काम बताया था, कोतवाल साहब ने फौरन एस० ओ० को फोन मिलवाया और हिदायत कर दी। सिद्दीकी साहब बेहद खुश हो गये।

"सच पूछिए भाई साहब, मैं प्रोफेशनल नेता नही हूँ। मगर कोई गरीबों को परेशान करे, यह मुझ से बर्दाश्त नही होता। बताइए एक शरीफ़ आदमी चक्की पीस कर किसी तरह से इस महँगाई में अपना गुजारा कर रहा है और यह दारोगा लगा उसी को सताने। अगर उसने किसी कबाड़ी से पट्टा खरीद ही लिया तो इस मे कौन आफ़त आ गयी।'

'सिद्दीकी साहब, हम लोग तो कानून से बँधे रहते है। पट्टा जरूर चोरी का होगा और चोरो के खिलाफ़ हमें तो कार्यवाही करनी ही पड़ेगी। कार्यवाही न करेंगे तो आप ही कल जुलूस लेकर चले आएँगे। कहिए मैं गलत कह रहा हूँ?'

'आप बिलकुल दुरुस्त फर्मा रहे हैं। मगर दारोगा को यह तो देख लेना चाहिए कि तफतीश करते समय शरीफ़ लोगों को परेशान न करे।'

'अब क्या बताएँ, शरीफ़ लोग ही जल्दी पैसा निकालते है।' दुबे जी जोर

से हँसे, 'मैं इन अफ़सरों की रग-रग पहचानता हूँ। बहरहाल मैं थाने को बोल दूँगा। उसे कोई परेशानी हो तो मुझ से मिल ले। आप का हवाला काफ़ी होगा।'

सिद्दीकी साहब उठ दिए, 'सुनते है रस्तोगी साहब डी. आई. जी. रेंज हो कर आ रहे हैं ? वो आ जाएँ तो फिर आपको कोई तकलीफ़ न होगी।'

'फिलहाल तो मुझे कोई तकलीफ़ नही है।'

'अल्लाह करे कभी न हो।' सिद्दीकी साहब ने हाथ उठा दिये, 'खुदा हाफ़िज।'

गली में सिद्दीकी साहब का रुतबा बढ़ गया था। उनके कार्यकर्ता चाय अंडा खा कर बढा चढा कर सिद्दीकी साहब का गुणगान कर रहे थे। शिवलाल सिद्दीकी साहब से इतना मुतआसिर था कि छाँट छाँट कर हिन्दुओ को गालियाँ दे रहा था।

'कोई साला मदद को नहीं आया,' वह खाट पर बैठा चिल्ला रहा था, 'साले पुलिस देख कर घरों मे दुबक गये।'

'तुम भी मुसलमान हो जाओ।' पण्डित को शिवलाल की बात बहुत नागवार गुजरी, बोला, 'जाओ सुन्नत करवा लो और मौलवी को बुला कर अपना धर्म बदल लो। तुम हिन्दू होने लायक ही नही हो। तुम्हारी मति मारी गयी है। मैं तुम्हारे इरादे समझता हूँ तुम एक और शादी रचाना चाहते हो।'

'न बाबा न। शादी से मैं बाज आया। एक हरामजादी ही काफ़ी है।'

सिद्दीकी साहब को आते देख शिवलाल खड़ा हो गया और उनके पैरों पर गिर पड़ा, 'आपने बड़ी मदद की है हुजूर। मैं जिन्दगी भर इस एहसान को न भूल पाऊँगा।'

'उठो उठो, यह सब क्या कर रहे हो। मर्द बनो। इस तरह की परेशानियाँ तो लगी ही रहती है। मैंने दारोगा का तबादला करवा दिया है। कोतवाल साहब से भी बोल दिया है। कोई परेशान न करेगा। कोई परेशानी हो तो जा कर कोतवाल साहब से मिल लेना।'

'अब आप चाय पी कर ही जाएँगे।' शिवलाल ने वही से आवाज दी, 'सुनती हो, दो कप बढ़िया चाय बना कर लाओ।'

सिद्दीकी साहब को देखकर वहाँ भीड़ जमा होने लगी।

'चाय का सिलसिला छोड़ो।' सिद्दीकी साहब ने कहा, 'मुझे अभी दोपहर की गाड़ी से लखनऊ जाना है। चाय फिर कभी।'

'अब आप ही हमारे रखसा कर सकत है।' गुलाबदेई ने पल्लू से सर ढाँपते हुए कहा, 'यह तो जेहल जाने से पहले ही प्रान तियाग देगा।'

'थाने से कोई आए तो मुझे बुलवा लीजिएगा।'

'अच्छा सरकार।'

सिद्दीकी साहब वहाँ से चल दिए। जाते जाते फिर ताकीद कर दी कि अगर कोई परेशानी हो तो जाकर दुबेजी से मिल लेना और मेरा हवाला दे देना।

'जी सरकार।' शिवलाल हाथ जोड़े पीछे-पीछे भागा।

सिद्दीकी साहब को लखनऊ पहुँचने की जल्दी थी। उनके एक मुलाकाती रफ़ीक साहब जल निगम में ऊँचे पद पर आ गये थे। इसी भरोसे उन्होंने एक अभियंता से एक हजार रुपये ले लिए थे कि उसका तबादला करवा देंगे। काम हो जाने पर दो हजार और मिलने की आशा थी। रफ़ीक साहब एक ईमानदार अफ़सर थे मगर उनकी बेगम हर वक्त उनकी नाक में दम किये रहती कि घर में लकड़ी का पार्टीशन तक नहीं। इतना बड़ा आंगन है कि पर्दा करना मुश्किल हो जाता है। पिछले दिनों सिद्दीकी साहब किसी शादी में सहारनपुर गये तो दूल्हे के भाई से छः सौ रुपये उधार माँग कर एक बहुत महीन नक़्काशी का पार्टीशन ले आए थे। वे जल्द से जल्द पार्टीशन बेगम साहिबा को नजर कर देना चाहते थे ताकि रफ़ीक साहब की मुलाकात दोस्ती में बदल जाए।

तीसरे दिन एक सिपाही आया और शिवलाल को अपने साथ थाने लिवा ले गया। गुलाबदेई सिद्दीकी साहब के घर की तरफ़ भागी। सिद्दीकी साहब शहर में नहीं थे। वह चक्की पर लौट आयी और बाहर खटिया पर बैठ कर रोने लगी। गुलाबदेई को रोते देख उसका छह माह का बच्चा भी उसके साथ-साथ रोने लगा। रोते रोते गुलाबदेई को अचानक याद आया कि सिद्दीकी साहब कह गये थे कि वे शहर में न हो तो वह कोतवाल साहब से मिल ले। उसने बच्चे को गोद में उठाया और कोतवाली की तरफ चल दी।

चलते चलते उसे लगा कि उसे कोतवाल साहब से मिलने इस तरह नहीं जाना चाहिए। वह मलाई वाली अम्माँ को बच्चा थमा कर लौट आई और कोठरी बन्द कर के खूब एड़ियाँ साफ़ की। उसके पास एक किरमिची रंग की साड़ी थी, जो उसने अब तक यह सोचकर न पहनी थी कि उसके साथ का ब्लाउज

स्लीवलेस था। आज शिवलाल नहीं था; उस ब्लाउज को आजमाने का भी अच्छा मौका था। मगर उस ब्लाउज ने एक नई समस्या खड़ी कर दी। उसे पहनने के लिए वह शिवलाल का रेज़र खोजने लगी। किसी तरह उसने अपने को ब्लाउज लायक बनाया। तैयार होकर उसने आईने में अपना रूप देखा तो मुग्ध हो गयी। वही गुलाबदेई जो कुछ देर पहले दालान में बैठी बिसूर रही थी, नहा धो कर और नये कपड़े पहन कर सँभल गयी।

कोतवाली घर से ज्यादा दूर नहीं थी। उसने बच्चे को ले जाना उचित न समझा और आँख बचा कर सामने की एक सँकरी गली में घुस गयी। वह नहीं चाहती थी कि गली के लोग उसे इस भेस में देखें। वह अपनी नंगी बाँहें साड़ी में लपेट कर तीर की तरह इमामबाड़े में घुस गयी। इमामबाड़े का दूसरा दरवाजा कोतवाली की तरफ़ खुलता था।

गली से निकल कर वह कुछ आश्वस्त हुई। बैंक के पास एक सिपाही खड़ा था। उसने बड़े अदब से पूछा कि कोतवाल साहब कहाँ मिलेंगे ?

'इस बखत तो बँगले पर मिलना चाहिए।' उसने कहा।

'बँगला कहाँ है ?'

'किसी भी रिक्शा वाले से दरियाफ़्त कर लो।' उसने कहा, 'दो दरवाजा बाहर।'

गुलाबदेई ने दो दरवाजा बाहर का रिक्शा किया और बैठ गयी। दो दरवाजा बाहर पहुँच कर उसने रिक्शेवाले से कहा, 'कोतवाल साहब के बँगले पर ले चलो।'

रिक्शेवाले ने बँगले के सामने रिक्शा रोक दिया।

'पूछ के आओ साहब है ?'

कोतवाल साहब के बंगले के बाहर पुलिस का टैन्ट पड़ा था। दो चार दारोगा लोग घूम रहे थे। एक मोटर साइकल खड़ी थी। एक आदमी टेलीफ़ोन पर बतिया रहा था। बँगले के अन्दर एक बड़ी सी कार खड़ी थी, जिसे दो सिपाही मन लगा कर पोंछ रहे थे।

'साहब है।' रिक्शा वाले ने लौट कर कहा।

'अन्दर कहलवा दो। सिद्दीकी साहब के यहाँ से कोई मिलने आया है।'

रिक्शावाले ने जा कर सिपाही से कहा। सिपाही को मालूम नहीं था कि सिद्दीकी साहब कौन है जब कि गुलाबदेई सोच रही थी कि सिद्दीकी साहब का नाम सुनते ही कोतवाल साहब उसकी अगवानी करने खुद चले आएँगे।

'अन्दर मीटिंग चल रही है।'

रिक्शावाला जल्दी में था, उसने चिरौरी की, 'अन्दर खबर तो करवा दीजिए।'

रिक्शावाले के चेहरे पर इतनी विनम्रता थी कि सिपाही बेमन से उठा और फाटक खोल कर अन्दर चला गया।

'साहब से कह दिया है।' उसने लौट कर कहा।

देर तक कोई पत्ता न हिला। गुलाबदेई रिक्शा में बैठे-बैठे बुरी तरह ऊब गयी। वह जल्द से जल्द काम निपटा कर अपने पुराने लिबास में आ जाना चाहती थी। दूसरे इस तरह रिक्शे में बैठे रहना उसे बहुत अटपटा लग रहा था। हर आने-जाने वाला बहुत उत्सुकता से उसकी तरफ देख जाता। शिवलाल को पता चले तो वह प्राण ही ले ले। रिक्शावाला अलग बड़बडा रहा था। गुलाबदेई के पास दस बारह रुपये थे जो उसने औरतों की तरह वक्ष मे खोस रखे थे। वह सोच रही थी कि रिक्शा वाला हटे तो उसे एक रुपया चाय-पानी के लिए दे दे। मगर रिक्शावाला था कि वही सड़क पर बैठ गया और टकटकी लगा कर उसे ही देखने लगा। बीच बीच में वह बेचैन हो जाता और उठ कर टहलने लगता।

'जाने कब बुलायेंगे। बुलवायेंगे भी कि नहीं।' उसने कहा, 'आप दूसरा रिक्शा कर लीजिए।'

गुलाबदेई ने आखिर रुपया निकालने का फैसला कर ही लिया। उसने खजाने मे ही गिन कर रुपये का एक नोट निकाल कर उसे दे दिया, 'जा चाय पी आ।'

रिक्शा वाला अब तक उसके प्रेम मे पड़ चुका था। गुलाबदेई की गोल गुदाज और मुलायम बाहों पर फिदा हो गया, बोला, 'अब चाय न पीबै।'

'क्यों, का भवा ?'

'बस अब चाय न पीबै। खाना न खाब। भूखा ही रहब।'

'लो लो पैसे ले लो।'

''न, हम पैसा भी न लेब।'

देखते-देखते रिक्शा वाले की नजर बदल गयी। जाने उसकी निगाहों मे क्या भाव आ गया कि गुलाबदेई डर गयी। कहीं यह भगा कर तो नहीं ले जायेगा ? टैंट में बैठे सिपाही लोग भी सक्रिय हो रहे थे। गुलाबदेई बच्चे को दूध पिला कर नहीं आई थी। वह भी परेशान हो रहा होगा और खूब रो रहा होगा। अभी साहब थे, मुलाकात हो सकती थी। फिर जाने कहाँ निकल जाएँ।

तभी कुछ दारोगा लोग अन्दर से निकले और मोटर साइकिल पर हवा

हो गये। उनके जाते ही अन्दर से बुलावा आ गया।

गुलाबदेई सिपाही के पीछे-पीछे चल दी।

एक बहुत बड़ा कमरा था। गुलाबदेई ने तो इतना बड़ा कमरा ही पहली बार देखा था। चारों तरफ़ पर्दे लटक रहे थे। सोफ़े पर एक लड़का-सा बैठा था।

'साहब कहाँ है ?'

लड़का मुस्कराया, 'कौन साहब ?'

'कोतवाल साहब !'

वह मुस्कराया 'आजकल तो शहर कोतवाल मैं ही हूँ।'

'मुझे सिद्दीकी साहब ने भेजा है।'

'आओ।' कोतवाल साहब ने कहा और अपने पास सोफ़े को थपथपाते हुए बोले, 'आओ।'

गुलाबदेई की नजर में अब सिद्दीकी साहब का रुतबा बढ़ा। कोतवाल साहब कितनी आत्मीयता से बुला रहे हैं।

वह धीरे धीरे वहाँ जा कर खड़ी हो गयी, जहाँ बैठने के लिए उन्होंने इशारा किया था। कोतवाल साहब ने सिर से पैर तक उसे देखा।

'तुम्हारी बाँहें बहुत खूबसूरत हैं।' उन्होंने गुलाबदेई की बाँह पर हाथ फेरा और अपने पास बैठा लिया, बोले, 'कहो, क्या परेशानी है ?'

कोतवाल साहब ने गुलाबदेई की बाँह थाम ली और अपने सीने की तरफ़ उसे खींच लिया, 'तुम बहुत खूबसूरत हो।'

कोतवाल साहब दिल में छिपे थे। उन्होंने गुलाबदेई के गाल को काट खाया। गुलाबदेई दहशत में उठ कर भागने लगी कि कोतवाल साहब की मजबूत गिरिफ्त ने ऐसा झटका दिया कि वह उनकी गोद में आ गिरी।

'मैं अभी फ़ोन कर देता हूँ।' कोतवाल साहब ने बैठे बैठे ही नम्बर मिलाना चाहा। दूसरा हाथ ख़ाली हो गया और गुलाबदेई के बदन की तमाम गोलाइयाँ नापने लगा।

'क्या नाम है तुम्हारे मर्द का ?' कोतवाल साहब ने पूछा।

गुलाबदेई हतप्रभ।

'क्या नाम है ? सिद्दीकी साहब मजे में हैं ? तुम्हारी बहुत तरीफ कर रहे थे।' कोतवाल साहब ने कहा, 'मुझे अभी मीटिंग में जाना है। गाड़ी आ गयी है। कल आना इसी वक्त।'

कोतवाल साहब टेलीफोन की घंटी देर से अनसुनी कर रहे थे, आखिर उन्होंने रिसीवर उठाया और बोले, 'सर, बस निकल रहा हूँ।'

गुलाबदेई को वहीं छोड़ वे वर्दी पहनने लगे। उसकी उपस्थिति में ही उन्होंने पाजामा उतार दिया और अल्मारी में पतलून खोजने लगे।

गुलाबदेई शर्म से गड़ी जा रही थी। उसे लग रहा था कि वह अब किसी को शकल दिखाने लायक नहीं रह गयी। यहाँ तक कि उसे कमरे से बाहर निकलने में भी झेंप लग रही थी। बाहर खड़ा रिक्शा वाला क्या सोच रहा होगा।

कोतवाल साहब वर्दी में लैस हो गये। वह वहीं जड़ खड़ी थी। कोतवाल साहब ने आखिर में गले में पिस्तौल लटका ली और बोले, 'रुकने का इरादा हो तो दूसरे कमरे मे जा कर आराम कर लो। मैं घण्टे भर में लौट आऊंगा।'

वह ब्रश से अपने जूते चमकाते हुए बोले, 'तुम्हारा मर्द आज छूट जाएगा, मगर तुम कल जरूर आना। आने का इरादा न हो तो उसे पड़ा रहने दूँ। बोलो?'

गुलाबदेई उसी प्रकार सर झुकाए खड़ी रही। कोतवाल साहब बाहर निकल गये। उनके पीछे धीरे-धीरे दरवाजा बन्द होने लगा। गुलाबदेई ने अपना हुलिया ठीक किया और दरवाजे की तरफ़ बढ़ गयी। उसने देखा साहब को जाते देख कर तमाम पुलिस के सिपाही सावधान की मुद्रा में खड़े हो गये थे। कार के बँगले से निकलते ही सब लोग ढीले हो गये।

गुलाबदेई सर झुकाए उनके पास से गुजर गयी। वह शर्म से कुछ इस प्रकार गड़ी जा रही थी जैसे निर्वस्त्र हो। उसकी आँखें सुर्ख हो गयी थीं और आँखों मे घने बादल छा गये थे। बाहर आ कर उसने पाया, रिक्शावाला जा चुका था।

पास ही एक दूसरा रिक्शा खड़ा था। गुलाबदेई रिक्शे में बैठ गयी और बोली, 'इकबाल गंज।'

रिक्शावाला मजे में भुट्टा खा रहा था। उसने जल्दी से दो-चार जगह पचड़ा लगाया और अंगोछे से मुँह पोंछ कर तैयार हो गया।

दूसरे दिन शिवलाल की जमानत का सवाल उठा। गुलाबदेई का कहीं कोई परिचय नहीं था। शिवलाल की मां सुबह-सुबह चली आयी थी। गुलाब

देई ने जब जमानत का इन्तजाम करने की बात की तो वह भड़क उठी····

'तू कुलच्छिनी कहाँ से चली आयी मेरे घर में। मेरे लड़के को ऐसा चूस लिया कि बेचारे का हाड़ ही बचा है। अब तेरे ही कुकर्मों से वह जेहल में चला गया।' शिवलाल की माँ सहसा छाती पीटने लगी।

'तू पैदा होते ही क्यों न मर गयी। खुद तो टिमाटर की तरह ललिया रही है, वह बेचारा जेहल में चक्की पीस रहा है। जाने तुम कैसी चुड़ैल हो कि तुम से शादी होते ही दांत उसके गिरने लगे, बाल उसके सफेद हो गये। कलमुँही तुम ने उसके खून में न जाने क्या जहर मिला दिया है।'

अम्मा मौलवी साहब बता रहे थे, कोई ऐसा आदमी तैयार करो जो एक हजार की जमानत ले ले।'

'तुझे मौत क्यों न आयी। पहली बहू से वह कितना खुश था।'

दरअसल शिवलाल की माँ को बहू को कोसने का सुनहरा अवसर अनायास मिल गया था। वह उसका भर पेट इस्तेमाल कर लेना चाहती थी।

'अम्मा यह सब बाद में हो जाई। पहले जमानत का परबन्ध कर लो।' गुलाबदेई बोली, 'बाद में चाहे मुझे जो सजा दिलवाई देव।'

गुलाबदेई ने बुढ़िया की बातों में समय नष्ट करना उचित न समझा। वह गली-मुहल्ले वालों से परामर्श कर लेना चाहती थी।

वह दिनभर दौड़-धूप करती रही। गुलाबदेई के हाथ निराशा ही लगी थी। सिर्फ एक हजार रुपये की जमानत का भी वह इंतजाम न कर पा रही थी। हर आदमी अपनी असमर्थता प्रकट कर चुका था। मुहल्ले में जितने भी सम्मानित लोग रहते थे, सबने कोई न कोई बहाना बना दिया था ''। फारूकी साहब ने कहा कि वे सरकारी नौकर हैं जमानत नही ले सकते। रुई वाले ने कहा, वे लोग आजतक कचहरी नही गये। मलाई वाली ने कहा, वह टैक्स नही देती। सरकार उसे भी धर लेगी। एक प्रेस वाला था, बोला मेरा तो सब कुछ कर्ज का है। कर्ज देने के पहले बैंक ने लिखवा लिया था कि वह किसी की जमानत नही लेगा। गुलाबदेई को अपनी असली हैसियत का आभास हो गया। उसे लगा, समाज में उसकी कोई स्थिति नही। शिवलाल के प्रति उसका मन बहुत आर्द्र हो आया।

आखिर गुलाबदेई को मास्टर जी का खयाल आया। मास्टर लक्ष्मीशंकर श्रीवास्तव जब चक्की पर आते थे, हमेशा आदर्शों की बातें करते थे। शिवलाल भी उनका बहुत आदर करता था। शिवलाल बताया करता, 'मैंने मास्टरजी को अपनी आँखों से बूढ़े होते देखा है। डी० एम० साहब की गाड़ी इनके यहाँ खड़ी रहती थी। ट्यूशन करते थे उनके यहाँ, मगर शर्त रख दी

थी कि आपकी गाड़ी ले जाएगी और छोड़ जाएगी। सन्तान भी ईश्वर ने बहुत समझदार दी। बड़ा लड़का एक फैक्टरी में मैनेजर है और छोटे का अपना कारोबार है।'

गुलाबदेई ने सोचा, क्यों न मास्टर साहब के सामने अपनी विथा कहे। अन्तिम ठौर मान कर मास्टर साहब के यहाँ गयी। मास्टर साहब चौतरे पर बैठे किताब पढ़ रहे थे। गुलाबदेई को देख कर अपनी भवें नाक के केन्द्र में लाते हुए बोले, 'क्यों बहू, कैसे आई हो ?'

'एक तकलीफ देने आयी हूँ। आशा है, आप निराश न करेंगे।'

मास्टर जी कुर्सी से उठ गये। बोले, 'अन्दर आकर अपनी तकलीफ बताओ।'

गुलाबदेई अन्दर की तरफ चल दी। मास्टर जी अपनी छड़ी उठाये उसके पीछे-पीछे। मास्टरजी ने गुलाबदेई की पीठ थपथपाते हुए कहा, 'यहीं दालान में बैठते हैं। बैठक का तो ताला भी मुझसे न खुलेगा।'

गुलाबदेई एक कुर्सी के पास नीचे ही जमीन पर बैठ गयी। मास्टर जी को यह अच्छा न लगा, ज़िद करने लगे कि उसे मोढ़े पर ही बैठना चाहिए। उन्होंने गुलाबदेई को बाँह से पकड़ा और उसे उठाने लगे, 'हमारे यहाँ कोई भेद-भाव नहीं। सुहागिनें यों जमीन पर नहीं बैठती।'

गुलाबदेई को लगा, जैसे लकड़ी के निर्जीव हाथ उसे छू रहे हैं। उसकी बाँह पर झुरझुरी-सी हुई जैसे कोई तिलचट्टा रेंग गया हो। मास्टर जी के अनुरोध को तुरन्त समाप्त करने के इरादे से वह मोढ़े पर बैठ गयी। घबराहट में उसका पल्लू नीचे गिर गया। वास्तव में मास्टर जी की निगाहों से ही उसे मालूम हुआ कि पल्लू जगह पर नहीं है।

'देखो बेटे, हमेशा संभल कर बैठना चाहिए। अब ऐसा जमाना नहीं रहा कि आप अपने बदन के प्रति लापरवाह रहें।' पकड़े जाने पर मास्टर जी ने खिसियाते हुए कहा, 'मैं तो अपनी बहू को सख्त हिदायत कर दूँगा कि वह बिना बाँहों का ब्लाउज न पहने। हमेशा सिर पर पल्लू रखें।'

गुलाबदेई ने तुरन्त सिर पर पल्लू ओढ़ लिया।

'अब बताओ क्या बात है।' मास्टर जी ने छड़ी टाँगों के बीच कर सी और उसकी मूँठ पर मुँह टिका कर बोले, 'शिवलाल के बारे में मालूम हुआ था। मैंने कभी नहीं सोचा था, वह चोरी-चमारी भी करता होगा। जो आदमी चोरी करेगा या चोरी का सामान खरीदेगा, उसे फिर उसके परिणाम भी भुगतने पड़ेंगे। मैं अक्सर देखा करता था कि कोल्हू के बैल की तरह काम पर तो वह तुम्हें लगाये रखता था और खुद खटिया पर पड़ा रहता। सच पूछो तो

मैंने उसे हमेशा खटिया पर ही देखा है। हो सकता है उसे कोई रोग हो। वैसे यह महज आलस भी हो सकता है। आलस से बड़ा रोग इस संसार में नही। इस आलस ने हमारे पूरे समाज को खोखला कर दिया है। वरना सोचो, हमारा प्रदेश कितना बडा है। विश्व के अनेक देश जनसंख्या, आकार व प्राकृतिक साधनों में हमारे प्रदेश से छोटे है। हमारे प्रदेश की क्या आर्थिक दुर्दशा है, तुम देख ही रही हो।.....'

मास्टरजी बोले जा रहे थे और गुलाबदेई ठगी-सी उन्हें सुनती जा रही थी, वह मास्टरजी से प्रार्थना करना चाहती थी पर उपयुक्त सम्बोधन उसे नही मिल रहा था। आखिर वह बोली, 'बाबूजी, बच्चे गलती करते है और बड़े उन्हे मुआफ़ करते हैं और अब उनकी रक्शा आप ही करेंगे।'

'कौन किसकी रक्षा कर सकता है।' मास्टर जी ने अपने दोनों हाथ आसमान की तरफ उठाते हुए कहा, 'कोई किसी की रक्षा नही कर सकता। सब पूरब जन्मों का लेखा है।'

गुलाबदेई को आशा नही थी कि इस तरह ईश्वर पर बात डाल कर मास्टर जी मुक्त हो जायेंगे। वह अनुनय पूर्वक बोली—'बाबू जी, मौलवीजी बता रहे थे, कोई जमानत ले ले तो वे आ जायेंगे।'

'मेरी मानो तो उसे कुछ रोज जेल की हवा खाने दो।' मास्टर जी ने कहा, 'तुम्हारा भी कितना अपमान करता था। चार-छह दिन अन्दर रह लेगा, होश ठिकाने आ जायेंगे। मैंने खुद देखा है उसे तुम्हें डंडे से पीटते हुए। ऐसे राक्षस के लिए वही जगह माकूल है।'

गुलाबदेई रुआंसी हो गयी, बोली, 'बाबूजी, है तो अपना ही मर्द। औरत की तो हर तरफ दुर्दशा है। वह घर में नही हैं तो पूरा घर काटने को दौड़ता है। अपनी ही साँस से डर लगता है।'

'तू नादान औरत है। बदतमीजी की सजा तुम तो उसे दे नही सकती और जब सरकार दे रही है तुम उसमें बाधा पहुँचाना चाहती हो?'

गुलाबदेई ने देखा कि यहाँ दाल न गलेगी। वह निराश-हताश उठी तो मास्टर लक्ष्मीशंकर श्रीवास्तव भी उठ खड़े हुए। उठते ही वे गिरते-गिरते बचे। गुलाबदेई का कन्धा थाम कर किसी तरह गिरने से बचे।

'यह बुढापा भी नरक है।' वह गुलाबदेई के कन्धे पर अपना वजन डालते हुए बोले, 'दस मिनट भी नही बैठा कि टाँग सो गयी।'

मास्टर जी लंगड़ाते-लंगड़ाते गुलाबदेई के साथ चलने लगे। दरवाजे तक पहुँचते-पहुँचते उनकी टाँग ठीक हो गयी। गुलाबदेई की कमर के पास थप-थपाते हुए बोले, 'तुम घबराओ नही। जरूरत पड़ी तो मैं खुद जाकर शिव-

लाल को छुड़ा लाऊँगा।'

गुलाबदेई ने पीछे मुड़ कर भी न देखा। मास्टरजी को बिना नमस्कार किये वह चक्की की तरफ चल दी। उसकी इच्छा हो रही थी, पलट कर उनके मुँह पर थूक दे।

मास्टरजी के घर से निकलकर गुलाबदेई को हजरी बी का ध्यान आया। हजरी बी को उसने हमेशा दूसरों के लिए ही दौड़ते देखा था। अगर कभी गुलाबदेई ने मजाक में भी कह दिया कि उसका सर भारी है तो वह घंटों सर दावती। इधर कई दिनों से हजरी बी दिखायी नहीं दी थी। गुलाबदेई हजरी की कोठरी की तरफ़ चल दी।

सड़क हमेशा की तरह कूड़े का ढेर बनी हुई थी। आज नालियों की सफ़ाई हुई थी। रही सही सफाई काले कचरे के ढेरों ने पूरी कर दी थी। उसी कचरे के ऊपर से रिक्शे आ-जा रहे थे। बीच में थोड़ी-सी खुली जगह थी। गुलाबदेई दोनो हाथों से अपनी धोती बचाती चल रही थी। आगे एक कुत्ता मरा पड़ा था और रिक्शे वग़ैरह उसके ऊपर से आराम से आ-जा रहे थे।

हजरी बी कोठरी में नहीं थी। कोठरी में अंधेरा था। एक तरफ़ खटिया पर कपड़े-लत्ते पड़े थे और एक तरफ अल्युमिनियम के कुछ टेढ़े-मेढ़े बर्तन। गुलाबदेई ने दो-तीन बार हजरी बी, हजरी बी पुकारा मगर अन्दर से कोई आवाज़ न आयी।

हजरी की कोठरी से जरा हट कर नल पर बहुत से लोग नहा रहे थे। गुलाबदेई ने हजरी के बारे में दरियाफ़्त किया तो एक आदमी लोटे से अपने बदन पर पानी डालते हुए बोला, 'किसी मस्जिद के आगे बैठी भीख माँग रही होगी।'

गुलाबदेई की समझ में कुछ न आया। प्रायः लोग उसके बारे में अनाप-शनाप बोला करते थे। इस समय गुलाबदेई को हजरी के बारे में यह सुनना अच्छा न लगा। तभी उसे पंडित दिख गया। वह कच्छा पहने कहीं से लौट रहा था, हाथ में दो मूलियाँ थीं।

'पंडित जी, कहीं हजरी बी को देखा है?'

'हजरी तो दिन भर अस्पताल में रहती है।'

'अस्पताल में?'

'हाँ, वह बाकर था न सारंगी बजाने वाला। आजकल उसी की सेवा में लगी है। कहते हैं उसके बचने की उम्मीद नहीं।'

गुलाबदेई बहुत निराश हो गयी। चलने लगी तो पंडित ने कहा—'प्रशासक जी से मुलाकात हो नहीं पा रही। मैंने शिवलाल के बारे में सुना था। आजकल में उनसे ज़िक्र करूंगा। मुझे पहले पता होता कि कोई गड़बड़ है तो थाने में कहलवा देता। मगर आप लोग मुझे अपना मानें तब तो। बहरहाल आज मैं शिवलाल से मिल कर आऊंगा।'

गुलाबदेई पर पंडित की बातों का कोई असर न हुआ। उसे पंडित हमेशा ही गप्पी और बड़बोले स्वभाव का लगा है। वह चुपचाप वहाँ से चल दी। घर की तरफ़ जाने में उसके प्राण निकल रहे थे। बिना शिवलाल के कोठरी उसे काटने को दौड़ती थी और फिर मियादी बुखार सी वह बुढ़िया जो कल तक खुद ही शिवलाल को गाली देती फिरती थी, आज शिवलाल की तमाम मुसीबतों को गुलाबदेई के मत्थे मढ़ रही थी।

सामने हकीमजी का चौतरा दिखायी पड़ रहा था। बूढा बाकर सर्दी-गर्मी इसी चौतरे पर सोता था। इस वक्त चौतरे पर एक कुत्ता दोनों पंजे आगे फैलाये लेटा हुआ था। हकीम जी के कमरे मे कुछ खाली शीशियां पड़ी थी और हमेशा की तरह, अंधेरे में उनकी बूढ़ी बेवा मोढ़े पर चुपचाप बैठी थी। गुलाबदेई की इच्छा हुई कि वह अम्मा से बाकर के बारे में पूछताछ कर ले मगर उसकी हिम्मत न हुई। वह कौन होती है दूसरे की खोज-खबर लेने वाली जबकि उसका अपना मर्द अन्दर है। दूसरे, बूढ़ों से वह एक खास किस्म का खौफ़ खाने लगी थी।

चक्की पर सन्नाटा था। उसकी सास छोटे बच्चे को लेकर कहीं निकल गयी थी। दो-तीन कनस्तर रखे थे, शायद इसी वजह से शिवलाल की मां खिसक गयी थी कि कही पिसाई न करनी पड़े। गुलाबदेई का मन बहुत बेचैन था। उसी बेचैनी में वह आटा पीसने में जुट गयी। उसने बटन दबाया और बहुत ही तेज रफ़्तार में पट्टा चलने लगा। उसने तीनों कनस्तरों का अलग-अलग वजन किया और पिसाई में लग गयी। उसने तय किया, आटा पीसने के बाद वह किसी से पूछ-ताछ कर हजरी से मिलने अस्पताल हो आयेगी। उसकी आशाओं का केन्द्र इस समय हजरी ही थी।

हजरी इस होटल की सबसे पुरानी बाशिन्दा थी। हजरी उन दिनों की यादगार है, जब गली में सांझ घिरते ही पायल बजने लगती, हारमोनियम और सारंगी—रात-रात भर जवान रहते। बूढ़े सारंगीवादक बाकर के अलावा बाकी तमाम साजिन्दे धीरे-धीरे या तो खुदा को प्यारे हो गये थे या रेडियो में भरती। बाकर भी इसलिए बचा रह गया था कि बीस बरस पहले आकाशवाणी में सारंगीवादक के रूप में भरती हो गया था। पिछले बरस एके-बाद-दीगरे उसके साथ दो दुर्घटनाएं हो गयी, जिनसे वह पूरी तरह टूट गया। दूसरे शब्दों मे कहा जा सकता है, शहनाज की बेरुखी और रिटायरमेंट एक साथ कुफ्र की तरह उसके ऊपर टूटे थे। शहनाज को खोकर और रिटायरमेंट पाकर वह बेहद अकेला हो गया। अकेलेपन से आक्रान्त होकर वह रात-रात भर पागलों की तरह सारंगी बजाता। मुहल्ले वाले समझते बाकर मौत को बुला रहा है। बाकर को इस दीवानगी के आलम में देख कर हजरी बी जाड़े की बेहद बर्फीली रात में भी अपने सूती लिबास में ठिठुरती हुई गली में आकर चिल्लाने लगती, 'बाकर सो जाओ। सारी दुनिया सो गयी है। तुम्हारी सारंगी सुन कर न तो अब जरीना लौट सकती है और न नौकरी! तुम्हारी सारंगी की तान सुनकर मेरे जिगर मे कुछ डूबने लगता है। बाकर बन्द करो अब अपना यह कारोबार। मेरी बूढ़ी हड्डियां लरजने लगती हैं। अल्लाह ने मुझे अक्ल दी होती तो मैं भी शहनाज बेगम की तरह कोयलों की दलाली करने लगती और तुम्हें कभी यों लाचार न देखती।'

बाकर की बीवी जरीना अपने जमाने की मशहूर तवायफ थी। विभाजन से बहुत पहले वह खुदा को प्यारी हो चुकी थी। बाद का वक्त उसने शहनाज के दर पर ही बिताया था।

बाकर की दाढ़ी बढ़ी हुई थी। उसकी लम्बी कलात्मक उंगुलियां सूख कर मोमी की बेल की तरह हो गयी थीं। आंखों में कीचड़ भरी थी। कपड़ों से

बदबू आ रही थी और यही बाकर जो एक भिखारी की तरह हकीमजी के चौतरे पर निढाल पड़ा रहता, जाने शाम घिरते ही कैसे इतना बेकाबू हो जाता कि पागलों की तरह सारंगी में गर्क हो जाता। कुछ राहगीर सारंगी सुनने को खड़े हो जाते और जाते-जाते एकाध सिक्का फेंक जाते। बाकर वे सिक्के मुहल्ले के बच्चों में बाँट देता। बच्चे इतने होशियार हो गये थे कि सुबह उठते ही सिक्के बटोर लेते, जैसे दीवाली के दूसरे रोज बच्चे दीवारों पर से मोम बटोरा करते हैं।

हकीमजी के बच्चों में सारंगी के प्रति बेहद लगाव था, यह दूसरी बात है कि वे आजकल केवल 'मृतसंजीवनी' सुरा के नाम पर ठर्रा बनाते थे। खुद पीते थे और पूरे मुहल्ले को पिलाते थे। लड़कों मे हकीमजी का कोई गुण नहीं आया, सिवाय इसके कि वे अपने बाप की तरह खुदातर्स, भावुक, दूसरों के दुःख को शिद्दत से महसूस करने वाले प्राणी थे। बाकर एक ऐसा कलाकार था कि उसे आज भी दूर-दूर से बुलाए आते थे। बड़ी से बड़ी गाने वालियां इस फ़िराक में रहती थीं कि बाकर मियाँ उनके साजिन्दों के साथ हो लें। इसमे कोई शुबहा नही बाकर मियाँ जिस किसी तवायफ के साथ हो जाता उसका धन्धा कुलाँचें भरने लगता। अपनी जवानी में बाकर का कोई सानी न था। लड़ाई के दिनों में जब अंग्रेजों ने शहर में छावनी डाली थी तो वह एक-से-एक रसिया फिरंगी को पकड़ के ले आता था। सारंगी पर लोकधुनें सुन कर कई गोरे इस कदर खुश हो जाते कि मुँहमाँगी बख्शीश देते।

बहुत पहले अजीजन की ख्वाहिश थी कि बाकर उसके साजिन्दों मे शामिल हो जाए। बाकर को अजीजन के महत्व का एहसास था, मगर वह जिद्दी आदमी था। उसकी जिद थी कि वह अपने साथ अपना तबलची भी लायेगा और अजीजन अपने पुराने तबलची नियाज को किसी भी सूरत मे छोड़ने को तैयार न थी।

आखिर अजीजन ही उसके काम आयी। जब एक-एक कर सब खैरख्वाह लोग कन्नी काट गये और अजीजन को इत्तिला हुई कि बाकर मौत के कगार पर खड़ा है तो वह तुरन्त हकीमजी के चौतरे पर जा पहुँची।

'खैरियत तो है बाकर भाई ?' अजीजन ने बाकर के गर्म माथे पर अपनी हथेली टिकाते हुए पूछा था।

'इनायत है, अजीजन बी।' उसने उठने की कोशिश करते हुए कहा, मगर

उठ न पाया। इसी क्रम में उसे खाँसी का दौरा पड़ा। फिर वह कुछ बोल नहीं पाया। अपनी दुबली बीमार और कृश उँगलियों से उसके प्रति आभार प्रकट करता रहा।

'मैं तुम्हें अस्पताल में दाखिल करवाने की कोशिश करूँगी।' अज़ीजन ने कहा और सचमुच अस्पताल की ओर चल दी।

अस्पताल में अज़ीजन बी के एक परिचित डाक्टर थे, डा० उस्मानी। डा० उस्मानी के पिता अज़ीजन के अच्छे दोस्त थे। उसने अस्पताल जाकर उनके बारे में पूछा तो मालूम हुआ कि वे छुट्टी पर हैं। अज़ीजन ने वहीं अस्पताल से टेलीफोन पर उनसे बात की। डा० उस्मानी ने बाकर के दाखिले का इन्तजाम करा दिया।

अगले रोज जब एम्बुलेंस गली में दाखिल हुई तो हकीम जी के चौतरे पर भीड़ लग गयी थी। बच्चों, बूढ़ों, बूढ़ियों की भीड़। सब लोग अज़ीजन की तरफ कृतज्ञता से देख रहे थे। पोर्टर जब बाकर को स्ट्रैचर में डालते समय उसकी तरफ घिन से देखने लगे तो अज़ीजन ने दोनों को पाँच-पाँच के नोट थमा दिये।

थोड़ी देर में एम्बुलेंस बाकर को लेकर चली गयी। हकीम जी का बड़का लड़का जो अक्सर मृतसंजीवनी पी कर धुत्त रहता था और खुद अस्पताल में दाखिल होने लायक था, एम्बुलेंस के सामने लेट गया कि वह साथ में जायगा।

एम्बुलेंस बाकर को लेकर रवाना हुई तो हजरी गश खाकर वहीं चौतरे पर गिर गयी। लोगों ने ठण्डे पानी की कुछ बूँदें उसके मुँह में डालीं तो वह घिरनी की तरह चौकस हो गयी और शहनाज बेगम की दुकान के सामने जा कर उसने जम कर सियापा किया।

शहनाज बेगम से हजरी को शुरू से ही रश्क रहा है। शहनाज बेगम ने, मुहल्ले में बार-बार पुलिस को छापे मारते देखा तो घोषणा कर दी कि हिन्दुस्तान आजाद हो गया है। अब यह सब नहीं चलेगा। लोग फिल्लम देखेंगे और हमारा गाना सुनने जो आयेगा, पुलिस मार-मार के भरता बना देगी। कोयले खरीदने के लिए उसे दूर जाना पड़ता था, उसने सोचा, क्यों न कोयले का धन्धा ही शुरू किया जाए। दिन भर में दो-तीन रुपये जरूर मिल जाएँगे। उसे भी आराम हो जायेगा और मुहल्ले वालों को भी। उसके पास एक मकान था और कुछ नहीं था। मकान का वह क्या करती, नीचे की कोठरी में अपनी नन्हीं-सी दुकान बैठा ली। कोयले की दुकान ही उसने क्यों खोली, वह खुद नहीं जानती।

'जिन्दगी भर काला धन्धा ही तो किया है।' वह कहती, 'यह इसी मुल्क

में हो सकता था कि संगीत और कलाएँ भी काला धन्धा बन कर रह गयीं।' वह कहती।

लोगों का ख़याल था कि जब शहनाज़ बेगम ने बाकर की अंटी से पूरा पैसा निकाल लिया तो लतिया दिया। जबकि सचाई यह थी कि शहनाज बेगम ने शुरू में ही अपनी सीमित आय में से भी बाकर की मदद की थी। डा० अस्करी को दिखाया था, इंजेक्शन भी लगवाये थे। मगर वह दिन-ब-दिन मजबूर होती चली गयी। उसका अपना बुढ़ापा उसके सामने मुंह बाये खड़ा था। इससे ज्यादा वह कर ही क्या सकती थी। बाकर ने भी कभी अपने मुंह से शहनाज़ की बुराई न की। जवानी में वह उस पर फ़िदा था मगर तब शहनाज़ उसकी पहुँच के बाहर थी। शहनाज़ उसे तब मिली थी, जब दोनों बूढ़े हो गये थे। अब उसकी जिन्दगी एक खुश्क पत्ते की तरह थी, जिधर से झोंका आता वह उधर हो लेता। और कहीं जगह नसीब न हुई तो इमामबाड़े में ही लेटा रहता। हजरी बी से उसकी यह हालत बरदाश्त न होती। वह शहनाज बेगम की दुकान के पास खड़ी होकर खूब गरियाती, 'खसम किया था तो जिन्दगी भर साथ निभाना था। तुममें इतनी भी मुरव्वत नहीं कि जाकर इमामबाड़े में उसे देख आओ। वह एक लावारिस लाश की तरह वहाँ पड़ा आखिरी साँसें गिन रहा है।'

शहनाज बेगम ने दसियों साल पहले तय कर लिया था कि वह हुजरी की किसी बात का जवाब न देगी। वह चुप रहती या उठ कर कहीं दूसरी जगह चली जाती। जाते-जाते एक वाक्य बोल जाती कि 'तुम्हारे चलते ही रँडी का जात बदनाम हुई है।' शहनाज बेगम तो इतना कह कर गायब हो जाती और कहीं एकान्त में बैठ कर सरौते से सुपारी काटती, मगर हजरी को पूरे हफ्ते के लिए मसाला मिल जाता।

बीच में हजरी बी नवाब साहब के यहाँ बर्तन मलने और कपड़े धोने का काम करने लगी थी। चूंकि हजरी ने जिन्दगी में कभी बर्तन नहीं मांजे थे और न कपड़े धोये थे, लिहाजा शाम को जब नवाब साहब खाना खाने बैठते तो झुंझलाने लगते, 'जब से यह हरामजादी घर में आने लगी है, न खाने का मजा रह गया और न पहनने का। मैंने तो यह सोच कर हाँ भर दी थी कि एक बे-सहारा औरत को सहारा मिल जायेगा। मगर जिसने जिन्दगी भर होटल का खाया हो और हराम का पहना हो, उसे क्या शऊर बर्तन मलने और कपड़े

'धोनें को'। मैंने तो ऐसे गिलास में कभी पानी नहीं पिया,' जिस पर उँगलियों के दाग हो।'

हजरी पूरे मुहल्ले मे गाती फिरती कि वह आजकल नवाब साहब के यहाँ 'काम कर रही हैं। जबकि वास्तविकता यह थी कि नवाब साहब का पूरा कुँनबा हजरी से पीछा छुड़ाने की फिराक में था। दूसरे नवाब साहब की बेगम को हजरी का यों हाथ नचा-नचा कर मर्दों के बीच जरूरत से ज्यादा बतियाना पसन्द भी न था। कई बार तो वह इतना नाराज हो जातीं कि हजरी से मँजे हुए बर्तन दुबारा मँजवाती। हजरी भी गुस्से में पटकते हुए बर्तन मलती। बेगम उस घड़ी को कोसने लगती जब वह हजरी को पकड़ कर लायी थी। दरअसल हजरी की एक बेवकूफ़ी से वह इतना अधिक प्रभावित हो गयी थी कि उसे फिर जाने न दिया। रब्बन बी ने पूरा काम समझाने के बाद हजरी से कहा कि 'इस पूरे काम के पच्चीस रुपये मिलेंगे।'

'पच्चीस नहीं चलेंगी।' हजरी ने बड़े ठुमके से जवाब दिया, 'कान खोल के सुन लो रब्बन बी'। हम बीस रुपये से एक पैसा कम न लेंगे। हाँ! चाहो तो नवाब साहब से भी सलाह-मशविरा कर लो।'

रब्बन बी हँसते-हँसते लोटपोट हो गयीं।

नवाब साहब चूँकि ऊँचा सुनते थे इसलिए ऊँचा बोलते 'भी' थे। उनकी आवाज सुनते ही हजरी बी अपने दोनों कानों पर हथेलियाँ रख लेती। उस समय उसकी हथेलियों पर चाहे गीली राख ही क्यों न लगी हो। बाद में कई दिनो तक उसके बालों में वह सूखी हुई राख लगी रहती। हजरी की यह हरकत रब्बन को बेहद नागवार गुजरती।

नवाब साहब के पास देहात में सैकड़ों बीघा जमीन थी। रब्बन बी नवाब साहब से ज्यादा उनकी हैसियत पर फ़िदा थी। नवाब साहब की एक औरत देहात में भी थी। फ़सल के दिनों में वे देहात में ही रहते थे। फ़सल कटते ही वे लौट आते और रब्बन बी के साथ रहते। रब्बन बी का उन्होंने तब साथ दिया था जब वह बिल्कुल बेसहारा औरत थी। चारों तरफ गिरफ्तारियाँ हो रही थीं। मगर पुलिस की क्या मजाल कि रब्बन बी की सीढ़ियों की तरफ ताक भी लेती। उन दिनों बहुत-सी औरतें किसी-न-किसी बहाने हिन्दुस्तान छोड़ कर पाकिस्तान के लिए रवाना हो गयी थीं। रब्बन बी भी कूच करने को थी कि नवाब साहब टहलते हुए चले आये। उस दिन कुछ ऐसा हुआ कि वह हमेशा के लिए नवाब साहब से बँध गयी।

रब्बन की बहुत-सी साथिनें हिन्दुस्तान छोड़ कर पाकिस्तान जा चुकी थीं। रब्बन भी जाना चाहती थी, मगर उसे अपने मकान से बहुत मोह था।

मकान में पहिये लगे होते तो वह जरूर मकान ठेलते हुए पाकिस्तान चली जाती। नवाब साहब ने उसे ऐसे वक्त पर सहारा दिया था, कि वह ताजिन्दगी से उनकी हो गयी। रब्बन ने अपना मकान नवाब साहब के नाम लिख दिया और नवाब साहब से निकाह कर लिया।

एक जमाना था कि नवाब साहब शहर में उसके सबसे बड़े प्रशंसक थे मगर आज उमर ढलने के साथ वह उसके गुलाम हो गये थे। नवाब साहब को रब्बन के नैकट्य से कुछ इतनी तस्कीन मिली कि वे ग्यारह मास तक देहात नहीं गये। कारिन्दों के माध्यम से ही वह काम चलाते रहे। बच्चों की खबर नहीं ली, फ़सल की परवाह नहीं की। सुबह उठते ही कलफ़ लगा कुर्ता पाजामा पहन लेते और बाहर चौतरे पर धूप में कुर्सी डाल कर बैठ जाते। सुबह-शाम हर भिखारी को कुछ-न-कुछ बख्शीश देते। पूरे मुहल्ले पर उनका दबाव गालिब होने लगा। दूसरी गानेवालियाँ रब्बन की किस्मत से रश्क करने लगीं, जब देखतीं कि नवाब साब रब्बन बी के लिए जलेबी या कीमे के पराठे लिये चले आ रहे हैं। नवाब साहब रब्बन के सामने अखबार बिछा कर दोना रख देते और खुद दाँत कुरेदते हुए किसी दूसरे काम में जुट जाते।

नवाब साहब दिन भर सियासत नाम का अखबार पढ़ते। बाद में उसी अखबार से मक्खियाँ उड़ाते। जब खाना खाकर लौटते तो अखबार से मुँह ढाँप कर सुस्ताने लगते। बीच-बीच में वे उठ कर नमाज पढ़ा करते। अगर बीच में उन्हें कहीं जाना होता तो अखबार का स्केल-सा बना कर हाथ में जरूर रखते। नवाब साहब बहुत कम बोलते थे। निकाह के बाद भी रब्बन बी से उन्होंने मूक किस्म का प्रेम ही किया था।

उस दिन नवाब साहब देहात से थके हुए लौटे थे। उनके सर की टोपी एक ओर सरक गयी थी। शेरवानी का एक सिरा पाजामे में खुँसा देख कर अनुमान लगाया जा सकता है कि अभी-अभी पेशाब करके आ रहे हैं। उन्हें अक्सर अपने ही घर के चौतरे के पास पेशाब करना प्रिय था।

दरअसल नवाब साहब की बहुत-सी जमीन सरकार द्वारा अधिगृहीत की जा रही थी। ठीक उनकी जमीन की बगल में सरकार एक कारखाना बैठा रही थी और नवाब साहब के पास भी इस आशय का पत्र आ चुका था। इसी परेशानी के आलम में, एक रोज वह हजरी बी पर इतनी जोर से बिगड़े कि पूरे मुहल्ले में खबर फैल गयी कि नवाब साहब हजरी बी पर बिगड़ रहे हैं। शहनाज बेगम अपनी दुकान खुदा के भरोसे छोड़ कर गली तक चली आयी और नवाब साहब के मकान की चहारदीवारी के पास खड़ी होकर सर खुजाने लगी।

नवाब साहब हस्बे मामूल ऊंची आवाज में बोल रहे थे। हजरी बी न जाने कहा से नमूदार हो गयी। वह कुछ देर बड़े व्यंग्य से कमर पर हाथ टिकाये नवाब साहब की बातें सुनती रही और फिर सहसा उसने कदम आगे बढ़ा कर वापिस ले लिया, जैसे पांव में घुंघरू बंधे हों। हाथ नचाते हुए बोली, 'कान में से यह सफेद-सी चीज निकाल कर सुन लो नवाब साहब, मैंने हाथ बेचा है, जात नहीं बेचा। हमारे बाप दादा के बारे में कुछ कहिएगा तो हमसे बुरा कोई न होगा। आपने चुपचाप रब्बन बी का मकान हड़प लिया, हमारे मुंह से आवाज तक न निकली। मगर इस नाचीज हजरी ने आप जैसे बीसियों नवाब अपनी टांगो के नीचे रखे हैं। आपको शायद मालूम नहीं कि अगर कही कमिश्नर साहब को भनक मिल गयी कि एक नाचीज नवाब उसकी हजरी बी के साथ बदसलूकी कर रहा है तो वे अभी अपनी लारी मे बैठ कर चले आवेंगे और आपके जिस्म के पांचों सूराख गर्म-गर्म लाख से बन्द करवा के उन पर महारानी विक्टोरिया की ठण्डी मोहर चस्पां कर देंगे। हां, यह समझ रखियो। आपने आज एक निहायत गलीज हरकत की है। एक बेसहारा औरत को बेवजह जलील किया है।' अचानक ही हजरी बी की आंखों में सावनभादों उमड़ आये, 'बेसहारा लोगों का खुदा भी साथ नही देता।'

हजरी बी रोने लगी। रोते-रोते दांत जुड़ गये। नीचे गली में तमाशबीनों की भीड़ जमा होने लगी। आखिर आजिज आकर नवाब साहब माफ़ी माँगने लगे। शहनाज बेगम को नवाब साहब की कायरता पर बहुत क्रोध आया और वह अपनी दुकान पर लौट गयी। रब्बन बी ने हालात की नजाकत को समझा और जनानखाने से निकल आयी और हजरी को अपने साथ लिवा ले गयी। नवाब साहब बहुत देर तक जनानखाने के बाहर खड़े खाँसते रहे और जब रब्बन बी निकल कर न आयी तो तैश में देहात चले गये। देहात में अखबार जरा देर से पहुँचता था और खाने को चाट नहीं मिलती थी, बाकी सब कुछ वैसा ही था। वे हवेली के बाहर खाट डलवा लेते और फिर सूरज उनकी आंखो के सामने ही ग़रूब होता। पेड़ों के सायों तक को वह पहचानने लगे थे।

जब तक नवाब साहब देहात से नही लौटे हजरी बी को एक ठौर मिल गया। वह यहीं रब्बन बी के साथ रहने लगी। बीच-बीच में रब्बन बी से रूठ कर कोठरी में भी चली जाती, मगर रब्बन को अकेलापन काटता था। वे अफ़सार को भेज कर हजरी को वापिस बुला लेती और हजरी बी के बालों में थोड़ा कड़ुआ तेल चुड़वा देती। वैसे हजरी ने भी रब्बन बी की एक ऐसी कमजोरी पकड़ ली थी कि वह हजरी से नाराज होकर रह ही नहीं सकती

थी। रब्बन बी की बड़ी इच्छा थी कि उसे 'बेगम साहिबा' सम्बोधित किया जाये। हुजरी को रब्बन की इस कमजोरी का पता चला तो उसे रब्बन बी को अपने वश में करते देर न लगी। वह कहती—'देखो बेगम साहिबा, आज भी आपके चेहरे पर कितना नूर है। ख़ुदा की आपके ऊपर इतनी मेहरबानी है कि आपके सिर का एक भी बाल सफेद नहीं हुआ। अज़ीजन अपने को बहुत हूर समझती है मगर कनपटी के सारे बाल सफेद हो चुके हैं।'

जब तक नवाब साहब लौट न आए, हुजरी ने अपनी कोठरी की तरफ़ पलट कर न देखा। इस बीच उसे बाकर की बीमारी की ख़बर मिली तो वह सब कुछ भूल भाल कर उसी की तीमारदारी में लग गयी। दिन भर उसी में परेशान रहती।

□□

'बाकर मियाँ · बाकर मियाँ।' वार्ड का मुख्य दरवाजा पार करते ही हजरी बी ने बाकर को पुकारना शुरू कर दिया।

बाकर मियाँ जिस करवट पड़े थे, वैसे ही पड़े रहे। उनके चेहरे पर एक अजीब-सा दिव्य भाव था। वह बिल्कुल शान्त पड़े थे। दीन-दुनिया से एकदम बेखबर।

'बाकर मियाँ देखो हजरी तुम्हें देखने आयी है।' हजरी ने उसके कान के पास झुकते हुए कहा।

बाकर मियाँ ने हजरी की पुकार की तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया। उसी तरह आँखें मूँदे पड़े रहे।

हजरी की आवाज से पास वाले बेड का एक बूढ़ा रोगी जग गया। उसकी आँखों में कीच भरी थी और खिचड़ी दाढ़ी के भीतर उसकी बड़ी तेज आँखें जगमगा रही थीं।

'यह तो दो दिन से ऐसे ही पड़ा है माई।'

'ऐसे ही पड़ा है?' हजरी ने उससे पूछा, 'डाकडर ने क्या बताया?'

वह आदमी हँसा। बोला, 'डाकडर ने कहा, कितना अच्छा होता सब मरीज इसी तरह पड़े रहते।'

फिर वह वहशी तरीके से हँसने लगा।

हजरी ने बाकर की यह हालत देखी तो रोना शुरू कर दिया। रोते-रोते वह छाती पीटने लगी। शोर सुन कर अचानक एक नर्स दौड़ी हुई आयी।

'तुम लोगों ने इसे जहर का टीका लगा दिया है, मुझे सब मालूम पड़ गया है। तुम लोगों ने अभी-अभी मेरे सामने जहर का टीका लगाया है। तुम लोग मरीजों से छुट्टी पाना चाहते हो। तुम लोगों को दोजख में भी जगह न मिलेगी। तुम लोगों ने मोहम्मद साहब के साथ भी यही किया था।' हजरी बी

ने आव देखा न ताव, स्टूल पर आलथी-पालथी मार कर बैठ गयी और लगी मरसिया गाने :

अरे लोगो, मेरे बाबा को बुला दे कोई
अरे लोगों, मेरे भैया अली अकबर है कहाँ ?

बाइस नम्बर के विस्तर पर एक घड़ीसाज जमीर हुसन सुबह से बेहोश पड़ा था। कटरे से आते हुए घण्टाघर के पास उसका रिक्शा उलट गया था। उसके आस-पास बहुत से रिश्तेदार खड़े थे। अचानक वह बूढ़ा घड़ीसाज 'हुसेन-हुसेन' कहता हुआ उठ बैठा। उसके रिश्तेदारों पर हजरी बी की वाणी का इतना असर हुआ कि उन्होंने उसे घेर लिया और बूढ़े घड़ीसाज के बेड के पास ले गये। हजरी बी ने नौहा शुरू कर दिया :

सुगरा मदीना लुट गया
चिल्लायी जैनब पीट सर
सुगरा मदीना लुट गया।

घड़ीसाज के रिश्तेदारों ने जोर से मातम शुरू कर दिया। अस्पताल में मातम होता देख एक नर्स और डाक्टर भागते हुए आये।

'इन्हीं लोगों ने मुहम्मद साहब की जान ली थी। यही लोग अब बाकर मियाँ को मारना चाहते है। मैं कमिश्नर साहब को इसकी इत्तिला दूंगी।'

एक जूनियर डाक्टर हजरी का अस्पताल में बढ़ता हुआ प्रभाव देख कर बोला, 'बाकर मियां को बचाना है तो मेडिकल कालेज में भरती करवा दो। मैं चिट्ठी लिख दूंगा। वह न कुछ खा रहा है, न पी रहा है।'

'बाकर मियाँ यहीं दम तोड़ेंगे, इसी अस्पताल में शहीद होंगे। वह तुम लोगों के पास इलाज के लिए आया था। तुम लोगों ने उसकी जान ले ली।'

'हमारा एक्सरे प्लाण्ट बेकार पड़ा है। मैं क्या कर सकता हूं।'

'तुम दोजख में जाने की तैयारी करो।' हजरी बी बोली और लगी गाने :

जालिमो असग़र के ओठों का तबस्सुम देख लो
तुम नहीं हो आश्ना कौरआन की तफ़सीर से
ऐ मुसलमानों अली अकबर को पहचानो जरा
जंग करते हो रसूल अल्लाह की तस्वीर से।

घड़ीसाज को लिटा दिया गया था। हजरी की आवाज़ से वह फिर उठ बैठा। रिश्तेदारों के बीच हजरी यकायक किसी फ़कीर की तरह मकबूल हो गयी। एक आदमी ने चुपके से उसके हाथ में एक बड़ा-सा सन्तरों का लिफाफा थमा दिया।

'मेरे लिए ये सन्तरे बेकार हैं। अगर आप लोग सही मुसलमान हैं तो आज कट मरिये हस्पताल की बदइन्तजामी के खिलाफ़।' हजरी ने कहा :

जालिमो असग़र के होठों का तबस्सुम देख लो।

नर्सों और डाक्टरों में एक नयी स्फूर्ति आ गयी। पूरा स्टॉफ़ बाकर मियाँ को घेरे था। देखते-देखते बाकर मियाँ को ग्लूकोज लगा दिया गया। एक नर्स हजरी को बुला ले गयी। उसे समझा दिया कि वह उसका हाथ थामे रहे। थोड़ी-थोड़ी देर में बाकर हाथ झटकने की कोशिश करता। हजरी कसकर हाथ थाम लेती।

यके-बाद-दीगरे बाकर को ग्लूकोज की दो बोतलें चढ़ीं। हजरी रात भर उसका हाथ थामे पड़ी रही। आधी रात को एक बार बाकर की आँख खुली। उसने अपने सामने हजरी को बैठे पाया और उसके चेहरे पर सन्तोष की एक लकीर उभरी और दाढ़ी के बीचोबीच कहीं गायब हो गयी। हजरी रात भर जगती रही।

सुबह हजरी ने अजीजन को वार्ड में घुसते देखा तो उसकी जान में जान आयी। अजीजन ने सफ़ेद साड़ी पहन रखी थी और वह धीरे-धीरे कदम बढ़ाती हुई बाकर के बेड के पास आयी। बाकर के पास हजरी को देख कर अजीजन को कुछ तसल्ली हुई। मगर उसने हजरी से कोई बात न की। दोनों के बीच में एक दूरी अब भी बनी हुई थी। यह एक खानदानी दूरी थी। डेरेदार तवायफ़ और पेशेवालियों के बीच की दूरी। हजरी और अजीजन ने अपनी जवानी एक ही गली में गुजारी थी, मगर हजरी की कभी हिम्मत न हुई थी कि वह अजीजन का जीना चढ़ सके। एक बार जब सरकार ने दफ़ा आठ की पाबन्दी पर बहुत जोर दिया तो हजरी डरते-डरते अजीजन के यहाँ पहुँची थी। अजीजन का ठाठ देखकर वह स्तम्भित रह गयी। बैठक में कीमती फ़ानूस लटक रहे थे। फ़र्श पर बहुत बढ़िया कालीन बिछा था। दीवारों पर सुनहरे फ्रेम के बड़े-बड़े आइने लटके थे। बीच में फूलों की चंगेर थी। चाँदी का पानदान था, पीकदान, इत्रदान। हजरी को हीनता की भावना ने ऐसा घेर लिया कि वह सीढ़ियाँ उतर आयी। मुहल्ले में एक आतंक-सा बिछ गया था। लगभग तमाम दलाल पुलिस की हिरासत में थे। छज्जे पर बैठ कर कोई भी तवायफ इशारेबाजी करती पकड़ी जाती तो तुरन्त थाने की हवा खानी पड़ती। तमाम तवायफों ने अपने छज्जों पर हैसियत के मुताबिक चिकें या टाट लटका लिये थे।

'बी जान सलामो अलैकुम।' हजरी ने स्टूल से उठते हुए कहा। और नर्स की तरफ़ घूम गयी।

'मरीज की मिजाजपुर्सी के लिए आपने यह किसको छोड़ रखा है ?' नर्स और हाउस सर्जन एक साथ बोले।

'एक मुसीबतजदः औरत है। दिल की बहुत नेक है। अपने आप चली आयी है।'

'उफ़।' नर्स ने कहा, 'कल रात भर मातम करती रही। डाक्टरों और नर्सों को ऐसी-ऐसी गालियाँ दी कि देखते देखते पूरा वार्ड कर्बला बन गया।'

'वह जज्बाती औरत है। उससे बरदाश्त न हुआ होगा।' अजीजन ने पूछा, 'मरीज की कैसी तबियत है ?'

'मुझे लगता है कि इसे मेडिकल कालेज में ले जाना पड़ेगा। वह न कुछ खाता है और न कुछ बोलता है। हमारा एक्सरे प्लाण्ट भी खराब पड़ा है।'

'गली में तो यह रात भर चिल्लाता था।'

'आप बुरा न मानें, इसका वक्त नजदीक आ गया है। आप फ़ौरन इसे मेडिकल कालेज ले जायें। मैं डाक्टर से पर्चा लिखवा लाती हूँ।'

अजीजन चुपचाप खड़ी रही। उसकी आँखों के सामने उस बाँके बाकर का चेहरा घूम गया जो महफ़िल की जान होता था। वह तुर्की टोपी पहने हुए किस मस्ती के आलम में सारंगी बजाता था। इस वक्त वह एक लाश की तरह बेजान पड़ा था।

'वहाँ भी गरीब आदमी की क्या देख-भाल होगी।' अजीजन बी ने जैसे अपने आपसे कहा, 'एक बार मैं खुद डाक्टर साहब से मिल लूँ।'

डाक्टर से मिल कर अजीजन और निराश हो गयी। उसने बताया कि उसकी आँतें सड़ चुकी है। पेट में अल्सर हैं। उसे सिर्फ़ जिन्दा रखा जा सकता है।

अजीजन कुछ देर बाकर के बेड के पास खड़ी उसे देखती रही। जैसे वर्तमान, भूत और भविष्य से एक साथ अचानक सामना हो गया हो।

बाकर अपनी जिन्दगी के अन्तिम दिनों तक सारंगी का दीवाना रहा था। उम्र के साथ बहुत से सारंगिए रियाज छोड़ देते थे या कम कर देते थे, मगर बाकर को यह मंजूर न था। उसकी उँगलियों में दर्द बैठ गया था। मगर उसने रियाज न छोड़ा, डाक्टरों के कहने पर भी न छोड़ा और जब दर्द नाकाबिले बर्दाश्त हो जाता तो वह उसे भूलने के लिए अफ़ीम का सहारा लेने लगा। इसी जिद का नतीजा अब सामने था। कहाँ गये वे उस्ताद लोग जो बाकर से संगत करने के लिए चिरौरी किया करते थे।

'डाक्टर ने क्या बताया बी जान ?' अचानक हजरी ने अजीजन का ध्यान भंग किया।

'सब लोग तुम्हारी शिकायत कर रहे थे।

हजरी ने गर्दन घुमा कर नर्स की तरफ़ देखा और बोली, 'बी जान, ये लोग डागडर नहीं भेड़िये हैं। बाकर मियाँ को कोई देखने तक न आया। सब मरीज़ों का बुखार देखा जाता है, नाड़ी देखी जाती है, मगर बाकर मियाँ के पास जब कोई न आया तो मैं आपे से बाहर हो गयी। मैंने जब लानत मुलामत भेजी तब कहीं इन लोगों ने ग्लूकोज चढाया। उसके बाद बाकर मियाँ ने आँखें खोली। मुझे पहचाना और देर तक मुझे घूरते रहे। उसके बाद जो उनकी आँखें बन्द हुई, अब तक बन्द हैं।'

'हजरी बी, अब डाक्टर भी कुछ न कर पायेगा। हमें इसे पहले ही अस्पताल में भर्ती कराना चाहिए था।'

कारीडोर से कोई लाश गुजर रही थी। लाश के पीछे-पीछे एक औरत चिल्लाती हुई जा रही थी। उसकी गोद में एक निढाल-सा बच्चा था। अज़ीज़न ने देखा तो उसका दिल बैठने लगा।

'बी जान! बाकर का इलाज होगा तो वह ज़रूर बच जायेगा।' हजरी ने कहा, 'ये लोग शैतान हैं। गरीब पर एक भी दवा खर्च नहीं करना चाहते।'

'अच्छा, मैं मेडिकल कालेज भेजने का इन्तज़ाम करती हूँ।' अज़ीज़न ने कहा और डाक्टर के कमरे में घुस गयी। उसने डाक्टर से पर्चा लिया, एम्बुलेंस का इन्तज़ाम किया और बाहर दरवाजे पर खड़ी होकर बाकर के लिए स्ट्रेचर का इन्तज़ार करने लगी।

• •

गली का सबसे ऊँचा और भव्य मकान अज़ीज़न बाई का था। अज़ीज़न कंचन जाति की वेश्या थी। शायद यही कारण था कि बड़े-बड़े राजे-महाराजे, सेठ, रईस और नवाबी खानदान के लोग अज़ीज़न के यहाँ ही बुलौवा भेजते थे। हुज़ूर वायसराय तक उसका मुजरा देख चुके थे। कहते हैं जोधपुर दरबार में उसका वही दर्जा था जो मुगल राज्य मे नूरजहाँ का था। वह कश्मीर, ग्वालियर, सूरत, कपूरथला, जीद, खैरपुर, बहराइच, भरतपुर आदि अनेक दरबारों में जा चुकी थी। अज़ीज़न ने ठुमरी की एक नयी शैली ईजाद की थी और उसके सोज़ इतने प्रसिद्ध थे कि मुहर्रम और चेहल्लुम पर दूर-दूर से संगीत-प्रेमी उसके सोज सुनने के लिए आते थे।

अज़ीज़न ने इतने अदब-कायदे सीख रखे थे कि उसके यहाँ आकर कोई दूसरी जगह जाने का नाम भी न लेता था। उसकी आवाज़ मे एक ऐसा आकर्षण और एक ऐसा सोज़ था कि उसका गाना सुन कर उजड्ड से उजड्ड लोग संगीत-प्रेमी हो जाते। गाते समय अज़ीज़न बीच-बीच मे अपनी बड़ी-बड़ी बिल्लौरी आँखें पलकों में कैद कर लेती, ज्यों ही पलकें खुलती, कमरे में जैसे बिजलियाँ कौंध जाती। लोग वाह-वाह कह उठते। नोटों की बारिश हो जाती। अज़ीज़न ने एक बार भरतपुर के राजकुमार की ओर टकटकी लगा कर कुछ इस अन्दाज से देखा कि राजकुमार ने अपनी जेब से सोने का एक जड़ाऊ पाज़ेब निकाल कर उसके पाँवों में बाँध दिया। उस पाज़ेब में छोटे-छोटे कई हीरे-जवाहरात जड़े थे।

शुरू-शुरू में अज़ीज़न केवल उस्तादो के कलाम ही गाती थी। ग़ालिब, ज़ौक, दाग़, सौदा, मोमिन, मीर के अनेक कलाम अज़ीज़न की आवाज में उतर कर बहुआयामी प्रभाव उत्पन्न कर चुके थे। मगर बाद मे यकायक वह एकदम नये शायर प्रेम जौनपुरी की ग़ज़लें गाने लगी। प्रेम जौनपुरी अपनी ग़ज़ल सुनता तो कहता, 'नही, नही यह मेरा कलाम नही, यह ग़ालिब का कलाम है।'

अजीजन दिन भर रियाज करती और प्रेम जौनपुरी अजीजन से कुछ ऐसा बँध गया कि उसी के यहाँ शराब में धुत्त पड़ा रहता। होश में आते ही वह और चढ़ा लेता। मगर प्रेम जौनपुरी ने कभी बतमीजी नहीं की थी। वह अजीजन के यहाँ गुनगुनाता हुआ आता और आँसू बहाते हुए लौट जाता। जीने के पास पिंजरे में एक तोता लटका रहता। प्रेम जौनपुरी को देखते ही 'मरहबा-मरहबा' कहता।

अजीजन के व्यक्तिगत जीवन के बारे में कोई ज्यादा नहीं जानता। वह प्रायः परदे में रहना पसन्द करती थी। मुहल्ले में अजीजन के अलावा शेष रमजने, सायत, हुकिनी और मालमारे जाति की वेश्याएँ थीं। लोग-बाग बड़ी-से-बड़ी रकमें और नेमतें उसके पाँव में रखते मगर अजीजन बेरुखी से ठुकरा देती। आज तक कोई नहीं जानता कि अजीजन ने किस खुशनसीब को समर्पण किया है। एक बार तो यहाँ तक सुनने में आया कि देवगढ़ के राजकुमार को इसने चप्पलों से पिटवाया था। बाद में नफ़ीस से कह कर उसे सीढ़ियों से लुढ़का दिया था।

अजीजन प्रायः मुँह में इलायची या लौंग रखती थी। इससे उसका पसीना तक महकने लगा था। अजीजन के बारे में तरह-तरह की किंवदन्तियाँ प्रचलित हो गयी थी। लोग बाग किसी राजकुमार अथवा किन्हीं सेठ साहब से उसका सम्बन्ध जोड़ा करते थे। कइयों का खयाल था कि प्रेम जौनपुरी ही उसका वास्तविक प्रेमी है, मगर यदि प्रेम जौनपुरी उसका असली आशिक होता तो उसके दर पर यतीमों की तरह न पड़ा रहता। इस विषय पर अनुसंधान करने वाले नफीस का नाम भी इस सूची में जोड़ चुके थे, मगर नफीस अजीजन से कई बार इतनी बुरी तरह डाँट खा चुका था कि इस विचार के समर्थकों के चेहरो पर हवाइयाँ उड़ने लगती। नफीस बिल्ली की तरह प्रायः यही जीना उतरता-चढ़ता दिखायी देता। नफीस अक्सर कुर्ते-पजामे में नजर आता और खाली समय में मूँछों पर ताव देता रहता। कहते हैं एक बार एक महाराजा उसे अपने अंगरक्षक के तौर पर मध्य प्रदेश ले जाना चाहता था—एक हजार रुपये महीने पर; मगर वह नहीं गया। वह अपनी वर्तमान स्थिति से ही सन्तुष्ट था। एक फ़कीर की तरह। कोई भी बड़ा आदमी देर तक उसकी अनुमति के बगैर नहीं रुक सकता था। अगर कोई हुक्म-उदूली करता तो नफीस उसे पीटने पर आमादा हो जाता। बातचीत या बहस करना उसे आता नहीं था। खुदा ने यह नेमत उससे छीन ली थी। अगर कोई ज्यादा बोलने लगता तो नफीस के बाजू फड़कने लगते। एक बार शहर का सबसे बड़ा आलू का व्यापारी तो पिट ही जाता अगर अजीजन बीच में न पड़ती। नफीस को

अजीजन की यह दखलन्दाजी पसन्द न थी, मगर वह चुपचाप सीढ़ियाँ उतर जाता था और अतीक के यहां जाकर बेंच पर बैठ जाता और बैठे-बैठे चाय के दस-पांच प्याले पी जाता। चाय से ही उसका गुस्सा शांत होता था।

नफ़ीस मुहल्ले का सबसे ताकतवर वाशिन्दा था। मुहल्ले के तमाम दादा लोग उससे कतराते थे। कई एक को गेंद की तरह उठा कर पटक चुका था। नफीस चलता तो धरती हिलती थी। उसके चेहरे पर एक जल्लाद की क्रूरता थी, एक पुलसिये का आत्मविश्वास व एक डाकू का रुआब था। मगर जुबान से मजबूर था। बोलने का प्रयत्न ही न करता। हर चीज की तरफ वह घूर कर देखता। एक मालजादे को एक दिन पुल के पास खड़ी मालगाड़ी में रख आया, जिसने बहुत बेहयाई से अज़ीज़न के नाम पर एक लतीफा चस्पाँ कर दिया था—कि एक बार अज़ीज़न अपनी गोद में लड़की को लेकर किसी काम के लिए कोतवाल साहब के यहाँ हाजिर हुई। बातों के दौरान कोतवाल साहब ने मजाक में पूछा 'बी जान, यह लड़की किसकी है ?'

अज़ीज़न ने जवाब दिया, 'हुजूर फ़क़ीर की झोली में किसको मालूम हो सकता है कि यह लड़की किसकी है ?'

अभी ठहाका शुरू भी नहीं हुआ था कि नफ़ीस ने सुनानेवाले को कन्धे पर डाल लिया और क्रॉसिंग की ओर दौड़ गया।

अज़ीज़न के बारे मे लोग ईर्ष्यावश बहुत से लतीफे प्रचलित करते रहते थे। नफीस को देख कर उन्हें साँप सूँघ जाता। पैंतरा बदलते हुए पूछते—'कहो नफीस मियाँ मजे मे तो हो ?'

अज़ीज़न की एक बिटिया थी—गुलबदन। गुलबदन ने कई रिकार्ड कायम किये थे। वह इस मुहल्ले की पहली स्नातक लड़की थी। गुलबदन शहर की पहली लड़की थी जो दिल्ली से अपने विश्वविद्यालय के लिए ट्राफी जीत कर लायी थी। अज़ीज़न ने गुलबदन को बहुत हिफ़ाजत से रखा था। गुल को स्कूल या कालिज से लौटने में दस मिनट की भी देर हो जाती तो अज़ीज़न परेशान हो उठती। गुलबदन का एक अलग कमरा था जो हमेशा अन्दर से बन्द रहता। गुलबदन के पास एक रेडियोग्राम था, वह उसमें डूबी रहती। गुलबदन के पास एक लायब्रेरी थी, वह रात देर तक पढ़ती। सारा जग जानता था, गुलबदन नरक में रहते हुए भी कमल के फूल की तरह निष्कलुष थी, निष्कलंक थी। गुलबदन ने एक परी का चेहरा, लम्बे, घने और रेशमी बाल पाये थे। कभी वह बाल सुखाने बालकनी पर खड़ी हो जाती तो नीचे

गली मे हलचल मच जाती। गुलवदन अक्सर बुर्के में रहती थी। मुहल्ले वालों ने भी गुलवदन को बहुत कम देखा था, उसकी आवाज जरूर सुनायी देती, क्योंकि वह घण्टों रियाज करती थी। एक बार विश्वविद्यालय की एक सांस्कृतिक संध्या में उसने एक इतनी माकूल गज़ल सुनायी कि पूरे विश्वविद्यालय मे जैसे बम फूट गया। वह घर लौटी तो उसके पीछे सायकलों पर लड़कों का भारी जुलूस था। गुलवदन ने अपने रिक्शे का पर्दा गिरा लिया और रास्ते के पहले थाने में उतर गयी। बाद में पुलिस की गाड़ी उसे घर तक छोड़ गयी। इस घटना के बाद गुलवदन कई दिनों तक विश्वविद्यालय नहीं गयी। अज़ीजन ने सुना तो वह भी बहुत डर गयी। उसने मन ही मन तय कर लिया कि वह अगले बरस गुलवदन को दिल्ली विश्वविद्यालय मे दाखिला दिला देगी। इस प्रकार गुलवदन इस छोटे शहर की तंगदिली से दूर रहेगी। मगर जल्द ही अज़ीजन को एक तरकीब सूझी। नफ़ीस एक अंगरक्षक की तरह गुलबदन के साथ विश्वविद्यालय जाने लगा। नफीस के बारे में विश्वविद्यालय में तरह तरह की कहानियाँ उड़ने लगी। किसी ने कहा—नफ़ीस अब तक चौदह हत्याएँ कर चुका है। किसी ने उड़ा दिया नफीस गुलवदन का बचपन का आशिक है। इन तमाम अफ़वाहों से बेन्याज नफ़ीस गुलवदन के रिक्शे के पीछे-पीछे सायकिल पर चुपचाप चलता। पहले ही दिन उसने एक लड़के को हवा मे तीन बार उछाल दिया, जिसने गुलवदन को देख कर उसके रिक्शे के पीछे सायकिल चलाते हुए गाना शुरू किया था : इक चीज माँगता हूँ।

नफ़ीस ने बाद मे उस लड़के के गाल बच्चों की तरह थपथपा दिये—जैसे कह रहा हो, 'जाओ बेटा, अपना रास्ता नापो।' इस घटना का पूरे माहौल पर कुछ ऐसा जादुई असर हुआ कि पूरे विश्वविद्यालय पर नफ़ीस का दबदबा तारी हो गया।

मुहल्ले में भी गुलवदन की इज्जत बढ़ गयी। वह मुहल्ले की एकमात्र लड़की थी जो रिक्शा में बैठ कर विश्वविद्यालय जाती थी। विश्वविद्यालय की बात तो दरकिनार किसी स्कूल तक इस गली से कभी कोई रिक्शा नहीं गया था। गुलवदन ने एक चुनौती भरी पहल की थी। इस लिहाज से वह मुहल्ले की शान थी। मुहल्लेवालियाँ दिन भर गुल का हवाला देकर अपनी लड़कियों को डाँटतीं।

सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था कि अचानक हालात ने कुछ ऐसी करवट ली कि यकायक अज़ीजन ने प्रेम जौनपुरी के घर पर आने की मुमानअत कर दी।

'देखो नफ़ीस अब प्रेम जौनपुरी इस घर का जीना नहीं चढ़ेगा। वह मुझे दिखायी दिया तो तुम्हारी टाँगें तोड़ दूँगी।' अज़ीजन ने एक कागज

का पुर्जा नफीस की तरफ बढ़ा दिया, 'यह पुर्जा मुझे बिटिया के कमरे में मिला है।'

अजीजन ने पढ़ कर सुनाया। गजल के कुछ शेर थे :

रुलाना जिसको होता है उसे पहले हँसाते हैं,
कली खिलती है जब शबनम के कतरे उस पे आते है।

सरे महफ़िल मेरी बेताबियों पर मुस्कराते है,
वो मुझको आजमाते हैं कि खुद को आजमाते हैं।

इसके बाद प्रेम जौनपुरी अज़ीजन से मिलने के लिए नाक रगड कर रह गया, नफ़ीस फौलादी दरवाज़े की तरह अटल रहा। प्रेम जौनपुरी नफ़ीस से पिटने वाले बहुत से लोगों को जानता था—उसकी और हिम्मत न हुई। वह दिन भर फटे-हाल फ़क़ीरों के भेस मे अज़ीजन के मकान के नीचे मँडराता रहता, मगर ज़ीने की ओर रुख करने का साहस न बटोर पाता।

जौनपुरी वक्त-बेवक्त शराब के नशे में धुत्त नजर आता। अक्सर वह हौली से रात देर से लौटता और प्रातः अज़ीजन के ही चौतरे पर कै करते हुए नज़र आता।

कई बार गुलबदन ने माँ से पूछा भी कि वह प्रेम जौनपुरी के साथ इतनी ज्यादती क्यों कर रही है, प्रेम नादान है तो हुआ करे, उसकी बिटिया तो नादान नही है, अजीजन सब बात सुन लेती, मगर हामी न भरती।

'अम्मीजान किसी दिन चिलमन उठा कर उसकी सूरत तो देख लो, बेचारा बेमौत मरा जा रहा है।' गुल अम्मा से कहती।

अज़ीजन जवाब न देती। खुदा ही जान सकता है, वह इस कद्र क्यों ख़फ़ा हो गयी थी।

यह संयोग ही था कि गुलबदन को विश्वविद्यालय के उत्सव मे जिस ग़ज़ल से इतनी प्रशंसा हासिल हुई थी, वह प्रेम जौनपुरी की ही थी। विश्वविद्यालय के कुछ लौंडों ने दिन-रात एक कर के आखिर प्रेम जौनपुरी को एक हौली में खोज ही निकाला। प्रेम जौनपुरी की आँखो मे गुनूदगी थी, लाल डोरे थे और उसकी जुबान थरथरा रही थी। वह छात्रों में यकायक इतना लोकप्रिय होने का ख्वाब भी नही देख सकता था। वह अपनी थरथराती आवाज में बोला :

ज़र्रे ज़र्रे मे नज़र आता है रुस्वा कोई
यह भी छिपना है कोई, यह भी पर्दा है कोई

प्रेम का शेर सुनते ही हौली में एक हंगामा-सा हो गया। इरशाद-इरशाद

की आवाजों के बीच लड़कों ने प्रेम जौनपुरी को कन्धों पर उठा लिया। कन्धों पर उठाने वालों में प्रदेश के एक उपमन्त्री का बेटा भी था। होली पर तैनात कई पुलिस वाले कपिल को पहचानते थे। पुलिस वालों की नजर में भी अचानक प्रेम जौनपुरी का दर्जा बढ़ गया। उस दिन से प्रेम जौनपुरी की दुनिया ही बदल गयी। अपनी शायरी के प्रति उसके मन में आदर जग गया। लड़कों के कन्धे पर लदे हुए वह अपनी लरजती हुई आवाज में लगातार एक ही शेर गुनगुना रहा था :—

> ज़र्रे-ज़र्रे में नजर आता है रुस्वा कोई
> यह भी छिपना है कोई, यह भी पर्दा है कोई ?

इसके बाद प्रेम जौनपुरी के दिन ऐसे बहुरे कि उसकी ज़िन्दगी का आधा वक्त विश्वविद्यालय के छात्रावासों में बीतने लगा और शेष आधा शहर की किसी-न-किसी बार में। पूरे विश्वविद्यालय ने उसे अपना नायक स्वीकार कर लिया था।

• •

पूरा दिन बीत गया, मगर गुलाबदेई शिवलाल की जमानत का इन्तजाम न कर पायी। जिन-जिन लोगों से उसने मदद के लिए कहा था, वे उसके सामने पड़ने से कतराने लगे। वह दिन भर भूखी-प्यासी बाहर खटिया पर बैठी रही। शाम को शिवलाल का खाना लेकर गयी। शिवलाल उसे देखते ही पूछा, 'अम्मां है न घर पर ?'

'हाँ है।' गुलाबदेई ने कहा, 'जमानत के लिए उसे कोशिश करनी चाहिए। मैं कहाँ-कहाँ जाऊं। जिससे भी कहती हूँ, बहाना कर देता है।'

'नेताजी को सौ-पचास दिखाओ। वही इंतजाम करेंगे।' शिवलाल ने कहा।

'नेताजी लखनऊ गये हुए हैं।' गुलाबदेई ने शिवलाल का मन रखने केलिए बहाना कर दिया। गुलाबदेई कोतवाल साहब वाला किस्सा बयान कर देती तो शिवलाल जेल में ही उसकी हत्या कर देता। नेताजी का नाम सुनते ही गुलाबदेई को उबकाई आने लगी। कितने गिरे हुए आदमी हैं, जिन्दगी में मौका मिला तो वह नेता जी को ऐसा सबक सिखाएगी कि उम्र भर गुलाबदेई को याद रखेंगे।

शिवलाल की दाढी बढ़ गयी थी, आखें अन्दर धँस गयी थी। गुलाबदेई कुछ देर बहुत प्यार से शिवलाल की तरफ निहारती रही। शिवलाल को गुलाबदेई का ऐसे प्यार से देखना बहुत खल गया। साली न जाने किस किस को इन नजरों से देखती होगी।

'पूरे तिरिया चरित्तर जानती है।' वह सोचता, 'ऐसी आँखों से किसी और को देख लेगी तो बेचारा बेमौत मारा जाएगा। लगता है, मेरे लौटने से पहले जरूर कोई न कोई गुल खिला देगी।'

शिवलाल से और अधिक बर्दाश्त न हुआ तो बोला, 'अम्मा के साथ ही आया करो और रात को भीतर से कुण्डी लगा के सोना।'

'अच्छा अच्छा।' गुलाबदेई ने पलट कर हाथ हिलाया, 'तुम अपनी फिकिर करो।'

गुलाबदेई लौट रही थी कि उसे अचानक रोजे के पास हजरी दिखायी दी। शायद जुमेरात थी। हजरी हर जुमेरात को पीर के यहाँ माथा नवाती थी और पास बैठे हुए फ़कीरों में और कुछ नहीं तो मीठे चने ही बाँटती थी।

गुलाबदेई ने यहीं रोज़े के पास से पाव भर बताशे खरीदे और पीर के सामने माथा टेक दिया। फिर उसने हजरी को लिफ़ाफ़ा सौंप दिया कि वह फ़कीरों में बताशे बाँट दे।

गुलाबदेई को अपने पास पाकर हजरी एकदम भौंचक्क रह गयी।

'तुम्हारी झोली जरूर भरेंगे पीर बाबा। इस मजार से कभी कोई मायूस नहीं लौटता। तुम्हारे मन की मुराद जरूर पूरी होगी, बिटिया।' हजरी ने कहा, 'आज महीनों बाद मेरे बाकर ने मुझसे बात की, बोला, मेरी सारंगी मेरे बिस्तर के पास रख दो। मैं उसे देखूँगा।'

'बाकर के बारे में मैंने सुना था। खुद आती उसे देखने मगर इस बीच खुद बहुत परेशान रही। चक्की वाले को पुलिस ने जेहल में डाल दिया।'

'क्या कहती हो बहू ? किसी से लड़ाई-झगड़ा हो गया था क्या ?'

'न। वह आता था न जूड़ी ताप-सा कबाड़ी। मौलाना शफ़ी। किसी कबाड़िये से चोरी का पट्टा खरीदवा दिया। कबाड़िया तो फ़रार है। चक्की वाला जेहल में।' गुलाबदेई ने कहा और आँसू पोंछने लगी, 'नेताजी जमानत का इन्तजाम करने को कह गये थे मगर कोई तैयार न हुआ।'

हजरी कुछ देर तक गुलाबदेई के साथ चुपचाप चलती रही, फिर बोली, 'मैं करूँगी इन्तजाम। अभी चलती हूँ अजीजन बी के यहाँ ! देखती हूँ कैसे तैयार नहीं होती।'

बाकर की बीमारी के दौरान अजीजन और हजरी की संवादहीनता टूट गयी थी। इससे पहले अजीजन ने हजरी ऐसी औरतों को कभी अपने साये के करीब भी न फटकने दिया था और न ही कभी बात करना जरूरी समझा था।

'खानदानी तवायफ़ है। बहुत से दूसरे खानदानी लोगों से बेहतर। दिल उसका सोने का है।' हजरी सिर से पैर तक अजीजन से सराबोर हो गयी थी। बोली, 'बूढ़ा बाकर हकीमजी के चौतरे पर ही दम तोड़ देता। मुहल्ले वालों का दिल पत्थर का है, नहीं पसीजा यह अज़ीजनबी ही थी जो उसे अस्पताल में भरती करवा आयी। आज भी, बिटिया वह रोज बिला नागा उसे देखने जाती है। दस-पाँच रुपये भी खर्च करती है।'

हजरी गुलाबदेई को लेकर सीधे अजीजन के यहाँ पहुँची। निहायत बेतकल्लुफ़ी से अजीजन का ज़ीना चढ़ गयी। ज्योंही नफ़ीस से नजर मिली, वह सहसा ठिठक गयी। नफ़ीस उस समय टीन की कुर्सी पर बैठा चाय सुड़क रहा था। उसने हजरी को देखा और चाय का घूँट लेने लगा। हजरी ने साहस करके नफ़ीस का चेहरा अपनी बाँहों में ले लिया, 'अल्लाह उम्र दराज करे।' फिर वह नफ़ीस के बालों में उँगलियाँ फेरते हुए उसकी पेशानी पर से

अपना हाथ उसके गहरे घोंसला-नुमा वालों में ले गयी ।

नफ़ीस ने हजरी की तरफ़ बड़े खुलूस से देखा, जैसे कोई पालतू जानवर प्यार पाने पर देखता है ।

'अजीजन बी कहाँ है मेरे बेटे ?'

नफ़ीस ने इशारे से बताया कि कुरआन शरीफ़ का मुतालेआ कर रही है ।

'गुल बिटिया तो ठीक है ।'

नफ़ीस ने हाथ से साइकल-सा चलाते हुए बताया कि गुल साइकल पर कहीं गयी है ।

'तुम्हारा बड़ा सहारा है बेटा । कोई बदतमीजी करके तो देखे, मैं अपने नफ़ीस बेटे से बोटी-बोटी कटवा दूँगी ।'

अन्दर से अजीजन की आवाज आयी—नफ़ीस ।

नफ़ीस अन्दर चला गया । लौट कर वह हजरी को अपने साथ लिवा ले गया । अजीजन के सामने कुरानशरीफ़ खुला पड़ा था । वह सफ़ पर बैठी थी और अगरबत्तियों के धुएँ से कमरा महक रहा था । हजरी ने बहुत दिनों बाद एक ऐसा कमरा देखा था जहाँ दरी बिछी थी और टाट के पर्दे नहीं थे । अजीजन के प्रति हजरी के मन में आदर का समन्दर उमड़ने लगा—हजरी बी सिमट कर दरवाजे के पास ही बैठ गयी और अपने आने की वजह बतायी । अजीजन ने बिला किसी हीलागरी के जमानत लेना कबूल कर लिया । इतनी आसानी से अपनी मंशा पूरी होते देख हजरी के जिस्म पर जैसे पर लग गये । वह अचानक उठी और कमरे में नाचने लगी ।

हजरी को इस तरह फूहड़ तरीके से नाचते देख हँसी के मारे अजीजन के पेट में बल पड़ गये । हजरी थी कि बदस्तूर नाचे जा रही थी । वह कत्थक का एक बाजारू और भ्रष्ट संस्करण था ।

'हजरी बी बस करो, थक जाओगी ।' अजीजन ने कहा ।

'मैं आज बहुत खुश हूँ, मेरे पैरों में पाजेब पहना दो ।' वह बोली, 'मेरी बड़ी बहन ने मेरी लाज रख ली ।'

गुल बाहर से लौटी तो उसने कमरे में यह विचित्र दृश्य देखा । 'कितने मासूम हैं ये लोग ।' वह सोच रही थी, 'दूसरों की मदद करने में यह कितना दिली सुकून हासिल कर रही है ।' गुल ने अपने नन्हे पर्स से पाँच का एक नोट निकाल कर हजरी की नजर किया और अपने कमरे में चली गयी ।

हजरी ने नीचे उतर कर पूरे मुहल्ले में घोषणा कर दी कि 'मुहल्लेवाले यही चाहते थे कि बाकर दम तोड़ दे और शिवलाल जेहल में सड़ता रहे ।

मगर मैं सदके जाऊँ अपनी अजीजन आपा के।' हज़री बी की साँस फूल रही थी। उसकी पेशानी पर पसीने की बूँदें झिलमिला रही थीं। उस ने गुलाबदेई से कहा, 'मैंने कहा था न कि मेरी अजीजन आपा में सिदुकदिली का समुन्दर लहराता है। अजीजन आपा को खुदा ने यों ही इतनी नेमतें नहीं अता की।'

गुलाबदेई ने लक्षित किया, अजीजन बी हज़री के लिए सहसा अजीजन आपा हो गयी थी।

शिवलाल जमानत के बाद लौटा तो बेहद गुस्से में था। वह एक गुस्सैल भैंसे या बददिमाग़ ख्वाविंद की तरह गुर्रा रहा था। गुलाबदेई ने सोचा, वह शफ़ी मियाँ से खफ़ा है। उसे लगा कहीं गुस्से में वह शफ़ी मियाँ का कत्ल ही न कर दे। बढ़ी हुई दाढ़ी के साथ वह बहुत खूँखार लग रहा था। उसकी आँखें क्रोध से लाल हो रही थीं। नथुने फड़क रहे थे। साँस फूल गयी थी।

गुलाबदेई बड़े उत्साह से गली में उसकी तरफ़ दौड़ी थी। शिवलाल ने उसे बालों से पकड़ लिया और सरे बाज़ार एक सनसनाता हुआ चाँटा जड़ दिया। शिवलाल ने दो-तीन बार गुलाबदेई को बालों से पकड़े-पकड़े हिलाया-डुलाया और फिर ऐसा झटका दिया कि वह लुढ़कती हुई सड़क पर जा गिरी।

गुलाबदेई नाली के पास गिरी। उसकी समझ में कुछ भी न आ रहा था। मलाई वाली अम्मा ने देखा तो लाठी टेकते हुए उसकी तरफ़ भागी। दूसरे लोग भी शिवलाल के इस अप्रत्याशित व्यवहार से स्तम्भित रह गये। शिवलाल की जमानत के लिए गुलाबदेई ने इतनी दौड़-भाग की थी और अब शिवलाल का यह व्यवहार सब लोगों को सकते में छोड़ गया।

'शिवलाल तुम्हारा दिमाग़ तो ठीक है?' मलाईवाली अम्माँ ने शिवलाल से हाँफते हुए पूछा, 'जानते हो तुम्हारे लिए बेचारी ने क्या नहीं किया?'

'जाओ मैया अपना काम करो।' शिवलाल ने अपने दोनों हाथ जोड़ दिये।

'तुम्हें शर्म नहीं आयी बहू के ऊपर हाथ उठाते।' मलाईवाली अम्माँ उत्तेजित हो गयी। लाठी के ऊपर रखा अम्माँ का हाथ थर-थर काँपने लगा।

'मैया इसे तुम बहू कहती हो?' शिवलाल गुस्से में काँप रहा था, 'यह तवायफ़ों से भी गयी-गुज़री है। तवायफ़ें कोठे पर बैठती हैं, यह ला की मौड़ी पर मे धकला चला रही है।'

'च च च""यह क्या कह रहे हो बेटा।' अम्माँ चक्की के सामने सीढ़ी

के तौर रखे एक बड़े पत्थर पर बैठ गयी, 'तुम कुत्ते की मौत मरोगे। तुम एक देवी को गाली बक रहे हो।'

'यह देवी नहीं कुतिया है।' शिवलाल बोला, 'चाँ की मूत को एक तवायफ़ ही मिली मेरी जमानत के लिए !'

'वह तो हजरी का कमाल था।' अम्माँ बोली, 'बहू ने सब हिन्दुअन के सामने नाक रगड़ी, कोई आगे न आया। अज़ीज़न बी भी हजरी के कारण मान गयी, बहू तो उसे जानती तक नहीं।'

'ये सब झूठी बातें हैं। मैं इस लौं की मौड़ी की रग-रग पहचानता हूँ। मेरी नींद लगते ही यह तवायफ़ों से मेल-जोल बढ़ाती है।'

गुलाबदेई पल्लू से आँसू पोंछते हुए चक्की के अन्दर चली गयी और खटिया पर लेट कर फफक-फफक कर रोने लगी।

'मैया तुम्ही बताओ, एक शरीफ़ आदमी की जमानत एक तवायफ़ क्यों लेगी ?'

'क्यों, तवायफ़ इन्सान नहीं होती क्या। मुझे तो लगता है तवायफ़ें बहुत से शरीफ़ लोगों से बेहतर होती है। बाकर रात-रात भर हकीमजी के चबूतरे पर पड़ा हुआ चिल्लाता था, तुमने उसके लिए एक टिकिया का भी इन्तज़ाम न किया। अज़ीज़न ही उसे अस्पताल ले गयी और तुम्हें भी जेल से वही छुड़ा लायी।'

'वह छिनाल बाकर की कमाई खाती थी और अब इस हरामज़ादी की कमाई खाना चाहती है।' शिवलाल बोला, 'मैं इसकी इतनी धुनाई कर दूँगा कि यह अज़ीज़न का ज़ीना चढ़ने लायक न रहेगी।'

'तुम्हारा दिमाग़ फिर गया है,' बुढ़िया बोली, 'बुढ़ापे मे शादी रचाने से यही होता है।'

'हाँ हाँ, मेरा दिमाग़ फिर गया है।' शिवलाल ने दोबारा दोनों हाथ जोड़ दिये, 'मुझे मेरे हाल पर ही छोड़ दो मैया। अब मुझे कोई मुग़ालता नहीं रहा, सब चीजें आइने की तरह साफ़ हो गयी हैं।'

'तुम्हारे सिर पर तुम्हारा काल चढ़ कर बोल रहा है।' बुढ़िया बड़ी कठिनाई से लाठी का सहारा लेकर खड़ी हुई, 'मौत से पहिले चींटियों के पर निकल आते हैं। तुम बेमतलब एक देवी को सता रहे हो। तुम्हारा क्या होगा तुम्हीं जानो। हरि इच्छा यही थी।'

मलाई वाली अम्माँ बड़बड़ाते और लाठी टेकते हुए घर की तरफ़ चल दी।

शिवलाल खटिया पर पसर गया। उसे हवालात जाने से इतनी ग्लानि

नहीं हुई थी जितनी यह सोच कर हो रही थी कि एक तवायफ़ ने उसकी ज़मानत ली।

उसे पूरा विश्वास हो गया था कि गुलाबदेई चोरी-छिपे तवायफ़ों से मेलजोल बढ़ा कर न जाने अब तक क्या-क्या गुल खिला चुकी है। शिवलाल तभी सशंकित हो गया था जब वह गुलाबदेई को हरवक्त ट्रांजिस्टर पर गन्दे फ़िल्मी गाने सुनते देखता। उसका दृढ़ विश्वास था कि संगीत वग़ैरह तवायफ़ों के ही शौक़ हैं। बोला, 'लगता है तुम्हारे दिन पूरे हो गये हैं और नीम का भूत तुम्हारे ऊपर सवार हो चुका है।'

'दिन तुम्हारे पूरे हो चुके हैं।' गुलाबदेई क्रोध और अपमान से जलती हुई बोली, 'मेरे ऊपर झूठे आरोप लगाते तुम्हें शर्म नहीं आती। मैं अब जिन्दा भूत बन कर तुम्हारे सीने पर मूँग दलूँगी। मैंने तुम्हारी कई लात खायी हैं अब अगर तुमने मुझे रोकने की कोशिश की तो एक ऐसी लात जमाऊँगी कि तुम सीधा सुरग सिधार जाओगे।'

शिवलाल को स्थिति के इतना विकट हो जाने की उम्मीद नहीं थी। वह चकित-सा खटिया पर बैठ गया और बड़े व्यंग्य, घृणा व प्रायश्चित में गुलाबदेई को अपने सामने से गुज़रते देखता रहा। निर्विकार भाव से गुलाबदेई ने बच्चे को गोद में उठा लिया और बाहर निकल गयी।

'तुम्हारी टाँग तोड़ कर कुएँ में डाल दूँगा।' लेटे-लेटे ही शिवलाल बोला गुलाबदेई ने उसकी बात पर ध्यान न दिया। पलट कर भी न देखा।

गुलाबदेई के ओझल होते ही एक फ़िल्मी दृश्य की तरह शिवलाल को पण्डित शिवनारायण गली के मुहाने पर दिखायी दिया। शिवनारायण गली में आने की बजाय वहीं खड़ा किसी से बतियाने लगा। थोड़ी देर बाद जब वह चक्की के सामने से गुज़रा तो शिवलाल ने पूछा, 'कहिए पंडितजी कुशल मंगल तो है?'

'सब भगवान् की किरपा है।' पण्डित बोला, 'अभी भाभी से मालूम हुआ कि आप लौट आये हैं।'

'हाँ भाई!' शिवलाल बोला, 'पहले हम लोग तवायफ़ों की ज़मानत लिया करते थे, अब कलियुग में तवायफ़ें, हमारी ज़मानत लेने लगी हैं।'

पण्डित हँसा, अपने कत्थई दाँत निकाल कर देर तक हँसता रहा। बोला, 'पहले तवायफ़ें एक गली में सीमित थीं, अब दफ़ा आठ के बाद देखना गली-गली में छा जायेंगी।'

'बड़ी पते की बात की आपने पण्डित जी।' शिवलाल बोला, 'अब आप

ही बताइए एक शरीफ़ आदमी की जमानत कोई तवायफ़ क्यों कर लेगी ? जाहिर है उस तवायफ़ की नजर उस शख्स की बीवी पर होगी। क्यों मैं गलत कह रहा हूँ ?'

'पहेलियाँ न बुझाओ। ठीक-ठीक कहो क्या कहना चाहते हो ?' पण्डित कुछ नहीं समझ पा रहा था।

'उस हरामजादी को मेरी जमानत के लिए कोई शरीफ़ आदमी न मिला। आपसे ही कहती तो क्या आप मना करते ? मगर उसके तो पर निकल रहे हैं। फ़ौरन तवायफ़ों का जीना चढ़ गयी।'

शिवलाल जानता था, पण्डित की हैसियत जमानत लेने की नहीं, मगर उसे प्रसन्न करने के लिए इतना ही काफ़ी था।

'किसने ली आपकी ज़मानत ?'

'अजीजन बाई ने। लगता है साली चुनाव लड़ने की तैयारियाँ कर रही है। सुनते हैं अभी पिछले रोज उसने बाकर मियाँ को अस्पताल में दाखिल करवाया, होली-मिलन के लिए सौ रुपये चन्दे मे दिये जो आज की महँगाई में धन्ना सेठ नहीं दे सकता और अब हमारी जमानत।'

'हाँ, अब तवायफ़ें भी चुनाव लड़ेंगी, शासन करेंगी। मगर भैया, यह अजीजन बाई तो किसी तरह से तवायफ़ नहीं। मैंने खुद अपनी आँखों से बड़े-बड़े लोगों को उसका जीना चढ़ते देखा है। सुनते हैं एक बार वह शहर के डी० एम० से बिगड़ गयी और पलक झपकते ही उसका तबादला हो गया। अजीजन को आप तवायफ़ का दर्जा देते है तो ज्यादती करते है। रेडियो वाले लाख नाक रगड़ कर रह गये मगर अजीजन बी रेडियो के लिए गाने को राजी न हुई। बोली, जिसको मेरा गाना सुनना हो, मेरे दर पर आकर सुन ले या हैसियत हो तो बुला ले।'

शिवलाल जिस दिशा में सोच रहा था, वह अजीजन के पक्ष मे न थी बोला, 'यह सब बातें छोड़ो। हम राजा-महाराजा है न डी० एम० ! हम तो सिर्फ यह जानना चाहते है कि एक शरीफ औरत का तवायफ़ों के पीछे भागने का क्या काम ? साली सोचती होगी कि उधर तो बहुत पैसा है, बहुत आराम है। बड़े-बड़े लोग फ़र्शी सलाम अर्ज करते है, जरूर इस पेशे मे कोई दम होगा। मेरी बात आप समझ रहे है पंडित जी, कि नहीं।'

'यह तो है। यह तो है। यही वजह है शिवलाल जी, मैं आज तक पंडिताइन को सहर नहीं लाया। सहर की हवा लगते ही कई लुगाइयों के पर निकलने लगते हैं।'

'अब आये पंडित जी आप सही बात पर।' शिवलाल पालथी मारते हुए

धीरे से बोला, 'इस साली के पर ही निकल रहे हैं। मगर मैंने निकलने से पहले ही काट दिये। एक लात जमाई कि साली बच्चे को गोद में उठा कर भागती नजर आई।'

'कौन ?'

'गुलाबदेई।'

'कहाँ भाग गयी ? वह तो अभी नुक्कड़ पर मिली थी। उसी ने तो बताया कि आप लौट आये हैं।'

'हूँ।' शिवलाल बोला, 'इसी को तिरिया चरितर कहते है। डाग पर लात खा कर गयी और खुसखबरी बाँटने लगी ! और कुछ नही बताया ?'

'न।'

'मैंने निकाल दिया। रोज का क्लेस खत्म हुआ। औरत के नखरों पर आदमी जाये तो तबाह हो जाये। औरत माया है, आपका क्या विचार है पण्डित जी ?'

'मैं तो सोचता हूँ, औरत जात को हमेशा जूते की नोक पर रखना चाहिए।' पण्डित जी ने कहा, 'सास्तों में भी यही लिखा है कि स्त्री नरक है, सब पापो का मूल है, विष है। मल है। माया है। छल है। मूत्र है।'

पण्डित की बातो से शिवलाल थोड़ा उत्साहित हुआ, बोला, 'इस लौंडी के लच्छन मुझे शुरू से ही ठीक नही लग रहे थे। आप खुद ही सोचिए पण्डित जी, अच्छे घरो की बहू-बेटियाँ तवायफों से ताल्लुकात बढ़ायेंगी तो हमारे समाज का क्या होगा। मैं तो चक्की के चलते इस नरक मे पड़ा हूँ वरना किसी ऐसी बस्ती मे रहता, जहाँ का वातावरण शुद्ध होता।'

'शिवलाल जी, मैं तो आपको बरसों से देख रहा हूँ। आप हमेशा इस मुहल्ले में ऐसे रहे है जैसे कीचड मे कमल रहता है। आपने किसी औरत की तरफ कभी आँख उठा कर भी नही देखा। जब जब औरत मरी, चुपचाप दूसरी सादी कर ली, मगर गन्दगी नही फैलाई।'

'ठीक कहते हो पण्डित जी, कमल की तरह रहना भी बहुत बड़ी तपस्या है। मैं ही जानता हूँ कि इन तवायफों ने मुझे रिझाने के लिए क्या क्या नही किया। एक तवायफ़ तो मकान का लालच देकर मुझसे निकाह करने को तैयार थी।'

'तौबा तौबा।' पंडित अपनी चोटी छूकर बोला, 'बड़े बड़े रिसिमुनि तक इस कमजात औरत के चक्कर से न बच पाये। आपकी जगह कोई लालची आदमी होता तो उनके चक्कर में आकर अपना परलोक भी बिगाड़ बैठता। आप यकीन रखिए जब गुलाबदेई भूखों मरेगी तो आपकी सरन में ही आयेगी।'

'न न, अब मेरे घर में उसके लिए कोई जगह नहीं। भगवान राम ने एक धोबी के कहने से सीता जी को निकाल दिया था। मैं किस हैसियत का हूँ। सारी दुनियाँ मुझ पर थू-थू करेगी, अगर उस छिनाल को मैंने जगह दे दी। आप ही सोचिए पंडित जी उसे यहाँ किस चीज की कमी थी ? घर की चक्की चलती थी, खाने-पीने को इफ़रांत था, पहनने के लिए एक-से-एक कपड़े थे। लेकिन अगर औरत को बुरी लत पड़ जाये उसे फिर भगवान भी सही रास्ते पर नहीं ला सकता। उसे तो घर छोड़ने का बहाना चाहिए था। मगर मैं अपने घर को एक आश्रम की तरह पवित्र मानता हूँ। मेरे जीते जी यहाँ चकला नहीं चल सकता, सिर्फ चक्की चल सकती है।'

पंडित हो हो कर हँसा। उस ने गुलाबदेई में कभी ऐसा कोई लक्षण नहीं देखा था। वह हमेशा सर पर पल्लू डाले कोल्हू के बैल की तरह आटा पीसती रहती। पण्डित ने कहा, 'शिवलालजी, हमें कभी ऐसा नहीं लगा कि गुलाबदेई में कोई खोट है। मैंने तो उसे जब भी देखा, सर पर पल्लू लिये ही।'

'आप ठहरे भोले बांभन, आपने तिया चरित्तर नहीं देखा। यह सब नाटक होता है। पड़ाइन ऐसी हरकत करती तो आप क्या करते ?'

'मैं ? मैं तो उसकी टाँगें ही तोड़ देता। उसका खून पी लेता, गला घोंट देता और यहीं चक्की के नीचे दफ़ना देता। आपने तो पड़ाइन को देखा नहीं। मजाल है आँख उठा कर मेरी तरफ़ देख भी ले। देखेगी तो आँखें निकाल लूँगा। औरत की क्या मजाल कि मर्द से आँख मिला ले। इसीलिए देहात में डाल रखा है, माता-पिता की सेवा करती है। सब भगवान की किरपा है।'

शिवलाल ने देखा कि बात खत्म हो रही है तो उसने तुरत चाय के लिए आदेश दौड़ाया। वह अभी अकेला नहीं रहना चाहता था। अन्दर ही अन्दर उसे बहुत घबराहट हो रही थी कि गुलाबदेई बच्चे को लेकर कहाँ चली गयी। कहीं गंगा जी में न कूद मरे। गोद में छोटा बच्चा है। बता रही थी बच्चे को भी दो दिन से बुखार था।

पंडित भी इस प्रसंग से ऊब चुका था। उसने जल्दी से चाय पी और चलता बना। शिवलाल अन्दर कोठरी में जाकर गुलाबदेई का सामान समेटने लगा। अभी पिछले महीने उसने गुलाबदेई को चाँदी के पाजेब बनवा कर दिये थे, वे जस के तस सन्दूक में पड़े थे। उसने राहत की साँस ली।

• •

पण्डित नगर महपालिका का एक अस्थायी कर्मचारी था। नाम पूछे जाने पर वह अपना नाम इस प्रकार बताता था: सिवनरैन दुबे वल्द प्रकास नरेन दुबे, गाँव जमुनीपुर, तहसील फूलपुर, जिला इलाहाबाद।'

पंडित शिवनारायण वर्षों से नगरमहापालिका में अस्थायी कर्मचारी था और इन वर्षों मे एक अस्थायी कर्मचारी के तमाम गुण और अवगुण उसमे आ गये थे, जैसे वक्त-बेवक्त खुशामद करना, अधिक बोलना, सुस्ती, आलस, चुगलखोरी वगैरह वगैरह।

बाईस-तेईस साल पूर्व शिवनारायण दुबे के पिता एक बार कुम्भ के अवसर पर इस नगर मे आये थे और जब किसी भी होटल या सराय मे जगह न मिली तो उन्होने एक रुपये माहवार पर एक कोठरी किराये पर ले ली थी। कुम्भ पर उन्होने जम कर कल्पवास और स्नान किया था। स्नान और कल्पवास से अपनी आत्मा को इतना शुद्ध और क्लेशरहित पाया कि उन्होने तय कर लिया कि वह एक कोठरी लेकर जरूर डाल देंगे। गाँव से कभी मन उखड़ा तो यहाँ आकर दो-एक माह बिताया करेंगे। सस्ती का जमाना था और फिर ईश्वर की कृपा से जमीन भी अच्छी खासी थी। वे जब कभी तहसील जाते, एक रुपये माहवार के हिसाब से नगरसेठ को मनीआर्डर करवा देते। इस प्रकार वह कोठरी बीसियों वर्षों से पं० प्रकाशनारायण दुबे के नाम चली आ रही थी। पहले इस कोठरी के किवाड़ भी थे, मगर कुछ बरस पहले होली के उत्साह में लडको ने किवाड़ हिलाये तो दीमक की मार से सूखे पत्तो की तरह अलग हो गये। जमाना अच्छा था कि किसी ने कोठरी पर अधिकार नहीं जमा लिया। कोठरी तो तब बसी जब पंडित प्रकाशनारायण के बेटे शिव नारायण की मसें भीगनी शुरु हुईं। पं० शिवनारायण दुबे कुछ इस रफ्तार से जवान हुए कि पंडितजी उदास रहने लगे। उन्हे विश्वास हो गया था कि यह लड़का उनकी पुश्तो से चली आ रही इज्जत खाक़ मे मिला देगा। अब हर दूसरे-तीसरे दिन लड़के की शिकायतें आने लगी, तो पंडित जी ने बहुत जल्दी में पड़ोस के एक गाँव में शिवनारायण की शादी तय कर दी। शिवनारायण दुबे सगाई, शादी और गौना की मंजिलें इतनी फुर्ती से लाँघ कर एक सुन्दर-सी गुड़िया का बाप बन गया कि कोई कल्पना नही कर सकता था,

यही शिब्बू एक दिन शहर जाकर नगर महापालिका का अस्थायी कर्मचारी हो जायेगा। हुआ यों कि एक दिन जब शिवनारायण दूबे के पिता लड़की के बाबा बनने और तभी से उसकी शादी की चिन्ता में घुले जा रहे थे, अचानक उन्होंने शिवनारायण दुबे को अपनी खटिया के सिरहाने खीसें निपोरते हुए पाया।

'का बात है सिब्बू ?'

'आप बताये रहे कि सहर मे एक कोठरी लिये रहेन।'

'तो ?'

'मैं सहिर जाऊँगा।' शिवनारायण ने अपने समस्त दाँतो की प्रदर्शनी लगा दी और बोला, 'अब सहिर जाये बिना ई गरीबी न मिटी। अब तू हमका कोठरी का पता द्‌या और टिकिस कटवाइ द्‌या।'

प्रकाशनारायण बेटे के कायाकल्प से सकते में आ गये। उनका खयाल था कि जो थोड़ी-बहुत ज़मीन बची है, यह उनके मरते ही बेच खायेगा। वह मन-ही-मन मुस्कराये। दुलहिन के आने से कुछ तो होता ही। बिटिया हो गयी, तो क्या हुआ, अपना सिब्बू तो रास्ते पर आ गया।

'सहिर जाइ कै का करिबो ?'

'इ हम सहिर जाइ कै देखब। हमसे अब ई गरीबी सही नाई जात बा ! चाहे अब हमका मजूरी करइ का परे, हम लछमी को बताइ देब कि हम केकर बेटवा हई।'

प्रकाशनारायण दुबे अपने बेटे की बातचीत व बातचीत के तेवर से बेहद प्रभावित हुए। उन्हें विश्वास हो गया कि उनका बेटा अब सही रास्ते पर आ गया है। वह अन्दर गये और लौट कर अपने बेटे के हाथ में दो चीजें *थमा दीं—कोठरी की चाबी और एक-एक रुपये के पच्चीस नोट।* दोनों चीजें इतनी आसानी से पा कर शिवनारायण ने सोचा, 'बुढ़ऊ, ने पचीस रुपये *पहले ही दे दिये होते तो सहिर जाने की समस्या ही पैदा न होती।'* पंडिताइन ने महज दो चीजें माँगी थीं—अंगिया और पेटीकोट। पंडित दोनों चीजों का जुगाड़ नहीं कर पा रहा था और पंडिताइन उसकी नाक में दम किये थी।

'तब दीहा जब एकर जरूरत न रहे !' एक दिन पंडिताइन तैश में आ गयी थी, 'रोज़-रोज चला आवत ह्या ! कबहूँ इहो सोच्या है कि पंडिताइन कै *कछू सपना है ? एक ठो अंगिया और एक ठो पेटीकोट के लिए कहे रहे और* तू ओहू के जुगाड नाय कै पाया। और रामपिअरिया के पास दुइ-दुइ ठो होय गवा !'

पंडिताइन की बात सुन कर पंडित शिवनारायण दूबे का पुरुषत्व कुछ इस...

तरह से जागा कि वह तुरन्त अपने पिता के पास जा पहुँचा। उसने तभी तय कर लिया कि अब वह पंडिताइन को दिखा देगा कि वह कौन है और क्या कर सकता है। पिता पर विजय प्राप्त करके वह सीधा पंडिताइन के पास पहुँचा जो उस समय बच्ची को गोद में लिये दूध पिला रही थी, और बोला, 'पंडिताइन, अब हम रामपिआरी के घर वाले की नाईं सहिर जात हई। अब तू जउन कहबू ओका हम लईन के आऊब। मुला तू बाबू कइ खयाल राखिउ कि उनका बुढ़ोती में कउनो तकलीफ़ न होइ पावै।'

पंडित को शहर की हवा लगी तो शहर का ही होकर रह गया। होली-दीवाली वह गाँव आता और अपने पिता को आश्वासन दे आता कि वह जब अगली बार आयेगा तो जमीन का एक टुकडा खरीद कर पुरखों की आत्मा को शान्ति पहुँचायेगा।

वास्तव में शहर जाते ही उसे सेठ भैरूलाल के यहाँ ग्राहकों को पानी-वानी पिलाने, मालगोदाम से माल छुड़ाने जैसा छोटा-सा काम मिल गया था। भैरूलाल की कपड़े की दुकान थी। पण्डित वक्त का फ़ायदा उठा कर जल्दी ही चालू बन गया। कभी मालगोदाम के बाबुओं को खुश करने के बहाने कभी चा-पानी के बहाने भैरूलाल से रुपया-अठन्नी जरूर ऐंठ लेता और इस बात पर कभी गौर न करता कि सेठ उसे सुबह से शाम तक दौड़ाता है। एक दिन पण्डित ने महसूस किया कि सेठ उसका शोषण कर रहा है, तो उसने सेठ के पाँच रुपये गुम कर दिये, जो उसने चुँगी के लिए दिये थे। अपनी बात को असरदार बनाने के लिए पंडित ने कोठरी में जाकर सदियों पुराने ब्लेड से अपने कुरते की जेब काट डाली। जेब उसी तरह कटी थी, जैसे पण्डित की दाढ़ी कटती थी—यानी कहीं सफ़ाचट और कहीं पूरी फसल। उन पाँच रुपयों में से पण्डित ने केवल बीस पैसे का बिस्कुट खरीदा और बाकी के पैसे सन्दूक में संभाल कर रख दिये। पुराना ब्लेड वह सेठ भैरूलाल के यहाँ से उठा लाया था। वह ब्लेड उसके बहुत काम आया था। उसी से उसने इस बीच शेव बनायी थी—मुँह पर कपड़ा धोने वाला साबुन पोत कर और बिना रेजर के। अब वह ब्लेड इतना कुन्द हो गया था कि पण्डित उससे अगर कागज काटना चाहे तो न कटे।

पंडित की कोठरी की बगल में नगर महापालिका के एक क्लर्क चतुर्वेदी जी रहते थे। एक दिन उन्होंने शिवनारायण को सूचना दी कि नगर महापालिका में कुछ जगहें खाली हैं। पंडित ने सुना तो चतुर्वेदी जी से पूरी जान-

कारी लेली कि नौकरी दिलाने में कौन उसकी मदद कर सकता है। सौ रुपल्ली की वह अस्थायी नौकरी पाने में पण्डित ने दिन-रात एक कर दिया। उन दिनों नगर महापालिका के मेयर भी कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। पंडित ने किसी तरह उनके घर में घुसपैठ कर ली और दिन-रात पानी भरने लगा। पण्डित की बेगारी से मेयरजी की पत्नी इतनी प्रसन्न हो गयी कि अगले ही सप्ताह उसे अस्थायी नौकरी मिल गयी। वह कान्यकुब्ज ब्राह्मण अगर एक वर्ष भी मेयर के पद पर बने रहते तो पण्डित अस्थायी से स्थायी हो जाता। मगर पण्डित का भाग्य खराब था कि बाजपेयी जी अगले चुनाव में कुछ इस तरह हारे कि उनकी जमानत की राशि भी जब्त हो गयी। बाजपेयी जी क्या हारे पण्डित के सारे सपने चकनाचूर हो गये। बाजपेयी जी से मिल कर पण्डित लौटता तो इस तरह के सपने देखने लगता—पण्डित के दो बच्चे हैं.... एक लड़की, एक लड़का। घर में कोई आता है तो वे टा टा-टा टा, बाई-बाई करते हैं....पण्डिताइन उसकी बगल में बैठ कर सिनेमा देख रही हैं, वह सो रहा है और पण्डिताइन उसके पाँव, उसकी टाँगें दबाये चली जा रही है। पण्डित को इन सपनों से इतना मोह हो गया कि ऐसे सपनों के बीच ही सोना पसन्द करता। ये सपने उसके लिए लोरी बन गये थे।

अगले मेयर जब पण्डित की खिदमत से जरा भी प्रभावित न हुए और पण्डित को बिना स्थायी करवाये दिल के पहले धक्के से स्वर्ग सिधार गये तो पण्डित को अपना भविष्य अन्धकारमय लगने लगा। वह महसूस करने लगा उसने पिता की जमीन पर ही मन लगा कर काम किया होता तो आज कोई परेशानी न होती। उसे निराशा का दौरा पड़ता तो पण्डिताइन को गाली बकने लगता, 'साली! हरामजादी! अंगिया और पेटीकोट के खातिर हमका देस से निकारि देहेसि!'

पण्डित को जब अपना जीवन बेमतलब और निरर्थक लगने लगा तो एक दिन वह चौक गया और चुपचाप गीताप्रेस का छपा गोस्वामी तुलसीदास का रामचरितमानस का गुटका खरीद लाया और अपना जीवन दूसरी तरह से बिताने की कोशिश करने लगा।

'रामचन्द्र जी को उसके पिता ने वनवास दिया था और मुझे इस मुईं ने', पण्डित अक्सर सोचता, 'रामचन्द्र जी के साथ लक्ष्मण जी थे, सीता जी भीं और पण्डित सिवनारायण दुबे निपट अकेला है।'

नगर महापालिका ने पण्डित शिवनारायण दुबे के जिम्मे [illegible]
लगाये थे—एक नगर महापालिका के अफसरों के घर के [illegible]

करना, यानी जो नल लगातार बहते रहें, उनके वाशर वगैरह बदल देना। दूसरे कहीं से पाइप लीक कर रहा हो तो उस पर सफ़ेदा या सिमेन्ट पोत देना।

पण्डित शिवनारायण दुबे चूंकि प्लम्बर नहीं था इसलिए वाशर बदलने में ही उसे घण्टों लग जाते। वाशर बदलने का काम पण्डित शिवनारायण दुबे कुछ इतनी तल्लीनता से करता कि सर्कस मे कोई जोकर भी क्या करता होगा। देखते देखते उसके कपडे भीग जाते, साँस फूल जाती, कही न कही से खून बहने लगता। अफसर की बीवी अगर ज़रा भी दयालु स्वभाव की होती, तो साहब के वर्षो पहले उतारे कपड़े उसे उपहार स्वरूप मिल जाते। पण्डित की आत्मा को परम सन्तोष मिलता। वह भूल जाता कि उसके पैरो पर हथौडा गिरा था, चाबी रैंच मे अंगुली आ गयी थी।

अपने सहकर्मियो को वह बडे गर्व से बताता, 'यह कमीज जो इस समय मैं पहने हूँ, प्रशाशक जी की है, खुश हो गये मेरे काम से और बोले, पंडित जी, भेंट तो नया कपडा करना चाहते थे, मगर फिलहाल यही तुच्छ भेंट स्वीकार कर लीजिए।'

सच तो यह है कि पण्डित प्लंबिंग का क ख ग तक नहीं जानता था परन्तु वह कुछ इतनी लगन और मूर्खता से अपना काम करता था कि जाड़े मे भी पसीने से तर-ब-तर हो जाता। कई बार अटकलपच्चू मे ही उसे सफलता मिल जाती।

बाद मे जब सिविल लाइन्स में फौव्वारा बन गया तो पण्डित को एक और काम सौंप दिया गया—फौव्वारे का संचालन करना। पण्डित को जब इसकी खबर मिली तो वह बहुत प्रसन्न हुआ। यह समाचार सुनते ही वह हिरन की तरह कुलाचें भरने लगा। पण्डित को इस तरह कूद-फाँद करते देख उसके साथियों ने सोचा कि पण्डित खुशी के मारे पागल हो गया है। पण्डित के एक साथी ने उसे थाम लिया और बोला, 'पण्डित जी इस काम से पगार उतनी ही मिलेगी। यह बन्दर की तरह कूद-फाँद काहे मचा रहे हो?'

'सरकार बहादुर तुम्हारी तरह चूतिया नही!' पण्डित भड़क गया, 'निगम साहब बता रहे थे कि किसी जिम्मेदार आदमी को ही यह काम देना चाहते हैं। फौव्वारे की लागत सुनोगे तो गश खा के यही गिर जाओगे बेटा।'

पण्डित ने बिजली मिस्त्री से क्षण भर मे ही फौव्वारा चलाना और बन्द करना सीख लिया। हरा बटन दबाते ही बत्तियाँ जलने लगतीं और पानी की फुहारें एक टोप-सा बना लेती। पानी में टिमटिमाती नन्ही बत्तियाँ देख कर पण्डित मुग्ध हुए बिना न रहता। फौव्वारा देखकर उसमे एक नया सौन्दर्य-

बोध जन्म लेने लगा। पण्डित को अपना यह काम इतना अच्छा लगा कि सुबह होते ही वह अपनी ड्यूटी का इन्तज़ार करने लगता, उसकी ड्यूटी सूरज डूबने के बाद शुरू होती थी। वह चार-पाँच बजे तक नियन्त्रण-कक्ष के आस-पास मँडराता नज़र आता और सूरज ढलने का इन्तज़ार करता। फौव्वारे के पास चार-पाँच मोची अपनी दुकान लगाते थे। उन पर पण्डित कुछ ही दिनों में इतना हावी हो गया कि एक मोची ने उसे एक नयी चप्पल भेंट कर दी। चप्पल प्राप्त करके पण्डित का आत्मविश्वास और बढ़ गया। इसका बुरा असर हुआ। वह गुण्डई पर उतर आया और एक दिन उसने घोषणा कर दी कि यहाँ वही आदमी दुकान लगा पायेगा जो उसे को पाँच रुपये प्रतिमाह देगा। अपने प्रभाव की झूठी कहानियों से पण्डित ने उन लोगों को इतना भयभीत कर दिया कि वे उसके रौब में आ गये।

पण्डित ने कहा, 'बट्ट साहब का नाम सुना है ? परसों उनका नल बिगड़ गया, तो साहब ने मुझे ही ठीक करने के लिए भेजा। बट्ट साहब ने मुझे देखते ही कहा, 'पण्डित जी यह सिविल लाइन्स में मोचियों की भीड़ काहे को जमाये हो, एक-एक का सामान फिकवा दूँगा और अन्दर कर दूँगा !' मैंने कहा, 'साहब वे गरीब लोग हैं। आपको दुआ देंगे, आप ऐसा कहर मत ढाइए !' पण्डित ने अपने कान में अधजली बीड़ी खोंस रखी थी, जेब से माचिस निकाल कर बीड़ी सुलगाने लगा, 'जब तक सिवनरैन दुवे वल्द प्रकासनरैन दुबे, गाँव जमुनीपुर, तहसील फूलपूर आप लोगों के साथ है, आपका बाल भी बाँका नहीं हो सकता ! बट्ट साहब जिदिया गये तो डी० एम० साहब हैं। कभी-न-कभी उनका नल भी जरूर बिगड़ेगा।'

नियंत्रण-कक्ष के पास फलों का ताज़ा रस निकालने वाला एक ठेला लगाता था। पण्डित की बातें उसके कान में पड़ी तो वह भी प्रभावित हुए बिना न रह पाया। किसी दिन उसकी बिक्री जम कर हो जाती और मोची लोग दुकान बढ़ा कर जा चुके होते तो वह पण्डित को गढ़े सन्तरों का रस पिला कर आश्वस्त हो जाता। मोचियों के सामने पण्डित को पटाने से उसकी हेठी होती थी। पण्डित रस का गिलास थाम कर अपनी कोठरी के बाहर स्टूल पर बैठ जाता और बड़े ठाठ से एक-एक घूंट पीते हुए लगभग आध घण्टे में गिलास खत्म करता।

सिविल लाइन्स में जब सन्नाटा होने लगता तो पण्डित हाथ डालकर अन्दर से गुटका रामायण निकाल लाता और सुन्दरकाण्ड का पाठ आरम्भ कर देता। आस-पास के कुछ लोग, जिनमें दो एक रईस किस्म के पान वाले भी होते, घर जाते हुए दस-पाँच मिनट के लिए पण्डित का प्रवचन सुनने रुक जाते।

• •

गुलाबदेई एक बेसहारा, अनाथ और बदनसीब औरत थी। उसके पिता साबुन की एक फैक्ट्री में मज़दूर थे। वह अभी पेट में ही थी कि उसके बाबू सड़क पार करते हुए ट्रक के नीचे कुचल गये। माँ प्रसव में चल बसी। वह अभी एक दिन की ही थी कि उसके एक दूर के मामा उसे देहात ले गये। उनके कोई सन्तान नही थी। घर मे गुलाबदेई के चरण पड़ते ही चमत्कार हुआ। शादी के बारह वर्ष बाद मामी के गर्भ मे बालगोपाल आ बिराजा। उसके बाद मामीजी नियमपूर्वक हर वर्ष बच्चा जनने लगी। देहात में गुलाबदेई को प्यार करने वाला कोई नही रहा। बच्चो के गूँ मूत उठाते ही उसका बचपन बीत गया। वह बड़ी हुई तो मामा को उसके ब्याह की चिन्ता सताने लगी। वह अपने काम से कही बाहर जाते तो देहात मे प्रचारित कर जाते कि गुलाबदेई के लिए लड़का देखने जा रहे है। यह सिलसिला अधिक दिन न चला। आखिर उसके मामा ने शिवलाल से एक हजार रुपये लेकर खुशी खुशी मे उसकी शादी रचा दी! गुलाबदेई देहात के उन्मुक्त वातावरण में चिड़िया की तरह पली थी, मगर शिवलाल ने उसे बदबूदार अँधेरी गली की कोठरी के पिंजड़े में डाल दिया। शुरू मे तो उसकी इच्छा होती थी कि वह चक्की की चहारदीवारी तोड़ कर भाग निकले, मगर भाग कर भी वह कहाँ जाती? मामा शादी के नाम पर उसे फिर किसी के हाथ बेच देते।

शिवलाल से पिट कर वह बहुत तैश मे घर से निकली थी और अब सड़क पर आकर उसे लग रहा था, वह पूरे जहान में अकेली है। एक बार तो उसके जी में आया कि वह अज़ीज़न बी की शरण में चली जाये। वह दयालु स्त्री है, ज़रूर उसकी मदद कर देगी। इधर-उधर मे भटक कर वह नीम के नीचे आ बैठी और रोती रही। शिवलाल चक्की पर ताला ठोंक कही जा चुका था। गली में चिराग जलने लगे तो वह बहुत डर गयी। रात में वह कहाँ जायेगी?

गोद में नन्हा बच्चा था। उसकी नाक बह रही थी और वह लगातार रो रहा था। गुलाबदेई ने कई बार कोशिश की मगर उसने दूध को मुँह भी न लगाया। सिद्दीकी साहब उधर से गुज़रे तो गुलाबदेई को देखकर ठिठक गये।

'गुलाबदेई, ख़ैरियत तो है ?'

एक छोटी बच्ची ने बताया कि शिवलाल ने उसे मार पीट कर घर से निकाल दिया है।

'बहुत बदतमीज़ आदमी है।' नेताजी के मुँह से बेसाख़्ता निकला, 'औरत पर हाथ उठाता है।'

गुलाबदेई नेताजी की आवाज़ सुनकर क्रोध से सुर्ख़ हो गयी, 'आप उससे भी बड़े बदतमीज़ है।' गुलाबदेई ने कहा, 'वह तो औरतों पर हाथ उठाता है, आप औरतों का धंधा करते है। उनकी मजबूरी का फ़ायदा उठाते हैं। आप तो एकदम गिरे हुए इन्सान है।'

नेताजी हतप्रभ रह गये।

'लगता है तुम पागल हो गयी हो।'

'पागल भी हो जाऊँगी। आप ने तो कोई कसर न छोड़ी थी।'

'मैंने क्या किया ?'

'आ हा, जैसे जानते नही।' गुलाबदेई बोली, 'जाओ जाओ, अपना रास्ता नापो। मेरा मुँह न खुलवाओ। मगर एक बात सुनते जाओ कि एक बेसहारा औरत का जी दुखा कर तुमने अच्छा नहीं किया। खुदा तुम्हे कभी मुआफ़ न करेगा।'

'तुम्हें जरूर कोई गलतफहमी हो गयी है।' नेताजी ने बगलें झाँकते हुए कहा, 'किसी ने तुम्हें मेरे खिलाफ भड़का दिया है।'

'बहुत भोले बनते हो। यही है तुम्हारी नेतागिरी तो मैं सौ लानतें भेजती हूँ।'

आसपास भीड़ जुटने लगी। गली मे आज तक नेताजी के सामने कोई इतनी कड़ी ज़ुबान में न बोला था। नेताजी के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगी, 'क्या ज़माना आ गया है, जिसका भला करो, वही खाने को दौड़ता है।'

'नेताजी आप भला नहीं, सौदा करते है।' गुलाबदेई ने तुनक कर कहा।

'बदज़ुबान औरत ! अपनी ज़ुबान सम्भाल कर बोल।' नेताजी को क्रोध आ गया। एक औरत सरे बाजार उनके चरित्र हनन पर उतर आई थी।

'जाओ जाओ, अपना रस्ता नापो।' गुलाबदेई ने निहायत लापरवाही से कहा, 'जाओ जाओ, मेरा मुंह न खुलवाओ।'

नेताजी ने वहाँ से हट जाना ही मुनासिब समझा । न जाने यह औरत उन पर झूठ मूठ का क्या आरोप लगा दे ।

'लगता है इसका दिमाग फिर गया है ।' नेताजी ने कहा और घर की तरफ चल दिये । नेता जी के तमाम मित्र भी असमंजस में पड़ गये थे कि ऐसी कौन सी बात हो गयी, जो एक औरत इतना बढ चढ़ कर बोल रही थी ।

भीड छँटते ही गुलाबदेई फिर बेसहारा हो गयी । मगर उसकी संतप्त आत्मा को कुछ राहत मिल गयी थी । अचानक उसे हजरी बी का ध्यान आया । वह चुपचाप बच्चे को गोद में उठा कर हजरी बी की कोठरी की तरफ़ चल दी । उसके पास बहुत सम्भाल कर रखे चालीस पचास रुपये थे और तन के कपड़े । कुल मिला कर इतनी सी पूँजी थी ।

संयोग से हजरी घर पर ही थी । उसे देख कर गुलाबदेई की जान में जान आयी ।

'सलाम अलैकुम हजरी बी ।' गुलाबदेई ने खुश होते हुए कहा ।

'का हो बिटिया ।' हजरी ने कहा, 'बच्चे को लिए कहाँ जा रही हो ?'

'जहाँ भगवान जी सरन दिला दें ।'

'क्यो का भवा ?'

'चक्की वाले ने जीना दूभर कर रखा है ।' गुलाबदेई की आँखें नम हो गयीं और अपना ब्लाउज उतार कर उसे पीठ और वक्ष पर पड़ी साँटें दिखाती हुई बोली, 'यही नहीं, दिन भर माँ-बहन की गाली बकता है । मैं उसके साथ नहीं रहूँगी । गंगाजी में कूद कर जान दे दूँगी ।'

चलते समय वह अपने को बहुत बहादुर पा रही थी मगर हजरी बी से बात करते ही उसके धैर्य का बाँध टूट गया । वह फफक कर रोने लगी ।

'इस तरह रो रो कर बेहाल न हो बिटिया ।' हजरी बोली, 'मैं अभी शिवलाल की खबर लेती हूँ ।'

'इससे क्या होगा हजरी बी । वह तो तुम्हें देखते ही भड़क जायेगा । उसके सर पर भूत सवार है । कह रहा है, तवायफ़ों से मेल जोल बढ़ा कर मैं पेशा करती हूँ । अजीजन बी को भी गाली बक रहा था ।'

'ऐसे एहसान फरामोश आदमी की तो सूरत भी न देखनी चाहिए ।' हजरी बोली, 'तुम्हारे लिए कोठरिया का इन्तजाम तो कर दूँगी । मगर तुम्हारा पेट कौन भरेगा ?'

'मेरे पास चालीस-पचास रुपये हैं । सोचती हूँ चाट का खोमचा लगाऊँगी ।'

हजरी को बात जँच गयी। वह गुलाबदेई को लेकर तुरत चमेली के घर की तरफ चल दी। चमेली के पास बड़ा मकान था, मगर खण्डहर के रूप में।

हजरी गुलाबदेई का हाथ थामे उसे अँधेरे में ही चमेली के यहाँ ले गयी। गुलाबदेई को ताज्जुब हो रहा था कि अँधेरे में वह कैसे रास्ता पहचान रही है। चमेली के यहाँ पहुँच कर उसने पाया कि वह अजीजन के मकान की बगल में ही खड़ी है।

अजीजन का मकान दो मंज़िला था, मगर अजीजन के मकान की बगल में यह एक और मकान था। इसे मकान कहना तो गलत होगा, मलबा कहना अधिक ठीक होगा, मलवे को बीच-बीच में से हटा कर सीढ़ियाँ बनायी गयी थीं। अन्दर से भी वह मकान खण्डहर लगता था, मिट्टी ईंटों के ढेर के अन्दर से एक पगडण्डी-सी बन गयी थी। यही पगडण्डी चमेली की कोठरी तक ले जाती थी। भीतर कोठरी में दिन में भी अँधेरा रहता था। इस समय एक ढिबरी टिमटिमा रही थी।

चमेली की दो सन्तानें थीं। लड़के का नाम साहिल था और लड़की का हसीना। चमेली अपने जमाने में अच्छी गाने वालियों में रही है। उसका यही मकान जो अब खण्डहर है, कभी खूब जगमगाता था और दिन भर संगीत सारंगी-तबले का रियाज चलता था। उसके घर के आसपास चौतरे पर एक पेट्रोमैक्स हर समय रखा रहता था। आस पास फूल-मालाएँ बिकती थीं। दीवानों की भीड़ लगी रहती थी। उन्ही में से एक दीवाने से उसने निकाह कर लिया था। आबिद से। आबिद की सिलाई की दुकान थी। शहर मे उससे बड़ा पतलून काटने का उस्ताद नही था। आबिद चमेली की आवाज़ पर फ़िदा था। वह अक्सर दुकान के बाद चमेली के यहाँ चला आता। बाद मे रात देर तक वही पडा रहता। निकाह के बाद वह चमेली के यहाँ ही रहने लगा। साहिल कोई चार बरस का था और हसीना गोद में कि एक दिन आबिद सहसा गायब हो गया। आबिद ने कुछ रोज पहले इच्छा प्रकट की थी कि चमेली मकान उसके नाम कर दे ताकि वह उसे गिरवी रख कर सिविल लाइन्स में एक बढिया दुकान ले ले। चमेली को यह प्रस्ताव बहुत नागवार गुज़रा था। मर्द ज़ात पर भरोसा करना उसे सिखाया ही नही गया था। चमेली ने साफ मना कर दिया और नतीजा यह निकला कि बाद में आबिद का शहर मे कोई नाम-निशान भी न मिला।

कई लोगो का दृढ़ विश्वास था कि आबिद ने लखनऊ मे एक और औरत रख ली है और वहाँ अपने तीन बच्चों के साथ सुख-चैन से जिन्दगी बसर कर रहा है। कुछ लोगों ने तो यहाँ तक भी बताया कि हज़रतगंज के पिछवाड़े उसकी कपड़े सीने की दूकान है और वह दिन भर कान में पेन्सिल टिकाये अपने काम मे मशगूल रहता है। मगर साहिल की अम्मा .खुदा से डरने वाली औरत थी। वह दिन-रात बीड़ी बनाती और जब बीड़ी गोल करते-करते उसकी उंगलियाँ थक जाती तो अपने प्यारे साहिल को अपने साथ चिपका कर सो जाती। उसने कभी लखनऊ जाकर अपने खाविन्द से मिलने की कोशिश नही की। वह पाँचो वक्त की नमाज़ पढ़ते हुए अपनी ज़िन्दगी की गाड़ी किसी तरह ठेल रही थी।

साहिल की छोटी-छोटी बातो से उसे बेहद सुकून मिलता। उसके कपड़े छोटे हो जाते तो वह ख़ुशी से पागल हो जाती। वह अपने सामने जैसे एक बढ़ते हुए पौधे को देख रही थी। उसकी दिली तमन्ना थी कि साहिल किसी तरह पढ़-लिख कर अच्छी नौकरी कर ले और उस हरामज़ादे आबिद को बता दे कि वह उसके टुकड़ो की मुहताज नही थी। बगल मे यादगारे हुसेनी स्कूल था। चमेली ने उसका नाम लिखवा दिया और कापी, पेंसिल व किताबें खरीद दी। मगर साहिल का पढ़ाई मे मन नही लगा। वह अभी आठ बरस का ही था कि चमेली ने उसे बीड़ी पीते देख लिया। स्कूल में एक दिन उसने ऐसी हरकत कर दी कि उसे न केवल स्कूल से निकाल दिया गया बल्कि हेड-मास्टर साहब ने चमेली की भी बहुत खबर ली, 'ऐसे आवारा लड़को के लिए इस स्कूल मे जगह नही है।'

'मास्टर साहब इसे ख़ूब पीटिए, पूरी सज़ा दीजिए, मगर इसका नाम न काटिए।' मगर मास्टर साहब नही माने। चमेली घर लौट कर घण्टों रोती रही। माँ और बेटा दोनो भूखे पेट सो गये। माँ ने बीड़ी नही बनायी, इसका मतलब था, अगले रोज भी रोज़ा रहेगा।

साहिल को भूखा रहने की आदत नही थी। वह अगले ही रोज़ गायब हो गया। उसने स्टेशन तक का रास्ता पैदल ही तय किया और बिला टिकट लखनऊ जाने वाली गाडी मे बैठ गया। उसने तय किया कि वह लखनऊ जाकर अपने अब्बा के कारोबार मे हाथ बँटायेगा और अपने भाई-बहनो के साथ एक नयी ज़िन्दगी की शुरुआत करेगा। उसने हज़रतगंज की तमाम दुकानें छान डाली, मगर उसे अपने अब्बा का कहीं पता न चला। आख़िर वह अगले रोज भूखा-प्यासा बिला टिकट यात्रा करते हुए घर लौट आया। अम्मा और हसीना बिना दिया जलाये कोठरी में सुबक रही थी। चूल्हे को देख कर

लगता था जैसे कई दिनों से नहीं सुलगाया गया।

हजरी से गुलाबदेई की कहानी सुन कर चमेली बहुत द्रवित हो गयी। डोरी मे दोनों कानों पर बँधा उसका चश्मा नीचे सरकने लगा, जैसे चमेली का मुँह सिकुड़ गया हो। उसने अपनी बीड़ी की टोकरी गोद से उठा कर पायताने रख दी और बोली, 'यह मर्दों की कौम बहुत खुदग़र्ज कौम है। औरत को तो इन्सान का दर्जा भी नहीं देना चाहती। इस बेचारी के साथ तो बहुत ज़ुल्म हुआ है। पहले एक बूढ़े से बांध दी गयी और अब उस बूढ़े ने भी दुत्कार दिया। परवरदिगार को यही मंजूर होगा।'

चमेली ने हसीना को बुलाया कि इस मुसीबतज़दः औरत के लिए किसी कोठरी में इन्तज़ाम कर दे। घर में एक ही ढिबरी थी। उसी को थामे हसीना के पीछे-पीछे हजरी और गुलाबदेई मलबे के ऊपर-नीचे चलती रही। चार-पाँच कोठरियाँ थी। तीन के दरवाजे तो बाहर से सही सलामत थे, मगर छतें ढह चुकी थी। एक कोठरी की छत सही थी, मगर दरवाज़ा तीनो के ज़ोर लगाने पर भी न खुला। जाने उसके पीछे क्या धरा था। वह टस-से-मस न हुआ।

यह सब देख कर गुलाबदेई बहुत घबरा गयी। ऐसे माहौल में वह रह भी कैसे पायेगी। गोद मे फूल-सा बच्चा है। अन्दर जाने कैसे-कैसे साँप-नेवले रहते होंगे।

अन्तिम कोठरी का दरवाजा ज़रा-सा धकेलने पर खुल गया। अन्दर उतनी बुरी हालत न थी। दोपहर में साहिल यही अपने दोस्तो के साथ ताश वगैरह खेलता था। बीच में एक टाट बिछा था और ताश के पत्ते पड़े थे।

'कल सुबह आकर इसकी सफाई मे जुट जाना।' हजरी बी ने कहा, 'आज रात किसी तरह मेरे पास काट लेना। हम फ़क़ीरो के पास ओढ़ने-बिछाने के लिए तो कुछ नही, मगर छोटी-सी कोठरी ज़रूर है।'

'चक्की वाले को मालूम होगा कि मैं तवायफ़ की सरन में हूँ तो वह और भड़केगा।'

'भड़कने दो उस सूअर को।' हजरी ने कहा, 'ऐसे नामुराद शख़्स के बारे में सोचो भी मत। देखना वह ख़ुद आयेगा एक दिन और नाक रगड़ेगा। अल्लाह मियाँ उसे रास्ते पर लायेंगे ज़रूर। ज़रा उसका घमण्ड तो टूटने दो।'

रात भर गुलाबदेई हजरी की बातें सुनती रही। हजरी लगातार बोले जा रही थी और बीच-बीच में रुक कर मातम करने लगती। सुबह उठते ही हजरी उसे दोबारा उसी कोठरी में ले गयी।

गुलाबदेई को यह कोठरी चक्की से भी ज्यादा घुटनभरी लगी। मगर वह बच्चे को चमेली के पास खटिया पर लिटा कर तुरन्त सफ़ाई में लग गयी।

उसने शाम तक में सब जाले साफ़ कर दिये। डण्डा लेकर चमगादड़ भगा दिये। हजरी ने गोबर-मिट्टी का इन्तज़ाम भी कर दिया और गुलाबदेई ने लीप-पोत कर कोठरी गुजर लायक बना ली।

हजरी ने देखा तो चकित रह गयी। वह भी गुलाबदेई का हाथ बँटाने लगी।

'वह सुनते हैं शिवलाल बाबू तुम्हारी तलाश में रात भर भटकता रहा। बलुआघाट तक जाकर देख आया है।'

गुलाबदेई के चेहरे पर गर्द की एक हल्की पर्त चढ़ गयी थी। बालों का रंग भी मटमैला हो गया था। वह एक टाट बिछा कर बैठ गयी और बोली, 'वो इतना जालिम है कि दूसरी कोई औरत होती तो सीधी बलुआघाट ही जाती। मगर मैं यों जिन्दगी खतम न करूँगी। उसी के सीने पर बैठ कर मूँग दलूँगी।' गुलाबदेई ने चक्की चलाने का अभिनय करते हुए कहा, 'तुमने ठीक कहा था, उसमें दम ही कितना है। वह जल्दी ही रास्ते पर आ जायेगा।'

सिद्दीकी साहब ने सुना कि गुलाबदेई चमेली के यहाँ है तो वे सुबह उठते ही चमेली के घर पहुँच गये। वे रात भर सो नहीं पाये थे, मगर इतना ज़रूर महसूस कर रहे थे कि गुलाबदेई का इतना रोष बेवजह नहीं होगा। हो सकता है, शिवलाल ने अथवा उनके किसी प्रतिद्वन्द्वी ने उसे भड़काया हो। गुलाबदेई ने सरेआम जिस तरह उनके चरित्र पर आक्रमण कर दिया था, वे रात भर तिलमिलाते रहे थे।

सुबह उठते ही उन्होंने गुलाबदेई का पता लगवाया और हसीना को बुलवा भेजा। हसीना से यह जानकर वे आश्वस्त हो गये कि गुलाबदेई ने उनको गाली देना तो दूर, उनका जिक्र तक नहीं किया।

हसीना ने बड़े चाव से गुलाबदेई को सूचना दी कि नेताजी मिलने आए हैं। चमेली नेता जी के लिए चाय चढ़ा रही थी कि हसीना ने आकर दुहरा दिया, 'गुलाबदेई कह रही है, हम कौनो नेता बेता को नहिं जानित।'

सिद्दीकी साहब का चेहरा सुर्ख हो गया। उन्होंने हसीना को आदेश दिया, 'उसे यहीं बुलवा लाओ। हम अम्माँ के सामने ही बात करब।'

'क्या हुआ बेटवा ?' चमेली ने पूछा।

'अम्माँ आप तो मुझे दसियों बरस से जानती हैं। मुहल्ले वालों के लिए मैंने क्या क्या नहीं किया। इसी औरत के आदमी को पुलिस थाने ले जा रही थी, मैंने कोतवाल साहब से बोलकर दारोगा का ही तबादला करवा दिया।

यह औरत कल मुझे बिला वजह गरियाने लगी। मैं रात भर सो नहीं पाया। मैं यही जानने आया हूँ कि मेरा कसूर क्या था जो इस औरत ने मुझे इतना जलील किया।'

गुलाबदेई कचहरी में हाजिर हो गयी। अम्माँ ने उसे देखते ही कहा; 'बहू, नेताजी क्या कह रहे हैं ?'

'क्या कह रहे हैं ?' गुलाबदेई ने बच्चे को कमर के दाहिने भाग से उठा कर बायें पर टिका लिया।

'कि तुमने इनको बहुत जलील किया।'

सिद्दीकी साहब को एक अच्छा वकील मिल गया था। वह चाहते भी यही थे कि वकील ही जिरह कर ले, वह क्या बोलेंगे। गुलाबदेई ने हसीना को बच्चा थमा दिया और अम्माँ की बगल में पहुँच गयी, 'अम्माँ यह नेता नहीं, दलाल है, भड़ुआ है।'

सिद्दीकी साहब ने सुना तो उनकी आँखों में अँगारे सुलगने लगे, 'गुस्ताख़ औरत ! ज़ुबान सम्भाल कर बोल।'

सब लोग गुलाबदेई के विस्फोट से हतप्रभ रह गये थे। बच्चा रोने लगा तो हसीना उसे झुलाने लगी ताकि कोई वार्तालाप छूट न जाये।

'तुम नेता ही नहीं, सीनाजोर भी हो। अम्माँ को बता दूँ कि तुमने मुझे कोतवाल साहब के यहाँ क्यों भेजा था ?'

'बता दो।' सिद्दीकी साहब ने इत्मीनान से एक लम्बा कश खींचा।

गुलाबदेई चमेली के पैरों पर गिर पड़ी, 'अम्मा अगर मैं झूठ बोलूँ तो खुदा मुझे दोजख में डाल दे। इसी शख्स के कहने पर मैं कोतवाल साहब के यहाँ गयी थी और उन्होंने मुझे भींच लिया और.....' गुलाबदेई भरी बैठी थी, एकदम फूट पड़ी। अम्माँ के पैरों से लिपट गयी, 'मेरी ऐसी बेइज्जती कभी न हुई थी। मैं तो इन्हीं के कहने से गयी थी।'

अम्माँ ने बहुत घृणा से सिद्दीकी साहब की तरफ़ देखा। सिद्दीकी साहब के माथे की नसें फड़कने लगीं। वे यह कहते हुए तुरत वहाँ से हट गये कि 'मैं अभी जाता हूँ और उस दरिन्दे को भंगी बना के छोड़ूँगा।'

नेताजी इतने तैश में थे कि जाते जाते दहलीज से टकरा कर गिर पड़े। उनका होंठ कट गया। खून बहने लगा, मगर वह होंठों पर रूमाल रखे तेज़ी से गली के बाहर निकल गये।

नफ़ीस अज़ीजन बी की सीढ़ियों पर इत्मीनान से बैठा बीड़ी फूँक रहा था कि उसने नेताजी को इतनी उत्तेजना में गली से निकलते हुए देखा। वह गली के मुहाने तक उनके साथ साथ इस अन्दाज में चलता रहा कि है कोई

माई का लाल जो हमारे नेताजी को तरफ़ आँख उठा कर भी देख ले, मगर नेताजी इस कदर परेशान थे कि उनकी निगाहें नफ़ीस के दोस्ती के हाथ को भी नजर अंदाज कर गयीं। नफ़ीस लौट आया और उसने जीने पर बैठ कर नयी बीड़ी सुलगा ली।

गुल अभी तक जीना नहीं उतरी थी और नफ़ीस बेचैन हो रहा था। उसने तय किया कि गुल ने और देर की तो वह उसके लाख कहने पर भी उसके साथ विश्वविद्यालय नहीं जायेगा। वह भी नेताजी की तरह ही बेन्याज़ी का रुख अख्तियार कर लेगा। मगर तभी जीने पर ठक ठक होने लगी। वह इन कदमों की आवाज पहचानता था। जीने से हट गया। नीचे अब्दुल का रिक्शा तैयार खड़ा था।

नफ़ीस ने जेब से रूमाल निकाला और अपनी साइकिल की गद्दी पर बेरहमी से फटकने लगा।

● ●

गुलबदन का एक अध्यापक था। शर्मा। जितेन्द्र मोहन शर्मा। शर्मा गुल से बहुत प्रभावित था। पहले दिन से ही शर्मा ने गुल के बारे में बहुत-सी अफ़वाहें सुनी थी। कोई कहता, गुल तवायफ़ की लड़की है। कभी सुनने में आया, गुल किसी स्टेट की राजकुमारी है। एक दिन शर्मा के मुंह लगे छात्रों ने उसे प्रेम जौनपुरी के कुछ शेर सुनाए और बाद में इशारा किया कि ये तमाम शेर प्रेम जौनपुरी ने गुल को सम्बोधित किए है तो जितेन्द्र मोहन ने उन्हीं लड़कों के माध्यम से प्रेम जौनपुरी को अपने यहाँ दावत का निमन्त्रण भिजवा दिया।

शर्मा ने कभी शराब नहीं पी थी मगर उस रोज प्रेम जौनपुरी की शायरी से मुतआसिर होकर उसने कुछ कड़ुए घूंट भर लिये। जिस वक्त प्रो० जितेन्द्र मोहन शर्मा बाथरूम में जाकर कै कर रहा था, प्रेम जौनपुरी ने प्रोफेसर के सोफे पर पैर फैला दिये और एक आदर्श प्रेमी की तरह बदहवासी में अपनी गजल के शेर गुनगुनाने लगा :

तेरी जिद ऐ दोस्त अगर छिपने में, तरसाने में है,
तो मेरी जिद तुझको अपने सामने लाने में है।

अगले रोज प्रेम जौनपुरी पर, जो शर्मा के यहाँ अण्डे का नाश्ता डकार रहा था, जैसे पूरा होस्टल उमड़ पड़ा। प्रेम जौनपुरी दरवाजे तक गया और थरथराते हुए स्वर में बोला, दोस्तों कल रात ही मुअज्जज प्रोफेसर साहब के यहाँ एक शेर कहा है, आप लोग समाअ फरमाइए :

तेरी जिद ऐ दोस्त अगर छिपने में तरसाने मे है

प्रेम जौनपुरी अगली पंक्ति कहता, इससे पहले ही लड़कों ने उसे कन्धों पर उठा लिया और छात्रावास की तरफ़ चल दिये :

तेरी जिद ऐ दोस्त अगर छिपने में तरसाने में है

अगला वाक्य उन लोगों ने छात्रावास में जाकर ही सुना :

तो मेरी जिद तुझको अपने सामने लाने में है

अगली पंक्ति के फौरन बाद प्रेम जौनपुरी के लिए दारू की बोतल चली आयी। दरअसल गुलबदन जिस तरह रिक्शा पर पर्दा गिरा के विश्वविद्यालय आने लगी थी, उससे लड़कों में गहरी निराशा फैल गयी थी। केवल गुल की कक्षा के लड़के ही उसकी सूरत देख सकते थे। वह पुस्तकालय तक भी जाती तो बुर्के में।

इस बीच प्रेम जौनपुरी ने कई गजलें कहीं। उसकी गजलें विश्वविद्यालय में इतनी लोकप्रिय हुईं कि बहुत से लड़कों ने प्रेम जौनपुरी को अपना उस्ताद मान लिया। उसके शागिर्दों की लम्बी फेहरिस्त में प्रदेश के एक उपमन्त्री के बेटे के साथ-साथ शहर के बीड़ी-किंग का बेटा अनवर भी शामिल हो गया। दोनों पटु शिष्यों ने प्रेम जौनपुरी की शैली में दाढ़ी बढ़ा ली और हर वक्त उसके दायें-बायें रहने लगे। प्रेम जौनपुरी जो 'होली' में बैठा एक-एक पैग के लिए तरसा करता था, शहर के एक-से-एक बढ़िया बार और क्लब की शोभा बढ़ाने लगा। प्रेम जौनपुरी का आर्थिक संघर्ष अब समाप्त हो चुका था मगर अपनी शायरी की लाज रखने के नाते वह खद्दर के कुर्ते-पाजामें और बाटा की हवाई चप्पल में ही नजर आता। प्रेम जौनपुरी के शिष्यों ने उसकी ख्याति रेडियो स्टेशन तक भी पहुँचा दी और रेडियो पर उसे गाहे-बगाहे बुलाया जाने लगा। लड़के लोग, प्रेम जौनपुरी को रेडियो स्टेशन जीप पर छोड़ आते और जिस दिन रेडियो पर प्रेम जौनपुरी का प्रसारण होता, रेडियो स्टेशन के बाहर उसके दीवानों की भीड़ जुटने लगती। प्रसारण के बाद प्रेम जौनपुरी की प्रशंसा में इतने पत्र आते कि केन्द्र निदेशक बौखला जाता।

एक दिन गुलबदन ने रेडियो खोला तो उसे पहचानी-सी आवाज सुनायी दी:

अगर तू इत्तिफ़ाकन मिल भी जाये
तेरी फुरकत के सदमे कम न होंगे।

गुलबदन ने अपनी प्रैक्टिकल की कापी पर जल्दी से ग़ज़ल उतार ली और अगले रोज जब बख्तियार मियाँ सितार लेकर बैठे तो गुलबदन ने धीरे से इसी गजल पर रियाज करने की इच्छा प्रकट की। बख्तियार मियाँ मतला देख कर समझ गये कि ग़ज़ल होशियारपुरी या जौनपुरी की है। उन्होंने गुलबदन की अम्मा से मश्वरा करना चाहा, मगर गुल ने कुछ ऐसा इसरार किया कि बख्तियार मियाँ भी ग़ज़ल में डूब गये। रात देर तक गुलबदन इस एक शेर का रियाज करती रही। उस्ताद ने 'इत्तिफ़ाकन' शब्द की कुछ ऐसी मौसिक अदायगी की कि गुलबदन ग़ज़ल गाते हुए आत्म-विभोर हो गयी। इसी

के रियाज़ के बाद गुलबदन ने ग़ज़ल तैयार की। एक दिन जब गुल को लगा कि ग़ज़ल पर उसका पूरा अधिकार हो गया है, उसने अम्मी जान को गज़ल सुनायी। अम्मी जान ने बेइख्तियार बिटिया को चूम लिया मगर जब उन्हें मालूम हुआ कि ग़ज़ल जौनपुरी की है तो उनकी भौहें तन गयीं, 'यह उसी शोहदे की ग़ज़ल है। क्या वह तुझसे चोरी-छिपे मिलता है?'

'मुझ से कोई शोहदा चोरी छिपे नहीं मिलता।' गुल बोली, 'अम्माँ मुझ से ऐसी भाषा में न बोला करो।'

गुलबदन ने अम्मा की बात पर गौर नहीं किया और गज़ल गाती रही। गुल ने यह ग़ज़ल रेडियो से टेप की थी। अम्मा का मूड ठीक हुआ तो बोलीं, 'देखो बिटिया इस शेरो-शायरी ने ही तुम्हारी अम्मा को तबाह किया था। मैं चाहती हूँ, तहे दिल से चाहती हूँ मेरी बिटिया इस नरक से किसी तरह कश्ती काट ले! एक जमाना था संगीत और शायरी इस नरक की तरफ ले ज़ाते थे। शायरी के ऊँचे मकसद समाज के बड़े वर्ग ने अपने लिए सुरक्षित रख छोड़े थे। मुझे तुम्हारी आवाज से व तुम्हारी सूरत से अब डर लगने लगा है। क्या समाज तुम्हे इस नरक से निकलने देगा?'

'अम्मा मैं आई० ए० एस० में बैठूँगी।'

अज़ीज़न के देश की तीन राजधानियों में चार मकान थे। अच्छा-खासा बैंक-बैलेंस था और अनेक बैंकों में अनेक लॉकर थे, मगर अज़ीज़न की रूह को सुकून हासिल नहीं था। जिन्दगी ने उसे ख़ूब सुविधाएँ और नेमतें दी थी, मगर अज़ीज़न जिन्दगी से इतनी दहशतज़द: रहती, ज़ेहन में हर वक्त किसी दुर्घटना का ही अंदेशा बना रहता। उसे जब याद आता कि गुल का बाप अज़ीज़न के नाम दो मकान करके बाप की पूरी जिम्मेदारियों से बरी हो गया तो वह क्रोध से काँपने लगती। गुल कई बार लाड़ में आकर अपने अब्बा के बारे में जानना चाहती थी, मगर अज़ीज़न सर से पैर तक सिहर जाती। अब्बा का ज़िक्र आने पर जब से गुल ने अम्मा को दूसरे कमरे में जाकर औंधे मुँह लेट कर रोते पाया, उसने फिर कभी यह पूछने की हिमाक़त न की। अज़ीज़न ने अब तक केवल एक ही जवाब दिया था—'तुम जानोगी तो बहुत दुःख पाओगी। मरने से पहले बताऊँगी, ज़रूर!'

गुल उदास हो जाती और अपने कमरे में लौट आती—'या ख़ुदा, यह कैसी जिन्दगी अता की है!'

दिल्ली में अगला 'यूथ फेस्टिवल' हो रहा था। गुलबदन पार साल विश्व-विद्यालय के लिए ट्रॉफी जीत कर लायी थी, इस बार फिर उसका नाम पेश

किया जा रहा था। अजीज़न को यह सुझाव पसन्द न आया। उसे लगता, समाज लगातार उसकी बिटिया के लिए गड्ढे खोद रहा है। उसने कहा—'गुल, तुम दिल्ली नही जाओगी।'

गुलबदन जौनपुरी की गज़ल नगर से दूर, देश की राजधानी में जाकर गाना चाहती थी। गुलबदन को अपनी आवाज़ और जौनपुरी की भाषा पर, उस की संवेदना की तीव्रता पर पूरा भरोसा था। उसने अम्मा से कहा, 'अम्मा तुम अपनी बिटिया पर भरोसा रखो।'

'तुम एक शर्त पर चल सकती हो। मैं तुम्हारे साथ चलूंगी।'

गुलबदन को माँ का यह सुझाव बेहद फूहड़ लगा मगर वह एकदम इसे बरखास्त भी न कर सकी। उसने कहा कि वह विश्वविद्यालय से पूछ कर बतायेगी। उसके साथ दूसरी लड़कियाँ भी जा रही थीं—धवन थी, रीना थी, ज़ीनत थी, लवली थी, मगर किसी की माँ ने ऐसा प्रस्ताव न रखा था। उसने कई बार प्रो० शर्मा से इस विषय पर चर्चा करना चाहा मगर हर बार बात उसकी ज़ुबान पर ठिठक कर रह जाती। आखिर एक दिन उसने प्रो० शर्मा को अपने यहाँ चाय पर आमन्त्रित किया और अम्मा से बोली, 'अब तुम ही प्रोफ़ेसर साहब से बात कर लेना।'

प्रोफ़ेसर महज़ उत्सुकतावश ही गुल के यहाँ चला आया था। इधर-उधर ताकते-झाँकते। बड़े संकोच में। किसी तरह सर झुकाये हुए वह अज़ीजन बाई का ज़ीना चढ़ गया। नफ़ीस उन्हें पहचानता था, उन्हें देख कर मुस्कराया और अज़ीज़न की बैठक में बैठा आया। बाद मे वह दरवाजे के पास सीढ़ियों पर बैठ कर अज़ीज़न की बातें सुनने लगा।

अज़ीजन कमरे मे आयी तो प्रो० शर्मा दीवारों पर टँगी अज़ीजन की तस्वीरें देखने में मशगूल था। किसी तस्वीर में अज़ीज़न गा रही थी तो किसी में नाच रही थी। श्रोताओं और दर्शकों मे बड़े-बड़े लोग थे। उसकी यूनिवर्सिटी के एक भूतपूर्व उपकुलपति भी दिखाई दे गये। कुछ लोग अपनी पोशाक से राजा-महाराजा लग रहे थे। प्रोफ़ेसर का दिमाग घूमने लगा। इस माहौल में गुल कैसे पैदा हुई और कैसे विश्वविद्यालय तक पहुँची? यह औरत ज़रूर कोई गैर-मामूली औरत है।

प्रोफ़ेसर शर्मा भावुक आदमी था। भावुक होने से क्या होता है। उसने अपनी भावुकता के बावजूद अब तक चार फ़र्स्ट डिवीज़न्स प्राप्त किए थे। शर्मा

ने अब तक केवल मूक प्रेम ही किये थे, जैसे गैया करती है, मगर उसे वाणी नहीं दे पाती। वह इसी मूक कांगड़ा शैली में अब तक अनेक छात्राओं से प्रेम कर चुका था। शर्मा की नज़रों के सामने ही उसकी तीन प्रेमिकाओं की शादी हो चुकी थी, मगर प्रो० शर्मा ने उफ़ तक न की। उसके बाद उसने अपनी एक प्रेमिका को पति की बाँहों में बाँहें डाले क्लब में भी देखा, दूसरी को अपने फूले हुए पेट में देखा—मगर प्रोफेसर ने संकोच में हमेशा रास्ता काट लिया और अपनी भूतपूर्व छात्राओं के प्रति जड़ होता गया। आजकल उसका नया 'क्रेज़' गुल ही थी। गुल को लेकर वह बिस्तर पर चाहे कितनी करवटें बदलता मगर कक्षा में बजाय गुल के प्रति विनम्र होने के, उसे किसी न किसी बहाने डाँट देता। आज वह बहुत साहस बटोर कर उसकी अम्मा से मिलने आया था। उसे लग रहा था, वह उसकी अम्मा से बात करेगा तो शहर में दंगा हो जाएगा, जब कि गुल को लेकर उसके अन्दर पिछले कई रोज़ से दंगे चल रहे थे, फ़साद हो रहे थे, कत्लेआम मचा था। शर्मा को लगता उसने गुलकी तरफ़ कदम बढाया तो परिसर में महाभारत छिड़ जाएगा। लडके तो उसे गोली से उड़ा देंगे।

वह अभी सामान्य भी नही हो पाया था कि गुलबदन की अम्मा- खंडहर बता रहे है इमारत हसीन थी- को सार्थक करती हुई कमरे में दाखिल हुई। प्रोफ़ेसर की टाँगें काँपने लगी। उसकी समझ में न आ रहा था, वह क्या कहे। अज़ीज़न का, प्रोफेसर जैसे कई लोगों से ज़िन्दगी मे पाला पड़ चुका था। वह उससे अधिक अनुभवी और अधिक व्यवहार कुशल थी, बोली, 'आप इस नाचीज़ के यहाँ तशरीफ ला सके, यह मेरे लिए फ़ख्र की बात है।'

शर्मा ने कोई जवाब नही दिया। अपनी पसीने से तर हथेलियों को अपनी पतलून पर रगड़ कर रह गया।

'बिटिया दिल्ली जाने का ज़िक्र कर रही है। मैंने सोचा आपसे मश्वरा कर लूँ।'

'आप भरोसा रखिए। मैं हूँ। मैं, मैं साथ जा रहा हूँ।' शर्मा किसी तरह हकलाते हुए बोला।

अज़ीज़न मुस्करा दी। उसके चेहरे पर एक नई रोशनी आ गयी। उसने प्रोफ़ेसर को एक ही नज़र में परख लिया।

'मैं गुल को शबनम की तरह पवित्र रखना चाहती हूँ। मैं आपको भी तो ज्यादा नही जानती।' अज़ीज़न ने मन की बात एक ही वाक्य मे कह दी।

प्रोफ़ेसर और अधिक घबड़ा गया। प्रोफ़ेसर ने अपने अन्दर की पूरी ताकत को संजोते हुए कहा, 'आप यकीन रखिए! गुल जैसी होनहार छात्रा मेरे इतने वर्षों के अध्यापन में नहीं आयी! वह समझदार है। वह, वह,

वह," प्रोफेसर हकलाने लगा।

अजीज़न ने नफ़ीस से कहलवाया कि गुल से कहो, प्रोफेसर साब आये है, फ़ौरन चाय लेकर आये।

प्रोफेसर सिकुड़ कर बैठ गया। उसने मन ही मन तय कर लिया, वह इस गुल को, इस नरक से, इस घिनौनी दुनिया से एक बाज़ की तरह झपट कर उठा लेगा। उसे बहुत दूर एक नये संसार में ले जायेगा। वह रीडर होकर चण्डीगढ़ कभी भी जा सकता है। उसके गाइड, जो पुराने आर्य समाजी थे और उसे बहुत मानते थे, वही अध्यक्ष थे। उसकी इच्छा हो रही थी अजीज़न से एक अन्तर्देशीय माँग कर अभी पत्र लिख दे कि वह आ रहा है। वह आना चाहता है। वह आकर रहेगा। उसने अपने भीतर उमंगों की पतंग उड़ा ली।

गुल आयी तो प्रोफ़ेसर उसी तरह टाँगे जोड़े सिर झुका कर बैठा था। आहट सुनी तो सर उठा कर देखा, तुरन्त गुल से अपनी नजरें हटा लीं, जैसे उससे अनायास कोई गुनाह हो गया हो। वह अज़ीज़न की तरफ़ देखने लगा कि कही उसकी चोरी पकड़ तो नही ली गयी।

गुल के बाल खुले थे शायद आज ही शैम्पू किये थे। शर्मा को लगा, अब वह बाकी जिन्दगी इन्ही ग़ैसुओं के अँधेरे में बिताने के लिए जीवित है। उसने गुल की आँखो मे जैसे एक चाँद को बहुत नजदीक से देख लिया। शर्मा के शरीर के अन्दर बहुत गहरे तक उजाला हो गया। गुल ने जिस अदा से आदाब किया, वह अदा और संस्कृति, प्रोफेसर को लगा, अब पूरी दुनिया में सिर्फ़ गुल में शेष रह गयी है। उसने गुल के पाँव आज ही देखे थे। छोटे-छोटे साँचे में ढले हुए से पाँव। प्रोफेसर के अन्दर एक तूफान बरपा हो गया। अजीज़न होशियार औरत थी। शर्मा को ताड़ गयी, बोली, 'आप साथ जा रहे हैं, वरना मैं नही चाहती कि बिटिया दिल्ली जाये।'

'आप नही चाहती तो मैं भी न जाऊँगा।' प्रोफेसर के मुँह से बेसाख्ता निकल गया। दरअसल प्रोफेसर ने मन ही मन पूरे परिवार से अपना रिश्ता जोड़ लिया था।

'आपको संकोच नहीं हुआ इस तरफ़ आने में?' अजीज़न ने पूछा।

'इस तरफ़ तो मैं अक्सर आता रहता हूँ।' प्रोफेसर ने कहा और फिर अजीज़न के चेहरे की तरफ़ देख कर उसे लगा कि वह कोई ग़लत बात कह गया है, बोला, 'दरअसल चौक तक तो हर आदमी आता है।'

गुल ने चाय बनायी। उसने एक बहुत ही खूबसूरत प्याले में प्रोफेसर की ओर चाय बढ़ायी। प्रोफेसर ने गुल के नाखून देखे तो बेचैन हो गया। गुल ने 'बेज' रंग के नेल पालिश से नाखून रँगे थे। नाखून जैसे तुलसी के पौधे की

तरह पानी देकर बढ़ाये गये थे। शर्मा प्रकृति पर मुग्ध होने लगा कि प्रकृति इतने सुन्दर नाखूनों का सृजन कर सकती है। प्रोफेसर ने चाय की तश्तरी पकड़ते-पकड़ते थोड़ी चाय अपनी कमीज और पतलून पर गिरा ली। वह रुमाल निकाल कर चाय साफ करना चाहता था मगर अपना तुसा हुआ रुमाल निकालने में उसे संकोच हुआ। इतने में गुल एक नन्हा-सा नैपकिन ले आयी। अम्मा ने प्रोफेसर की पतलून का दाग मिटाना चाहा, मगर प्रोफेसर ने तौलिया ले लिया और धीरे-धीरे सहलाता रहा। उसे लग रहा था, यहाँ हर चीज महक रही है। गुल के बाल, तौलिया, चाय और पूरी क़ायनात।

'आपने बहुत इनायत फरमायी कि हमारे यहाँ तशरीफ़ लाये', अजीज़न बोली, 'आपसे मैं बेहद मुतआसिर हुई। आपकी निगरानी में गुल दिल्ली जायेगी।'

गुल का चेहरा कमल की तरह खिल गया। प्रोफेसर लगातार कुछ का कुछ कहे जा रहा था, बोला, 'मैं अपने से ज्यादा गुल का खयाल करूँगा। आप गुल की बिल्कुल चिन्ता न करें।'

जीने पर नफीस के खाँसने की आवाज आयी। अजीज़न ने तुरन्त नफ़ीस को पानदान उठा लाने के लिए कहा।

'आप किसी रोज खाने पर तशरीफ़ लाइए। गुल बहुत अच्छा खाना पकाती है। मैं भी तो देखूँ उसने क्या सीखा है।'

'जरूर आऊँगा।'

'गुल दिल्ली से लौट आये।'

प्रोफेसर कुछ देर बैठा शून्य में देखता रहा। साँझ घिर आयी थी। सामने खिड़की से थोड़ा-सा आसमान दिख रहा था। थोड़ी-थोड़ी देर बाद तोतों का एक झुण्ड आसमान में दिखायी देता, प्रोफेसर तोते गिनता—आठ। हर बार आठ ही तोतों का झुण्ड उसे दिखायी देता।

अजीज़न ने कहा, 'आज आसमान साफ है।'

'हाँ, साफ़ है। ये तोते कहाँ जा रहे हैं?'

तभी तोतों की एक डार फिर उतने से आसमान पर उभर आयी। अजीज़न ने कहा, 'मेरी नजर ही कमजोर हो गयी है। जरूर तोते होंगे। पुराने दिनों की हल्की-सी याद है।'

'अम्मा सचमुच तोते ही हैं।' गुल बोली।

'हर शाम लौटते हैं। रास्ता नहीं भूलते। अगर कोई परिन्दा भटक जाता है, तो सचमुच रहम आता है। एक बार भटकी हुई एक चिड़िया हमारे आँगन में उतर आयी थी। कमबख्त बिल्ली ने उसे दबोच लिया। मैंने

उसके बाद बिल्ली को अपने यहाँ घुसने नहीं दिया। नफ़ीस को खास हिदायत है कि बिल्ली इस घर में दिखायी नहीं देगी।'

प्रोफ़ेसर ने बहुत कौतुक से अज़ीज़न की तरफ़ देखा, कितने मानवीय, कितने सभ्य हैं ये लोग। अज़ीज़न बहुत प्यार से शर्मा के लिए पान लगा रही थी। उसने शर्मा को पान का बीड़ा पेश करते हुए निहायत सादगी से कहा, 'वैसे प्रोफेसर साहब हर आदमी की जिन्दगी में ऐसे लम्हे आते हैं, जब वह सिर्फ़ आसमान की तरफ़ टकटकी लगा कर देखा करता है।'

'और तोते गिनता रहता है।' प्रोफेसर ने बीच में एक ठहाका लगाया और पान मुँह में रख लिया।

शर्मा ने विदा चाही तो अज़ीज़न ने उसके सिर पर बहुत ही स्नेह से हाथ फेरा। प्रोफेसर को लगा, जैसे उसकी माँ सर पर हाथ फेर रही हो। उसकी इच्छा हो रही थी कि वह अज़ीज़न के कदमों पर गिर पड़े और उससे इसी क्षण गुल की भिक्षा माँग ले।

गुलकमरे में ही आदाब की मुद्रा में हाथ माथे तक ले गयी और बोली—'खुदा हाफ़िज़।'

प्रोफेसर ने नीचे उतर कर पनामा का एक सिगरेट खरीदा और सुलगाया। फिर वह अपने घर की तरफ़ चल दिया। पैदल। उसके कानों में एक ही शब्द गूँज रहा था—खुदा हाफ़िज़।

प्रोफेसर जितेन्द्र मोहन शर्मा ने प्रथम श्रेणी में एम० एस० सी० किया था। पढ़ने में वह अपने बड़े भाई से भी होशियार था, जबकि उसका बड़ा भाई किसी तरह अमरीका निकल गया था, स्कॉलरशिप पर। वह भी निकल जाता, मगर उसके बूढ़े माता-पिता ने आँखों में आँसू भर लिये, जब उसके जाने का अवसर आया। उसके भाई ने अमरीका में एक गोरी से शादी कर ली और अपनी हिन्दुस्तानी बीवी की तरफ़ पलट कर भी न देखा। शर्मा की हिन्दुस्तानी भाभी एक स्कूल में अध्यापिका हो गयी, गोद में एक साल का छोटा बच्चा था। बाद में भाई कभी लौट कर नहीं आया। बड़े दिन या नव वर्ष पर उसका ग्रीटिंग कार्ड जरूर आ जाता था।

प्रो० शर्मा ने विश्वविद्यालय में नौकरी कर ली थी और इधर आये दिन उसके रिश्ते की बात चलती थी। उसके विभागाध्यक्ष अपनी गोद ली एक मोटी लड़की के संग उसे कई बार चाय पिला चुके थे। उसके पिता आये दिन कोई न कोई रिश्ता सुझाते। शर्मा ने दो चीजें बहुत पहले अपने भाई की शादी की असफलता को मद्देनजर रखते हुए तय कर ली थीं—एक, वह दहेज

नही लेगा ओर दो, वह अपनी पसन्द की लड़की से शादी करेगा। बहुत पहले तो वह विधवा विवाह करके समाज में एक आदर्श स्थापित करना चाहता था। उसने इस सिलसिले मे अपनी भाभी के बारे मे भी सोचा था, मगर उसकी भाभी विधवा नही थी, दूसरे वह अपने परिवार में एक विचित्र तरह का माहौल भी पैदा नही करना चाहता था।

अब शर्मा के पास विश्वविद्यालय की स्थायी नौकरी थी, सम्मान था और इधर उसकी चेतना मे एक लड़की अन्दर तक धँसती चली जा रही थी। वह जानता था, वह अपने इस विचार के बारे में अगर दीवार मे भी कह देगा तो पूरे शहर में हंगामा हो जायेगा, विश्वविद्यालय में यह खबर एक बम की तरह फूटेगी। फ़िलहाल वह प्रसन्न था कि गुल की अम्मी ने गुल को उसके संरक्षण में दिल्ली भेजना स्वीकार कर लिया था। वह घर पहुँच कर बाहर घास पर कुर्सी डाल कर बैठ गया। उसकी इच्छा हो रही थी कि वह आज किसी क्लब मे जाकर जश्न मनाये, मगर एक अज्ञात-सा भय बार-बार उसे अन्दर तक झकझोर जाता। क्या उसमें इतनी ताक़त है कि वह गुल को इस गलीज़ माहौल से उठा सके? क्या उसका परिवार इसकी इजाजत देगा? उसके बूढे माता-पिता का क्या होगा, जो एक बेटे से पहले ही कट चुके थे। क्या उसके भीतर इतनी ताकत है कि वह समाज से भिड़ सके? अगर साम्प्रदायिक दंगे हो गये? अगर उसके पीछे गुण्डे लग गये? प्रोफ़ेसर इस तरह के प्रश्नों से घायल होता चला गया। अचानक वह उठा और भीतर कमरे मे जाकर उसने रेडियो खोल दिया। शोर से उसे घबराहट होने लगी तो वह रेडियो को चिल्लाते छोड़ बाजार की तरफ़ निकल गया। उसके पास कोई नही था, जिससे वह अपने दिल का राज़ कह सके। नगर में उसका ऐसा एक भी मित्र नही था। अब दोस्त का दर्जा अगर कोई प्राप्त कर सकता है तो गुल ही।

शर्मा रात भर बिस्तर पर करवटें बदलता रहा। उसकी इच्छा हो रही थी वह दोबारा गुल के यहाँ लौट जाये। कितना अच्छा होता वही कही वह अपना पर्स गिरा आता और उसे लेने के बहाने एकाध घण्टे के लिए उसके यहाँ और बैठ आता। फिर सहसा उसने सुबह का इन्तजार शुरू कर दिया। कल गुल का 'पीरियड' नही था, मगर उसने तय कर लिया, वह उसे बुलवा कर दिल्ली-यात्रा के बारे मे बात करेगा।

समय काटने के लिए शर्मा अभी से दिल्ली की गाड़ी में बैठ गया। गुल उसके सामने बैठी है। वह नजरें चुरा कर गुल की तरफ़ देख रहा है। गुल एक पुस्तक पढ रही है। वह उससे पूछता है—'गुल क्या पढ़ रही हो?'

'दीवाने ग़ालिब!'

धत्त तेरे का ! गालिब के बारे में तो उसकी जानकारी बहुत सीमित है। इसका मतलब है कि उसे अब गालिब भी पढ़ना होगा।

'गुल तुम्हें ग़ालिब का कौन सा शे'र सबसे अधिक पसन्द है ?'

गुल उसकी तरफ़ नज़रें उठा कर देखती है। कहती है :

यदि मूल विलयन Na OH विलयन के साथ कोई अवक्षेप न आये तो Na^+, K^+ या (NH_4^+) की उपस्थिति का संकेत है।

गुल ठहाका लगाती है। प्रोफेसर उसके दाँतों की तरफ़ देखता रह जाता है। दाँत किस फार्मूले से बने हैं ?

गुल कहती है : आशिकी सब्र तलब !

यही सब सोचते हुए प्रोफेसर की आँखें मुँद गयी।

शनिवार को प्रो० शर्मा ने दल के सदस्यों को सम्बोधित किया। सामान के बारे में 'एक साइक्लोस्टाइल्ड' कागज दिया। सबको रेल का कन्सेशन मिल गया, इसकी सूचना दी। वह अभी असमंजस में ही था कि गुल से कैसे बात की जाये कि अचानक गुल उसके नजदीक आ गयी। उसकी तरफ देख कर मुस्करा दी। गुल ने लाल रंग का शॉल ले रखा था और उसका चेहरा ऐसा लग रहा था, जैसे शॉल की बगिया में गुलाब का फूल खिल आया है।

'अम्मी जान आपकी बहुत तारीफ कर रही थी।'

'सो नाइस ऑफ हर।' शर्मा ने कहा, 'मुझे खुद उस दिन बहुत अच्छा लगा।'

'अम्मा ने खाने की दावत दी है, अगर आपको परहेज न हो।'

'परहेज ? शर्मा हँसा, 'अम्मी को मालूम नहीं उनके बारे में मेरी कितनी अच्छी राय है और तुम्हारे बारे मे भी।'

कुछ लड़के बड़े कौतुक से शर्मा की ओर देख रहे थे। शर्मा ने लड़कों को देखा तो धीरे से बोला, 'मुझे तुमसे बहुत-सी बातें करनी हैं, सैकड़ों। खुदा जाने कब वक्त मिलेगा ?'

'गाड़ी मे।' गुल ने मचल कर कहा।

'एक दिन वक्त निकाल कर कुतुब चलेंगे।' शर्मा ने कहा।

गुल आश्चर्य से शर्मा की ओर देखने लगी।

एक लड़का जो नाटक का हीरो था, न जाने कब पास आकर खड़ा हो गया, बोला, 'शर्मा साहब हम भी कुतुब चलेंगे !'

'तुम्हीं नहीं, सब लोग चलेंगे।' शर्मा ने बडी चतुराई से लड़के की जिज्ञासा शान्त कर दी।

गुल लौटी तो बेहद खुश थी। प्रो० शर्मा उसे इतना मानते हैं। दरअसल लड़कियों के बीच प्रो० जितेन्द्र मोहन अत्यन्त लोकप्रिय था। उसकी लोकप्रियता

का एक राज यह भी था कि वही एकमात्र अविवाहित अध्यापक था। यही कारण था कि किसी लड़की को उसके दाँत पसन्द थे और किसी को बाल।

'मुझे वह पूरा पसन्द है।' रिक्शा में गुल धीरे से मुस्करायी। उसने तय किया घर पहुँचते ही किताबें फेंक देगी और पूरे बदन पर यादों का लिहाफ़ ओढ़ कर सो जायेगी।

गुल ने घर पहुँच कर अभी कपड़े बदले ही थे, कि मुहल्ले का एक बच्चा उसके हाथ में एक लिफ़ाफ़ा थमा गया। लिफ़ाफ़ा इत्र से महक रहा था। गुल ने बड़े उतावलेपन से लिफ़ाफ़ा खोला। गुल उर्दू पढ़ना जानती थी। नीचे कपिल का नाम पढ़ कर चौंक गयी। खत मुख्तसर-सा था। लिखा था :

जानेमन !

आपको ताज्जुब जरूर होगा, खत पाकर, मगर आप की फ़ुरकत मेरे लिए अब नाकाबिले बरदाश्त है। आपकी दीवानगी में मैंने दाढ़ी बढ़ा ली है और दिन-भर शेरो-शायरी में गर्क रहता हूँ। मेरे उस्ताद जनाब प्रेम जौनपुरी साहब हैं। जाने क्यों आपकी अम्मी जान ने उनके दाखिले पर पाबन्दी लगा दी है। उनके साथ-साथ हम लोग भी आपका नियाज हासिल कर सकते थे। हम लोग तो फ़क़ीर हैं। मेरे पिता जो प्रदेश के उपमन्त्री हैं, मुझसे मेरी निराशा की वजह पूछते हैं तो मैं उनकी बात हँस कर टाल देता हूँ। वे हमारी शादी में हस्तक्षेप नहीं करेंगे। मुझे लगता है समाज के सामने एक नया आदर्श रखते हुए उन्हें खुशी ही होगी और आपकी गली के तमाम वोट उन्हें मिल जायेंगे। मैंने अपने जज्बात का इजहार प्रेम जौनपुरी साहब से भी किया था। उन्होंने मुझे इतना इन्कलाबी कदम उठाने पर मुबारकबाद दी है। और शायद जल्द ही मौका मिलने पर आपकी अम्मीजान से इसका जिक्र करेंगे। मेरे पिता ने इस शादी की इजाज़त न दी तो मैं खुलेआम अगले चुनाव में उनका विरोध करूँगा। चुनाव सर पर आ गया है, घर पर अनशन कर दूँगा : आमरण अनशन। मेरे जज्बातों को मद्देनजर रखते हुए आप इस गरीब शायर की पुकार जरूर सुनेंगी और कल यूनिवर्सिटी में लाइब्रेरी के पीछे नफ़ीस की गैरहाज़िरी में मुझसे मिल कर मुझे एक नयी जिन्दगी अता फरमायेंगी। मैं रात भर कल सुबह की इन्तजार में अपने को शेरो-शायरी की पाकीज़ा दुनिया में गर्क रखूँगा। आज दोपहर एक गजल कही थी। उसके कुछ शेर मुलाहिज़ा फरमाइए:—

जमाने भर में दुनिया बेवफ़ा मशहूर है लेकिन
तेरे मिलने पे यह भी बावफ़ा मालूम होती है।

खाकसार,
कपिल

गुल ने कागज लिया और अम्मी के पास गयी। उसने खत अम्मी को थमा दिया और उनके पास ही बैठ गयी। अम्मा का नमाज का वक्त हो रहा था। नमाज से पहले अम्मा कोई व्यवधान नहीं चाहती। अम्मा ने महकता हुआ लिफ़ाफा देखा तो पूछा—'क्या है ?'

'तुम खुद ही पढ़ लो।'

अम्मा खत पढ़ने लगी। उसके चेहरे पर एक तनाव आने लगा।

'तुम इस लडके को जानती हो ?' अम्मा ने बहुत गहरी नजर से गुल की तरफ़ देखा।

'ग़ायबाना तौर पर ही जानती हूँ। उपमन्त्री के बेटे को यूनिवर्सिटी में पढ़ने वाला हर शख्स पहचानता है।'

अम्मा नमाज पढ़ने चली गयी। गुल की कुछ समझ मे न आया, अम्मा की क्या प्रतिक्रिया हुई। वह अपने कमरे में आकर लेट गयी। दरअसल गुल को खत पढ़ कर बहुत कोफ्त हुई थी। वह अम्मा के स्वभाव से भी परिचित थी। कोई ताज्जुब न होगा यदि अम्मा अभी डंडा लेकर उपमन्त्री के घर चल दे।

गुल की समझ में कुछ भी न आ रहा था। वह कल लाइब्रेरी के पीछे उस मजनूँ से मिलने को हरगिज़ तैयार न थी। बल्कि अगर उसने गुस्ताखी की तो नफीस से कह कर उसे पिटवा देगी। उसने अम्मा से ऐसे बहुत से मजनुओं के किस्से सुन रखे थे। बड़े-बड़े राजे-महराजे, जो अम्मा के कदमों पर लोटते थे, जी-हुजूरी करते थे, सिर्फ बातों के सौदागर निकले। अम्मा को नफरत है ऐसे लोगो से। गुल को अम्मा से भी ज्यादा नफ़रत है ऐसे मजनुओं से। अम्मा ने जिन्दगी में कितनी जिल्लतें उठायी हैं, मगर इस सारे माहौल से अम्मा ने गुल को कितना पाक रखा है ? है कोई इस गली की दूसरी औरत, जिसने अब तक अपनी लड़की की इतनी देखरेख की हो ?

अगले रोज जब गुल यूनिवर्सिटी जाने के लिए दरवाज़े की तरफ़ बढी तो अम्मा ने रोक दिया—'आज तुम स्कूल नहीं जाओगी।'

गुल ने हैरानी से अम्मा की ओर देखा। अचानक उसे कल की चिट्ठी की बात याद आ गयी। लगता है, अम्मा ने चिट्ठी को गंभीरता से लिया है।

'अम्मा आज तो बहुत जरूरी प्रेक्टिकल है।'

'हुआ करे, अम्मा बोली,' जाओ, कमरे में जाकर पढ़ो।'

सिद्दीकी साहब चमेली के घर से बहुत तैश में निकले थे। उन्होने तय किया था कि वह सीधे वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के बँगले पर जाएँगे। अगर उन्होंने कोई कार्यवाही न की तो डी० आई० जी० रेंज से मिलेंगे। वह जब तक कोतवाल को अपनी हैसियत का एहसास न करा देंगे चैन न लेंगे। गली से बाहर निकलते ही उनकी कदमों की रफ्तार कुछ मन्द पड़ गयी। वह एक दुकान पर पान खाने के लिए रुके। इसी बीच उन्हें याद आया कि उन्होंने जल निगम के अधिशासी अभियंता स्वरूप नारायण निगम से वादा कर रखा था कि वे उनके दामाद को सप्ताह के भीतर बन्दूक का लाइसेंस दिलवा देंगे। इधर बन्दूकें भी कंट्रोल के दाम से न मिल रही थी, निगम साहब ने बन्दूक दिलवाने का भी वादा ले लिया था। फातमी साहब का किरायेदार रोज शराब के नशे मे खूब गालियां वक रहा था, उनसे भी सिद्दीकी साहब वादा कर आये थे कि जल्द ही उसका इन्तजाम करेंगे। तीसरा काम तो सबसे जरूरी था। इस्माइल खाँ के दामाद ने लड़की को मार कर भगा दिया था और दहेज का सामान भी नही लौटा रहा था।

कोतवाल साहब के लिए सिद्दीकी साहब के पास और भी छोटे मोटे कई काम थे। ये काम न हुए तो उनकी बहुत फजीहत होगी। सिद्दीकी साहब ने नाली मे पान की पीक थूकते हुए नेतागीरी को गाली दी।

'इससे बुरा कोई धंधा नही।' सिद्दीकी साहब ने मन ही मन कहा, 'लोगों का नरक ढोइए, और हर वखत अपनी जमीर के खिलाफ काम कीजिए।'

कुछ दूर जा कर वह एक रिक्शा मे बैठ गये, 'चलो कोतवाली।' ज्यों-ज्यों रिक्शा कोतवाली की तरफ बढ़ रहा था, सिद्दीकी साहब के विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहा था। वह सोचने लगे, भलाई इसी में है कि किसी तरह अपना काम निकाल लो। तैश दिखाने से तो कोई काम निकलेगा नही, उलटे रास्ते में काँटे बिछ जायेंगे।

तभी एक मोटर सायकल रिक्शा के आगे आ कर रुक गया। सिद्दीकी साहब उछल कर कूद पड़े, 'कहो रविशंकर तुम कहाँ ?'

'आप ही के यहाँ से आ रहा हूँ।' रविशंकर मोटर सायकल सड़क के किनारे ले गये।

'कहाँ हो आजकल ?'

'कैण्टोनमेंट मे था साहब। कल रात कोतवाल साहब ने सस्पैंड कर दिया। आप के तो दोस्त है, आप के पास यही गुजारिश करने आया था। कि उनसे सिफ़ारिश कर दें।'

'किस बात पर सस्पैंड कर दिया ?'

'दो आरोप लगाये हैं। दोनों बेबुनियाद हैं। एक में कहा गया है कि मैंने कंट्रोल रूम को अपनी ठीक लोकेशन नहीं दी थी, दूसरे में कहा गया था कि मैं जी० टी० रोड पर नाजायज़ रूप से ट्रकें रुकवा रहा था। आप तो साहब जानते हैं कितनी महँगाई का जमाना है, बच्चों की फीस देना पहले ही मुहाल था, अब आधी तनख्वाह से तो साहब खटिया खड़ी हो जाएगी।'

सिद्दीकी साहब बहुत उलझन में पड़ गये। हर आदमी अपने को ठीक बताता था। बाकी सारी दुनिया ग़लत।

'कोतवाल साहब का दिमाग़ फिर गया है, जो उन्होंने तुम्हें बेबुनियाद सस्पैंड कर दिया ?'

'नही साहब, डी० एस० पी० साहब ने उन पर ज़ोर डाला था।'

'वो ज़ोर क्यों डालेंगे। आप से उनकी कोई रंजिश है ?'

'नही साहब उनसे कोई रंजिश नहीं। दरअसल उनका ड्राइवर बहुत बदमाश है। वही उन्हे भडकाता है।'

'वह ड्राइवर के भड़काने में क्यों आ जाएँगे ? माथुर साहब हैं न डी० एस० पी०, मैं उन्हे खूब अच्छी तरह से जानता हूँ।'

'नही साहब आप अच्छी तरह से नहीं जानते। आप जानते होते तो ऐसा न कहते। वे ड्राइवर मे बेहद दबकर रहते हैं। वे कह रहे हैं, मुझे उन्होंने लोकेशन पर नही पाया। मैं अगर उनके लोकेशन बताने लगूँ तो उनका तलाक हो जाए। मगर साहब, आप इस पचड़े में क्योंकर पड़ेंगे, आप फ़कत कोतवाल साहब से कह कर मेरा काम करवा दीजिए।'

'कोतवाल साहब कैसे आदमी है ?'

'आदमी तो ठीक हैं साहब, मगर लोकेशन उनका भी गड़बड है।'

'तुम इसी लिए सस्पैंड हुए हो।' सिद्दीकी साहब ने उसे सलाह दी, 'देखो सबको, मगर मुँह कभी मत खोलो।'

'आप ठीक कह रहे है साहब।' रविशंकर ने कहा, 'यह तो आप जैसे ख़ुदातर्स इन्सान मिल जाते हैं तो ज़ुबान खुद ब खुद खुलने लगती है, वरना कोई आदमी इतना बेवकूफ नही होता कि अपने पेट पर खुद लात मारे।'

'वो ड्राइवर की क्या बात बता रहे थे ?'

'साहब उसने एक लुगाई छोड़ रखी है और आजकल उससे हिसाब किताब बैठा रहा है। संयोग से हम भी उसे जानते है। बस इसी को लेकर तैश दिखा रहा है।'

'इसका मतलब हुआ कि तुम्हारा लोकेशन भी ठीक नही है।' सिद्दीकी

साहब ने कहा, 'मौका मिला तो मैं कोतवाल साहब से बात करूँगा।'

'नही साहब आप को आज ही बात करना है। मुझे मालूम हुआ है आप को वे बहुत मानते हैं।'

सिद्दीकी साहब मुस्कराये, वे रविशंकर का काम कराना चाहते थे, मगर उन्हें अपनी ज़मीर को एक बार फिर गिरवी रखना होगा। रविशंकर न होता तो एक बार विरोधी पार्टी के लोगों ने उन्हें तीन सौ दो मे अन्दर करवा ही दिया था। यह रविशंकर ही था जो उस वक्त काम आया। नेता जी ने कहा कि वे पहली फ़ुर्सत में उसका काम करवाएँगे। रविशंकर ने मोटर सायकल को किक लगायी और नेताजी को बैठा कर कोतवाली की तरफ़ चल दिया।

कोतवाली के पास ही कोतवाल साहब की कार दिखायी दी। शायद कोतवाली ही जा रहे थे। कोतवाल साहब ने सिद्दीकी साहब को देख कर कार के अन्दर से ही हाथ हिलाया। रविशंकर बहुत खुश हुआ कि कोतवाल साहब नेताजी का इतना सम्मान करते हैं मगर सिद्दीकी साहब एक सस्पैंडशुदा इंसपेक्टर के मोटर सायकल पर पकड़े जाने से निहायत शर्मिंदा हो गये।

रविशंकर ने अत्यन्त विश्वासपूर्वक कोतवाली के सामने मोटर सायकल रोका। सिद्दीकी साहब पशोपेश में पड़ गये थे। रविशंकर को डाँटने के लिए कुछ कहते कि कोतवाल साहब के हवलदार ने आकर उनसे कहा, 'साहब बुला रहे हैं।'

सिद्दीकी साहब पर्दा उठा कर अन्दर घुसे तो कोतवाल साहब कागज के ढेर पर चिड़िया बैठाने जा रहे थे। पास में उनका क्लर्क खड़ा था।

'आइए आइए नेताजी।' कोतवाल साहब जिस कागज पर चिड़िया बैठा देते उनका क्लर्क फ़ुर्ती से वह कागज उठा लेता।

कोतवाल साहब ने घुटने से घण्टी दबा दी और सिपाही को आदेश दिया कि बाबू को बुला लाए।

दस्तखत के लिए काग़ज़ों का ऊँचा अम्बार था। वे मशीन की तरह दस्तख़त करते और क्लर्क काग़ज़ उठा लेता। नेताजी अत्यन्त कौतुक से यह नाटक देख रहे थे कि बड़े बाबू आ कर उनकी कुर्सी के पीछे खड़े हो गये।

कोतवाल साहब ने बगैर बड़े बाबू की तरफ देखे आदेश दिया, 'रविशंकर की बहाली का आदेश तैयार करो।'

'मगर साहब उसकी प्रतिलिपियाँ कई जगह जा चुकी हैं!'

'ठीक है आज बहाली के आदेश भेज दो।' कोतवाल साहब ने कहा।

बड़े बाबू चले गये तो कोतवाल साहब ने बड़ी शरारत से नेताजी की तरफ देखा, 'और कोई सेवा ?'

'आप का भी जवाब नहीं साहब !' सिद्दीकी साहब ने गद्‌गद्‌ होते हुए कहा, 'आप की जितनी तारीफ की जाए कम है !'

'खत का मजमून भांप लिया लिफ़ाफ़ा देखकर !'

'क्या आप मुझे लिफ़ाफ़ा समझते हैं ?'

कोतवाल साहब ने शेप कागज क्लर्क को लौटा दिए, 'बंगले पर ले आना ।'

उसने दो एक जरूरी कागजों पर दस्तखत करा लिए और फाइल बगल में दबा ली । वह सैल्यूट करके निकला भी न था कि कोतवाल साहब ने कहा, 'वाह भाई, कितना बढ़िया माल भेजा था आपने ।'

'मैंने ?' सिद्दीकी साहब ने पूछा !

'नाम तो आप ही का ले रहा था ।' कोतवाल साहब ने कहा, 'मगर मैंने खुद ही खेल खराब कर लिया । कुछ जल्दबाजी हो गयी ।'

सिद्दीकी साहब के चेहरे पर हवाइयाँ उडने लगीं । उन्होंने इस विषय पर आगे बात करना उचित न समझा, बोले, 'वो निगम साहब के लायसेंस का क्या हुआ ?'

'बन चुका है ।'

'फ़ातमी साहब बेचारे बहुत परेशान हैं ।'

कोतवाल साहब ने घुटने से घंटी दबा दी और एस० ओ० पाँच को फोन मिलाने को कहा ।

'अरे वो इस्माइल खाँ का भी काम नहीं हुआ । बेचारा बेहद परेशान है । कोई तगड़ा इन्सपेक्टर लगाइए ।'

'मलिक को लगाऊँ ?'

'हाँ हाँ वो ठीक रहेंगे ।'

'मलिक को भी मिलाओ ।' कोतवाल साहब ने कान्स्टेबुल से कहा और पुराने विषय पर लौट आए, 'आपकी पसन्द की दाद देनी पड़ेगी । जाने यह चक्की वाला कहाँ से उठा लाया ।'

'आप मेरी नेतागीरी नष्ट कर देंगे भाई । मेरा यह क्षेत्र ही नहीं है ।'

'आप भोले न बनिए नेताजी । आप से उस औरत के क्या सम्बन्ध हैं ?'

'आप तो ग़ज़ब ढाते जा रहे हैं । मैंने बताया न कि मेरा क्षेत्र ही नहीं है ।'

'यह कैसे हो सकता है । उसको देख कर कोतवाल पिघल सकता है तो नेता क्यों न पिघलेगा ।'

'क्योंकि आप की तरह उनके पास पक्की पेंशन वाली नौकरी नही है। आप तो जानते ही है, मैं दूसरी तबीयत का आदमी हूँ।'

'अब कब भिजवाइएगा ?'

'आप जान बूझकर मुझे शर्मिंदा कर रहे है।' नेताजी ने कहा, 'उस औरत ने मुझे सरे आम इतना जलील किया कि मैं मुँह दिखाने लायक न रहा।'

'बहरहाल आप मेरा सन्देश भेज दीजिए कि कोतवाल साहब उस दिन से सो नही पाये हैं !'

'आप एक कान्स्टेबुल को भेज कर बुलवा लीजिए।'

'कान्स्टेबुल से मैं गैरसरकारी काम नही लेता। आपने देखा होगा, मेरे यहाँ भोजन भी सिपाही नहीं एक नौकर बनाता है।'

'तो इस काम के लिए नौकर की ही सेवाएँ लीजिए।'

'मुझे खबर मिली है, चक्की वाला गेहूँ का वजन ठीक नहीं करता। किसी दिन भेजूँ नाप तौल इन्सपेक्टर ?'

'जरूर भेजिए।'

'आप सिफ़ारिश करने तो न आएँगे ?'

'जरूर आऊँगा।' सिद्दीकी साहब ने कहा, 'आप क्यों एक ग़रीब आदमी के पीछे पड़ना चाहते हैं ?'

'क्योंकि उसकी बीवी बेहद खूबसूरत है। आपने उसकी बाँहें नही देखीं ?'

सिपाही बाहर से फ़ोन मिला लाया। कोतवाल साहब ने नेताजी के दोनों काम कर दिये और बोले, 'आज शाम आप मुझे चाय पर बुलाइए।'

'आप जरूर आइए !'

'परसों आऊँगा, शाम पाँच बजे। आज बड़े साहब के यहाँ मीटिंग है।'

'जरूर आइए, बल्कि रात के खाने पर आइए। मुर्ग मुसल्लम बनवाऊँगा।'

'रात को चक्की तो बन्द रहती है।' कोतवाल साहब ने कहा, 'मैं शाम को ही आऊँगा।'

सिद्दीकी साहब ने बताना मुनासिब न समझा कि गुलाबदेई अब चक्की में नही है। वह उठे, सामने रखे पान के बीड़ों में से एक बीड़ा उठाया और 'खुदा हाफिज' कहते हुए बाहर चले आए।

रविशंकर ने उन्हें बाँहों में ले लिया और मोटर सायकल के पीछे बैठा कर उन्हें घर तक छोड़ आया।

• ❥

दो दिन बाद लोगो ने देखा—चकैया नीम के तले चबूतरे पर गुलाबदेई का चाट का खोमचा लगा था। शिवलाल ने देखा तो दाँत पीस कर रह गया। उसके जी में आया कि जाकर खोमचे पर ऐसा पैर जमाये कि पूरी चाट सड़क पर लोटती नजर आए। मगर गुलाबदेई इतने विश्वास से वहाँ जम गयी थी कि शिवलाल की हिम्मत न हुई कि गुलाबदेई से टक्कर ले।

एकाध ग्राहक ने शिवलाल का ध्यान गुलाबदेई की ओर आकर्षित करना भी चाहा मगर शिवलाल पहले तो चुप रहा फिर बोला, 'यह लाँ की मौडी तवायफ़ थी, तवायफ है और तवायफ़ रहेगी।' दो एक बार शिवलाल ने मोर्चा लेने की योजना बनायी मगर साहस न जुटा पाया। आखिर उस ने चक्की को ताला लगाया और बिजली का बिल जमा करने बिजलीघर की तरफ चल दिया। उसका अहं बुरी तरह आहत हो रहा था। वह अचानक ऐसी स्थिति में पड गया था, जिसके लिए तैयार न था। उसने बिजलीघर का रास्ता एक घण्टे में तय किया। अपने चिढचिढ़े स्वभाव के बावजूद वह राजा बेटे की तरह चुपचाप बिल जमा करने वालो की कतार मे खडा हो गया। कतार धीरे-धीरे सरक रही थी, शिवलाल को कोई जल्दी न थी।

बिल जमा करके वह अपनी माँ से मिलने जाना चाहता था, मगर उसकी हिम्मत न हुई। उसकी इच्छा हो रही थी कि वह घर जाकर खटिया बिछा कर सो जाये। रास्ते भर उसे नींद की जितनी इच्छा हो रही थी, वह नीम के नीचे गुलाबदेई को देख कर हिरन हो गयी। पास ही इस्लामियाँ स्कूल था और इस वक्त आधी छुट्टी के समय बच्चो की भीड गुलाबदेई के खोमचे के पास लगी थी। शिवलाल को अपने पर बहुत क्रोध आया, 'बहनदोच यह चक्की का ही बिजनेस है कि कभी ऐसी भीड नही लगती। माँदोच आँटा भी पीसो और गाहक से भी दुचाओ।'

शिवलाल खटिया पर लेट गया। बीच-बीच मे वह आँख चुरा कर

गुलाबदेई की ओर देख लेता। ज्यों-ज्यों चाट खत्म हो रही थी शिवलाल की चिन्ता बढ़ रही थी, 'यह हरामजादी अब लौट के न आयेगी।' शिवलाल ने देखा, गुलाबदेई ने बच्चे को गैस का गुब्बारा दिला दिया था जो नीम के चौतरे के गिर्द दौड़ते हुए उड़ा रहा था—'इस हरामजादे को भी बाप की याद नहीं आ रही।' शिवलाल ने कहा और मास्टरजी को गुलाबदेई की तरफ जाते हुए देखा।'

'यह साला भी अपनी बुढभस मिटाने जा रहा है।' शिवलाल का चेहरा क्रोध मे तमतमाने लगा। शिवलाल ने हमेशा मास्टर जी को आदर दिया था और वे हैं कि बजाये गुलाबदेई को डाँटने और सही रास्ता दिखाने के उसके नापाक हाथ की चाट खा रहे हैं। शिवलाल ने एक बार फिर करवट लेकर सोने की कोशिश की, मगर वह फिर नाकामयाब रहा। इस बीच एक कनस्टर आ गया तो वह लपक कर तराजू पर तौलने लगा और गेहूँ उसने चक्की में उँडेल दिया। आटा पीस कर वह बाहर आया तो उसने देखा मास्टरजी अभी तक गुलाबदेई के पास बैठे थे।

'हरामजादी अपनी छातियाँ दिखा रही होगी,' शिवलाल फुसफुसाया 'और मास्टर भी, लगता है, अपनी बुढ़ौती खराब किये बिना न मानेगा।'

गली के लौंडो को जब महसूस हुआ कि शिवलाल गुलाबदेई के खोमचे से बेहद दुखी है तो उन्होंने अगले रोज एक अजूबा कर दिखाया। चकैया नीम पर एक लाउडस्पीकर लटका दिया, चौतरे पर कागज की रंग-बिरंगी झण्डियाँ लगा दीं और युद्ध स्तर पर चाट का प्रचार कार्य शुरू हो गया। शिवलाल ने यह सब देखा तो तमतमाता हुआ दुकान बन्द कर के निकल गया। उसे मालूम था कि लड़के उसे इतना उत्तेजित कर देंगे कि झगड़ा होने की संभावना हो जाएगी। उसने जब खोमचे के पास हजरी, मास्टरजी, डिब्बे वाले, पान वाले को देखा तो वहाँ से खिसक जाना ही उचित समझा। उसकी इच्छा हो रही थी कि वह जाकर गुलाबदेई के पांव पर गिर पड़े और बोले—'हे देवी! मुझे माफ़ कर दो। तुम्हें चाट का खोमचा ही लगाना है तो चक्की बन्द कर देता हूँ और इसी काम को मिल-जुल कर करते है।' मगर तीर उसके हाथ से निकल चुका था।

शाम को मास्टर जी दूध लेकर लौट रहे थे कि उन्हें चक्की के पास शिव-लाल दिख गया—'सुनो शिवलाल! हमारे शास्त्रों में लिखा है कि औरत पर हाथ उठाना बहुत बड़ा पाप है।'

'पाप की चां की मूत मास्टर जी !' शिवलाल का चेहरा गुस्से से तम-तमाने लगा। वह बोला, 'आपको भी अपनी बुढ़भस मिटाने के लिए इस गरीब की जोरू ही मिली।'

मास्टर जी शिवलाल की बात सुन कर सकते में आ गये। उनका विचार था कि उनकी प्रतिक्रिया सुन कर शिवलाल हाथ-पैर जोड़ने लगेगा। मगर शिवलाल के इस रूप की उन्होंने कल्पना न की थी। वह इस तरह की बात सुनने के आदी भी न थे। उन्होंने बहुत धैर्यपूर्वक कहा, 'तुम्हारे बुरे दिन आ गये हैं शिवलाल वरना तुम मेरे सामने इस तरह बदतमीजी से पेश न आते। जबकि मैं वहू को कल से समझा रहा था कि घर छोड़ कर उसने नेक काम नहीं किया। उसने अपने शरीर पर के घाव दिखाये तो तुम्हें समझाने चला आया।'

'मास्टरजी, वह घाव नहीं, तन दिखा रही थी। अब वह जिन्दगी भर घाव दिखा कर ही चाट बेचेगी। आप जैसे गाहकों की हमारे मुहल्ले में कमी नहीं है।'

'तुमसे बात करना बेकार है शिवलाल जी। तुम्हारा गुस्सा शान्त हो जाए तो आना।'

मास्टरजी चले गये और शिवलाल जमीन पर पैर पटकता रहा, 'यह सब मुहल्ले वालों की शह पर हो रहा है।' वह गालियाँ बकता हुआ अन्दर से बाहर और बाहर से अन्दर आ रहा था।

दूसरे दिन उसने देखा, गुलाबदेई और हजरी बी खोमचा उठाये उसी स्थान पर चली आयी। हजरी बी ने चारों तरफ झाड़ू देकर पानी से हल्का-सा छिड़काव कर दिया और चौतरे पर सामान टिकाने में गुलाबदेई की मदद करने लगी।

पंडित की कोठरी की बगल में घनश्यामलाल तिवारी नाम का सिपाही रहता था। शिवलाल ने पंडित के साथ उसे कई बार देखा था। शिवलाल ने सोचा क्यों न तिवारी को पटा कर गुलाबदेई को धमकाया जाये। इस विचार से वह इतना उत्तेजित हो गया कि फौरन पण्डित की कोठरी की तरफ चल दिया।

पण्डित की कोठरी बंद थी, मगर उसने देखा घनश्यामलाल लंगोट पहने दातौन कर रहा था। शिवलाल हाथ जोड़ कर उसके सामने खड़ा हो गया, 'हुजूर, एक फरियाद लेके आपके दरबार में आया हूँ।'

श्यामसुन्दर शिवलाल को पहचानता था। उसने कभी आशा न की थी कि यह चक्की वाला एक दिन इस तरह हाथ पाँव जोड़ कर उसके सामने गिड़गिड़ायेगा।

'क्या हो गया ?' उसने अफ़सराना अन्दाज में लापरवाही से पूछा।

'क्या बतावें हुज़ूर। बतावैं मे सरम लगत है। मगर आप तो ठहरे सरकार बहादुर। आप मे क्या छिपाना ?' शिवलाल ने कहा, 'मेहरारू ने खाना पीना सोना हराम कर रखा है।'

घनश्यामलाल ने गुलाबदेई को देखकर कई बार मन ही मन आहें भरी थी। आज अनायास ही उसके मन की मुराद पूरी हो रही थी। दातौन फेंक वह जल्दी से कुल्ला करने लगा ताकि शिवलाल की बात ध्यानपूर्वक सुन सके। शिवलाल के पिटे चेहरे की तरफ़ देख कर उसे लगा कि यह साला जरूर बिस्तर पर शिकस्त खाता होगा। उसने निहायत उदासीनता से पूछा कि वह क्या मदद कर सकता है ?

'हुज़ूर वह मेरे सीने पर मूँग दल रही है।'

'यह तो बीवियो का काम ही है।' वह मुस्कराया।

'नहीं हुज़ूर, बीवियाँ घर मे रह कर मूंग दलती है और यह हरामजादी, सड़क पर बैठ गयी है।'

'किसी के साथ बैठ गयी है ?'

'किसी के साथ बैठी नही सरकार, बच्चे को लेकर घर से निकल गयी है और तवायफ़ों के इशारे पर चल रही है।'

घनश्यामलाल को यह सुनना बहुत अच्छा लगा। उसे लगभग विश्वास हो गया कि अब गुलाबदेई उसकी चंगुल में फँसे बिना रह न पायेगी। उसने मन ही मन सपनों का एक संसार खड़ा कर लिया और कई निर्णय ले लिए, जिनमें अपनी पत्नी से तलाक लेने का निर्णय भी शामिल था। शिवलाल के प्रति उसकी आँखों में करुणा के भाव आ गये। उसने अत्यन्त निरपेक्ष भाव से पूछा, 'मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ ?'

शिवलाल ने जेब से दस रुपये का नोट निकाला और घनश्यामलाल की हथेली में रख कर हथेली बंद कर दी, 'सरकार उस हरामजादी को किसी तरह मेरे दर पर ला दीजिए। साम दाम दन्ड भेद किसी भी तरीके से। वह लौट आई तो मैं अपनी हैसियत के मुताबिक आपकी खिदमत करूँगा।'

घनश्यामलाल ने दस का नोट बड़ी लापरवाही से लंगोट में खोंस लिया और बोला, 'किस तवायफ़ के हत्थे चढ़ी है ?'

'क्या बतावें सरकार ! सुनते हैं अज़ीज़न बाई ही उसे बरगला रही है।'

अजीजन के नाम से घनश्यामलाल सतर्क हो गया। उसने सुन रखा था कि अजीजन के अफ़सरों से निकट के सम्बन्ध हैं। आई० जी०, डी० आई० जी० और जिलाधीश उसके मित्र है। घनश्यामलाल को हतप्रभ देखकर शिवलाल ने कहा, 'मगर यह करामात हजरी बी की है।'

'हजरी बी की ?' घनश्यामलाल फिर चौंका। हजरी बी और अजीजन दो ध्रुव थे। दूसरे हजरी बी तो उसकी पड़ोसिन थी। वह जानता था हजरी बी किसी भी परेशान और दुखी व्यक्ति के साथ सहज ही हो जाती है।

'देखो शिवलाल अगर तुम समझते हो, दस रुपल्ली में मुझे खरीद कर तुम मुझ से गलत काम करवा लोगे तो बहुत ग़लती पर हो।'

घनश्यामलाल ने लंगोट से दस रुपये का नोट निकाला और शिवलाल को लौटा दिया। नोट पर तेल के धब्बे पड़ गये थे। वह नोट अब पुलिस ही चला सकती थी। शिवलाल ने नोट की दुर्दशा देखकर नोट दोबारा घनश्यामलाल की हथेली मे दबा दिया, 'कोई गलत काम नही करवाना चाहता हुजूर! मेरी बीवी मुझे दिलवा दीजिए।'

शिवलाल ने घनश्यामलाल का रुख देख कर इस बार पाँच का एक और नोट निकाला, घनश्यामलाल के पैरों पर रख दिया, 'हुजूर, इस गरीब को यों न ठुकराइए।'

इस प्रकार पंद्रह रुपये अनायास पाकर घनश्यामलाल को सबसे पहले अपनी पत्नी की ही याद आई। उसने मन ही मन सोचा कि पाँच रुपये और मिला कर वह एक साड़ी लेकर गाँव जायेगा जबकि उसे विश्वास था, अगले पाँच रुपये भी शिवलाल ही देगा।

'अभी तो हम गश्त पर ही निकलने वाले है। चार बजे लौटेंगे। पाँच बजे हम से यहीं मिलना।'

शिवलाल खुशी खुशी लौट गया। वह सोचकर आया था, बीस पचीस से कम का काम नहीं है। नुक्कड़ पर उसे हजरी दिखायी दी, वह कन्नी काट गया। चमेली के घर के पास से गुजरते हुए उसने अन्दर तक देखा, मगर गुलाबदेई की झलक न मिली।

श्यामसुन्दरलाल से मिल कर शिवलाल के अन्दर एक नया उत्साह आ गया। उसने चक्की का दरवाजा खोला, एक अगरबत्ती जलाई और काम मे जुट गया। चार छह कनस्टर पड़े थे। उसने अत्यन्त तत्परता से यके बाद दीगरे काम खत्म किया और हुक्का सुलगाने में जुट गया। तब तक गुलाबदेई का खोचा लग चुका था। वह हुक्का पीते हुए अत्यन्त व्यंग्य से उसकी दुकानदारी को देखता रहा। घनश्यामलाल से मिलकर उसमें आत्मविश्वास आ गया था।

घनश्यामलाल खोमचा ओमचा कुएँ में फेंक कर जब गुलाबदेई को बालों से थाम कर उसके पैरों में गिरा देगा तब इस हरामजादी को पता चलेगा कि शिवलाल कोई मामूली शख्स नहीं। शाम के इन्तजार में उसकी आँख लग गयी। उठा तो पेट में चूहे कूद रहे थे। उसकी खाना बनाने की इच्छा न हुई तो मद्रास कैफे की ओर चल दिया। बहुत दिनों से दोसा खाने की इच्छा थी। उसने एक बाद दीगरे दो दोसे खाये और डकारते हुए घनश्यामलाल के घर की तरफ चल दिया।

घनश्यामलाल ने शिवलाल को देखते ही पंद्रह रुपये उसके सामने फेंक दिये—'कोर्ट कचहरी में जाओगे तो सैकड़ों खर्च होंगे। मुझ से कौड़ियों के दाम काम लेना चाहते हो? उठा लो अपने पैसे।'

शिवलाल हतप्रभ रह गया। उसकी जेब में पाँच पाँच के दो नोट और थे। उसने एक निकाला, जमीन से पंद्रह रुपये उठाये और घनश्यामलाल की मुट्ठी में देते हुए बोला, 'हुजूर काम करा देंगे तो इतने ही पैसे और दूँगा।'

'तुम चलो हम आते हैं।' घनश्यामलाल ने कहा।

शिवलाल जा कर गली की नुक्कड़ पर खड़ा हो गया। कहीं से पाईप लीक कर गया था और पूरी गली में पानी भर रहा था। लोग पायजामा बचाते हुए बीच बीच की सूखी जमीन पर बहुत हिफाजत से पाँव रखते हुए वहाँ से गुजर रहे थे, मगर शिवलाल इन सबसे बेखबर घनश्यामलाल की प्रतीक्षा में खड़ा रहा।

घनश्यामलाल ने इस बीच वर्दी पहन ली थी और कंधे पर बन्दूक टाँग ली थी। वह कमरे से निकला तो शिवलाल ने राहत की साँस ली। वह घनश्यामलाल के आगे आगे चल रहा था। पुलिस के साथ चलने में उसकी रफ़्तार में तेजी आ गयी थी और वह मुँह ही मुँह में माँ बहन की गालियाँ बकता हुआ चमेली के घर के सामने पहुँच गया।

गुलाबदेई को देखते ही वह चिल्लाया।

'यह हरामजादी घर से पूरे जेवरात लेकर भागी है दीवानजी। इसे ले जाकर थाने में बन्द कर दीजिए या मेरे हवाले कर दीजिए।' शिवलाल चिल्ला रहा था, 'इस बुढ़िया ने पेशा कराने के लिए इसे फुसला लिया है। यह सारी करामात हजरी बी की है। यह अच्छे घरों की बहुओं और लड़कियों को फुसला कर चोरी छिपे धन्धा कराती है।'

शोर सुन कर मुहल्ले के लौंडे जुटने लगे।

नफ़ीस ने देखा, एक कोने में चमेली मलबे के ऊपर बैठी रो रही थी। पास ही गुलाबदेई कमर पर दोनों हाथ टिकाये खड़ी थी। इससे पहले कि

गुलाबदेई से शादी करने में उसने एक हज़ार रुपये खर्च किये थे। उसने मन ही मन तय किया जैसे भी हो, वह गुलाबदेई से अपने एक हजार रुपये वसूले बिना चैन न लेगा। गुलाबदेई एक हजार रुपये का इन्तजाम कर दे वरना घर लौट चले। उसे चाट ही बेचनी है तो चक्की के बाहर खोमचा लगा लें।

'अबे भाग रहा है।' सिकन्दर ने शिवलाल को सरकते देखा तो चिल्ला कर आगाह किया।

'मैंने कोई चोरी की है जो भागूं?' शिवलाल ने पैंतरा बदला, 'मैं एक एक से निपट लूंगा।'

'निपटने से पहले सीसे में अपना चेहरा देख लेना।' हजरी बी ने आ कर उसका हाथ थाम लिया, 'मेहरारू पर हाथ उठाते हो? दोजख में जाओगे सीधे। समझ लो। हाँ।'

हजरी बी ने शिवलाल का हाथ अपने कंधे पर टिका लिया और बोली, 'आ मुझसे निकाह कर ले। मैं तुम्हें हिदायत नामा ख्वाविंद तो पढ़ा ही दूंगी।'

शिवलाल ने हजरी का हाथ झटक दिया, 'देख रहे हैं आप दारोगा साहब?'

घनश्यामलाल जी पहले ही आँख बचा कर कूच कर चुके थे। नेताजी बड़े कौतुक से यह सब देख रहे थे। हजरी बी ने सर पर पल्लू ओढ़ लिया था और शिवलाल को पतिया रही थी, 'चलो जी, बच्चे राह देख रहे होंगे।'

नफीस ने हाथ जोड़ कर ऐसी बिगुल ध्वनि की कि सब लोग शिवलाल पर पिल पड़े।

'जाओ भाई, बच्चे राह देख रहे हैं।' मुश्ताक ने कहा।

'दम ही नहीं है, घर क्या जाएगा। जाओ इसके लिए मौलाहम लाओ।' अफसार ने कहा।

'आप लोग हिन्दू मुस्लिम दंगा कराना चाहते हैं। मैं सब जानता हूँ। अभी कोतवाली जा कर एफ० आई० आर० कराता हूँ कि मुहल्ले के मुसलमानों ने एक गरीब हिन्दू की औरत अगवा कर ली है। आप लोग हिन्दू मुस्लिम दंगा कराना चाहते हैं।'

'अरे जा जा, सड़क नाप। तेरे कहने से फसाद होगा? फ़साद कराने वालों की भी हैसियत होती है। जा, जा कर चक्की पीस। पिछली बार तो छूट भी गये, इस बार जब मैं कह दूंगा कि तुम फसाद की धमकी दे रहे थे, तुम्हारी जमानत भी न होगी।'

नफीस कुछ समझता उसने आगे बढ़ कर शिवलाल का गिरेबान पकड़ लिया और दो-तीन चाँटे रसीद कर दिये। जैसे कह रहा हो, 'साले जुबान सम्हाल कर बोल।'

नफीस को यों अचानक प्रकट होते देख उसके दोस्तों में उत्साह आ गया। सिकन्दर बोला, 'सन्तरीजी, यह शख्स अव्वल दर्जे का चोर है। अभी कुछ रोज पहले ही जेल की हवा खाकर लौटा है। ऐसे चोर उचक्के और जाहिल आदमी के साथ कौन औरत रहना पसन्द करेगी ?'

'मैं यह सब कुछ नहीं जानता। इस औरत को थाने चलना होगा।'

मुन्ना भाग कर सिद्दीकी साहब को बुला लाया। देखते ही देखते वह दोनों हाथों से भीड़ को किनारे करते हुए बीचोंबीच पहुँच गये। घनश्यामलाल को वह पहचानते थे।

'घनश्यामलाल तुम कब से गरीब लोगों को परेशान करने लगे। मैं अभी एस० ओ० साहब को फोन करके पूछता हूँ कि तुम्हें उन्होंने भेजा है या यह शख्स दस का नोट थमा कर तुम्हें बरगला लाया है। मैं इस थाने से आजिज आ चुका हूँ। तबादला करवा दूँगा अगर तुमने इस तरह से इलाके में दहशत फैलाने की कोशिश की। जाओ, जाकर एस० ओ० साहब से बोलो कि सिद्दीकी साहब बुला रहे हैं। वरना मैं खुद आता हूँ थाने। जाओ जाओ, यहाँ खड़े क्या कर रहे हो ?'

घनश्यामलाल ने सिद्दीकी साहब को कई बार कोतवाल साहब के बँगले पर देखा था। स्थिति संभालने के लिए उसने पैंतरा बदला और सिद्दीकी साहब से बोला, 'यह तो कोई दूसरा ही किस्सा बता रहा था कि चमेली इस की बीवी को बरगला कर ले आई है और पेशा करवाती है।'

'क्यों शिवलाल तुम्हार बीवी पेशा करती है ?'

शिवलाल ने पाँसा पलटते देखा तो बोला, 'नेताजी, आप तो समझदार आदमी हैं। खुद ही सोचिए, कोई औरत तवायफों के चक्कर में क्यों पड़ेगी ?'

'तुम बीवी का जीना हराम कर दो। तुम्हारी चंगुल से निकल कर वह खोमचा लगा कर ईमानदारी से जीने लगी तो तुमसे बरदाश्त न हुआ।'

'मारो साले को।' सिकन्दर ने एक दूसरे लड़के के सर पर चपत लगाते हुए कहा।

लड़के पिल जाते, मगर सिद्दीकी साहब ने रोक दिया।

इसी बीच हाँफते हुए हजरी बी चली आई। पुलिस को देख कर बात समझने में उसे देर न लगी। शिवलाल हजरी के स्वभाव से परिचित था। हजरी अपना मातम शुरू करती कि उसने धीरे से खिसकने की कोशिश की।

गुलाबदेई से शादी करने में उसने एक हजार रुपये खर्च किये थे। उसने मन ही मन तय किया जैसे भी हो, वह गुलाबदेई से अपने एक हजार रुपये वसूले बिना चैन न लेगा। गुलाबदेई एक हजार रुपये का इन्तजाम कर दे वरना घर लौट चले। उसे चाट ही बेचनी है तो चक्की के बाहर खोमचा लगा ले।

'अबे भाग रहा है।' सिकन्दर ने शिवलाल को सरकते देखा तो चिल्ला कर आगाह किया।

'मैंने कोई चोरी की है जो भागूं?' शिवलाल ने पैंतरा बदला, 'मैं एक एक से निपट लूंगा।'

'निपटने से पहले सीसे में अपना चेहरा देख लेता।' हजरी बी ने आ कर उसका हाथ थाम लिया, 'मेहरारू पर हाथ उठाते हो? दोजख में जाओगे सीधे। समझ लो। हां।'

हजरी बी ने शिवलाल का हाथ अपने कंधे पर टिका लिया और बोली, 'आ मुझसे निकाह कर ले। मैं तुम्हें हिदायत नामा ख्वाविंद तो पढा ही दूंगी।'

शिवलाल ने हजरी का हाथ झटक दिया, 'देख रहे हैं आप दारोगा साहब?'

घनश्यामलाल जी पहले ही आँख बचा कर कूच कर चुके थे। नेताजी बड़े कौतुक से यह सब देख रहे थे। हजरी बी ने सर पर पल्लू ओढ लिया था और शिवलाल को पतिया रही थी, 'चलो जी, बच्चे राह देख रहे होंगे।'

नफीस ने हाथ जोड़ कर ऐसी बिगुल ध्वनि की कि सब लोग शिवलाल पर पिल पड़े।

'जाओ भाई बच्चे राह देख रहे हैं।' मुश्ताक ने कहा।

'दम ही नहीं है, घर क्या जाएगा। जाओ इसके लिए मीलाहम लाओ।' अफसार ने कहा।

'आप लोग हिन्दू मुस्लिम दंगा कराना चाहते हैं। मैं सब जानता हूँ। अभी कोतवाली जा कर एफ० आई० आर० कराता हूँ कि मुहल्ले के मुसलमानों ने एक गरीब हिन्दू की औरत अगवा कर ली है। आप लोग हिन्दू मुस्लिम दंगा कराना चाहते हैं।'

'अरे जा जा, सड़क नाप। तेरे कहने से फसाद होगा? फसाद कराने वालों की भी हैसियत होती है। जा, जा कर चक्की पीस। पिछली बार तो छूट भी गये, इस बार जब मैं कह दूंगा कि तुम फसाद की धमकी दे रहे थे, तुम्हारी जमानत भी न होगी।'

'मेरी जमानत की आप चिन्ता न करें। आप अपनी सोचें। एक मासूम और सच्चे आदमी का दिल दुखा कर आप को कभी टिकट न मिलेगा। आप टिकट के लिए तरसते रह जाएँगे।' शिवलाल ने श्राप दिया। खिसकने के लिए इससे अच्छा मौका नहीं आ सकता था। वह अत्यन्त विश्वासपूर्वक कदम बढ़ाता हुआ भीड़ से बाहर आ गया। मगर लौंडे लोग कहाँ बाज आने वाले थे। शोर मचाते हुए शिवलाल के पीछे हो लिए। शिवलाल गुस्से में बुरी तरह सुलग रहा था।

शिवलाल ने गुस्से मे एक बड़ा पत्थर उठा कर लौंडों पर फेंका। सिकन्दर ने ज़रा-सा उछल कर पत्थर बोच लिया। लौंडों में और भी उत्साह आ गया। शिवलाल ने चक्की का दरवाज़ा नही खोला। तेज-तेज चलता हुआ, गली के बाहर हो गया। हर किसी को गुलाबदेई का पक्ष लेते देख कर वह बहुत निरुत्साहित हो गया। ऊपर से सुबह सुबह पचीस रुपये का कबाड़ा हो गया। उसे लग रहा था यह छिनाल उसका सत्यानाश कर देगी। उसने सोचा अब उसकी माँ ही उसे कोई रास्ता सुझा सकती थी। अपने छोटे भाई की भी इस सकट की घडी मे उसे याद आ गयी।

उसके बाद चक्की तो बन्द रही, मगर गुलाबदेई ने अपना खोमचा रोज की तरह लगाया। स्कूल मे उस रोज़ छुट्टी थी, मगर इसके बावजूद सूरज गुरूब होने से पहले वह सामान बेच-बाच कर घर लौट आयी। छोटे बच्चे को उसने प्लास्टिक का एक तोता ले दिया था, वह लगातार उससे खेल रहा था।

• •

सिद्दीकी साहब ने जिस तरह आई बला को आज टाल दिया था, उससे गुलाबदेई बहुत द्रवित हो गयी थी। रात को खाना खाने के बाद उसने चमेली से कहा, 'अम्माँ लगता है कोतवाल साहब कितने बुरे हों मगर अपने सिद्दीकी साहब में कोई खोट नही है।'

अम्माँ नमाज़ इशा पढ़ कर आई थी, गुलाबदेई के मुँह से सिद्दीकी साहब की तारीफ सुन कर बेहद खुश हो गयी। वह मन ही मन दो शख्सों की मुदाह थी, सिद्दीकी मियाँ और नफ़ीस की। मुहल्ले के किसी भी बाशिंदे पर कोई मुसीबत आती तो उसकी मदद के लिए ये दोनों सबसे आगे रहते थे।

'उसके मन मे खोट होता तो वह आज तुम्हारी मदद को क्योंकर आता।' चमेली बोली, 'बिटिया तुम्हें गलतफ़हमी हो गयी थी उनके बारे में, अल्ला ने उसे हम लोगों की देखभाल के लिए ही यहाँ तैनात कर रखा है, वरना वह नखलऊ में होता।'

'जाने मेरी मत क्यों मारी गयी कि मैंने उनके साथ उस रोज ऐसी बद-सुलूकी की।'

'ला इला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि०।' चमेली ने कलमा पढ़ा और बोली, 'जा, जाकर मुआफ़ी माँग आ। मैं हसीना को साथ कर देती हूँ।'

हसीना उन लोगो की बाते बहुत गौर से सुन रही थी। उसे भी सिद्दीकी साहब बहुत भले आदमी लगते थे। गुलाबदेई ने जिस तरह उन्हे ज़लील किया था, हसीना को बेहद नागवार गुज़रा था। सिद्दीकी साहब से वह बेहद मुत-आसिर थी। उनकी आँखो में उसने कभी खोट नही पाया था, वरना वह बाहर नमक खरीदने भी निकलती है तो लगता है, हर आँख उसके लिबास के नीचे उतरने को बेताब है।

'हम अभी जाएँगे, हमें भी बहुत बुरा लगा था आपा का उन्हें ज़लील करना।'

'तो उठो। हाथ मुंह धो लो।'

'हम ऐसे ही जाएँगे।' हसीना ने दोनों हाथ झाड़ दिए, 'चलो आपा, हम उनका घर पहचानते हैं।'

गुलाबदेई अपना हुलिया ठीक करना चाहती थी। उसे विश्वास नहीं था कि सब कुछ इतना तुरत-फुरत तय हो जाएगा कि उसे मुंह धोने का मौका भी न मिलेगा। गुलाबदेई ने कमर पर बच्चा टिकाया और बोली, 'चलो।'

हसीना ने बच्चा अपनी बाँहों में ले लिया और गुलाबदेई के आगे आगे सिद्दीकी साहब के यहाँ पहुँच गयी।

सिद्दीकी साहब के चौतरे पर दस पाँच कुर्सियाँ बिछी थीं और बहुत से लोग चौतरे के नीचे हाथ बाँधे खड़े थे। माहौल से जाहिर हो रहा था, कोई बहुत बड़ा अफसर उनके यहाँ आया हुआ है। पान की दुकान के पास एक दारोगा नयी तरह की बजली बन्दूक थामे बैठा था। हसीना इतनी तेजी से यहाँ तक आई थी कि उसके पीछे लगभग दौड़ती हुई गुलाबदेई अभी इमामबाड़े तक भी न पहुँच पाई थी।

हसीना ने तय किया कि इस वक्त लौट जाना ही बेहतर होगा, मगर तभी सिद्दीकी साहब की नज़र उस पर पड़ गयी। वह जान गये कि हसीना उन्हीं से मिलने आ रही है।

'खैरियत तो है हसीना ?'

'आपकी इनायत है। आप मसरूफ़ हैं, फिर किसी वक्त आऊँगी।'

सिद्दीकी साहब की बगल में बैठा अफ़सरनुमा आदमी सिद्दीकी साहब के कान में कुछ फुसफुसाया। सिद्दीकी साहब ने उसकी तरफ ध्यान न दिया और चौतरे से नीचे उतर आए।

'खैरियत तो है ?'

'आपकी इनायत है। दरअसल, गुलाबदेई आपसे मुआफ़ी माँगने आ रही है। मैं आगे आगे भाग आई।'

सिद्दीकी साहब ने देखा गुलाबदेई लगभग भागते हुए चली आ रही थी। उन्होंने कहा, 'अभी फारिग हो कर मैं खुद आऊँगा। और तो सब ठीक है ? साहिल का सुराग लगा कि नहीं ?'

'खुदा हाफ़िज़।' हसीना पलट गयी, 'आइएगा ज़रूर।'

हसीना ने देखा, गुलाबदेई उससे पहले ही पलट गयी थी। उसने दूर से ही

कोतवाल साहब को पहचान लिया था। हसीना गुलाबदेई के पास पहुँचते हुए फुसफुसायी, 'आपा तुम्हें किसने बताया कि नेताजी मसरूफ हैं।'

'उनके यहाँ वही दुष्ट कोतवाल हाजिरी बजाने आया हुआ है।'

'बड़ी तेज नज़र है आपा तुम्हारी।'

गुलाबदेई ने बच्चे को गोद में ले लिया और बोली, 'वह भी हमारी तरह मुआफ़ी माँगने आया होगा।'

'जरूर मुआफ़ी माँगने आया होगा,' हसीना बोली, 'यही वजह है कि सिद्दीकी साहब ने कहा, फ़ारिग होते ही वे खुद आएँगे।'

गुलाबदेई को इस बात से बहुत इतमीनान हुआ। उसकी धारणा दृढ़ हो गयी कि सत्य की हमेशा जीत होती है।

'तुम्हारे यहाँ तो एक से एक माल है।' कोतवाल साहब ने सिद्दीकी साहब के कान में फुसफुसाते हुए कहा, 'यह लड़की तो मुझे एक दिन पागल कर देगी।'

सिद्दीकी साहब ने चौतरा खाली करवा दिया, लड्डन से कहा कि वह जब तक कोतवाल साहब से बात करते हैं, कोई आदमी आसपास दिखाई न दे।

'कौन लड़की ?'

'यही जो गोद में बच्चा लिए थी। आप ने उस का बदन कभी गौर से देखा है ?'

'क्या बात करते हैं आप भी।' सिद्दीकी साहब को उलझन होने लगी, 'यह तो मेरी गोद में खेला करती थी।'

'अब मैं इसे अपनी गोद में खिलाना चाहता हूँ।' कोतवाल साहब ने कहा, 'मैं जिन्दगी में बस अब इसे ही गोद में खिलाना चाहता हूँ। वाह ! आप कितने खुशकिस्मत हैं सिद्दीकी साब कि ऐसी अनमोल, नायाब और खुदाई नेमतों के बीच रहते हैं। मैं अपना बँगला सरकार को लौटा दूँगा। मुझे आप यहाँ इसी बस्ती में इस लड़की के घर के आसपास रहने के लिए कोई कोठरी दिलवा दीजिए। मैं अब यहीं रहूँगा।'

कोतवाल साहब घर से तीन पैग लेकर निकले थे। तीन पैग उनकी शाम की पूरी खुराक थे। इस समय एक छोटे पैग के लिए वे बेतरह बेताब हो रहे थे। गली इतनी सँकरी थी कि वे अपनी गाड़ी न ला सके। गाड़ी लाते तो वे एक बड़ा ले लेते। गाड़ी में पूरा इन्तजाम था।

'आप शहर में आये हैं कोतवाल होकर।' सिद्दीकी साहब ने एक लम्बी साँस ली, 'लगता है आप मुझे तबाह करने आये हैं। मगर मैं एक अच्छा दोस्त हूँ। आप तबाह ही करना चाहते हैं तो कीजिए। मैं हाजिर हूँ।'

'मुआफ कीजिए सिद्दीकी साहब।' कोतवाल साहब ने कहा, 'आप जज़्बाती किस्म के नेता हैं, जिनका हमारे मुल्क मे अब कोई भविष्य नहीं। इस मुल्क मे अब अगर किसी का भविष्य है, तो शातिर किस्म के नेताओं का। यानी मेरे जैसे लोगो का!' कोतवाल साहब ने कहा,

'मेरे जो साथी आई० ए० एस० में आ गये थे, वे मुझ से कहीं खुशनसीब हैं। सब के पास मोटर है, बीवी है, बच्चे हैं, रेफ़िजरेटर है, एयर कण्डीशनर है, मोटा बैंक बैलेंस है। मेरे पास क्या है? आप ही बताइए मेरे पास क्या है? मैं यकीन दिला सकता हूँ, मेरे पास कुछ भी नहीं है।' नेता जी ने थके हुए स्वर मे कहा।

'वाह! आप तो शायरी करने लगे, मगर अभी अभी शायरी आप के दर से खाली हाथ लौट गयी है। मेरे दर से शायरी खाली हाथ नहीं लौट सकती। नहीं लौट सकती।' कोतवाल साहब सिद्दीकी साहब के कान पर झुके, 'सिर्फ एक पैग की कसर है। उसके बाद मैं इस दुनिया से कूच कर जाऊँगा। एक पैग दीजिए और मुर्गे का सीना; मैं इस दुनिया से कूच कर जाऊँगा, सुबह तक के लिए। मेरी नींद खुलेगी तो मैं अपने सामने सिर्फ उसी खातून को देखना चाहूँगा जिस का बदन खुदा ने खुद ढाला था, अपने हाथों से ढाला था, जो एक बच्चे को गोद में लिए अभी अभी दिखायी दी थी।'

सिद्दीकी साहब बेहद ऊब गये थे। अपने एक दोस्त को बन्दूक का लाइसेंस दिलवाने के चक्कर में उन्होने कोतवाल साहब को खाने पर बुलवाया था, मगर कोतवाल साहब की हालत इतनी दयनीय हो चुकी थी, वह इतना छोटा सा काम भी उनसे न ले पा रहे थे।

'खाना लग चुका है।' सिद्दीकी साहब ने कोतवाल से कहा।

'आज मेरा व्रत है। आज कौन वार है?'

'आज सोमवार है।'

'अब हर सोमवार को मेरा व्रत रहेगा। वह बच्चा उस लड़की का नहीं हो सकता। मेरा दावा है वह लड़की अभी तक कुँआरी है।'

'आप दुरुस्त फ़रमा रहे हैं। वह लड़की कुँआरी है, मगर वह बच्चा आप की माशूका का था। गुलाबदेई का।'

'शराब! शराब!!' कोतवाल साहब ने कहा, 'अब मैं शराब अपनी गाड़ी में जाकर ही पीऊँगा। ताकि अगर मैं बेहोश भी हो जाऊँ तो मेरे अफसरों को

इसकी भनक न लगे। माना कि मैं सरकार का नौकर हूँ, मगर सरकार मेरी परेशानियों को क्यों नहीं समझती ? क्यों नहीं समझती सरकार मेरी परेशानियों को, बताइए सिद्दीकी साहब ! मैं उस लड़की से मुहब्बत करना चाहता हूँ जो अभी अभी दिखायी दी थी, मगर सरकार चाहती है मैं डकैतों से भिड़न्त करूँ। सिद्दीकी साहब, आप ही बताइए, मुझे अगर उलझना ही होगा तो मैं हसीनों से उलझूंगा या डकैतों से। आप ही बताइए सिद्दीकी साहब।'

सिद्दीकी साहब कोतवाल की बातों से बेहद ऊब चुके थे। आई० जी० की बुद्धि पर उन्हें तरस आ रहा था कि ऐसे नाकारा आदमी को इतने नाजुक शहर में क्यों भेज दिया।

दरअसल कोतवाल साहब घर से इस इरादे से निकले थे कि सिद्दीकी साहब उनकी परेशानी को समझेंगे और कोई न कोई हसीना लेकर उनके घर पहुँच जाएँगे। सिद्दीकी साहब के रवैये से उन्हें बेहद कोफ़्त हुई। कोतवाल की चेतना में अचानक बुद्धन गुरु का चेहरा कौंधा और वे 'खुदा हाफ़िज़' कह कर यकायक खड़े हो गये। भोजन मे उनकी दिलचस्पी नहीं थी। वह तो खाँ साहब के यहाँ मिल ही जाएगा। नेताजी के रोकते रोकते वे चल दिये।

सिद्दीकी साहब ने राहत की साँस ली। वे जल्द से जल्द चमेली के यहाँ पहुँच कर गुलाबदेई को क्षमा माँगते हुए देखना चाहते थे।

'खुदा हाफ़िज़।' सिद्दीकी साहब ने कहा और कोतवाल साहब के साथ-साथ चल दिए।

सिद्दीकी साहब ने अपने तमाम जानकारों के बीच प्रचारित कर रखा था कि आज कोतवाल साहब उनके यहाँ 'डिनर' लेंगे। महमूद मुर्ग मुसल्लम लाया था, नन्हे कलेजी। महमूद और नन्हे के कलेजे पर साँप लोटने लगे, जब उन्होंने देखा कि कोतवाल साहब बगैर भोजन किए चले जा रहे हैं; अब उनके काम का क्या होगा ?

'फ़िक्र न करो, हम कल कोतवाली जा कर तुम लोगों का काम करवा देंगे।' नेताजी ने लम्बे-लम्बे डग भरते हुए कहा। वे लोग बदहवास लौट गये।

नेताजी चमेली के यहाँ पहुँचे तो चमेली हुक्के में तम्बाकू भर रही थी। गुलाबदेई कौतुक से यह सब देख रही थी। उसने आज तक किसी स्त्री को हुक्का गुड़गुड़ाते नहीं देखा था।

'छोड़ो अम्माँ हम भरते हैं।' नेताजी ने आते ही प्रस्ताव रखा और हुक्का भरने के काम में जुट गये। पानी बदलते हुए उन्होंने उलाहना दिया, 'मगर अम्माँ हमें एक बात का हमेशा अफ़सोस रहेगा। गुलाबदेई ने हमारी ज़ात पर

इतना बड़ा धब्बा लगाने की कोशिश की और आप चुप रह गयी। आपने तो मुझे बचपन में देखा है।'

'जैसे आज कोतवाल साहब मुआफ़ी माँगने आए थे, हम भी मुआफी माँग रहे हैं।' गुलाबदेई बोली।

नेताजी ने गुलाबदेई की तरफ़ देखा। उसकी आवाज में, उसके चेहरे पर कहीं कोई व्यंग्य का भाव न था। वे आश्वस्त हो गये तो बोले, 'मगर तुमने जो लांछन हमारी शख्सियत पर लगाया, किसी और ने लगाया होता तो मैं जुबान खींच लेता। मेरे मन में खोट नहीं था, मैं चुपचाप लौट गया। कोतवाल साहब इतना पछता रहे थे कि मैंने मुआफ़ कर दिया, वरना मैंने उनके तबादले का पूरा इन्तजाम कर रखा था। वे जाते सीधे पिथौरागढ़ या चमोली। भनक लगते ही हाथ पाँव जोड़ते हुए चले आए।'

'मैंने अम्माँ से पहले ही कहा था कि जरूर माफी माँगने आए होंगे।'

'मुआफी न माँगते तो शहर में रह न पाते।'

'मुझ से गलती हो गयी हो तो माफ करना।' गुलाबदेई भावुक होने लगी, 'इस राखी पर मैं आपकी कलाई में राखी पहनाऊँगी।'

'यह मेरी खुशकिस्मती होगी।' नेता जी ने कहा, 'तुमने हमें भाई बनाया है, हम इसकी ताजिन्दगी कद्र करेंगे।'

हसीना बच्चे को गोद में लिए थी। नेता जी ने बच्चा गोद में उठा लिया और जेब से दस का एक नोट निकाल कर उसके हाथ में थमा दिया, 'हम तुम्हारे मामूजान हैं। समझे।'

गुलाबदेई इतनी भावाकुल हो गयी कि नेताजी के पाँव छू लिए। पाँव की धूल मस्तक पर लगा ली, 'अब यह रिश्ता जन्म जन्म का हो गया।'

'हो गया।' नेता जी ने बच्चा गुलाबदेई के हवाले कर दिया, जो माँ की तरफ़ पूरा लपक गया था।

● ●

एक जगह चादी, पीतल, लकड़ी और कागज का ताज़िया तैयार हो रहा था। साहिल वहीं खडा होकर देखने लगा। साहिल खुद ताजिया बनाने में होशियार था। उसने खड़े-खड़े दो-एक सुझाव दिये तो एक बुज़ुर्ग आदमी ने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा, 'क्या करते हो बेटा ?'

साहिल ने अपनी दास्तान बतायी तो उस बूढ़े की आँखें नम हो गयीं। वह नगर की अजुमन हैदरी का सेक्रेटरी था और खुद बहुत अच्छा नौहा गाता था। पेशे से वह कबाड़ी था। उसने साहिल को अपना पता दिया और बताया कि शाम को वह मजलिस में चला आये। मजलिस मे साहिल ने एक नौहा पढा और वह इतना कामयाब रहा कि बूढे कबाड़िये अशरफ ने कहा कि वह अब मुहर्रम के जुलूस में एक नौहा पढ कर ही लौटे। इस बीच वह उसके रोजगार के बारे मे भी सोचेगा और उसके बाप को ढूंढने मे भी उसकी मदद करेगा।

मुहर्रम की दसवी तारीख को साहिल को जुलूस में नौहा पढने का मौका दिया गया। पूरा शहर मुहर्रम के मातम में डूबा हुआ था। गली-गली मे इमाम हुसैन की कुर्बानी की दास्तान को सुन कर लोग विलाप कर रहे थे। रो रहे थे। छाती पीट रहे थे। दर्द का एक समुन्दर था जो पूरे बाजार मे लहरा रहा था। जुलूस के दोनों तरफ जहाँ भी जगह मिल सकती थी, श्रद्धालु स्त्रियों और बच्चों की भीड जमा थी। बुर्कों के अन्दर से सिसकियाँ उठ रही-थी, बच्चे आँसू पोछते कि वे फिर छलछलाने लगते। कोई इमाम हुसैन की याद में आँसू बहा रहा था और किसी से इमाम हुसैन साहब के छह बरस के अबोध बच्चे हज़रत अली असगर की कुर्बानी की दास्तान नहीं सुनी जा रही थी। इमाम हुसैन के रोगी बेटे सैयद सज्जाद के हाथो मे हथकड़ियाँ, पैरो मे बेडियाँ और गले मे तौक का प्रसंग आया तो कई औरते बेहोश हो गयी। एक जुलूस था, समुन्दर की तरह उफनता हुआ गली-गली मे गुज़र रहा

कर्बला से लौट कर साहिल ने अशरफ़ साहब के साथ बड़े ताजिए की ज़ियारत की। अशरफ की इच्छा थी कि साहिल उसके साथ चहल्लुम के मौके पर जौनपुर चले, क्योंकि इस बार वहाँ से उनकी 'अंजुमन' के नाम निमंत्रण आया था, मगर साहिल का मन बहुत उदास हो गया था। वह जल्द से जल्द अपनी अम्मा के पास पहुँच जाना चाहता था।

लौटते समय अशरफ़ ने साहिल को पचास रुपये दिये और कबाड़ में से निकाल कर इस्त्री दी और बोला, 'देखो बेटा, इसे किरासिन से खूब साफ़ कर लेना और अल्लाह ने चाहा तो इस इस्त्री के बल पर तुम खड़े हो जाओगे। अपने घर में ही इस्त्री करने का धन्धा शुरू करो। नेकनीयती से काम करोगे तो जरूर कामयाब होगे।'

घर लौटने से पूर्व साहिल ने अम्मा के लिए कुर्ते-पाजामे का कपड़ा व हसीना के लिए एक बुर्का खरीदा। अब वह बड़ी हो रही थी, उसे पर्दे में रहना चाहिए। टिकट भी उसने अमीनाबाद से खरीद लिया और बाकी पैसों से चौक मे जाकर खाना खाया। चौक मे उसकी एक फूफी रहती थी, वह उससे मिलना चाहता था, मगर ट्रेन का वक्त हो रहा था। वह वहाँ से मूंग-फली खाते हुए रास्ता पूछते-पूछते पैदल ही स्टेशन की तरफ़ चल दिया।

'साहिल लौट आया, साहिल लौट आया।' मुहल्ले में शोर बरपा हो गया।

साहिल अभी अनवर की बलैया ले रहा था कि चमेली लाठी टेकते हाँफती हुई गली मे निकल आई।

साहिल अम्माँ की तरफ लपका और उसके पाँव पर गिर पड़ा, 'मुझे मुआफ करना अम्माँ, मैं बिन बताए भाग निकला था।' अम्मा ने उसे उठाया, उसके सर पर बहुत स्नेह से हाथ फेरा और अपने साथ भीतर लिवा ले गयी। बाहर सीढ़ियों पर हसीना खड़ी थी। इस बीच वह लम्बी हो गयी थी और सयानी। 'अन्दर आओ, तुम्हारी पिटाई करूँ। जानते हो, अम्मी जान कितना रोई है।'

'तुम्हारे लिए बुर्का लेने गया था।' साहिल ने उसे लिफ़ाफ़ा थमाते हुए कहा, 'इसमें अम्मा का कुर्ता पायजामा भी है।'

'और हमारे लिए क्या लाए हो?' अन्दर से न जाने कब लतीफ नमूदार हुआ, बोला, 'आजकल मैं हसीना को अँगरेजी पढ़ा रहा हूँ।'

'पहले अलिफ बे तो पढ़ा दिए होते,' साहिल बोला, 'भैंस के आगे कब तक बीन बजाओगे।'

'लतीफ़ के लिए ऐसा मत बोलो। तुम्हारे जाने के बाद से इसने मेरी इतनी तीमारदारी की है कि मैं जिन्दगी भर इसकी एहसानमंद रहूँगी।'

अन्दर सब कुछ वैसा था। पहले जैसा। इस बीच अम्माँ का कूबड़ ज्यादा निकल आया था, छत पर जालों की तादाद बढ़ गयी थी, अम्माँ के कपड़े वही थे, मगर थिगलियाँ बढ़ गयी थीं। हसीना की तरफ देखकर उसे बहुत शर्म महसूस हुई। उसका कुर्ता इतना छोटा हो गया था कि कमर तक पहुँच रहा था।

'जाओ जाकर बुर्का पहनो।' उसने कहा, 'आज के बाद तुम बगैर बुर्के के बाहर न निकलोगी।'

'बुर्के की जगह कुर्ता लाए होते।'

'तुम मेरा कुर्ता ले लेना।' चमेली ने साहिल को एक बार फिर चूम लिया, 'मेरा बेटा कमाई कर के लौटा है।'

हसीना चाय चढ़ाने में जुट गयी। लतीफ दरवाजे के पास खड़ा हसीना को चाय बनाते देख रहा था, 'दूध है?'

'जब तक पानी उबलता है, ले आऊँगी।'

'बर्तन दो तो मैं ला दूँ। आज साहिल की खिदमत में पेश हूँ। कल इससे निबटूँगा।' लतीफ ने कहा।

'आज जुम्मेरात है, जा पहले मजार पर जा कर धूप बत्ती जला आ। पीर बाबा तुम्हें नेमतें बख्शेंगे।'

'हम भी जाएँगे।' हसीना मचली।

'नहीं।' चमेली ने आदेश दिया, 'तुम तब तक चाय बनाओ।'

'मैं पीर बाबा से यही माँगूंगा कि मेरी लाण्ड्री चल निकले।' साहिल ने बताया कि वह अपने साथ एक इस्त्री भी लाया है।

चाय बन कर तैयार हो गयी। ठंडी भी हो गयी, मगर साहिल मजार से न लौटा। हसीना ने दोबारा चाय गर्म की मगर साहिल नदारद। आखिर आजिज आकर अम्मा और लतीफ ने चाय पी। हसीना भैया के लिए खाना बनाने में जुट गयी। चमेली पाँचवीं नमाज इशा के लिए चटाई बिछा रही थी, जब झोंपड़ी में दोस्तों के बीच साहिल की आवाज सुनाई दी।

साहिल ने अगले रोज पहली फुर्सत में सुहेल से एक कटोरी तेल माँगा और उसी की दुकान के पटरे पर बैठ कर दिन भर इस्त्री का जंग छुड़ाता रहा। दोपहर तक इस्त्री चमचम करने लगी। मगर साहिल को तसल्ली नहीं हो रही थी। वह कहीं से एक रेगमाल कागज उठा लाया और घण्टों सांदे पर रेगमाल कागज रगड़ता रहा। उसने तय कर लिया था कि वह अब एक नयी जिन्दगी की शुरुआत करेगा। कुछ रोज के लिए मरघू मियाँ अपनी दुकान के

पटरे पर ज़रा-सी जगह दे दें, बाद मे वह एक दुकान किराये पर ले लेगा और बाहर बोर्ड लटका देगा : साहिल लाण्ड्री ।

इस्त्री देख कर उसकी तबीयत बाग़बाग हो गयी । वह तुरत ही कोयलों के जुगाड़ में लग गया। पास में शहनाज़ आपा की कोयले की दुकान थी, आपा ढिबरी जलाये रात देर तक दुकान खोलती । दुकान क्या थी, गली की तरफ़ खुलने वाली एक कोठरी थी, जिसमें एक तरफ कोयले के दो बोरे रहते और पास ही टोकरी मे कोयलों का एक नन्हा-सा अम्बार लगा रहता। शहनाज़ आपा खाली समय में तराज़ू और बाट से खेलती रहती। शहनाज़ आपा नि सन्तान थी। पिछले बरस वाकर मिया से झगड़ा हो जाने के बाद से वह दुनिया मे निपट अकेली हो गयी थी। बँधे हुए ग्राहक थे, उसकी रोटी आसानी से निकल रही थी।

शहनाज़ आपा ने अँधेरे मे साहिल को खडे हुए देखा तो पूछा, 'क्यो बबुए, यों सिकुड कर क्यो खड़े हो ?'

'शहनाज़ आपा तुम तो जानती हो, मेरी जिन्दगी एक आवारा कुत्ते से भी बदतर हो चुकी थी। कही कोई रास्ता नज़र नही आता था। अम्मा अलग परेशान थीं। रोज़गार की तलाश में लखनऊ तक घूम आया, मगर कही कोई जुगाड़ नही बैठा। एक कबाडी ने रहम खाकर एक इस्त्री दे दी कि जाओ बेटा, कपड़े इस्त्री किया करो। अल्लाह उसे उम्र दराज़ करे! ऐसे रहमदिल आदमी अब दुनिया मे रह ही कितने गये है !'

साहिल शहनाज़ आपा को इस्त्री दिखाने लगा।

'खुदा करे तुम्हारा रोजगार खूब फूले-फले। तुम इतनी तरक्की करो कि तुम्हारी बूढी अम्मा को एक सहारा मिल जाये ! इस उम्र मे भी बेचारी कितनी मेहनत करती है !'

'शहनाज आपा, तुम मेरी एक मदद कर सकती हो।'

'बोलो बेटे !'

'मुझे पाँच किलो कोयले उधार दे दो। मैं यकीन दिलाता हूँ कि तुम्हारी पाई-पाई चुका दूँगा। और बाद में जब मेरा काम चल निकलेगा, हमेशा तुम्हीं से कोयले खरीदा करूँगा।'

'एक साथ पांच किलो ?'

'पांच किलो मैं इसलिए माँग रहा हूँ, ताकि रोज-रोज उधार के लिए तुम्हारी चिरौरी न करनी पड़े। दिया-बत्ती के वक्त रोज़ाना आठ आना चुकाता रहूँगा।'

शहनाज आपा ने पांच किलो कोयला तौल दिया। साहिल की इच्छा हुई, झोली मे बांध कर ले जाए, मगर आपा ने उसे एक फटा-सा टाट दे दिया।

कोयले और इस्त्री घर पहुँचा कर साहिल कल्लू मियाँ के यहाँ पहुँचा। कल्लू मियाँ ने साहिल का उत्साह देखा तो उसे अपनी दुकान के पटरे पर इस्त्री लगाने की इजाजत दे दी। कल्लू मियाँ के यहाँ उस वक्त जैंदी साहब बैठे पान चबा रहे थे। साहिल को वह मुहल्ले का सबसे अच्छा मर्सिया गाने वाला मानते थे। उन्होंने बड़े तपाक से कहा, 'अमाँ यार तू दुकान करेगा या ठेला लगायेगा ? ऐसा करो, हमारी कोठरी जो सड़क की तरफ खुलती है, किराये पर ले लो। तुम हमारे अजीज हो। तुम्हें हम सिर्फ आठ आना रोज पर कोठरी दे देंगे जबकि पिछले माह इम्तियाज ने पैंतालीस की बात की थी।'

'जैंदी साहब नया कारोबार है। अगर किराया न निकल पाया तो ?'

'अपने पर भरोसा रखो। डट कर काम करो। इंशा अल्लाह तुम्हें कामयाबी मिलेगी।' जैंदी साहब ने कहा, 'कल सुबह आना, हम तुम्हें चाबी दे देंगे। सफाई वगैरह करा लो और काम शुरू कर दो। कपड़े इस्त्री करने वाला आसपास कोई है भी नहीं। कई बार बच्चों को बिना इस्त्री किये कपड़ों में स्कूल जाना पड़ता है।'

अगले रोज दोपहर तक साहिल की दुकान खुल गयी। उसके दोस्त-यारों ने जी भर कर सफ़ाई की, खपच्चियाँ जोड़ कर एक मेज बनायी और दोपहर तक पुताई वगैरह कर के दुकान तैयार कर दी। कोठरी में साहिल के दोस्तों की महफ़िल जम गयी थी। वे लोग नीचे जमीन पर टाट बिछा कर ताश खेलने लगे। मगर साहिल का मन दोस्तों में नहीं लग रहा था। कुछ देर तो वह झिझकता रहा जब दोस्तों का रवैया बर्दाश्त न हुआ तो बोला, 'मालजादो, तुम ताश ही खेलते रहोगे और मेरे ऊपर पाँच किलो कोयले का कर्ज हो जायेगा, अभी शाम होते-होते जैंदी साहब की अठन्नी भी चढ़ जायेगी।'

साहिल उठा और काम की तलाश में निकल गया। जब वह लौटा तो उसके पास कपड़ों की अच्छी खासी गठरी थी। उसने लोहा तपाया और काम में जुट गया। उसके दोस्त साहिल से बेन्याज लगातार ताश में मशगूल रहे। साहिल ने उनकी तरफ ध्यान नहीं दिया। पानी की एक कटोरी में रूमाल भिगो कर वह कपड़ों को नम करता और एक तरफ रखता जाता। उसे अपने काम में मजा आ रहा था। उसने बड़ी हिकारत से अपने दोस्तों की तरफ देखा, जो यों ही वक्त बर्बाद कर रहे थे और कपड़ों पर लोहा फेरने लगा। नये-नये कुर्ते-पाजामों पर लोहा फेरते हुए उसके मन में एक जोड़ा कुरता-पाजामा सिलवाने की हसरत पैदा होने लगी। दुकान चलाने से पहले उसे अपना हुलिया सँवार लेना चाहिए। उसके फटे-पुराने कपड़े देख कर उसके ग्राहकों पर उसका क्या असर पड़ता होगा ! वह सोचता जा रहा था।

• •

होली हो या दीवाली, इकबाल गंज के बेकार नौजवानों का हुजूम यकायक व्यस्त हो जाता। कोई मिठाई के डिब्बे बनाने में जुट जाता, कोई आतिशबाज़ी के निर्माण में। होली पर टीन के पुराने सामान खरीद कर ये लोग रंगारंग पिचकारियाँ बनाते। बच्चों के दूध का डिब्बा हो या बिस्कुट का कनस्तर अथवा मच्छर मारने की दवा के टीन-स्प्रे, सब पिचकारियों में तब्दील हो जाते। जिन्हें यह काम बवाल लगता, वे रंग का ठेला लगा लेते। गर्ज़ यह कि पान की दुकानों और ढाबों के आस-पास सन्नाटा खिंच जाता। गली के ऊपर के आकाश पर पतंगों की संख्या आश्चर्यजनक रूप से कम हो जाती, वर्ना पतंगों का यह आलम रहता कि आकाश में हर समय कोई न कोई कटी हुई, बेसहारा पतंग जरूर नजर आ जाती।

यह एक मौसमी रोजगार था, जो जाते-जाते कुछ लुंगियाँ, बनियानें, ट्रांजिस्टर, सलवारें और चप्पलों की सौगात दे जाता। वर्षों पुराने कर्ज का एक हिस्सा जरूर चुकता हो जाता। मगर इस बार साहिल इस समूह में शामिल नहीं था। जबसे उसकी 'लाण्ड्री' शुरू हुई थी, उसके पुराने दोस्त उससे कटने लगे थे। साहिल के पास ताश खेलने या पतंग उड़ाने का अब समय नहीं था। वह दिन भर अपने धन्धे के जुगाड़ में लगा रहता। यह जरूर है कि वह इसमाइल की दुकान के सामने पकती हुई नेहरी को देखता तो उसे अपना धन्धा फीका लगता।

इस बीच साहिल की लतीफ़ से गहरी दोस्ती हो गयी थी। अपने काम से फ़ुर्सत पाकर वह लतीफ़ के यहाँ चला जाता। लतीफ़ के अब्बा रेलवे में काम करते थे। लतीफ भी जल्दी ही रेलवे में नौकरी पाने वाला था। उसने साहिल को भी आशा बँधाई थी कि वह उसे भी काम दिलवा देगा। लतीफ फिलहाल बगद के एक कारखाने में काम करता था। लतीफ़ के घर के पास कबाब की

एक दुकान थी। शाम को दोनों दोस्त बाहर बेंच पर बैठ कर घण्टों बतियाते और कबाब खाते। लतीफ़ बहुत अच्छा कारीगर था, अधिकांश ग्राहक उससे ही काम करवाने की ज़िद करते और मालिक से आँख बचा कर उसे पाँच-दस रुपये का इनाम दे जाते। इन पैसों से लतीफ़ का जेब खर्च चलता था। मौक़ा लग जाता तो किसी बारीक काम के वह पच्चीस-तीस रुपये भी झटक लेता।

लतीफ़ सुबह पतलून-कमीज़ पहन कर खराद पर जाता और कारखाने में काम करने के लिए उसने एक जोड़ा कपड़ा अलग से रख छोड़ा था। शाम को लौटने से पहले वह मुँह-हाथ धोता और सुबह वाले कपड़े पहन कर लौट आता। उसकी धजा देख कर कोई अनुमान नहीं लगा सकता था कि लतीफ़ किसी खराद में काम करता है। वह किसी दफ़्तर के बाबू से कम नहीं दिखता था।

लतीफ़ स्वतंत्र विचारों का नवयुवक था। उसके कारखाने के दूसरे लोग भी जानते थे कि लतीफ़ से अच्छा गियर काटने वाला शहर में दूसरा नहीं। वह सिगरेट बहुत पीता था, मगर शराब से बाज था। अभी हाल में वह खराद कर्मचारियों की यूनियन का सेक्रेटरी भी चुन लिया गया था। लतीफ़ के पिता चूँकि सरकारी कर्मचारी थे, उन्हें लतीफ़ की यह यूनियनबाज़ी पसन्द न थी। अब्बा हुज़ूर को लगता कि लतीफ़ की गतिविधियों का उनकी अपनी नौकरी पर अच्छा असर न पड़ेगा। एक बार जब एक सी. आई. डी. इन्सपेक्टर पूछताछ करता हुआ लतीफ़ के यहाँ पहुँचा तो लतीफ़ के अब्बा अपने बेटे पर बहुत ख़फ़ा हो गये। उनका ख़याल था कि अगर लतीफ़ की यही गतिविधियाँ रहीं तो वह एक दिन कम्युनिस्ट हो जायेगा। कम्युनिस्टों को वे इस्लाम का सबसे बड़ा शत्रु मानते थे।

लतीफ़ के वालिद मालगाड़ी के ड्राइवर थे। अक्सर वह बहुत-सा सामान लेकर घर लौटते। उनके पास जितना अधिक सामान होता वह उतनी ही शान से बोलते—'बेगम! रेलवे की नौकरी भी क्या नौकरी है। स्टेशन से दो फर्लांग पहले दस मिनट के लिए गाड़ी रोकने के सौ रुपये आसानी से मिल जाते हैं।'

लतीफ़ आदर्शवादी स्वभाव का नवयुवक था, अपने अब्बा की बातों से बहुत दुखी होता। उसने अब्बा हुज़ूर की ऐसी बातें बर्दाश्त न होतीं तो उठ कर चला जाता। एक बार तो उसने घर में खाना खाने से इनकार कर दिया था कि वह हराम की कमाई नहीं खायेगा।

नाहिद की अम्मा, चमेली, को लतीफ़ बहुत प्रिय था। कभी लतीफ़ घर

चला आता तो वह बहुत खुश होती। उसकी दिली ख्वाहिश थी कि साहिल अच्छे दोस्तो के बीच रहे। वह हमेशा साहिल को लतीफ़ के नक्शे-कदम पर चलने की राय देती। साहिल की लतीफ से दोस्ती होने का नतीजा यह सामने आया कि पतंगबाजी और आवारगी में उसकी दिलचस्पी समाप्त हो गयी।

लतीफ़ ने सर के बाल बढ़ा रखे थे। शेव भी महीने में वह दो-एक बार ही बनवाता था, जिस दिन वह शेव बनाता बहुत आकर्षक लगता। चमेली तो उसकी बलैयाँ लेने लगती, 'अल्लाह ताला तुम्हें उम्रदराज़ करे।'

चमेली के यहाँ लतीफ को बहुत स्नेह मिलता था। इस परिवार के बीच लतीफ़ को अपने घर मे भी ज्यादा अच्छा लगता। कई बार तो वह कारखाने से सीधा यहीं चला आता और चमेली को दीन-दुनिया के बारे में बहुत-सी नयी-नयी बातें बताता। उसे आश्चर्य होता कि चमेली को यह भी मालूम नही कि आदमी चाँद तक पहुँच चुका है। गली मे बहुत से साजिन्दो को फटे-हाल देख कर उसका दिल बैठने लगता। विशेषकर, चमेली से बूढे बाकर की दास्तान सुन कर यह बहुत उदास हो गया था। लतीफ़ ने सुन रखा था, यही बाकर एक ज़माने मे सारंगी का बादशाह कहलाता था। उसके उठने-बैठने और चलने का एक निजी अन्दाज था।

लतीफ़ कारखाने मे अपने साथ कुछ-न-कुछ लेकर लौटता—कभी गोभी के गर्म-गर्म पकौड़े, कभी कोई मिठाई और कुछ न मिला तो कोई ताजा सब्जी ही लेकर आता—'अम्मा आज तुम्हारे हाथ का दमआलू खायेंगे।' या 'मूली का अचार तो मैंने तुम्हारे यहाँ ही चखा है।'

'दम आलू और मूली का अचार?' चमेली हैरान हो जाती, 'बेटा, मुझे तो फकत दो चीज़ बनानी आती है। दाल और गोश्त। इसके अलावा रोटी सेक लेती हूँ, बस। दमआलू बनाऊँगी तो आलू का दम निकाल कर रख दूँगी। ये चीजें तो हसीना बनाया करती है।'

धीरे धीरे लतीफ़ चमेली के परिवार मे इतना हिल-मिल गया कि रमज़ान के दिनो मे वह चमेली के यहाँ आ कर ही रोजा खोलता।

लतीफ़ के अब्बा का लतीफ का साहिल के साथ घूमना कतई पसन्द नहीं था। साहिल को देखते ही वह दूर से ही इशारा कर देते कि लतीफ़ घर पर नही है।

दरअसल लतीफ़ के अब्बा को यह सख्त नापसन्द था कि उनका बेटा एक तवायफ़ के लड़के से दोस्ती रखे। यह दूसरी बात है कि साहिल के चेहरे पर इतनी मासूमियत थी कि कई बार लतीफ़ के अब्बा को भी साहिल का चेहरा देख कर उस पर यकायक दया आ जाती। वह प्यार से उसे अपने पास बुलाते

और कहते, 'साहिल बेटे, तुम उसका संग छोड़ दो। वह आवारा लड़का है। इधर उसे युनियनबाज़ी का शौक चर्राया है, जाने कहाँ धक्के खा रहा होगा। कहीं भूख हड़ताल पर बैठा होगा या किसी तवायफ़ के कोठे पर।' 'तवायफ़' शब्द का इस्तेमाल वे जान-बूझ कर करते और आँख बचा कर साहिल पर उसकी प्रतिक्रिया भी देख लेते।

साहिल आदाब करके जाने लगता तो वे साहिल का मासूम सिफ़त चेहरा देखकर अपनी गलती का एहसास करने लगते और वहीं खटिया पर बैठे-बैठे ही आवाज़ लगाते कि लतीफ़ की अम्मा कबाब बने हों तो भिजवा दो चाय के साथ। उनका मूड अच्छा होता तो साहिल को अपने पास ही बैठा लेते और विस्तारपूर्वक उसे रेलवे के किस्से सुनाने लगते। साहिल को लगता जैसे रेलवे किसी शहंशाह का शहर या किसी अलग दुनिया का नाम है और उसे उनकी बातें सुन कर बड़ा मजा आता। साहिल ने यह भी महसूस किया कि अब्वा हुज़ूर को वह हर चीज नापसन्द है जो लतीफ से वाबस्ता है। वह बात करते-करते यकायक कहने लगते, "मगर ये आजकल के लौंडे क्या समझेंगे? मुझे दो चीजों से बेहद नफ़रत है : हड़ताल और लम्बे बालों से! लगता है इन दोनों चीज़ों का आपस में कोई गहरा ताल्लुक है। यह कहाँ का दस्तूर है कि घूस भी लेते रहो और हड़ताल भी करो। सालो हड़ताल करना है तो पहले घूस लेना तो छोडो। सरकार बहादुर घूस पर पाबन्दी लगा दे तो साले भूखो मर जायें। मैं तो घूस को हमेशा 'बोनस' की तरह लेता हूँ। सरकार बोनस नहीं देती न सही, हम चुपचाप घूस से वसूल लेंगे। फिर हड़ताल क्यों? महँगाई बढ़ती है तो घूस की रकम भी तो बढ़ जाती है।"

साहिल बेहद बोर होता मगर वह उठने का साहस न जुटा पाता। सिर्फ पहलू बदल कर रह जाता। उसकी इच्छा होती कि वह उड़कर किसी भी तरह लतीफ के पास जा पहुँचे। उसे यकायक ख़याल आता लतीफ़ जरूर अब तक उसी के यहाँ आ चुका होगा, और मज़े से बैंगन के पकौड़े उड़ा रहा होगा और साहिल है कि एक बदमिज़ाज बुड्ढे से अपना सर खपा रहा है। आखिर वह हौसला करके लगभग गिड़गिड़ाते हुए कहता, "अब्बा हुज़ूर, अगर लतीफ आ जाये तो उनसे कहिएगा कि मैं देर तक उसका इन्तज़ार करके गया हूँ। दुकान पर उसका इन्तज़ार करूँगा।"

'जरूर कह दूँगा, दरअसल उसकी आवारगी से मैं आजिज हो चुका हूँ। तुम उठ क्यों दिये। अभी पैठो कबाब आते ही होंगे, क्यों मुन्ना की अम्मा क्या हुआ तुम्हारी रफ़्तार को? असल में बात यह है कि रेलवे मे काम करने का मेरी ज़ात पर यह असर पड़ा कि सुस्ती मुझसे बरदाश्त ही नहीं होती।

मुझे तो इंजन दौड़ाते हुए ले जाना अच्छा लगता है।"

साहिल चुपचाप वहाँ खड़ा रहता। अब्बा हुज़ूर की बातें ख़त्म होते ही वह 'खुदाहाफ़िज' कहते हुए वहाँ से गायब हो जाता। साहिल को लगता उसके गन्दे कपड़े देख कर ही लतीफ़ के अब्बा उसे पसन्द नहीं करते। अपनी पोशाक को लेकर वह बहुत उलझन में रहता। वह चाहता था कि किसी तरह ईद तक लतीफ़ की तरह पतलून-कमीज सिलवा ले। अभी नया-नया धंधा था, यह सब तो मुमकिन नहीं था, मगर उसने तय किया, पैसा हाथ में आते ही वह नया कुर्ता-पायजामा जरूर सिलवा लेगा।

उसने एक हफ्ता खूब मन लगा कर काम किया। शहजाद आगा को पाँच किलो कोयलों का दाम भी चुका दिया, और दस किलो कोयला और उधार लाया। आखिर खींचतान कर किसी तरह उसने मलमल का एक जोड़ा सिलवा ही लिया।

साहिल के लिए यह जरूरी हो गया था कि वह अपने मुहल्ले के तमाम लोगों को कम से कम इतना बता दे कि वह अब सिर्फ पतंगबाज और जुआरी नहीं रह गया। वह नया कुर्ता-पाजामा बनवा सकता है। उसका बस चलता तो वह अपने लिए चप्पल का एक जोड़ा भी खरीद लेता, क्योंकि अब चप्पल ही उसकी पोल पट्टी की गवाह रह गयी थी। चप्पल पर जगह-जगह टाँके लगे थे और नये कुर्ते-पाजामें के साथ उनका कोई मेल भी नहीं था। नये कुर्ते के भीतर से मैली कुचैली बनियाइन भी उसकी मुफ़लिसी की कहानी बयान कर रही थी।

शहर में जितने लोग उसके लिए महत्वपूर्ण हो सकते थे, वह उनको अपना कुर्ता-पाजामा दिखा आया। सिर्फ लतीफ़ बचा था। जब कि लतीफ़ के अब्बा हुज़ूर सुबह से चार बार उसका नया कुर्ता देख चुके थे। शाम तक लतीफ़ से उसकी मुलाकात न हो पायी। कुर्ते की चुन्नटें ढीली पड़ गयीं। पाजामे पर घुटने निकल आये। उसे लतीफ़ पर बहुत क्रोध आने लगा। कैसा बेमुरव्वत दोस्त है। वह चाहता तो उसकी सलाह से ही कपड़ा खरीदता [illegible] वह लतीफ़ को चौंकाना चाहता था। अब इस तरह मुसे हुए कुर्ते-पाजामे को [illegible] देखेगा भी तो क्या प्रभावित होगा। साहिल परेशान हो [illegible] थक हो गया था, लतीफ़ न आया। वह कितनी बार लतीफ़ के [illegible] की पूछताछ कर आया था। [illegible] लिया होगा। आखिर इन्तजार से ऊब कर [illegible]

उठाना कबूल कर लिया। अब्बास साहब के सामने पड़ने से वह झेंप जरूर रहा था, मगर अपने को रोकना भी दुश्वार हो रहा था। संयोग से अब्बास साहब नहीं थे, लतीफ के छोटे भाई इकबाल ने बताया कि लतीफ घर पर नहीं है। साहिल खिन्न हो गया। यह पहला दिन था कि लतीफ़ न उसके घर आया, न यूनियन के दफ्तर मे था और न ही अपने घर पहुँचा था। हो सकता है पट्ठा आज पिक्चर उड़ा रहा हो। मगर साहिल को मालूम है पिक्चर देखने में लतीफ़ की जरा भी दिलचस्पी न थी।

वह दौड़ता हुआ घर पहुंचा। अम्मा बीड़ी पर धागा लपेट रही थी और अपने काम मे इतनी तल्लीन थी कि उसने साहिल की आहट तक न सुनी।

'अम्मा लतीफ़ तो नहीं आया?'

'नहीं तो?'

साहिल को आस पास बहुत सन्नाटा लगा। सिर्फ़ छत पर मकड़ी के जाले बेआवाज झूल रहे थे। उसने गर्दन घुमा कर इधर-उधर देखा और पूछा, 'हसीना कहाँ है?'

अम्मा ने बगैर सर उठाये जवाब दिया, 'यहीं कहीं पास-पड़ोस में होगी। दिन भर घर की दीवारों में कैद रहती है। खुद तो दिन भर मटरगश्ती करते हो, हसीना क्या नाक सिनकने ड्योढ़ी तक भी नहीं जा सकती! उसे जीने दोगे या यहीं मलबे के नीचे दफ़न कर दोगे?'

साहिल ने दिन मे इस्त्री फेर कर साढ़े तीन रुपये पैदा किये थे और लगभग उतना ही इस्माइल के यहाँ दफ्ती काट कर कमाया था। वह दिन भर सोचता रहा था कि शाम को लतीफ के साथ 'मुगले आजम' देखेगा। इस चाह मे उसने दस पैसे की लइया तक नहीं खायी थी। उसे लतीफ का इन्तजार था। अब उसे लतीफ़ पर बहुत क्रोध आया और उसने अकेले ही पिक्चर जाने का इरादा बना लिया। वह चुपके से घर से निकला और 'ज्योति' की तरफ चल दिया। मगर लतीफ़ के बगैर उसकी सिनेमा हाल में घुसने के इच्छा न हुई।

'ज्योति' से लौट कर उसकी लतीफ के घर जाने की हिम्मत न हुई। अब्बास साहब की गुर्राहट को और अधिक बर्दाश्त करने की कुव्वत उसमें न थी। वह खरामा-खरामा टहलते हुए घर की तरफ चल दिया। अम्मा भी बाट जोह रही होंगी।

घर में कब्रिस्तान सन्नाटा था। अम्मा थी, न हसीना। चिराग भी नहीं जला था। शायद मजलिस मे गयी होंगी। वह वहीं ड्योढ़ी में खाट पर लेट गया। जेब में एक अधजली बीड़ी पड़ी थी। वह काड़ी ढूंढ रहा था कि अम्मा लाठी टेकते चली आई।

'हसीना को कहाँ छोड़ आयी ?' साहिल ने पूछा।

'सब जगह देख आयी हूँ। वह कहीं नहीं है। मालूम नहीं कहाँ मर गयी मालजादी।'

'कब से नहीं है ?'

'दोपहर से ही नहीं। पडोस में जाने के लिए कह कर गयी थी।'

अम्मा वहीं मलबे पर लाठी टेक कर बैठ गयी। साहिल ने सुबह हसीना को ताहिर से बातें करते देखा था, हो न हो, यह ताहिर की ही करामात है। ताहिर का ख्याल आते ही वह पागलों की तरह लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ ताहिर के घर की ओर लपका।

ताहिर अपने अब्बा के साथ ठेले पर प्लास्टिक के जूते और बनियान वगैरह बेचने का धंधा करता था। आज पहली तारीख थी। पहली तारीख को बाप-बेटा दोनों गवर्नमेन्ट प्रेस के बाहर मैदान में पेड के नीचे दुकान लगाते थे। ताहिर की बहन ताहिरा ने बताया कि ताहिर तो अब्बा हुजूर के साथ गवर्नमेंट प्रेस से ही अभी नहीं लौटे, मगर साहिल को तसल्ली न हुई। उसने वहीं खड़े-खड़े ताहिर की माँ-बहन एक करने का संक्षिप्त-सा कार्यक्रम पेश किया और फिर यकायक लतीफ़ के घर की ओर भागा। मुसीबत की इस घड़ी में अब केवल लतीफ़ ही उसकी मदद कर सकता था। भागते-भागते साहिल की साँस फूल गयी।

लतीफ़ के अब्बाजान घर के बाहर इत्मीनान से बैठे हुक्का गुडगुडा रहे थे। साहिल को बेहाल देखकर उन्होंने पूछा, 'क्यों साहबजादे, खैरियत तो है ?'

'लतीफ कहाँ है ?' साहिल ने अपनी फूली हुई साँस से वाक्य पूरा किया।

'लतीफ तो अभी तक दिखायी ही नहीं दिया। वरना मैं उसे ज़रूर इत्तिला कर देता, साहिल मियाँ बेकरारी से तुम्हारा इन्तजार कर रहे थे। लगता है यूनियनबाजी उसे ले डूबेगी।' अब्बास साहब ने घर की तरफ मुंह करते हुए ज़ोर से आवाज दी, 'लतीफ को किसी ने देखा है भाई ?'

अन्दर से एक नन्ही-सी लड़की सर पर पल्लू किये आयी और बोली, 'अब्बा अम्मीजान सुबह से परेशान हैं, लतीफ़ आज दोपहर को खाने के लिए आया न शाम को। जरा मालूम तो कीजिए।'

'तुम आज इस बुरी तरह लतीफ को क्यों ढूँढ रहे हो ?' लतीफ के अब्बा ने तुरन्त तफ़तीश शुरू कर दी।

'शाम को हम लोग रोज ही साथ रहते हैं।' साहिल ने हकलाते हुए कहा, 'मेरी छोटी बहन हसीना भी नहीं मिल रही।'

लतीफ़ के अब्बा अब्बास साहब यकायक उठ बैठे, जैसे सारी बात उनकी समझ में आ गयी हो। उन्हें यकीन हो गया कि साहिल किसी षड्यंत्र के तहत ही आज उनके घर के इतने चक्कर लगा रहा था। इधर एक-से-एक बढ़िया घरों से लतीफ़ के लिए रिश्ते आ रहे थे और वे मन-ही-मन बहुत खुश थे कि समाज में उनकी इतनी पूछ है। उन्हें अचानक लगा, वे इस मुहल्ले में रहकर तबाह हो जायेंगे। उनके वालिद साहब ने यह मकान एक बूढ़ी तवायफ़ से सन् सैंतालिस में मिट्टी के मोल खरीदा था। चूंकि मकान गली से ज़रा हट कर था, अब्बास साहब के वालिद ने इधर-उधर से कर्ज बटोर कर तुरत हथिया लिया। बाद में ताज़िन्दगी वे 'वेश्यावृत्ति उन्मूलन सोसायटी' के अध्यक्ष पद की शोभा बढ़ाते रहे थे और अक्सर 'डेपुटेशन' लेकर जिलाधीश से मिलते रहते थे।

साहिल भौचक्का-सा अब्बास साहब के सामने खड़ा था कि अचानक साहिल के गालों पर अब्बास साहब का मज़बूत मोटा हाथ कुछ इस तेज़ी के साथ पड़ा कि साहिल के कानों में अनहद नाद की-सी ध्वनियाँ पैदा होने लगीं। वह अभी सम्भल भी न पाया था कि अब्बास साहब ने उसके दूसरे गाल पर भी एक ज़ोरदार झापड़ रसीद कर दिया।

'हरामज़ादे, तवायफ़ की औलाद, अब तू ही बता लतीफ कहाँ है?' वह लड़ातार साहिल को पीटे जा रहे थे, 'बताता है कि लगाऊँ दो और? सारी हरामज़दगी अभी झटक दूँगा।'

अब्बास साहब उसे फिर पीटने लगे, 'चलो अब तुम्हें थाने की सैर कराता हूँ। थाने में जब डंडा पड़ेगा तो खुद-ब-खुद बकोगे।'

आस-पास भीड़ इकट्ठी हो गयी थी। उस्मान बढ़ई, अनवर भाई, रमज़ान मियाँ के साथ-साथ महल्ले के बच्चे-बच्चे तथा पुर्दानशीन औरतें जमा हो गयी थीं।

'क्या हुआ अब्बास साहब?' उस्मान ने बीड़ी सहमद खोंसकर बोलते हुए पूछा।

'खानदानी लोगों के रहने के काबिल यह जगह है ही नहीं। मैंने बारहा वालिद साहब को बहुत समझाया, मगर वह आखिर तक इस मुगालते में रहे कि वे तवायफ़ों को महल्ले से उखाड़ फेंकेंगे। मगर जो काम मेरे अब्बा हुजूर नहीं कर पाये, वह अब मैं ही [illegible] दूँगा।'

अब्बास साहब के हाथ [illegible] थे कि वे [illegible] से साहिल को दूसरे [illegible] [illegible] [illegible] की कोशिश कर रहा था, मगर [illegible] अब्बास साहब [illegible] थाने ले [illegible]। साहिल के सर से खून बहने [illegible] [illegible] थे, मगर अब्बास साहब की [illegible] किसी भी तरह [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दिया [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

हसीना के गायब होने की खबर गली मे आग की तरह फैल गयी। मुहल्ले भर की लड़कियो पर और अधिक पाबन्दियाँ लग गयी। घर से बाहर निकलना तो दर किनार, छज्जे बारजे पर आने की भी मुमानअत हो गयी। कुछ लोगों का ख्याल था कि चमेली को इस प्रेम-प्रसंग की जानकारी थी और अब बार-बार बेहोश होकर सिर्फ नाटक कर रही है। उस्मान भाई अफ़वाहें उडाने मे सबसे आगे थे। किसी से कह रहे थे कि हसीना को कई बार लतीफ़ के साथ सिनेमा देखते पाया गया था और किसी से यह कि छावनी मे उनका ठीका चल रहा था और उसने एक दिन लतीफ़ के साइकल पर हसीना को नदी की तरफ़ जाते भी देखा था।

'बुढ़िया बहुत घाघ किस्म की औरत है' उस्मान भाई अब्बास साहब से कहते, 'बिटिया के लिए एक अच्छे खामे खाते-पीते घर का लडका फाँस लिया। अब टसुए बहा रही है।'

'मैं एक-एक के भुस भर दूँगा।' अब्बास साहब कहते, 'मेरा हीरे जैसा लडका इन लोगों ने तबाह कर दिया। पहले सौ-पचास रुपये अपनी अम्मी को दे दिया करता था, मगर जब से इस तवायफ़ के चक्कर में आया, चौपट हो गया।'

अजीजन को हसीना के भागने की खबर हुई तो वह परेशान हो उठी। उसने कई बार हसीना को देखा था। वह बेहद दब्बू और निरीह लड़की लगती थी। उसे देखकर लगता था जैसे वह अपने से बहुत छोटी लड़की के कपड़े पहने हो। उसका कुर्ता कमर तक मुश्किल से पहुँचता। शायद बहुत दिनो से उसने कुर्ता नहीं सिलाया था। हसीना सचमुच हसीन थी मगर रोज न नहाने से उसकी कुहनियाँ, टखनों में मैल की पर्तें जम गयी थी। बाल घोंसले की तरह लगते थे। जब से उसके बदन मे उभार आने लगा था, वह झुक कर चलने लगी। हर वक्त उसके हाथो से बीड़ी के पत्तो और तम्बाकू की बू आती। एक बार अजीजन ने उसे पानी का गिलास लाने को कहा था, जहाँ से उसने गिलास थामा था, तम्बाकू से महक रहा था। गुल जब छोटी थी तो हसीना अक्सर उससे खेलने आया करती थी। एक बार हसीना से खेलते हुए गुल के सर मे भी जुएँ पड़ गयी थी, तब से अजीजन ने उसका आना कम कर दिया था।

'यह तो बुरा हुआ।' अजीजन ने शहनाज बेगम से कहा, जो कोयला पहुँचाने आयी हुई थी, 'मुझे तो हमेशा वह बहुत भोली लड़की लगती थी।'

'अजीजन बी, घबराने की कोई बात नही,' शहनाज बेगम हाथ नचा कर बोली, 'इस गली से कोई लड़की भागेगी तो जरूर लौट आयेगी। आज नहीं तो कल। अकेले नहीं तो गोद में बच्चा उठाये हुए।'

अज़ीज़न को शहनाज़ की बात अच्छी न लगी, बोली, 'अब ज़माना बहुत बदल गया है शहनाज़ बी, अब लड़कियाँ भी उतनी बेवकूफ़ नहीं रहीं जितनी हमारे ज़माने में हुआ करती थीं। अब गुल को देखो बड़े-बड़ों के कान काटती है।'

'गुल की बात छोड़िए अज़ीज़न बी।' शहनाज़ खुशामद पर उतर आयी, 'उसी से हम सब की उम्मीदें बँधी हैं। बिटिया तो राज करेगी। जो ब्याहेगा अपनी किस्मत को सराहेगा।'

अज़ीज़न को यह सुनना अच्छा लगा। बोली, 'ये लोग भाग कर कहाँ गये होंगे?'

'लड़का होशियार है। जहाँ जायेगा, काम पा लेगा। उसके अब्बा अलबत्ता बहुत हल्ला मचा रहे हैं। चमेली को वे लोग दिन-रात परेशान करते हैं।'

'इसमें चमेली बेचारी का क्या कसूर। वह तो पहले ही मुसीबतों की मारी हुई औरत है। जब से आबिद गया है, मैंने तो उसकी सूरत नहीं देखी।'

'लगता है उसकी औलाद उसे चौपट कर देगी!'' शहनाज़ बेगम ने कहा, 'देखिए मैंने अपनी तरफ़ से साहिल की कितनी मदद की। दुकान खोलते ही पाँच किलो कोयला उधार दिया, मगर तब से वह शकल नहीं दिखाता। दुकान पर जाती हूँ तो कहता है, आप चलिए मैं पैसा लेकर आता हूँ।'

'बेचारा खुद भी परेशान होगा!'

'परेशानी की तो बात है। जवान जहान बहन भाग गयी। यह तो ग़नीमत है लतीफ़ समझदार लड़का है वरना कोई दूसरा होता तो कहीं दूसरी जगह ले जा कर चकले में बैठा देता।'

'खुदा से यही दुआ करो कि लड़की के पैर गलत न पड़ें।' अज़ीज़न ने कहा और उठ कर बरामदे में चिलमन के पीछे खड़ी हो गयी।

नीचे इस्माइल के यहाँ उस्मान बढ़ई खड़ा था। वह बड़े तैश में किसी से कुछ कह रहा था और बार-बार अपना तहमद खोल कर बाँध रहा था।

'इस बढ़ई का भी दिमाग खराब हो गया है।' पीछे से शहनाज़ ने कहा, 'चमेली के पीछे हाथ धोकर पड़ा है। उसे तो कोई मसला मिलना चाहिए। दिन रात उसी में मशगूल रहेगा।'

अज़ीज़न को यह सुनना बहुत बुरा लगा। कल लोग गुल के बारे में भी ऐसी ही बातें उड़ायेंगे।

अँधेरा होते ही अज़ीज़न चमेली के यहाँ चल दी। उसे अन्दर ही अन्दर बहुत बेचैनी हो रही थी। चमेली चुपचाप चिराग जला कर खटिया पर पड़ी थी। दिन भर उसे हसीना की याद सताती थी। एक तरफ़ हसीना का नया

बुर्क़ा टँगा था, वह अपने साथ कुछ न ले गयी थी। अपने भाई की तरफ़ से यही तोहफ़ा ले जाती। चमेली जितनी बार बुर्के को देखती, रुलाई आ जाती। अजीज़न को देख कर तो वह एकदम फूट पड़ी। सुबह से जो भी मिलने आता, चमेली जोर-ज़ोर से छाती पीटती और चुन-चुन कर लतीफ़ और उसके अब्बा को गालियाँ देती, 'हाय मेरी प्यारी बिटिया को किसने वरगला लिया। मैं तो लतीफ़ को अपने बेटे की तरह मानती थी, मगर वह मेरे लहू का दुश्मन निकला। उसके बाप के कीड़ें पड़ें।' अन्दर ही अन्दर वह यह भी डर रही थी कि कहीं अब्बास साहब पुलिस न पीछे लगा दें।

अजीज़न ने उसे राय दी कि वह खुद ही थाने जाकर अपनी बेटी के ग़ायब होने की रिपोर्ट दर्ज करा दे, अजीज़न भी दो-एक रसूख़ के लोगों से कहलवा देगी। चमेली को अजीज़न की सलाह जँच गयी और अजीज़न के जाते ही वह रोती-चिल्लाती साहिल और हजरी को साथ लेकर थाने की तरफ़ चल दी।

साहिल ने कई दिनों तक अपनी दुकान न खोली। शहनाज़ बेगम अलग से परेशान किये थीं। गाहकों ने कपड़े देने बन्द कर दिये थे। दरअसल जिस तबके के लोग उसे इस्त्री के लिए कपड़े दिया करते थे, वे सब अब्बास साहब के तबके के लोग थे। उस्मान ने तो साहिल की दुकान बन्द देख कर उड़ा दिया कि उसने साहिल को गुदड़ी बाजार में कपड़े बेचते देखा है। नतीजा यह निकला कि उसने दुकान खोली तो बहुत कम काम उसके पास रह गया था।

उन्हीं दिनों एक अच्छी बात हो गयी। एक दिन सुबह-सुबह डाकिया अचानक एक खत साहिल के हाथ में थमा गया। खत लतीफ़ का था।

लतीफ़ ने अचानक हसीना के साथ ग़ायब हो जाने के लिए अम्मी और साहिल दोनों से मुआफी माँगी थी और लिखा था कि वह हसीना को उस ग़लीज़ और सड़ी ज़िन्दगी से निकाल कर फ़ख़ महसूस कर रहा है। उसने हसीना पर कोई एहसान नहीं किया, महज़ अपने दिल की आवाज़ सुन कर यह कदम उठाया है और अब हसीना उसकी 'प्राउड बीवी' है। वह जानता है कि उसके अब्बा आग-बबूला हो उठे होंगे मगर उसे उनकी परवाह थी और न है। हसीना को पाकर उसकी ज़िन्दगी की एक बहुत बड़ी हसरत पूरी हो गयी है। वह शायद इतनी बड़ी नेमत का हकदार नहीं था। हसीना खुश है मगर अम्मी और साहिल को याद करके कभी-कभी रोने लगती है। वह कब मिल पाएगा, यह नहीं कहता। अल्लाह ने साथ दिया तो शायद ईद तक मुलाकात हो। पता न लिखने के लिए उसने फिर माज़रत चाही थी।

अम्मा चिट्ठी सुन कर रोने लगी। अन्दर ही अन्दर वह खुश भी बहुत हुई जैसे उसे अचानक कोई छिपा हुआ खजाना मिल गया हो। मस्जिद से 'नमाज-जुह्र' की अजान उठी तो सब काम छोड़ कर नमाज में जुट गयी। नमाज खत्म करने बाद उसने दोनों हाथ सीने तक उठा कर फैलाये और अल्लाह ताला से दुआ माँगी।

लतीफ़ का खत पढ़ कर साहिल उसके प्रति बहुत आर्द्र हो उठा था। नमाज के बाद अम्मा ने साहिल से कहा कि वह लतीफ़ का खत जला दे। साहिल अम्मा की बेवक़ूफ़ी पर हैरान हो गया, मगर अम्माँ ने कहा, 'जलाओ, मेरे सामने, जलाओ।'

'जरूर जला दूँगा अम्माँ, अभी दो-एक बार और पढूँगा।' साहिल बोला।

साहिल ने खत जेब में रखा और अपनी दुकान की तरफ चल दिया। दुनिया में कोई नही था, जिससे वह अपनी यह छोटी सी खुशी बाँट लेता। वह जेब में खत लिये शहर भर में घूमता रहा और छोटे बच्चों की तरह बीच-बीच मे खत निकाल कर पढ़ लेता। अब्बास साहब या उस्मान के कानों खत की बात पहुँच जाती तो जीना हराम कर देते।

साहिल अपनी दुकान को लगभग भूल चुका था। लतीफ का ख़त पाकर वह फिर से उत्साहित हो गया। वह दिन भर डाकखाने की मुहर पढ़ने की कोशिश करता रहा, मगर मुहर का केवल बार्डर ही खत पर छपा था। तारीख पढ़ने में आ रही थी, न शहर का नाम। वह डाकखाने वालों को कोसने लगा कि कैसी मुहर लगाते हैं।

अगले रोज उसने दुकान खोलने का निश्चय किया। वह अभी दुकान खोल कर मेज के ऊपर बिछी चादर के नीचे लतीफ़ की चिट्ठी छिपा ही रहा था कि यमदूत की तरह शहनाज बेगम कमर पर दोनों हाथ रख कर उसके सामने खड़ी हो गयी, 'साहिल के बच्चे! लगता है तू अपना धन्धा तो चौपट कर ही देगा, मुझे भी कही का न छोड़ेगा। तूने शाम तक मेरे पैसे न लौटाये तो मैं तेरा लोहा उठा ले जाऊँगी, जिस पर तुझे बहुत गुमान है! दिन भर तो आवारा लड़कों के साथ हा-हू मचाये रहता है दुकान क्या खाक चलेगी। मेरी बात गाँठ बाँध ले, शाम तक हिसाब साफ न किया तो टीन-टप्पर उठा कर फेंक दूँगी।'

साहिल ने एक हफ़्ते की मोहलत माँग कर शहनाज बेगम को किसी तरह विदा किया और कोयले के बारे में चिन्तित हो गया। कपड़ों की गठरी तो उसने जुटा ली थी, मगर कोयला नही था। अब उसे अफ़सोस हो रहा था कि मास्टरजी को कुरते की सिलाई नक़द क्यों दे दी मगर उधार

करने मे उसे अपनी हेठी लग रही थी। फ़ाखरी साहब इस्त्री के पैसों का भुगतान तुरत कर देते हैं। उसके जी में आया जाकर उन्ही से कुछ अग्रिम ले आये। संयोग से फाखरी साहब घर पर मिल गये मगर जब उसने कोयले के लिए कुछ अग्रिम देने की दरख्वास्त की तो वे भड़क गये, 'इस तरह परेशान करोगे तो कपड़े देना बन्द कर दूँगा। चले आये कोयले के लिए एडवान्स मांगने, जब कि कपड़ो पर लोहा फेरने का शऊर तुम्हें अभी तक नहीं आया! तुमसे अच्छे तो बेगम घर में कपड़े प्रेस कर लेती हैं। अमां, मेरे कपड़े वापिस ला दो। हमे नहीं करवाना है तुमसे कोई काम! जल्दी ला दो मेरे कपड़े! मैंने अभी सुबह ही देखा अहमद की कमीज चूहे कुतर गये हैं। तुम्हारी दुकान पर ही चूहे होंगे, हमारे घर मे तो इतनी बिल्लियाँ है कि चूहे रह ही नहीं सकते। जाओ, फौरन से पेश्तर कपड़े लौटा दो।'

दरअसल फाखरी साहब की बेगम उन्हें कई रोज से भड़का रही थी कि घर मे गेहूँ पर भी इतने पैसे खर्च नही हो रहे, जितने इस्त्री पर हो रहे हैं।

साहिल मुँह लटकाए अपनी नन्ही-सी दुकान पर लौट आया। अपने धन्धे के प्रति वह बहुत चिन्तित हो गया। उसकी दुकान से जरा हट कर अतीक की बरतन कलई करने की दुकान थी। अतीक की दुकान की हालत साहिल की दुकान से खास बेहतर नहीं थी। महीने मे कुछ रोज ही भट्टी सुलगती थी। मगर अतीक़ को उसने कभी उदास नही देखा था। अतीक के नौ बच्चे थे और अक्सर नौ के नौ बच्चे गली मे कूदते-फाँदते, नाचते गाते, दौड़ते-भागते नजर आते। आखिर कलई वाला सबको रोटी मुहैया करता ही होगा। उसने कभी परवाह नही की कि बच्चो के बदन पर कपड़ा है या नहीं। यह तो साहिल ने कुरता सिलवा लिया वरना वह अतीक से अच्छी स्थिति मे होना। न काम की कमी, न पैसे की। साहिल को अपनी बुज़दिली पर गुस्सा आने लगा और वह कपड़ों की गठरी का तकिया बना कर, खपच्चियाँ जोड़ कर बनायी मेज पर सो गया। ये गली-मुहल्ले के लोग उसकी तरक्की से ईर्ष्या कर रहे हैं। उनमें अगर शहनाज़ आपा शामिल है तो फाखरी साहब भी!

साहिल आँखें मूँदे सपने लेता रहा। लेटे-लेटे उसकी आँख लग गयी। वह लतीफ़ और हसीना के पास जा पहुँचा। वे लोग कश्मीर जाने की तैयारी कर रहे थे। उन लोगों के बहुत आग्रह के बाद साहिल भी लतीफ़ के साथ कश्मीर के लिए रवाना हो गया। कश्मीर उसे बहुत अच्छा लग रहा है। मगर उससे इतना जाड़ा बर्दाश्त नही हो रहा। कितना अच्छा होता, उसके पास एक अदद गर्म कोट और मफलर होता। उसे ठण्ड के मारे झुरझुरी-सी आने लगी।

साहिल की आँख खुली तो सचमुच वह जाड़े से काँप रहा था। उसके

बदन से जैसे शोले निकल रहे थे। उसने अपनी कलाई छू कर देखी, बेहद तप रही थी। वह दुकान पर ताला ठोंक कर घर चला आया। अम्मा ने उसके बदन को छुआ तो एकदम घबरा गयी, "तुम तो बुखार में तप रहे हो। चलो अभी डाक्टर अन्सारी के यहाँ।" साहिल किसी तरह अम्मा के साथ डॉ० अन्सारी के दवाखाने तक गया। उसे मलेरिया हो गया था।

साहिल जितने दिन बीमार रहा, चमेली ने खाना नहीं खाया। होटल से दो-चार बार चाय मँगवा कर पी लेती। साहिल को बुखार भी बहुत तेज आया था। वह बुखार में बड़बड़ाने लगता। चमेली की समझ में नहीं आ रहा था, वह बार-बार शहनाज का नाम क्यों लेता है। कभी वह अचानक उठ कर बैठ जाता और कहता, "जैदी साहब इत्मीनान रखिए, खाक़सार आपकी एक-एक पाई चुका देगा।"

चमेली पूरे सप्ताह बीड़ी के पत्ते व तम्बाकू लेने न जा पायी। घर की एक-एक कौड़ी इलाज में लग गयी।

"हमारे जमाने में दो आने की दवा से मरीज ठीक हो जाता था।" हजरी कहती और कहीं न कहीं से दो-चार रुपयों का जुगाड़ कर लाती।

हजरी साहिल के सिरहाने बैठी चुपचाप पट्टी बदलती रहती। इस बीच हसीना की भी चिट्ठी आयी। उसने लिखा था—"अम्माँ मुझे मुआफ़ करना। मैं बिना बताये घर से चली आयी। लतीफ ने यहाँ एक कारखाने में काम ले लिया है। हम लोग बहुत मजे में हैं। दोनों वक्त खाना मिल रहा है और जो घर हम लोगों ने लिया है उसमें बिजली भी है। हमारी चिन्ता न करना। हम बहुत अच्छे से हैं। अल्लाह ने चाहा तो ईद पर जरूर आयेंगे। साहिल का कारोबार अच्छा चल रहा होगा।' चमेली ने कई बार बिटिया का ख़त सुना और आँखें भर आयीं।

साहिल ठीक हुआ तो हजरी के बीसियों रुपये खर्च हो चुके थे। अम्मा ने बताया तो साहिल ने कहा, वह हजरी बी की पाई-पाई चुका देगा सिर्फ काम करने की कुव्वत जिस्म में आ जाये। बाद में कई लोगों ने बताया, हजरी मस्जिद के सामने फ़क़ीरों के बीच बैठ जाती और जो कुछ भी मिलता, लाकर चमेली को सौंप देती थी।

जिस रोज साहिल ने दुकान खोली मालिक-दुकान जैदी साहब आये हुए थे। उन्हें अच्छी तरह मालूम था कि साहिल इस बीच बीमार रहा है मगर वे साढ़े बारह रुपये के लिए मर मिटने पर आमादा हो गये। साहिल दुकान...

खोल कर मेज़ के ऊपर अपना नया कुर्ता पहने निढाल-सा लेटा हुआ था कि किसी ने आकर अचानक उसके कान उमेठ दिये। साहिल ने देखा, जैंदी साहब थे। वह हड़बडा कर बैठ गया, मगर जैंदी साहब ने उसका कान न छोड़ा, बोले, "क्यों भाई इस्त्री की औलाद, आप की दुकान का किराया माशा-अल्ला आपकी इस्त्री चुकायेगी या आपका यह मलमल का कुरता ?"

"तशरीफ रखिए जैंदी साहब !"

"तशरीफ की औलाद, पहले किराये की बात करो, वर्ना अभी कपड़ों की गठरी फूंक दूंगा !"

साहिल हक्का-बक्का जैंदी साहब की सूरत ताकता रहा और उनकी बगल में खड़ा हो गया, "हुजूर आपके किराये की मुझे खुद फिक्र है। अल्लाह को मन्जूर हुआ तो कल सुबह तक पेश कर दूंगा। बीमार पड़ गया था वरना यह नौबत न आती।"

जैंदी साहब की बेगम ने उन्हें सख्त ताकीद करके भेजा था, "बिना किराया वसूल किये लौटे तो रोजे तक मुंह नहीं दिखाऊंगी। जरा उसका मलमल का कुरता तो देखना, तुम्हारे बेटों को आज तक वैसा कुरता नसीब न हुआ।"

जैंदी साहब अलीगढ में साबुन का कारोबार करते थे। जानकार लोगों का कहना था कि जैंदी साहब का एक परिवार अलीगढ़ में भी था। यही वजह थी कि वह ईद या मुहर्रम पर ही मुहल्ले में नजर आते। हफ्ता दस दिन रुक कर अलीगढ लौट जाते। उसके बाद उनके खत आते थे या मनीऑर्डर। उन चिट्ठियों के सहारे बच्चे अगले मुहर्रम तक का वक्त गुजार देते !

जैंदी साहब की नजर साहिल के नये कुरते पर न पडती तो वह आपे से इतना बाहर न होते "कुरता सिलवाने से पहले नहीं सोचा कि जैंदी साहब का किराया भी चुकाना है ? मालूम हुआ है, मेरी गैर-मौजूदगी में तुम बच्चों को खूब परेशान किया करते हो ! बेगम ने इतनी बार कहलवाया कि दुकान खोल कर लौंडों-लपाडों के साथ हो-हल्ला न करो और तुम्हारे सिर पर जूं तक नहीं रेंगी ! आज तुम्हें किराया देना ही होगा, वरना मैं तुम्हारा कुरता उतरवा लूंगा।" जैंदी साहब ने गिरेबान से उसका कुर्ता पकड़ कर हिलाया।

शोर सुन कर मुहल्ले के लौंडों की भीड़ इकट्ठी हो गयी थी। जैंदी साहब बीच-बीच में भीड़ का समर्थन लेने के लिए किसी-न-किसी राह चलते आदमी से आदाब कह देते।

साहिल सुबह से ही परेशान था। उससे और अधिक बरदाश्त न हुआ तो अपना कुरता उतारा, जैंदी साहब के हवाले करने की बजाय गिरेबान से पकड़

और चाक-चाक कर दिया। यह एक ऐसा नाटक था जिसे देखने मुहल्ले के कुछ और लड़के इकट्ठा हो गये। साहिल ने नया कुरता फाड़कर चिंदी-चिंदी कर दिया—यह देख कर उसके दोस्तों के चेहरे गुस्से से तमतमाने लगे। जाफ़र से यह कारुणिक दृश्य न देखा गया। वह भीड़ को काटता हुआ जैंदी साहब के ऐन सामने जाकर खड़ा हो गया, "जैंदी साहब आप सरासर जुल्म कर रहे हैं! बेचारे ने बरसों बाद कुरता सिलवाया था। ईद के रोज भी यह पुराना कुरता पहने था। आप ज़ालिम है! आप बेरहम हैं! आप नापाक है! आप कैसे मुसलमान हैं?"

जाफ़र की आँखों में जैसे किसी ने अँगारे रख दिये थे। भीड़ में हलचल मच गयी। भीड़ में गूंगा नफीस भी खडा था। वह जैंदी साहब को उठा कर पटक सकता था मगर उसने मुंह से ऐसी आवाज निकाली, जैसे बिगुल बजा रहा हो। ऐसी आवाज़ सिर्फ़ नफ़ीस ही निकाल सकता था। बहुत से दोस्तो ने ऐसी आवाज निकालनी चाही थी, मगर कामयाब नही हो पाये। नफीस यों ही कभी बिगुल नही बजाता। वह जब बहुत खुश होता है या बहुत नाराज़, तभी बिगुल बजाता है। जैंदी साहब ने बिगुल की आवाज सुनी तो समझ गये, माहौल उनके अनुकूल नहीं रहा। उन्होंने सर झुकाया और धीरे से भीड़ मे से निकल अपने घर की तरफ़ चल दिये।

साहिल अपनी दुकान के पटरे पर बदहवास सा खड़ा रहा। उसके बदन पर अब कुरता नही, जगह-जगह से फटी एक मैली बनियान थी, जो सारे माहौल को और भी गमगीन किये दे रही थी। साहिल के कुरते का कपडा गली में बीडी के खुश्क पत्तों पर कफ़न की तरह छा गया था। साहिल ने ताहिर को बुलाया और कहा, "यह इस्त्री तुम आपा को दे आओ, यह एक मेज़ है इसका भी अब मैं क्या करूँगा, जैंदी साहब से कहो, इससे अपने किराये की हविस मिटा लें! और ये हैं फाखरी साहब के कपड़े, इन्हे एहतियात से पहुँचा देना!"

साहिल ने इस्त्री ताहिर के हाथ में थमा दी और फूट-फूट कर रोने लगा। साहिल को आज तक किसी ने रोते नही देखा था। वह अपनी बेकारी के दिनों में भी नही रोया था। भूखे पेट सोना उसे मंजूर था, मगर चेहरे पर उदासी लाना नामंजूर। साहिल को रोते देख लौंडों में हलचल मच गयी। नफ़ीस ने इस बार मुंह से बिगुल की एक बहुत विस्फोटक किस्म की आवाज पैदा की। जैंदी साहब की छोटी बिटिया जो बाप की बगल मे खड़ी कुछ देर पहले अपने अब्बा की बहादुरी पर मुग्ध हो रही थी; जैंदी साहब के जाने के बाद भी वही खड़ी रही। उसने साहिल को रोते देखा तो वह भी रोने लगी। लड़को ने उसे कंधे पर उठा लिया और चिल्लाने लगे; "जैंदी साहब! हाय-हाय!!"

मस्जिद में अजान हो चुकी थी। आसमान फीका पड़ता जा रहा था। रंग-बिरंगे पतंगों के बीच से राह बनाते परिन्दों के छोटे-छोटे काफ़िले आसमान फलाँग रहे थे। इन सब के ऊपर पारदर्शी सफेद बादल थे, जैसे किसी ने आकाश में सूखने के लिए कपड़े फैला दिये हों। सूरज गुरूब होने से पहले बादल कुछ देर भट्टी की तरह तपते नजर आये फिर सहसा राख हो गये।

गली में एकाएक अँधेरा हो गया। अब इस गली में रिक्शा की घंटियाँ आधी रात तक टनटनाएँगी। तरह-तरह की घंटियाँ: सुरीली, बूढ़ी, जवान और ढीठ घंटियाँ। दरअसल यही घंटियाँ रिक्शा की आँखें हैं, म्युनिसिपैलिटी के बल्ब हैं और बच्चों के लिए अपनी राह खोजने का एकमात्र साधन। मगर आज दो-एक जगह रोशनी थी। नियाज लोहा पीट रहा था, पास में कच्ची जमीन पर ढिबरी जल रही थी। ढिबरी की हल्की-सी बीमार थकी रोशनी सड़क पर मलबे की तरह बेजान पड़ी थी। इसी रोशनी से खुदाबख्श की दुकान का भूगोल समझते हुए बच्चे किरासिन लेने के लिए कतार में जुड़ते जा रहे थे।

खुदाबख्श की मिट्टी के तेल की सरकारी दुकान थी। एक तख्ते पर उसने उर्दू में चाक से लिख रखा था—'सरकारी मिट्टी के तेल की दुकान'। खुदाबख्श ने सिर्फ तहमद बाँध रखा था और पचीस-पचीस पैसे का तेल बड़ी मुस्तैदी से बेच रहा था। तेल की पूरी बोतल खरीदने वाला कोई गाहक न था। बीच में इब्राहीम ने जरूर दो-तीन बोतल तेल खरीदा था, मगर तेल के दाम देखते हुए वह किराये पर पेट्रोमैक्स ले आया। दीवाली पास आ रही थी और इब्राहीम का कारखाना रातों-दिन मिठाई के डिब्बे बनाने में मशगूल था। मुहल्ले के तमाम बेकार लौंडों को अस्थायी रोजगार मिल गया था। बेकार लौंडों को ही नहीं, बहुत से कामकाजी नवयुवकों को भी इब्राहीम ने मुफ्तखोरी और ठेके का लालच देकर जुटा लिया था। इस समय उसके कारखाने में हर व्यवसाय के लोग काम कर रहे थे। बिजली मिस्त्री, स्कूटर मिस्त्री, मशीनमैन, कम्पोजीटर, बनियान बेचने वाले, काँच का टूटा सामान बेचने वाले, गुब्बारे वाले, फूलवाले, जो भी नकद पैसा चाहता था—इस समय इब्राहीम के काम में व्यस्त था। सड़क पर एक तरफ लेई पक रही थी, दफ़्ती काटी जा रही थी तो दूसरी तरफ़ रंग-बिरंगे डिब्बों का अम्बार लगता जा रहा था। ऊपर ताक पर एक ट्रांजिस्टर रखा था और 'बलमा सिपहिया तेरी बन्दूक से डर लागे' से सारा माहौल गद्गद् हो रहा था। वास्तव में यह कारीगर लोगों का ऐसा समुदाय था जो अपने को वक्त के मुताबिक ढालता रहता था। जैसे इन्हीं लोगों को होली पर पिचकारी बनाते हुए देखा जा सकता था और ईद

पर सेवैयाँ बेचते हुए, मुहर्रम पर मातम करते हुए और चुनाव के दिनों मे रिक्शा में बैठ कर गली-गली लाउड स्पीकर से चुनाव-प्रचार करते हुए— 'अपना कीमती वोट......।' शादी के मौके पर बहुरंगी बत्तियों से इमारत सजाते हुए या फूलों की सेज तैयार करते हुए, दशहरे पर भगवान राम की बग्घी पर नक़्क़ाशी करते हुए......

इन लोगों मे आज साहिल नही था। साहिल को सब लोग याद कर रहे थे। वह होता तो 'बलमा सिपहिया' सुनते ही खड़ा होकर ठुमकने लगता या लेई उतार कर चूल्हे पर चाय का पानी चढ़ा देता। साहिल की बूढ़ी अम्माँ दालान मे मलबे पर लाठी टिकाये बहुत देर से बैठी थी। घने-अँधेरे मे साहिल की राह ताकते-ताकते वह थक चुकी थी। अचानक उसकी लाठी हाथ से खिसक कर गली में जा गिरी और वह वहीं मलबे पर ढेर हो गयी। अँधेरे में एक बिल्ली उसके ऊपर से कूदते हुए निकल गयी, मगर चमेली बेखबर थी।

चमेली रात भर मलबे पर बेसुध पड़ी रहती, अगर हजरी बी चमेली की लाठी से टकरा कर नाली मे न गिर पड़ती। हजरी ने सोचा कि इब्राहीम के लौंडों ने जानबूझ कर उसे गिराने के इरादे से बीच सड़क मे लाठी फेंक रखी है। गिरते ही हजरी बी ने ऐसा शोर बरपा किया कि इब्राहीम का पूरा कारखाना हजरी की तरफ़ लपका। नाली में पड़ी हजरी देर तक माँ-बहन की गालियाँ बकती रही। अपने तईं नाली से उठने का उसने कोई प्रयत्न नही किया। एक लौंडा इब्राहीम के यहाँ से पेट्रोमैक्स उठा लाया। लोगों को तफ़रीह का मौका मिल गया। दीवारों पर मूतते, बीड़ी सुलगाते, तम्बाकू खाते हुए लोग अपनी थकान मिटाने के बहाने हजरी से छेड़खानी करने लगे।

'हजरी बी, तुम आज अपनी सही जगह पर पहुँच गयी।' मुश्ताक ने कहा।

"तेरी चाँ की मूत।" हजरी नाली मे पड़े-पड़े चिल्लाई, "तुम सीधे दोज़ख मे जाओगे।"

"हजरी बी, सुना है तुम्हारे कमिश्नर साहब इसी समय नाली से गुजर रहे थे।"

"तेरे मुंह में कीड़े पड़ें। तेरी टाँग में कीड़े पड़ें।" हजरी चिल्लायी।

तभी किसी की नज़र मलबे पर अचेत पड़ी चमेली से जा टकरायी।

"यारब यह चमेली को क्या हो गया?"

पेट्रोमैक्स थामे एक लड़का मलबे की तरफ़ दौड़ा। हजरी बी जो अब तक नाली में पड़ी थी, यकायक उठ खड़ी हुई।

"अरे ओ उल्लू के पट्ठो! जरा देखो, चमेली को क्या हो गया है। मुहल्ले वालो चुल्लू भर पानी में डूब मरो। जाने बेचारी की जवान बिटिया

को भगा कर यहाँ से गये । इसने मेरी एक न सुनी, जब मैं कह रही थी किसी आला अफसर की रखैल हो जाओ और इस गली का मोह छोड़ कर गुलछर्रे उडाओ। मगर यह न मानी। इस मलबे की मुहब्बत ने इसे कहीं का न छोड़ा, जिसके ऊपर अब यह बेसुध पड़ी है। अल्लाहताला, इस मुसीबतजदः औरत की भी कुछ सुन लो।"

"हजरी बी, तुम बहुत आला दर्जे की तवायफ़ रही होगी। आज भी तुम्हारी आवाज़ में माशा अल्लाह कितनी खनक है।" इखलाक ने मज़ाक शुरू करना चाहा, मगर हजरी को इस वक्त नहीं भड़कना था, वह चमेली के मुँह पर पानी के छींटे देती रही। हजरी चमेली के तलुए पर मालिश कर रही थी, जब चमेली ने आँखें खोली।

"साहिल कहाँ है ?" चमेली ने बड़ी मुश्किल से पूछा।

भीड़ में सब लोग साहिल को खोजने लगे। साहिल नहीं था। साहिल कहीं नहीं था।

'शाम को उसके मामूजान रसूलाबाद से आये थे, उनके साथ दावत पर गया है। कल लौटेगा।' हजरी ने पूरी बात समझ ली और चमेली की हालत देखते हुए बड़ी होशियारी से भीड़ की तरफ़ आँख मारते हुए विश्वासपूर्वक बोली।

अजीजन के यहाँ खबर पहुँची कि चमेली बेहोश पड़ी है तो उसने नफ़ीस के हाथ एक गिलास मे ग्लूकोज भिजवा दिया। हजरी ने उसे ग्लूकोज पिलाया। चमेली अपनी लाठी इधर-उधर टटोलने लगी। हजरी ने लाठी अपने पाँव के नीचे दाब रखी थी। उसे शक था कि ये लौंडे कभी भी गुस्ताखी पर उतर सकते है।

"मेरा साहिल कहाँ है ?" चमेली का एक ही सवाल था।

हजरी से चमेली की यह हालत न देखी गयी, बोली, "अरे लोगो, मेरे भइया अली अकबर हैं कहाँ ?"

लड़को ने चमेली को किसी तरह अन्दर खटिया पर लिटा दिया था और उसके लिए रोटी-शोरबे का इन्तजाम भी कर दिया। मगर वह शोरबा बिल्ली की किस्मत मे बदा था। सुबह तक बिल्ली बर्तन को इस तरह चाट कर साफ़ कर गयी थी कि चिकनाई का नामो-निशाने नहीं था।

हजरी देर तक मलबे पर बैठी चिल्लाती रही।

'अरे भैया तुम्ही बताओ, मेरे भैया अली अकबर हैं कहाँ ?' धीरे-धीरे वह मजलिस की मन.स्थिति में आ गयी।

"अरे लोगो ! इमाम हुसैन साहब ने अपने मकसद की तक़मील में सिर्फ अपना और अपने दोस्तों और अजीजो का ही खून नहीं दिया, बल्कि एक छह

महीने के कमसिन बच्चे को ज़िबह करके दुनिया के सामने एक मिसाल कायम कर दी !"

यह कहते-कहते हजरी बी की आँखें भर आयीं। वह देर तक रोती रही। फिर बोली, "करबला के वाक़ये ने हमको सबक़ दिया है कि ज़ालिमों के मुक़ाबले में हक़ और सदाक़त की आवाज़ बुलन्द करने में खौफ़ न करें और अपने नेक मक़सद की तकमील की कोशिश करें।"

इब्राहीम के सब लोग दोबारा डिब्बे बनाने के काम में जुट गये थे। अँधेरी सुनसान, वीरान और खुश्क लगने वाली गलियों में हजरी बी की आवाज़ गूँज रही थी :

लाखों घरों में है सफ़े मातम बिछी हुई
राहे खुदा में घर जो लुटाया हुसैन ने

हजरी अकेली ही अपनी छाती पीट रही थी। माथे पर हाथ पटक रही थी और कह रही थी :

सब कुछ खुदा की राह में क़ुरबान कर दिया
दुनिया को सब्र औ' ज़ब्त सिखाया हुसैन ने

हजरी रात देर तक रोती-कलपती रही। थक-हार कर भूखे पेट वहीं मसनद पर लुढ़क गयी। इब्राहीम के किसी भी कर्मचारी ने ध्यान नहीं दिया कि हजरी कहाँ गयी। वे लोग पूरे ज़ोर से ट्रांज़िस्टर सुन रहे थे

खून पसीने की जो मिलेगी तो खायेंगे
नहीं तो यारो हम भूखे ही सो जायेंगे

आज साहिल ही उनकी बातचीत का केन्द्र था। देखते ही देखते साहिल की गैरहाज़िरी को लेकर तरह-तरह की पेशीनगोइयाँ हो रही थीं। इक़बाल बोला, "मुझे तो लगता है साहिल साले ने ज़हर खाकर खुदकशी कर ली है और आज शाम फाटक के पास रेल की पटरी पर जो लाश बरामद हुई है वह साहिल की ही है। अम्मी [illegible] भी ज़िन्दा न रह पायेगी।"

"बक साले ! वो तुम्हारी लाश थी।" असगर ने कहा।

"आज कोई बता रहा था कि साहिल पागल हो गया है और अदालत के पास नंगा घूम रहा था।"

"चुप साले।" असगर को कोई पेशीनगोई पसन्द नहीं आ रही थी।

इब्राहीम से भी न रहा गया। उसकी अजमेर-शरीफ़ जाने की दिली तमन्ना थी। बोला, "महुआ, मुझे कोई बता रहा था कि साहिल की शक्ल जैसा कोई लड़का, फ़कीर होकर अजमेर शरीफ़ चला गया है।"

साहिल पागल हुआ था न फकीर। न ही उसने रेल के नीचे आकर खुदकशी की थी। जब तमाम लोग साहिल के बारे में पेशीनगोई कर रहे थे, साहिल चुपचाप कृष्णा संगीत विद्यालय की सीढ़ियाँ चढ़ रहा था।

साहिल का एक बहुत ही प्यारा दोस्त था, मसऊद! बरसों से उसके बारे मे कोई खबर नही थी। अचानक एक दिन किसी ने साहिल को बताया कि मसऊद अब एक बदला हुआ शख्स है। रईस हो गया है। सरकार ने दफा आठ की पाबन्दी पर ज़ोर दिया तो मसऊद की अम्मां ने डेरेदार वेश्याओं की शैली मे अपने घर के माथे पर एक बोर्ड लटका दिया था—कृष्णा संगीत विद्यालय। साहिल को मालूम था कि कृष्णा मसऊद की अम्मा का नाम है न बहन का।

साहिल बहुत बेमन से कृष्णा संगीत विद्यालय का ज़ीना चढ़ रहा था। ज़ीने पर जगह-जगह पान की पीक के छोटे-छोटे गुम्बद बन गये थे। चढ़ते हुए उसे अपनी हैसियत एक भड़ुए की लग रही थी। मगर उसने मन ही मन तय कर लिया था कि वह अब धोबी की जिन्दगी से बेहतर जिन्दगी जिएगा और मसऊद की तरह समाज को दिखा देगा कि कैसे कोठे से महल तक पहुँचा जा सकता है।

साहिल को आशा नही थी कि मसऊद से उसकी मुलाकात हो जायेगी। उसका यहाँ तक पहुँचने का अभिप्राय मात्र इतना था कि मसऊद के बारे मे उसे कुछ प्रामाणिक जानकारी प्राप्त हो जाये और वह उसके परामर्श से कोई नया काम-काज पकड़ ले। हो सकता है, मसऊद के सम्पर्क से उसे कोई अच्छी नौकरी ही मिल जाये। अगर कुछ भी न हुआ तब भी उसे कष्ट न होगा; वह अपने प्यारे दोस्त के साथ कुछ समय ही बिता लेगा। साहिल को मसऊद की अम्मा को देख कर अक्सर दहशत और वितृष्णा होती थी। वह एक बूढ़ी तवायफ़ थी मगर आँखों में हमेशा काजल भरे रहती थी। वह अपने थुलथुल वक्ष को कुछ इस कदर कसे रहती कि लगता कच्चे गोश्त की गठरी वक्ष से बाँधे है। बाल इतने गहरे काले रँग से रँगती कि काली स्याही भी फीकी लगती। उसकी आँखों में एक ऐसी चमक और [illegible] का भाव रहता था

लगे थे। यह सब देख कर वह क्षण भर के लिए ठिठक गया। मगर जब उसने मसऊद को एक आरामकुर्सी पर बैठे देखा तो उसकी जान में जान आयी। मसऊद मोटा हो गया था और मलमल का नया कुर्ता पहने था। कुर्ते की बाँहों पर चुन्नट डली हुई थीं। अपने घने बालों के ऊपर उसने लापरवाही से करोशिए से बनी टोपी पहन रखी थी। गले में रेशमी रुमाल था, होंठ उसके भी पान से रँगे थे। साहिल को लगा कि वह जरूर उसके सामने यतीम लग रहा होगा, मगर मसऊद ने अपने कलफ़ से चमचमाते कुर्ते की कोई परवाह न की और आगे बढ़ कर साहिल से बगलगीर हुआ। मसऊद का बदन इत्र से महक रहा था।

'तुम साले खटमल के खटमल ही रहे। क्या कर रहे हो जो इतना मुर्दा नजर आ रहे हो?' मसऊद ने बड़ी बेशर्मी और लापरवाही से उसके दो-एक बोसे भी ले लिये।

साहिल ने सोचा, उसे और अधिक तैयारी के साथ आना चाहिए था। मसऊद की आत्मीयता से वह बहुत जज्बाती हो गया। जरा-सा प्यार पाकर बच्चों की तरह उसकी आँखें भीग आयीं, बोला, 'अब तुम्हीं बताओ मैं क्या करूँ? बेहद गर्दिश में हूँ।'

'मैं जो कहूँगा, करोगे?'

'करूँगा।'

'भागोगे तो नहीं?'

'नहीं!'

'कब से नहीं नहाये?' मसऊद ने पूछा। वह इस बीच बारजे पर जाकर थूक भी आया था।

'सुबह नहाया था।' साहिल को यह सवाल बहुत नागवार गुजरा।

'अन्दर जाकर कमअजकम एक बार फिर मुँह-हाथ धो लो और अम्मा से एक जोड़ा कुर्ता-पायजामा लेकर पहन लो। अम्मा तुम्हारे बारे में अक्सर पूछताछ किया करती हैं।'

साहिल को बहुत ग्लानि हुई। वह उसकी अम्मा के बारे में किस क़दर भद्दे तरीके से सोच रहा था। वह अफ़सोस करता हुआ अम्मा से मुलाकात करने अन्दर चला गया। जब वह बाहर आया तो मसऊद कुर्सी पर बैठा सामने की एक लडकी से आँख लड़ा रहा था और भद्दे इशारे कर रहा था। साहिल उसके पास जाकर खड़ा हो गया। मसऊद ने कुर्ता उठा कर नेफे में दाबा हुआ रामपुरी चाकू साहिल को दिखाया और बोला, 'आजकल इसी का जमाना है। वैसे मेरे पास दो ठो कट्टे भी हैं। चाहो तो एक तुम्हें भी दिलवा सकता हूँ।

अबे चुगद तुम्हारे पड़ोस मे ही बनते है। अब घर-घर बीड़ी नहीं, हथियार बनेंगे। बीड़ी में क्या रखा है? दिन भर बीड़ी बनाओ, शाम तक पेट भरने लायक भी नहीं मिलता। तुम देखना चाहो तो आज मैं तुम्हें इसका करिश्मा दिखा सकता हूँ, जबकि आज मेरा इरादा आराम फ़रमाने का था। मैं इसी तरह कुर्सी पर अधलेटे रम पीना चाहता था। अल्लाह का क़रम है कि आराम करते हुए भी, पाँच-दस साल मज़े से काट सकता हूँ।'

साहिल मसऊद से अत्यधिक प्रभावित हो रहा था। डर भी रहा था कि यह साला जरूर कोई खतरनाक किस्म का काम करता होगा। वह चाकू पिस्तौल की दुनिया में जा चुका था। साहिल की दुनिया बीड़ी और इस्त्री तक ही महदूद थी।

'अमाँ यार, तुम तो बदले हुए शख्स लग रहे हो, मुझे तो तुमसे खौफ़ आ रहा है।' किसी तरह अपने सूखे होंठों पर अपनी खुश्क जुबान फेरते हुए साहिल के मुँह से कुछ अलफ़ाज बाहर आये।

'डरो सिर्फ़ अल्लाह से—ऊपर वाले से।' मसऊद ने अपने दोनों हाथ ऊपर उठा दिये, 'बाकी मैं जो कहूँ करते जाओ। जिन्दगी भर याद रखोगे कि कोई दोस्त मिला था।'

साहिल एक पेड़ की तरह तटस्थ और विवश भाव से अपने मित्र की ओर देख रहा था। मसऊद ने उसकी जड़ता तोड़ने के लिए कहा, 'आओ जरा टहल आयें।'

साहिल को यह प्रस्ताव बुरा नहीं लगा। वह तुरन्त तैयार हो गया। उसका दिल बुरी तरह धड़क रहा था। मसऊद ने उसे एक बहुत आला दर्जे की सिगरेट थमा दी। साहिल कश खींचते हुए उसके साथ-साथ चलता रहा। साहिल को लग रहा था, मसऊद अभी उसे किसी कुएँ में धकेल देगा या जेल में बन्द करवा देगा। मसऊद उसे एक चाट वाले के पास ले गया। दोनों ने डट कर चाट खायी। शुरू-शुरू में तो साहिल ने थोड़ा संकोच किया, बाद में बेशर्मी से खाने लगा। साहिल ने इस दुकान पर पिछले वर्ष चाट खानी चाही थी, मगर इस दुकान की चाट आज तक उसे मयस्सर न हुई थी। चाट के बाद उन लोगों ने कुल्फ़ी का मजा लिया। कुल्फ़ी साहिल को बेहद पसन्द थी, मगर उस समय वह चाट खाकर ही इतना तृप्त अनुभव कर रहा था कि कुल्फ़ी के बिना भी मजे में था। कुल्फ़ी खाकर वे लोग 'हौली' में घुस गये। मसऊद ने अंगूर के दो गिलास मँगवाये। साहिल ने आज तक नहीं पी थी। बचपन में आने-दो-आने के लालच में ग्राहकों को लाकर जरूर दी थी, पिलायी थी, मगर खुद कभी एक घूँट नहीं लिया था। मसऊद ने गिलास आते ही गटक लिया। साहिल

ने अपना गिलास नहीं छुआ। मसऊद ने उसका भी गिलास गटक लिया और दो गिलास और मँगवा लिये।

'तू साले अभी चूतिया है। मुफ्त की मिल रही है और तू नखरे दिखा रहा है। मेरे अन्दर जब तक पाव-डेढ़-पाव चली न जाय, मुझे जिन्दगी वीरान लगती है और बेरहम। यह तो अल्लाह का करम है कि पीने के बाद मुझमें बेहिसाब ताकत भर जाती है। पीने के बाद मैं कुछ भी कर सकता हूँ। आसमान के तारे तोड़ के ला सकता हूँ। गोरी को लेकर भाग सकता हूँ और उस बेवकूफ़ और सनकी प्रोफेसर की बदसूरत और कंजूस बीवी के तमाम जेवर लेकर इस तरह से गायब हो सकता हूँ जैसे कभी-कभी उसके नल का पानी गायब हो जाता था। मगर साहिल, मैं तुम्हारा बचपन का साथी हूँ, मैं तुम्हें इस तरह उदास और मायूस नहीं देख सकता। मैं लगातार तुम्हारे बारे में सोच रहा हूँ। मैं तुम्हारे लिए कुछ करूँगा। एक ही दो दिन में। आज तो मैं तुम्हारा खादिम बना रहूँगा ताकि तुम्हें मुझ पर भरोसा हो जाय। यह तय है कि मुझ पर भरोसा करोगे तो जिन्दगी भर आराम-चैन से रहोगे। जिस लड़की के लिए तुम्हारे दिल में हलचल मचेगी, उसे तुम्हारे क़दमों पर लाकर पटक दूँगा। तुम जिधर देखोगे, सारी दुनिया उधर देखेगी।'

'मुझे डर लग रहा है मसऊद भाई,' साहिल ने कहा, 'गिलास उसके हाथ में काँप रहा था।'

'बकवास बन्द करो। इस गिलास को दवाई की तरह निगल जाओ और फिर महसूस करो कि तुम क्या वही चूतिया हो या एक बदले हुए साहिल हो।'

'साहिल को मसऊद की बात से कोई प्रेरणा नहीं मिली। उसने गिलास उठाया और मसऊद की नजरों से बचाते हुए कुर्सी के नीचे फैला दिया। वह जब मेज पर खाली गिलास रख रहा था तो उसके हाथ काँप रहे थे। मसऊद ने उसका खाली गिलास देखा तो उसकी पीठ थपथपायी, 'शाबाश! बेटा! तुम जरूर तरक्की करोगे!'

साहिल का गिलास खाली हुआ तो प्याज, शामी कबाब और कलेजी चली आयीं। साहिल को कबाब बेहद अच्छे लगे। मसऊद के साथ जी भर खाये। उसे लग रहा था कि वह आज बेताज का बादशाह है।

दरअसल, मसऊद बहुत दिनों के बाद शहर में आया था। उसने पुराने परिचितों में अभी तक कोई भी दिखाई नहीं दिया था। एक जमाना यह भी था मसऊद को इस होली में आने वाला एक-एक मर्द पहचानता था।

'मेरा एक काम तुम्हें करना है,' मसऊद ने साहिल के कन्धों पर हाथ रखते हुए कहा, 'कर लोगे तो जिन्दगी बन जायेगी। न कर पाओगे तो तुम्हारा कुछ बिगड़ेगा नही। जो जिन्दगी तुम जी रहे हो उससे बुरी जिंदगी का मैं तसव्वुर नही कर सकता। मतलब यह कि अगर कुछ बनेगा-बिगड़ेगा तो मेरा ही।'

मसऊद जैसे अपने आप से बतिया रहा था।

साहिल कुछ नहीं बोला। उबला हुआ अण्डा खाता रहा और टुकुर-टुकुर देखता रहा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उसके साथ क्या होने जा रहा है या क्या होने वाला है। इतना वह अनुभव कर रहा था कि उसके साथ कोई वारदात जरूर होने जा रही है।

शाम ढलते ही वे लोग 'होली' से उठे और नदी की ओर चल दिये। साहिल बहुत दिनों के बाद शहर से बाहर आया था। उसे सब कुछ नया-नया लग रहा था। यहाँ तक कि अपने ही शहर का आसमान और सितारे भी पराये शहर के लग रहे थे। जैसे आज की रात कोई खास रात है, सिर्फ साहिल के लिए आसमान पर उतरी है। रास्ते में मसऊद ने पान खाया और कुछ पान बँधवा कर जेब मे रख लिये।

'लौट कर हम लोग थोड़ी और पियेंगे, इस बार होली मे नही, घर पर। रात को पुलिस वाले होली पर ज्यादा कड़ी निगाह रखते है।' मसऊद बोला।

पुलिस के नाम से साहिल भीतर तक काँप गया। वह धीरे-धीरे छाती पीटते हुए नौहा गाने लगा :

अल्लाह अल्लाह आबिदे बीमार की मजबूरियाँ
साथ हसरत भी चली लिपटी हुई जंजीर से।

पार्क मे पहुँच कर वे लोग एक बेंच पर बैठ गये। सारे पार्क पर चाँदनी बिछल रही थी और सन्नाटा था।

'जानते हो, मैं इस शहर में कितना लेकर लौटा हूँ? दस हजार रुपये!'

'चोरी किये हो का?' उजड्ड देहाती तरीके से साहिल के मुँह सेनिकला।

मसऊद हँसा। अपने बचपन के दोस्त की पीठ ठोक कर बोला, 'एक जगह पड़े मिल गये थे।'

'अच्छा?' साहिल को जैसे उसकी बात पर विश्वास हो गया।

'भक् चूतिया। रुपया कहीं ऐसे मिलता है।' मसऊद बोला, 'रुपया कमाने के लिए कलेजा चाहिए, कलेजा। ये चाकू-छुरी तो मै यों ही रखता हूँ। अभी तुम ही कोई गड़बड़ी कर दो तो मैं यह थोड़े सोचूँगा कि तुम मेरे बचपन के साथी या चमेली के बेटे हो। मै चुपचाप तुम्हारा यहीं इसी वक्त खात्मा

कर दूंगा। मेरे चेहरे-पर अफ़सोस या दहशत या खुशी का नामोनिशान भी नही आयेगा। तुम्हे मग हुआ छोड़ कर मैं चुपचाप यहाँ से सीटी बजाता हुआ चल दूंगा और घर पहुँच कर इत्मीनान से लम्बी तान कर सो जाऊँगा।'

'आओ अब चले। अब बहुत देर हो गयी है।' साहिल बुरी तरह डर गया था। वह जल्द से जल्द लालटेन की अन्धी रोशनी में बीड़ी बनाती अपनी अम्माँ के पास पहुँच जाना चाहता था।

'तुम अभी नये मुसलमान हो, जरा सब्र से काम लो', मसऊद ने कहा और जम्हाई लेते हुए बोला, 'मुझे खुद ही नीद आ रही है, मगर तुम्हारी मुसलमानी तो आज होनी ही चाहिए।'

थोड़ी देर दोनों गुमसुम बैठे रहे। फिर मसऊद उठा और झाड़ियों में पेशाब करने लगा। सूने पार्क के सूखे पत्तों पर पानी की धार गिरने से आवाज हुई तो खुश्क पत्तों पर कोई जानवर भागा।

'या अल्लाह, मैं किस जाल में फँसता जा रहा हूँ?' साहिल सोचने लगा, 'इससे तो मेरी गली कहीं अच्छी है। न सही कलफ लगा नया कुर्ता मगर सुकून तो है। कल भी अगर जैदी साहब से कहूँगा तो दुकान फिर से दे देंगे। बेगम भी कोयला उधार दे ही देंगी।'

'चलो अब चलें। मैं जैसे कहूँ करते जाना।'

साहिल कुछ नही बोला।

वे दोनों एक पेड़ के नीचे सड़क के किनारे खड़े हो गये। एक कार आती हुई दिखायी दी। मसऊद साहिल को झाड़ियों के पास ले गया। कार गुजर गयी तो वे लोग फिर सड़क पर आ गये।

दूर से टिमटिमाती हुई एक रिक्शे की रोशनी दिखायी दी।

'देखो तैयार हो जाओ। मुर्गा फँस रहा है।' मसऊद बोला।

साहिल डर के मारे झाडियों की तरफ जाने लगा। मसऊद ने एक हाथ से उसकी बाँह थाम ली और दूसरे हाथ से इशारा करते हुए बोला, 'देखो वहाँ पर चढाई है। रिक्शा वाला अव्वल तो उतर कर रिक्शा चढ़ायेगा या फिर धीरे-धीरे जायेगा। मैं रिक्शे को पीछे से थाम लूंगा। अगर रिक्शा में कोई औरत हुई तो तुम उसके गले से जंजीर खींच लेना। जंजीर न हुई तो अंगूठी, अंगूठी भी न हुई तो नाक-कान में कुछ-न-कुछ जरूर होगा, सारा काम फुर्ती से करना। रिक्शेवाले की चिन्ता न करना। उससे मैं निपट लूंगा। साथ में कोई आदमी हुआ तो उसकी जरा भी परवाह न करना। ये मर्द लोग औरत से भी गये-गुजरे होते हैं। वह साला जेवर खो कर उतना दुखी नहीं होगा जितना बीवी की इज्जत खोकर। हिन्दुस्तानी औरत खाविन्द के बिना चल

कर दूंगा। मेरे चेहरे पर अफसोस या दहशत या खुशी का नामोनिशान भी नही आयेगा। तुम्हे मग हुआ छोड़ कर मैं चुपचाप यहाँ से सीटी बजाता हुआ चल दूंगा और घर पहुँच कर इत्मीनान से लम्बी तान कर सो जाऊँगा।'

'आओ अब चलें। अब बहुत देर हो गयी है।' साहिल बुरी तरह डर गया था। वह जल्द से जल्द लालटेन की अन्धी रोशनी मे बीड़ी बनाती अपनी अम्माँ के पास पहुँच जाना चाहता था।

'तुम अभी नये मुसलमान हो, जरा सब्र से काम लो', मसऊद ने कहा और जम्हाई लेते हुए बोला, 'मुझे खुद ही नीद आ रही है, मगर तुम्हारी मुसलमानी तो आज होनी ही चाहिए।'

थोडी देर दोनों गुमसुम बैठे रहे। फिर मसऊद उठा और झाड़ियो में पेशाब करने लगा। सूने पार्क के सूखे पत्तों पर पानी की धार गिरने से आवाज हुई तो खुश्क पत्तों पर कोई जानवर भागा।

'या अल्लाह, मैं किस जाल मे फँसता जा रहा हूँ?' साहिल सोचने लगा, 'इससे तो मेरी गली कही अच्छी हे। न सही कलफ लगा नया कुर्ता मगर सुकून तो है। कल भी अगर जैदी साहब से कहूँगा तो दुकान फिर से दे देंगे। बेग़म भी कोयला उधार दे ही देगी।'

'चलो अब चलें। मैं जैसे कहूँ करते जाना।'

साहिल कुछ नही बोला।

वे दोनों एक पेड के नीचे सडक के किनारे खड़े हो गये। एक कार आती हुई दिखायी दी। मसऊद साहिल को झाडियो के पास ले गया। कार गुजर गयी तो वे लोग फिर सड़क पर आ गये।

दूर से टिमटिमाती हुई एक रिक्शे की रोशनी दिखायी दी।

'देखो तैयार हो जाओ। मुर्गा फँस रहा है।' मसऊद बोला।

साहिल डर के मारे झाडियों की तरफ जाने लगा। मसऊद ने एक हाथ से उसकी बाँह थाम ली और दूसरे हाथ से इशारा करते हुए बोला, 'देखो वहाँ पर चढाई है। रिक्शा वाला अव्वल तो उतर कर रिक्शा चढ़ायेगा या फिर धीरे-धीरे जायेगा। मैं रिक्शे को पीछे से थाम लूंगा। अगर रिक्शा मे कोई औरत हुई तो तुम उसके गले से जंजीर खीच लेना। जंजीर न हुई तो अंगूठी, अगूठी भी न हुई तो नाक-कान मे कुछ-न-कुछ जरूर होगा, सारा काम फुर्ती से करना। रिक्शेवाले की चिन्ता न करना। उससे मैं निपट लूंगा। साथ में कोई आदमी हुआ तो उसकी जरा भी परवाह न करना। ये मर्द लोग औरत से भी गये-गुजरे होते हैं। वह साला जेवर खो कर उतना दुखी नही होगा जितना बीवी की इज्जत खोकर। हिन्दुस्तानी औरत खाविन्द के बिना चल

सकती है, जेवर के बिना नहीं। जिन्दगी में तरक्की करनी है तो मेरी बातों पर ग़ौर करो वरना घर जाकर बीड़ी बनाओ।'

'मैं यह काम कर ही नहीं सकता मसऊद भाई!' साहिल ने कहा। उसकी इच्छा हो रही थी, किसी सूरत से मसऊद को चकमा देकर भाग निकले।

'तुम साले सिर्फ़ पेटीकोट पर इस्त्री फेर सकते हो। इस वक्त मेरा मूड बन रहा है। ज्यादा गड़बड़ करोगे तो अभी ऐसी पटखनी दूँगा कि रास्ते पर आ जाओगे। मैं तो अपना काम करके निकल ही भागूँगा, मगर तुम बुरी तरह पिट जाओगे। न सिर्फ पिट जाओगे, बल्कि हवालात में नजर आओगे। इसलिए बेहतर यही है कि जो कुछ मैं कहूँ, चुपचाप करते जाओ।'

साहिल का कलेजा धौंकनी की तरह चलने लगा।

'मुझे प्यास लग रही है।' वह बोला।

'देखो, रिक्शा पास आ रहा है। तुम्हारी किस्मत अच्छी है कि चाँदनी में ही गले की चेन चमक रही है। अब अगर काम के वक्त तुमने बदतमीज़ी की तो यही झापड़ रसीद कर दूँगा। समझे।' मसऊद प्यार से साहिल के बाल सहलाने लगा।

मसऊद ने बात खत्म होने-न-होने आगे बढ़ कर पीछे से रिक्शा थाम लिया। रिक्शा रुकते ही रिक्शेवाला रिक्शा छोड़ कर भागा। साहिल वहीं पेड़ के नीचे जड़ खड़ा था। उसे लगा अगर अब भी उसने आगे बढ़ कर काम नहीं किया तो मसऊद उसे कच्चा चबा जाएगा। किसी तरह डरते-डरते वह आगे बढ़ा।

उसने देखा, रिक्शा पर नये शादी शुदा लोग थे। रिक्शावाले को भागते देख लड़की का रंग ज़र्द पड़ गया था और उसका खाविंद अपनी जगह गुमसुम बैठा था, इस इंतजार में कि रिक्शा रोकने वाले की हैसियत नाप कर ही अगला क़दम उठाये।

'क्या चाहते हो?' खाविंद गुर्राया।

'हार।' रिक्शा के पीछे से मसऊद की संतुलित आवाज़ सुनायी दी।

'मीना इसको हार दे दो।' रिक्शा सवार इस स्वर में बोला जैसे किसी भिखारी को भीख देने को कह रहा हो।

मीना कुछ देर जड़-सी बैठी रही। फिर वह काँपते हाथों से हार उतारने लगी। साहिल ने उसे हार उतारते देखा तो उसके पूरे शरीर में झुरझुरी दौड़ गयी। लड़की सुन्दर थी। मुलायम गुदाज़ बाहें। सेंट व पसीने की मिली जुली मादक गंध। लड़की ने हार उतार कर चुपचाप साहिल को सौंप दिया। साहिल ने हार बहुत लापरवाही से जेब के हवाले किया और वहीं खड़ा रहा।

'अब क्या चाहते हो ?'

'घड़ी ।' घड़ी उसने यों हो माँग ली थी । उसने कल्पना नहीं की थी कि यह सब काम इतनी आसानी से हो जायेगा । लड़के ने घड़ी भी उतार करदे दी ।

'अब ?' लड़के ने जल्दबाज़ी में पूछा ।

'कुछ रुपये हों तो चुपचाप रख दो ।' साहिल बोला ।

लड़के ने चुपचाप अपना पर्स भी उसे थमा दिया ।

मसऊद अँधेरे में खड़ा अपने साथी की हरकतों का जायजा ले रहा था । फिर वह साहिल की बगल में आकर खड़ा हो गया । उसने रिक्शा में बैठे मियाँ-बीवी को आदाब अर्ज़ किया और गायब हो गया । साहिल चुपचाप उसके साये के पीछे चलता रहा । थोड़ी देर बाद साहिल ने पाया, वे लोग पार्क के बाहर थे ।

'मालूम नहीं रिक्शावाला लौट कर आया कि नहीं ?' साहिल को जिज्ञासा हो रही थी ।

'भक् साला !' मसऊद बोला, 'इन फ़िज़ूल-सी बातों के बारे मे क्यों सोच रहे हो, यह घटना अब तुम्हें जिन्दगी में कभी याद नहीं आनी चाहिए ।'

घड़ी और हार मसऊद को सौंप कर साहिल निश्चिन्त, आश्वस्त और थोड़ा निर्भीक हो गया था ।

'इतनी देर क्यों लगा रहे थे ?'

'मैं लड़की की तरफ देख रहा था । उसने बहुत अच्छ इतर लगाया था ।'

'भक् साला ! लड़की पाने का भी तरीका बताऊँगा । चण्डीगढ़ में मैं एक प्रोफेसर का घरेलू नौकर था और मैंने उसी के पड़ोस की लड़की फाँस ली थी—लीला । लीला का बाप नन्दलाल कालेज में चपरासी था ।'मसऊद किस्सा-गोई में अन्दाज में बयान करने लगा, 'गलती सिर्फ यह हुई कि बेवकूफी में मैंने लीला के साथ तस्वीर खिंचवा ली । यह मुझे यहाँ लौट कर याद आया । अब तुम्हें उस तस्वीर का नैगेटिव लाना है । तुम्हें सोलन जाना होगा । एक ही फोटोग्राफर है वहाँ । जाते ही सौ का एक नोट थमा देना । पिछले साल बैसाखी पर फोटो खिंचवायी थी । मुझे आज यकीन हो गया कि तुम बड़ी मुस्तैदी से यह काम कर लोगे ।'

रात को साहिल के लिए बहुत उम्दा खाना बनवाया गया । रोगनजोश, दो प्याजा तन्दूरी, मुर्ग़ी, कलेजी । साहिल ने ज़िन्दगी में कभी ये चीजें न चखी थीं । उसे ज़िन्दगी में पहली बार एहसास हुआ, कि जिन्दगी जीने लायक चीज़

है। उसकी इच्छा हो रही थी कि वह एक रकाबी में अम्मा के लिए भी कुछ चीजे घर छोड़ आये। उसकी जुबान पर यह प्रस्ताव कई बार आया, मगर वह हर बार संकोच कर गया। साहिल को यह भी उम्मीद थी कि आज की कमाई का कुछ हिस्सा उसे भी मिलेगा। उसे ज्यादा देर तक इंतजार नहीं करना पड़ा। खाना खाने के बाद मसऊद ने कुर्ता-पायजामा उतार के फेंक दिया और तहमद पहन कर पलंग पर पसर गया। उसने एक बहुत उम्दा सिगरेट साहिल को पेश किया और अपने तहमद में से सौ-सौ के तीन नोट उसके हाथ में थमा दिये।

'यह तीन सौ की आज की कमाई तुम्हारी।' उसने तहमद से फिर दो नोट निकाले और बोला, 'यह फोटो का नैगेटिव लाने का एडवांस। ले आओगे तो तीन नोट और मिलेंगे, मगर इस समय तुम सो जाओ, तुम्हें सुबह कालका मेल पकड़नी है।'

'मैं अब घर जाऊँगा, सुबह वक्त पर स्टेशन पहुँच जाऊँगा।'

'अब तुम कालका से लौटने पर ही घर जा सकते हो।' मसऊद ने पास से गुजरती हुई अपनी अम्माँ का आँचल थाम लिया और बोला, 'जानते हो, मेरी अम्मा ही मेरी कमजोरी है। साले तुम अपनी अम्मा से मिलोगे तो मुझे भूल जाओगे। मैं सुबह अम्मा से मिल आऊँगा। मगर तुम नहीं जा सकते। वह तुम्हें कभी भी सोलन जाने की इजाजत न देगी। मैं तुम्हारी अम्मा को जानता हूँ। अब तुम जूते उतारो और लेट जाओ।'

साहिल ने नोट अपनी जेब में रखे और बोला, 'तुम्हारे पास सेफ्टीपिन है?'

'का करबो?'

'अरे यार ये नोट कहीं जेब से न सरक जायें।'

'भक साला!' मसऊद ने कहा, 'नोटों की इस तरह चिन्ता करते नजर आओगे तो कोई मसऊद फौरन साफ कर देगा। नोट जेब मे रखो और भूल जाओ। नोट तभी टिकते है वर्ना नोट दारू में तब्दील हो जाता है। क़ागज का टुकड़ा होकर रह जाता है। मुर्गा बन जाता है—कुकड़ूँ-कूँ।' मसऊद बेफ़िक्र था। प्रसन्न था।

अपनी तोंद पर हाथ फेरते हुए उसने दुबारा कहा—'कुकड़ूँ-कूँ।' मसऊद बाँहोंका तकिया बनाकर लेट गया। उसकी अम्मा ने बहुत धीरे से उसकी गर्दन के नीचे एक तकिया टिका दिया। मसऊद खर्राटे भरने लगा तो साहिल बहुत अकेला हो गया। वह अम्मा से मिल आना चाहता था। मगर तभी मसऊद की अम्मा ने एक तख्त की तरफ आदेशात्मक इशारा किया कि वह तुरन्त सो जाए। उसे सुबह लम्बे सफर पर जाना है। साहिल ने अपनी जेब पर हाथ रखा

और तख्त पर लेट गया। नीचे चार इंच का फोम था। उसे नींद ने कब दबोच लिया, उसे नहीं मालूम।

सुबह जब वह उठा तो उसकी बगल में ही एक अटैची रखी थी। बहुत भद्दे तरीके से नीम का दातून चबाते हुए मसऊद बोला, 'उस साले फोटोग्राफर के रजिस्टर में मेरा नाम कृष्ण कुमार होगा। बोलो, क्या नाम होगा?'

'कृष्ण कुमार' साहिल बोला, 'आज अम्मा से जरूर मिल आना।'

'सौ सौ के तीन नोट तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं। फौरन चले आना।'

चमेली ने पूरी रात रो-रो कर गुजार दी। साहिल को नहीं आना था, नहीं आया। वह साहिल के हर ठिकाने पर हो आयी। अनवर मियाँ के ढाबे पर सब दोस्त थे, वहीं नहीं था। इस्माइल के यहाँ रात भर काम होता था, वहाँ भी उसकी कोई खबर न लगी। हजरी ने गली का एक-एक कोना छान मारा मगर साहिल का कुछ पता न चला। वह रात भर चमेली को ढ़ाढस बँधाती रही, मगर वह उसी तरह बिसूरती रही।

सुबह हजरी ने चमेली के सामने एक सुझाव रखा। चमेली पहली नमाज फज्र (प्रात. प्रार्थना) के लिए वुजू कर रही थी। चमेली ने भी वुजू किया और बिना बात किये नमाज शुरू कर दी।

चारो तरफ अन्धकार था। आस पास की मस्जिदों से नमाज की अजान सुनायी दे रही थी—अल्लाहु अकबर...अल्लाहु अकबर...अल्लाहु अकबर... अल्लाहु अकबर...अश्हदो अन्न मुहम्मदन् रसूलल्लाहि। अश्हदो अन्न मुहम्मदन् रसूलल्लाहि। हय्य अलस्सलात्।

हजरी और चमेली ने दाहिने मुँह करके दो बार फिर कहा, "हय्य अलस्सलात्।' फिर बायी ओर मुँह करके एक बार कहा—हय्य-अलन्-फलाह। दो बार कहा—अल्लाहु अकबर और अन्त में 'ला इलाह इल्ल-उल्लाह।"

नमाज खत्म हुई तो हजरी ने सुझाव रखा, "मेरे साथ चलो। सूरतगंज में एक ज्योतिषी जी हैं। पिछले बरस अजरा का लौंडा भागा था तो उन्होंने बतला दिया था कि छब्बीस को लौटेगा।"

चमेली ने कहा, "मैं सोचती थी एक नजूमी इमामबाड़े में रहता है उससे भी मिल लें।"

"अजरा उसके भी पास गयी थी। मगर हर बात गलत साबित हुई। सूरतगंज वाले ज्योतिषी जी ने जो बताया था, बिलकुल ठीक निकला।"

"मगर सूरतगंज तो चार पाँच कोस है। न जाने रिक्शावाला कितना

पैसा लेगा।"

"रिक्शे का पैसा मैं दूंगी।" हज़री ने कहा। आज ही हज़री बी को दस रुपये इनाम में मिले थे। अज़ीजन के यहाँ गयी तो उसकी हालत देख कर अज़ीजन ने दस रुपये का नोट उसकी झोली में डाल दिया था।

"चमेली बी तुम्हारे साथ मैंने भले-बुरे बहुत दिन देखे हैं। तुम कहोगी तो मैं जहन्नुम तक भी तुम्हारे साथ जा सकती हूँ और जहन्नुम का रिक्शा भाड़ा भी देने को तैयार हूँ।"

हज़री ने सुन रखा था कि सूरतगंज के पण्डितजी पैसा नहीं लेते और बहुत ठीक-ठीक बताते हैं। पूछते-पूछते किसी तरह वे लोग सूरतगंज पहुँची तो ज्योतिषी जी भैंस को चारा दे रहे थे।

"प्रणाम ज्योतिषी जी।" हज़री ने कहा, "एक बेसहारा औरत आयी हूँ।"

"लड़का गायब है न।" ज्योतिषी जी ने भैंस के आगे चारा फैलाते हुए कहा, "अगले महीने की उन्नीस या इक्कीस को लौटेगा।"

"महाराज, कहाँ गया है, वह?"

"वह पहाड़ों की सैर करके लौटेगा। अगले महीने की उन्नीस को या इक्कीस को।

"महाराज इस ग़रीब औरत का कोई सहारा नहीं।"

"सहारा तो ऊपर वाले का है।" ज्योतिषी जी ने कहा, "वह लौटकर आयेगा और बहुत पछतायेगा। वह अच्छे लोगों के संग नहीं।"

हज़री बी आशीर्वाद की झड़ी लगाते हुए चमेली के साथ लौट आयी।

चमेली की कुछ तसल्ली न हुई। उसने हज़री से कहा, "चलो, ग़रीबन-टोला भी हो आयें। वहाँ एक मौलवी जी रहते हैं। आयशा को कोई उठा कर ले गया था तो उन्होंने ठीक-ठीक बता दिया था कि आयशा जिसके साथ भागी है वह उससे शादी कर लेगा। ठीक वैसा ही हुआ।"

हज़री बिल्कुल खाली थी। फ़ौरन तैयार हो गयी। मौलवी जी कुरआन शरीफ़ का मुतालया कर रहे थे जब वे पहुँचीं। मौलवी जी ने एक काला कुर्ता पहन रखा था।

दोनों बूढ़ियों को देख कर उन्होने आँखें बन्द की और दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए बोले, "लड़का बुरी सोहबत मे पड़ गया है, लेकिन सुधर जायेगा।"

चमेली मुँह छिपा कर रोने लगी।

मौलवी जी ने कहा, "मगर उसे बहुत पछतावा होगा। वह जिन्दगी भर अफ़सोस करेगा कि घर से भाग कर उसने बहुत ग़लती की थी। मौत तलक

इस पछतावे से न उभर पायेगा।"

"मौलवी जी इस वक्त वह कहाँ है ?"

मौलवी जी ने अपनी लम्बी दाढ़ी पर दो-तीन बार हाथ फेरा और बोले, "इस वक्त वह किसी दरिया के किनारे टहल रहा है।"

मौलवी जी ने चमेली को दो तावीज़ दिये। एक तावीज़ साहिल के किसी कपड़े में छिपा देने के लिए कहा और दूसरा घर के बड़े दरवाजे पर टाँग देने की हिदायत दी।

हजरी ने अपनी धोती के पल्लू से मुसा हुआ एक रुपये का नोट निकाला और मौलवी साहब को नज़र कर दिया।

उसके बाद दोनों औरतें कोई दो घण्टे पैदल चल कर घर पहुँची।

सुबह चमेली ने नफ़ीस को बुलाया और कहा, "भैया ज़रा नदी किनारे तक देख आओ। मौलवी जी ने बताया है कि वह नदिया किनारे ही कहीं टहल रहा है।"

नफ़ीस उस दिन खाली था। गुल की छुट्टी थी। वह सुबह से शाम तक नदी किनारे मीलों पैदल चला, मगर साहिल का कहीं कुछ पता न चला। कुछ लोग शक कर रहे थे कि अब्बास साहब ने लड़का गायब करा दिया है। मगर अब्बास साहब ज़ुबान के बुरे थे किसी का बुरा उन्होंने आज तक न किया था। हजरी जब रोते-चिल्लाते उनके यहाँ पहुँची तो वे खुद चिन्ता दिखाने लगे। उनका अपना लड़का गायब था। चारों तरफ़ उन्होंने हरकारे दौड़ाये, मगर लतीफ का कुछ पता न चला था। हज़री लौट गयी तो वह जनानख़ाने के बाहर खड़े होकर कहने लगे, "सुनती हो बेगम। अल्लाह कभी नाइन्साफी नहीं करता। देखो हमें कुछ करना ही न पड़ा और चमेली का लौंडा कहीं भाग गया। उसी के चलते अपना लतीफ़ बिगड़ा था। बुरी सोहबत आदमी को कहीं का नहीं छोड़ती।" बेगम ने अन्दर से कहा, "छुट्टन को सुला दूँ तो खाना परोसती हूँ।"

हजरी आज प्रसन्न थी। आज बाकर होश में आया था और बार-बार अज़ीजन और हजरी को दुआएँ दे रहा था। अज़ीजन के साथ अपना नाम सुनकर वह खुशी से पागल हो रही थी। वह जल्द से जल्द इकबालगंज पहुँच अज़ीजन को बताना चाहती थी कि बाकर अब स्वस्थ हो रहा है।

रात को जब चमेली के यहाँ हजरी पहुँची तो घोर सन्नाटा था। मलबे में भीतर से झींगुरों की लय-बद्ध आवाज उठ रही थी। गली में कहीं रेकार्ड

रहा था—बेकसों का सहारा हमारा नबी।

"साहिल की अम्मा।" हजरी ने आवाज दी, 'ओ साहिल की अम्मा।'

पास ही कहीं एक कबूतर ने पर फड़फड़ाये। कोई आवाज न आयी। रिकार्ड बज रहा था .

बेकसों का सहारा हमारा नबी।

गली में अन्धकार था। हजरी ने मकान में भी इतना सन्नाटा आजतक नहीं देखा था। ढिबरी तक नहीं जल रही थी। वह जोर से चिल्लायी, "चमेली बाई।"

उत्तर वही : "बेकसों का सहारा हमारा नबी।"

दीवार छूते-छूते वह किसी प्रकार कोठरी में पहुँची। आले में ढिबरी रखी रहती थी। हजरी ने अँधेरे में हाथ थपथपाया तो दियासलाई की डिबिया मिल गयी। उसने ढिबरी जलायी। ढिबरी की बीमार, उदास और पीली रोशनी में उसे फर्श पर बीड़ी के मुर्दा पत्तों के अलावा कुछ दिखायी न दिया। छत पर एक लालटेन चुपचाप लटक रही थी। हजरी ने लालटेन भी जला दी। देखा, खटिया पर चमेली बेसुध सो रही थी। लालटेन में शायद तेल कम था, पीली रोशनी के एक भभके के साथ वह बुझ गयी। ढिबरी का प्रकाश मुश्किल से जमीन तक पहुँच रहा था।

कमरे का सन्नाटा दहशत पैदा कर रहा था। हजरी ने चमेली की तरफ़ देखा तो उसे चमेली का चेहरा बहुत अपरिचित-सा लगा। उसके होंठ खुले थे, आँखें पत्थर। चमेली का बूढ़ा चश्मा उसकी गर्दन पर झूल गया था।

"चमेली बाई, क्या हुआ ?"

"बेकसों का सहारा हमारा नबी। बेकसों का सहारा हमारा नबी।"

हजरी ने कन्धे से पकड़ कर चमेली को झकझोरा तो वह बेजान बोरे की तरह लुढ़क गयी।

हजरी को समझते देर न लगी कि चमेली नहीं रही। उसने दोबारा लालटेन जलानी चाही मगर उसमें तेल नहीं था। हजरी छाती पीटते हुए बाहर की तरफ लपकी कि रास्ते में उसका पैर पत्थर से टकराया और वह औंधे मुँह गिर गयी। उसका आगे का एक दाँत दूध के दाँत की तरह टूट गया। हजरी मसूढ़ों पर जुबान फेरते हुए गली की तरफ भागी। नुक्कड़ पर डा० उस्मान की दुकान थी, मगर वहाँ ताला लटक रहा था। वह दौड़ती हुई लौट रही थी कि उसे इस्माइल खाँ मिल गये, "हजरी बी का बात है। बदहवास क्यों दौड़ रही हो ?"

"चमेली बाई को कुछ हो गया है।" कह कर वह दुबारा घर की ओर

भागी और बीच सडक पर खड़े होकर अशफाक भाई को आवाज देने लगी, "अशफाक भाई दो ठो मोमबत्तियाँ जल्दी लाओ। चमेली की हालत ठीक नही।"

देखते ही देखते चमेली का कमरा पडोसियों से भर गया। पास के ढाबे से पेट्रोमैक्स चला आया।

चमेली की लाश को ढाँप दिया गया और लोग उसके किसी रिश्तेदार को याद करने में दिमाग खपाने लगे।

"वह उल्लू का पट्ठा साहिल कहाँ है ?"

"लगता है साहिल के गम में ही यह चल बसी है।" हजरी बोली, "दिन रात उसी के बारे में सोचती थी।"

रात भर बुर्कानशीन औरतें आती जाती रही। मगर अज़ीजन और हजरी रात भर चमेली के पास बैठी रही। एक-एक कर लोग विदा ले रहे थे। अजीज़न ने तय किया, उसे कुछ हो, इससे पहले वह बिटिया के हाथ जरूर पीले कर देगी। वह अगले रोज़ दोपहर तक भूखी-प्यासी वही बैठी रही। दोपहर को जब खबर मिली कि हसीना और साहिल मे से किसी का ठौर नहीं मिल रहा तो मैयत उठ गयी। चमेली के साथ की औरतों ने मातम करते हुए उसे मार्मिक विदा दी।

चमेली को दफना कर लोग कब्रिस्तान से लौट आये थे। अजीजन तब भी सूनी निगाहों से गली की ओर ताक रही थी। इस बीच पूरा माज़ी उसकी आँखो के सामने एक फिल्म की तरह गुजर गया था। शाम को कालिज से लौट कर जब गुल ने•अम्मा को यों गुम-सुम खड़ा देखा तो चिन्तित हो गयी। अम्मा की आँखें रो-रो कर सुर्ख हो गयी थी। हमेशा की तरह अम्माँ से जरा हट कर नफ़ीस खडा था। भावहीन नफ़ीस।

"अम्मा को चाय-वाय पिलायी कि नही ?"

जीभ से नफीस ने 'ट' की ध्वनि निकाली, जिसका अर्थ होता है, नहीं।

गुल अम्मा को कन्धो से थामे हुए बैठक तक ले गयी।

• •

लतीफ को कानपुर में एक कपड़े की मिल में मैकनिक की नौकरी मिल गयी थी। उसके साथ लेथ पर काम करने वाला एक लड़का गुलाम मुहम्मद पहले से उस मिल में था। गुलाम मुहम्मद ने ही लतीफ के लिए एक छोटे से मकान का इन्तजाम भी कर दिया था। लतीफ शहर में नया था, कोई भी तकलीफ होती गुलाम मुहम्मद फौरन निदान कर देता। लतीफ की शिफ्ट ड्यूटी थी। कभी रात को दो बजे लौटता, कभी सुबह छह बजे। मगर गुलाम मुहम्मद के रहते उसे किसी चीज की चिन्ता न थी। छुट्टी के रोज वे लोग साथ-साथ घूमते। सुबह नाश्ता करते ही निकल जाते। दोपहर को किसी-न-किसी सिनेमाघर में घुस जाते। लतीफ को यह नयी जिन्दगी बहुत अच्छी लग रही थी। हसीना भी उसका बहुत ध्यान रखती। आज तक किसी ने उसकी इतनी चिन्ता न की थी। वह अपने जीवन से बेहद खुश और सन्तुष्ट था। रात को देर तक हसीना उसके पाँव दाबती। हसीना ने इससे पहले कभी घर पर खाना न पकाया था। जल्द ही वह न सिर्फ चपातियाँ सेंकना बल्कि कीमा मटर, दो-प्याजा, रोगन जोश बनाना भी सीख गयी। वह रसोई में काम कर रही होती तो उसके हाथों की चूड़ियाँ छनकतीं, लतीफ को यह सब बहुत अच्छा लगता। हसीना बिल्ली की तरह साफ़ रहती थी। लतीफ़ काम पर चला जाता तो वह देर तक एड़ियाँ रगड़ती, मुँह पर उबटन लगाती। उसकी दुबली बाहें गुदाज हो गयी थीं और वह पहचान में न आती थी। दोनों वक्त एक-एक कप दूध भी उसे नसीब हो रहा था। देखते-देखते उसका यौवन कुलाचे भरने लगा। गाल भर गये। आँखों के नीचे के गड्ढे गायब हो गये और आँखों में नूर उतर आया। लतीफ मुग्ध-सा उसे देखता रहता। हसीना थोड़ा-बहुत गाना-बजाना भी जानती थी। लतीफ़ कुछ सुनाने को कहता तो वह अपनी पीठ लतीफ से टका कर अपना प्रिय दादरा सुनाती :

कैसा जादू डारा बलम मतवारे
मदभरे नयन तोरे
हाँ हाँ जोवन के रखवारे
कैसा जादू डारा
बलम मतवारे, बलम मतवारे
तुम्हारी मस्त नजर मस्तियाँ लुटाती है
दिलो जिगर पे मेरे
बिजलियाँ गिराती है
कैसा जादू
डा ला
बलम मतवारे

एक दिन गुलाम मुहम्मद ने यह दादरा सुना तो बोला, 'भाभी तुम तो बहुत अच्छा गाती हो। बम्बई में होती तो म्यूजिक डाइरेक्टर तुम्हारे घर का चक्कर लगाते।'

हसीना के लिए यह एक अनोखा अनुभव था। शादी के पहले उसने कभी तारीफ़ ही न सुनी थी, बोली, 'तारीफ के लिए शुक्रिया। रियाज करूँ तो न जाने कितना अच्छा गाऊँ।'

'सुब्हान अल्लाह, आपने क्या तो जुबान पाई है और क्या सूरत।'

लतीफ़ ने देखा, गुलाम मुहम्मद थोड़ा नशे में था। उसने हसीना को आँख से इशारा किया कि वह उठकर दूसरे कमरे में चली जाये। हसीना लतीफ़ का संकेत न समझी और वहीं खटिया पर बैठ गयी, बोली, 'गुलाम भाई आप शादी कब करेंगे।'

'कोई लड़की ला दो तो आज ही कर लूँ।' वह हसीना की आँखों में झाँकते हुए बोला, 'अपनी ट्रू कापी लाना।'

हसीना खिलखिला हँस पड़ी। लतीफ़ से अब न रहा गया, बोला, 'जाओ हसीना अन्दर जाकर काम करो।'

'हसीना को यहीं बैठा रहने दो, लतीफ़ भाई, हसीना को कहीं मत भेजो।'

'चलो यार पान खा आयें।' लतीफ़ ने कहा और खड़ा हो गया।

गुलाम मुहम्मद की बाहर जाने की इच्छा न थी। उसे अचानक प्यास लग आयी, बोला, 'भाभी, पानी पिला दो, हलक सूख रहा है।'

हसीना फ़ौरन पानी का गिलास ले आयी और गुलाम मुहम्मद को पेश किया। गुलाम मुहम्मद एक ही घूंट में पानी पी गया और हसीना के हाथ थाम कर बोला, 'तुम बहुत अच्छी हो हसीना। तुम्हारे हाथ का पानी

कितना मीठा है।'

लतीफ़ से नजरें मिलते ही हसीना ने जल्दी से अपना हाथ छुड़ाया और छम-छम करती अन्दर चली गयी। आज पहला दिन था कि लतीफ़ को उसके पाजेब की आवाज खल गयी।

लतीफ़ ने गुलाम मुहम्मद को उठाया और पान खिलाने ले गया। दोनों दोस्तों ने पान खाया। चलने लगे तो गुलाम मुहम्मद ने कहा, 'एक बढ़िया-सी गिलौरी भी लगा दो।'

लतीफ़ को समझते देर न लगी कि गुलाम मुहम्मद गिलौरी किसके लिए ले रहा है।

'हसीना तो पान खाती नहीं।' लतीफ़ ने गुलाम मुहम्मद से पिण्ड छुड़ाने के बहाने कहा।

'क्या बकवास करते हो।' गुलाम मोहम्मद ने कहा, 'मैंने बीसियों बार उसे गिलौरी खिलायी है।'

लतीफ़ चुप हो गया और चुपचाप गुलाम मोहम्मद के साथ चलता रहा। हसीना दरवाजे पर ही खड़ी थी, उन्हें देखते ही बोली, 'हमारा पान!'

लतीफ़ ने कोई जवाब न दिया और गुलाम मुहम्मद ने हसीना के सामने अपनी मुट्ठी खोल दी, 'नोश फरमाइए।'

हसीना ने पान खाया और गुलाम मोहम्मद के साथ-साथ ही अन्दर चली आयी। लतीफ़ दूसरे कमरे में जाकर कपड़े बदलने लगा। अपने घर में गुलाम मोहम्मद की यह घुसपैठ उसे अच्छी न लग रही थी। उसने सोचा, गुलाम मुहम्मद के जाते ही वह हसीना को समझा देगा कि यह सब ठीक नहीं। उसे गुलाम मोहम्मद के सामने नहीं आना चाहिए।

गुलाम मुहम्मद उस दिन ऐसा जमा कि खाना खाकर ही गया। लतीफ़ ने बहुत जँभाइयाँ ली, सर दर्द का बहाना किया, मगर वह टस-से-मस न हुआ, बोला, 'तुम सो जाओ अगर तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं। हम तो आज खाना खाकर ही जाएँगे।'

गुलाम मुहम्मद चला गया तो लतीफ़ ने हसीना को बुला कर पूछा, 'क्या यह मेरे पीछे से भी घर में आता है?'

'हाँ आता है और खूब मन लगाता है। ताश की दो-चार बाजियाँ भी खेलता है।'

'तुम इतनी बेवक़ूफ हो, मैंने नहीं सोचा था।' लतीफ़ ने कहा, 'पराये मर्दों के साथ इस तरह अकेले मिलना ठीक नहीं होता।'

हसीना सहम गयी, बोली, 'मगर उसने कभी बदतमीज़ी नहीं की।'

'आज बदतमीज़ी नहीं तो क्या कर रहा था। तुमने उसके हाथ का पान क्यों खाया। क्या वह रोज़ पान लाता है?'

'कभी-कभी लाता है।' हसीना सहम गयी। गुलाम दो-एक बार मिठाई भी लाया था। इस वक्त लतीफ़ का मूड देखकर उसने बताना ठीक न समझा।

'अब से वह मेरी ग़ैरहाज़िरी में नहीं आयेगा।'

'मैं उसे बुलाने तो नहीं जाती।'

'अब आये तो तुम दरवाज़ा मत खोलना।'

'वह नाराज़ हो जायेगा ''

'होने दो।' लतीफ़ बोला।

हस्बेमामूल, अगले रोज़ गुलाम मुहम्मद दोपहर को आया तो हसीना ने सचमुच दरवाज़ा न खोला। वह देर तक दरवाज़ा खटखटाता रहा। उसने सोचा शायद हसीना सो रही है। आखिर वह वहीं घर के बाहर एक पत्थर पर बैठ गया। काफी देर के बाद जब हसीना ने यह देखने के लिए दरवाज़ा खोला कि वह चला गया है या नहीं—तो वह दरवाजे के बाहर बैठा हुआ बीड़ी फूंक रहा था। हसीना ने उसे देखते ही कपाट बन्द कर लिये। गुलाम मुहम्मद ने समझा कि हसीना ने शायद उसे देखा नहीं।

'हसीना-हसीना।' वह चिल्लाया और दरवाज़ा खटखटाने लगा।

हसीना ने ज़रा-सा दरवाज़ा खोला और बोली, 'गुलाम भाई मेरे सर मे बहुत तेज़ दर्द हो रहा है, मैं सोऊँगी।'

गुलाम मुहम्मद ने दरवाजे के दोनों कपाट पकड़ लिए और बोला, 'आपका खादम आपका सर दाब देगा। दवाई ला देगा।' और वह कपाट खोल कर अन्दर चला आया। हसीना अन्दर जाकर खाट पर लेट गयी। गुलाम मुहम्मद बजाय कुर्सी पर बैठने के वहीं पायताने ही बैठ गया और हसीना का सर दबाने लगा। हसीना हड़बड़ा कर उठ बैठी, 'गुलाम भाई, यह ठीक नहीं है। आप जाइये। मुझे तन्हा छोड़ दे।'

गुलाम मुहम्मद ने हसीना के गाल पर हल्का सा तमाचा लगाया और बोला, 'मैं तन्हाई से ऊबकर ही तो तुम्हारे पास आता हूँ। घबराओ नहीं लतीफ छह से पहले नहीं लौटेगा।'

हसीना खाट से उतर कर खड़ी हो गयी। और बाहर उसी पत्थर पर जाकर बैठ गयी जहाँ कुछ देर पहले गुलाम मुहम्मद बैठा था। गुलाम मुहम्मद शायद आज भी पी कर आया था। वह वहीं हसीना के बिस्तर पर सो गया। हसीना ने थोड़ी देर तक कोई आवाज़ न सुनी तो अन्दर झाँक कर देखा। वह सो रहा था और हल्के-हल्के खर्राटे भी ले रहा था। वह अन्दर तक काँप

गयी। कल लतीफ ने उसे समझाया था और आज ही उससे गलती हो गयी।

मगर उसे ज्यादा देर तक घबराहट की स्थिति में न रहना पड़ा। उस दिन लतीफ छुट्टी लेकर जल्दी घर चला आया था। दरअसल उस दिन लतीफ और गुलाम एक ही शिफ्ट में थे और गुलाम को काम पर न पाकर लतीफ के मन मे अनायास यह विचार आया कि हो न हो वह हसीना को परेशान कर रहा होगा।

हसीना को पत्थर पर यों पत्थर की तरह बैठे देख लतीफ को समझते देर न लगी कि जरूर गुलाम ने कोई नाटक किया है।

'क्या गुलाम अन्दर है ?' लतीफ ने पूछा।

हसीना ने सारी बात विस्तार से बतलायी। लतीफ चिन्ता में पड़ गया। उसने सोचा, उसे फौरन मकान बदल लेना चाहिए। वरना यह शख्स जिन्दगी हराम कर देगा।

गुलाम मुहम्मद की दोस्ती से आजिज आकर लतीफ़ ने अपने फोरमैन की मदद से मिल के नजदीक ही एक मकान ठीककर लिया। लतीफ़ को मालूम था कि गुलाम मुहम्मद और फोरमैन मे एक मिनट नही पटती। दूसरे फोरमैन शादी-शुदा आदमी था और उसके तीन बच्चे थे। उसकी बीवी बहुत मिलनसार औरत थी। लतीफ़ के काम से वह यों भी बहुत खुश रहता था। बल्कि यह कहना भी गलत न होगा, जो काम फोरमैन नही समझ पाता, लतीफ फौरन उसका कोई न कोई हल निकाल लेता।

मकान के लिए लतीफ़ को दो सौ रुपये पगड़ी के रूप में देने पड़े मगर मकान पाकर बहुत खुश हुआ। छोटा सा दो कमरे का मकान था। अलग-थलग। नल घर के भीतर था, पाखाना भी, बिजली भी। हसीना दिन भर गुनगुनाती हुई घर में घूमती। इतनी सुविधाएँ और आराम का भोजन पाकर वह वैसे भी मुटाने लगी थी। लतीफ़ खुद उसे आश्चर्य से देखता। नाक मे चाँदी का कील रोशनी में उसके गालों पर चकता बना देता। लतीफ़ मुग्ध ही देखता रहता। उसे लगता, उसने घूरे पर से एक हीरा उठा लिया है।

लतीफ़ चार सौ सत्तह रूपये लाता था और ओवर टाइम में जो कुछ भी मिलता, हसीना के लिए कुछ न कुछ बनवा देता। हसीना के पास कई जोड़े कपड़े हो गये थे। पाँव के लिए जूता कभी नसीब न हुआ था, अब दो-दो थे। बुर्का था। बिस्तर था। इन सुविधाओं के बीच उसे अम्माँ की बहुत याद आती। वह चाहती एक बार उसकी अम्माँ उसका मुख देख भर ले।

एक दिन लतीफ़ दफ्तर से लौटा तो हसीना चावल बीन रही थी।

"आज तुम्हारे लिए बिरियानी बनाऊँगी। अच्छा हुआ तुम आ गये। जाओ भागकर गोश्त ले आओ।"

"मैं बहुत बुरी खबर लाया हूँ, हसीना।" लतीफ बोला, "तुम्हारी अम्माँ का इन्तकाल हो गया।"

हसीना के हाथों से चावलों का थाल गिर गया और वह वहीं फर्श पर छटपटाने लगी। लतीफ़ को अपनी बेवकूफी पर बहुत अफ़सोस हुआ। उसने बहुत फूहड़ तरीके से खबर दी थी। वह हसीना के मुँह पर पानी के छींटे देने लगा। हसीना की तबीयत पहले ही नासाज थी। लतीफ़ ने पड़ोसी को आवाज दी और उसकी सहायता से हसीना को उठाकर बिस्तर पर लिटा दिया। उसके दाँत जुड़ गये थे और बदन अकड़ रहा था।

"हसीना! हसीना!! मेरी तरफ देखो।" लतीफ़ बोला, "हसीना।"

हसीना ने कुछ देर बाद अपनी निष्प्राण सी आँखें खोलीं। अम्माँ का खयाल आते ही वह रो-रो कर बेहाल हो गयी।

"मैं अभी जाऊँगी, मेरी अम्माँ कहाँ गयी?"

"अम्माँ अल्लाह को प्यारी हो गयी।" लतीफ़ बोला, 'तुम हौसला रखो।'

हसीना उसी तरह रोती-छटपटाती रही।

'इस समय हमारा घर लौटना मुनासिब न होगा।' लतीफ़ जैसे अपने आप से बात कर रहा था। फिर खुद ही बोला, 'कोई जान से तो मार नहीं डालेगा। तुम से निकाह किया है, तुम्हें भगाकर नहीं लाया।'

हसीना कुछ न बोली। वह दीवार की तरफ मुँह कर रोने लगी। उसके दिल में एक टीस-सी उठ रही थी। उसे इस वक्त कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। उसकी इच्छा थी, किसी तरह उड़ कर अम्माँ के पास पहुँच जाये। मगर अम्माँ अब कहाँ थी?

'अम्माँ का इन्तक़ाल हुए चार-पाँच दिन हो चुके हैं।' लतीफ़ ने बताया, 'आज पड़ोस का एक आदमी मिला था उसी ने बताया।'

लतीफ़ को मालूम था, साहिल भी गायब है, मगर इस वक्त वह एक और बुरी खबर नहीं देना चाहता था।

लतीफ़ हसीना के दर्द को समझ रहा था। इस मनःस्थिति में हसीना बीमार हो जायगी। आखिर उसने निर्णय लिया कि कुछ दिनों के लिए हसीना के साथ घर लौट चलना ही उचित होगा। हसीना जड़ हो रही थी, लतीफ़ ने घर चलने के लिए कहा तो वह उठ कर तैयारी करने लगी। वह जानती थी कि घर लौटना लतीफ़ के लिए ठीक न होगा, मगर कोई उपाय भी नहीं

था। वह कम से कम अम्माँ की कब्र पर फातिहा तो पढ़ सकती थी।

इकबालगंज लौट कर लतीफ़ और हसीना दोनों बहुत घबराहट महसूस कर रहे थे। वे लोग रिक्शा में बैठ कर चौक की तरफ चले तो दिल बैठने लगा। दोनों का बचपन इन्हीं गलियों में बीता था। गलियाँ वैसी ही थीं, जैसी वे छोड़ कर गये थे। नालियाँ उतनी ही गन्दी। जगह-जगह मैला उसी तरह बहाया जा रहा था। सड़कें जहाँ से टूटी थीं, वैसी ही पड़ी थीं। उसी तरह जगह-जगह बीड़ी के पत्तों के ढेर लगे थे।

हसीना घर में कदम रखते ही दहाड़ मारकर रोने लगी। पूरा घर उजड़ गया था। कमरों के कपाट खुले थे। कुत्ते बिल्लियाँ और चमगादड़ हसीना की आहट पा कर सक्रिय हो गये।

चारों तरफ मलबा। धूल। मिट्टी। जाले। घर में कोई सामान न था। दीवारें भी जैसे आँसू बहाकर मूक और जड़ हो गयी थीं। अम्माँ का कोई कपड़ा, घर का कोई बर्तन, यहाँ तक कि साहिल का कोई सामान नहीं था।

हसीना की चीत्कार सुन कर पास-पड़ोस की औरतें चली आईं और उसे धीरज बँधाने लगीं। हसीना की सहेलियाँ उसे कौतुक से देख रही थीं। वह इस घर की लड़की तो लगती ही न थी। उसको रोते देख कर तमाम लोग उसे ढाढस बँधाने लगे। अम्माँ की कोई तस्वीर भी नहीं थी, जिसे देखकर वह सब्र कर लेती। वह रो-रो कर बेहाल हो रही थी कि अज़ीज़न ने उसे अपने यहाँ बुलवा भेजा। हसीना मुहल्ले की पहली लड़की थी, जिसने इस माहौल से विद्रोह करके अपने लिए घने जंगलों के बीच एक रास्ता बनाया था। दूसरी लड़की गुल होगी।

अज़ीज़न ने हसीना को देखा तो अपने पल्लू से उसके आँसू पोंछे। हसीना को देखकर वह सचमुच बहुत खुश हुई। हसीना यकायक लड़की से औरत हो गयी थी। एक खूबसूरत गृहिणी। हाथ में पर्स था।

'आपको साहिल की कोई खबर है ?' हसीना ने अज़ीज़न से पूछा।

जब साहिल यहीं था तब भी अज़ीज़न को साहिल की कोई खबर नहीं रहती थी।

'रोज़गार के चक्कर में कहीं भटक रहा होगा।' अज़ीज़न बोली, 'मुहल्ले के लोगों ने उसे बहुत परेशान किया। सुनते हैं ज़ैदी साहब ने उसका जीना दूभर कर रखा था।'

हसीना को थोड़ा धीरज हुआ। उसे यही भय था कि निराशा में कहीं

वह खुदकशी न कर बैठा हो।

'चमेली एक नेक दिल औरत थी। मगर खुदा को यही मंजूर था।'

तभी अन्दर से गुल निकल आयी। हसीना को देखकर वह चमत्कृत रह गयी। हसीना एक रोआब दाब वाली सम्भ्रान्त महिला लग रही थी। गुल ने उसे बाँहों में ले लिया और उसके पास ही कुर्सी के हत्थे पर बैठ गयी।

'तुम तो बहुत खूबसूरत लग रही हो।' गुल बोली, 'चमेली बी तो एकाएक चल बसी। आज होतीं तो तुम्हें देखकर कितना-कितना खुश होतीं।'

गुल की बात से हसीना की आँखें भर आयीं।

'बेटे, जब तक तुम चाहो, यहीं हमारे पास रहो।' अजीजन बोली, 'अगर ससुराल जाना चाहो तो मैं न रोकूँगी।'

'यह तो वही बतायेंगे।' हसीना बोली, 'वे अब्बाजान से बहुत डरते हैं, फिलहाल उन्हीं से मिलने गये हैं।'

हसीना ने आँखें उठाकर गुल की तरफ देखा और आँखों में ही बता दिया कि उसका शौहर बेहद अच्छा है और उसे बहुत चाहता है।

हसीना के मैके लौटने की खबर से उसकी हमउमर सहेलियों में उत्साह की लहर दौड़ गयी। वे घर में जिस भेस में बैठी थीं, वैसे ही अजीजन के घर की ओर भागीं, मगर नफ़ीस ने सब को भगा दिया। अगले रोज किसी तरह नफ़ीस की चिरौरी करके वे प्रवेश पा सकीं।

हसीना पहचान में नहीं आ रही थी। वह एकदम कोरे कपड़ों में थी। कानों में चाँदी के बड़े-बड़े बुन्दे लटक रहे थे। दुपट्टे पर गोटा लगा हुआ था। नाखून पर पालिश था। बाँहों में चाँदी की चूड़ियाँ थीं। वह एक प्यारी दुल्हन का नक्शा पेश कर रही थी।

हसीना की सहेलियाँ उसे देखकर स्तम्भित रह गयीं। तमाम सहेलियाँ उसी लिबास में थीं, यानी मैले-कुचैले कुर्ते-पाजामे में। नंगे पाँव। नंगे सिर। एक चिर-परिचित महक हसीना की नाक में बस गयी। पसीने, बीड़ी के पत्तों, तम्बाकू, मैले कपड़ों की मिली-जुली गन्ध जबकि हसीना के कपड़े इत्र से महक रहे थे। गुलाम मुहम्मद ने उसे कहीं से बम्बई का इत्र लाकर दिया था। हसीना ने जानबूझ कर आज तक इस्तेमाल नहीं किया था। हसीना को अपनी सहेलियों पर बहुत रहम आया। इनका क्या होगा? भूख, गरीबी और निराशा ने बहुत-सी लड़कियों को बुरे धन्धे में भी प्रेरित कर रखा था।

'हाय तू कितनी प्यारी लग रही है।' अख़्तरी ने कहा।

'खुदा करे तुम मुझसे भी सुन्दर निकलो।' हसीना बोली 'मैं तुम लोगों को रोज कई-कई बार याद करती थी। कभी नहीं सोचा था, दोबारा इन्हें

को न देख पाऊँगी ।' वह फिर रोने लगी ।

तभी हसीना की खोज में लतीफ़ चला आया। वह चाह कर भी घर जाने की हिम्मत न कर पाया था । रात उसने अपने एक मित्र फूलचन्द के यहाँ बिताई थी । लतीफ़ को अपने बीच पाकर तमाम लड़कियों की गर्दनें झुक गयी, वे सहम-सी गयी । लतीफ़ को लगा, ये लड़कियाँ कितनी तहज़ीबयाफ़्ता हैं। वह दूसरी घरेलू लडकियो को भी जानता था कि वे कितनी फोहश हो सकती हैं।

'कितना अच्छा होता हमारे समाज में कई लतीफ़ होते और हम सब को उड़ा ले जाते और घर बसा लेते ।' अज़रा धीरे से बुदबुदायी ।

लतीफ़ बोला, 'मैं दावे के साथ कह सकता हूँ तुम लोग कितना सुर्खो घर आबाद कर सकती हो ।'

तमाम लड़कियो के चेहरे पर सुर्खी दौड़ गयी । कुछ खाँसने लगी ।

'लतीफ़ भाई शादी मुबारक हो ।' अज़रा ने कहा ।

'शुक्रिया ।' लतीफ़ बोला, 'किसी को मालूम है कि मेरे अब्बाजान और भाई-बहन कैसे हैं ?'

'बख़ैरियत है ।' अज़रा ही बोल रही थी, 'आपके छोटे भाई की भी शादी हो चुकी है और आपके अब्बाजान, सुना है, इधर दमे के शिकार हो गये हैं ।'

'मैं उन्हें देखने जाऊँगा तो क्या वे मुझे धक्का देकर घर से निकाल देंगे ?'

'ख़ुदा जाने ।'

लतीफ़ संजीदा हो गया । उसे अपने अब्बाजान की बहुत याद आयी । वह कुछ देर तो टालता रहा, आखिर उससे जब्त न हुआ, वह हसीना को बताकर घर की तरफ़ रवाना हो गया ।

लतीफ़ के जाते ही नजमी बोली, 'लतीफ़ बहुत खूबसूरत नौजवान है अच्छा यह बताओ बिस्तर में कैसा है ?'

हसीना को इस सवाल की अपेक्षा न थी । वह कैसे बताए कि उसका मन कितना उदास है । वह सिर्फ़ अम्मा की याद में पडी रहना चाहती थी । अज़रा और मुन्ना को भी नजमी की हरकत पसन्द न आई । हसीना शिकस्त न खाना चाहती थी, बोली, 'खुदा का क़रम है । दिन भर मेरा एक-एक अंग टूटता रहता है ।'

लडकियों के चेहरे सुर्ख हो गये । नजमा ने शरारत से पूछा, 'हसीना, तेरे पाँव तो भारी नही हुए ?'

'देखो, नजमा, मैंने बताया तो तुम बहुत बिगड़ जाओगी ।' हसीना ने बड़े प्यार से उसका गाल सहला दिया, 'मेरे बस मे होता तो मैं आज ही तेरी शादी रचा देती ।'

'शादी तुम जरूर रचा देना !' नजमी ने कहा, 'बस एक आखिरी सवाल का जवाब दे दो। तुम्हारी मुलाकात कितने दिन के बाद होती है। अगर रोज, तो क्या दिन में एक ही बार ?'

हसीना हैरत मे पड़ गयी। माहौल ने इन,लड़कियों को कितना बर्बाद कर रखा है। शरीर से परे ये कुछ सोचती ही नहीं। वह नजमी को डाँट देती, मगर इन भूखी-प्यासी, बीमार लड़कियों के सामने वह अपने को एक खुशनसीब खातून की तरह भी पेश करना नही चाहती थी। उसने बहुत ही प्यार से कहा, 'रोज-रोज की मुलाक़ात भी तो बलायेजान होती है नजमी।'

लड़कियाँ हसीना की किस्मत से रश्क कर रही थी। नजमी ने कहा, 'हसीना हम लोग तो उस दिन सकते में आ गयी, जिस दिन तुम्हारे निकाह की खबर उड़ी। यह जो क़िस्मत नाम की चीज़ होती है, उस पर मैंने उसी दिन भरोसा किया था।'

'मैंने भी।' हसीना बोली, 'उसने कुछ इस तरह मे चीजें मेरे सामने रखी कि मैं अम्मा को भूल गयी, साहिल को भूल गयी। इस वक्त बदनसीब साहिल जाने कहाँ भटक रहा होगा।'

'लोगों ने उसे मसऊद के साथ देखा है,' नजमी ने बताया, 'और अगर वह मसऊद के साथ है तो खैरियत से होगा। पुलिस के तमाम अफ़सरान उसके दोस्त है।'

'पुलिस के ?' हसीना बेतरह डर गयी।

'हाँ,' नजमी ने बताया, 'घबराओ नही। पुलिस लोग मसऊद से भी वेतन पाते हैं। जैदी साहब ने उसके साथ बदतमीजी न की होती तो अजरा उसी से निकाह करती। क्यों अजरा ?'

'वह लौट आया तो उसी से निकाह करूँगी।' अजरा ने कहा, 'मुझे वह बेहद पसन्द है। खास कर उसके गाल का गड्ढा !'

'उसने कभी तुमसे बात की है ?'

'वह इतना शर्मसार है कि बात ही नही करता।' अजरा ने कहा, 'मगर अल्लाह ने चाहा तो वह जरूर लौटेगा।'

अजीजन दूसरे कमरे से लड़कियों की बातचीत सुनकर गुस्से से तमतमा रही थी। दरअसल तमाम लड़कियाँ किसी तरह हिम्मत जुटा कर अजीजन के यहाँ चली आई थी। गुल को अपने कमरे में देख अजीजन ने राहत की साँस ली और नफ़ीस को इशारे से ही बता दिया कि छोकरियों को भगा दे।

लतीफ सकुचाते हुए अपने घर पहुँचा तो दिया बत्ती का समय हो चुका था। वह लोगों से आँख बचाता हुआ सीधा अपने घर मे घुसा। घर के बाहर एक खटिया पड़ी थी, हुक्का भी रखा था। इसका अर्थ था, उसके अब्बा कहीं आस-पास ही हैं।

घर में घुसते ही उसकी नजर अपनी बहन पर पड़ी। वह एक कोने में नमाज पढ़ रही थी। उसके पास ही उसके छोटे भाई बहन नंगे बदन एक दूसरे के पीछे भाग रहे थे। एक भाई को पोलियो हो गया था। वह कूल्हे सरकाता हुआ लतीफ़ के पीछे हो लिया। अम्मा अन्दर थी, कोठरी में। लतीफ को यह समझते देर न लगी कि अम्मा के पैर फिर भारी है।

यह लतीफ की तीसरी माँ थी। उसकी अम्मा का बहुत पहले, जब वह एक बरस का था, तपेदिक से देहान्त हो गया था। जल्दी ही दूसरी अम्मा घर में आ गयी। उस औरत ने आते ही लतीफ़ और दोनों भाइयों का घर में रहना मुहाल कर दिया था। अब्बाजान बड़ी बेशर्मी से हर वक्त जनानखाने में घुसे रहते। वह औरत प्रथम प्रसव में चल बसी। तीसरी अम्मा अब तक सात बच्चे पैदा कर चुकी थी। लतीफ़ को लगता जैसे वह बच्चे पैदा करने ही आयी है। लतीफ ने उसे बहुत कम चलते फिरते देखा था। जुमेरात को वह मजार तक जरूर जाती शायद और बच्चों के लिए दुआ माँगने।

लतीफ सीधा कोठरी मे घुस गया।

'तवायफ़ की बेटी के साथ खुश हो?' अम्मा ने लतीफ़ से पहला सवाल किया।

'बेहद खुश हूँ।' लतीफ बोला, 'आपकी तबीयत तो ठीक है?'

'तुमने अपने अब्बा को खूब धोखा दिया। कमाने लायक होते ही अब्बाजान को धता बता दी। देख रहे हो न कि तुम्हारे भाई-बहन किस हालत में हैं। किसी के पास न कपड़ा है, न लत्ता।'

'बच्चों के लिए मैं कपड़े-लत्ते लाया हूँ।' लतीफ़ ने हाथ का पैकेट अम्मा के बिस्तर पर रख दिया और अम्मा के बिस्तर पर लेटे एक बरस के मरियल से बच्चे को गोद में उठा लिया। पूरा कमरा पेशाब से महक रहा था, बच्चा पेशाब से सराबोर था। लतीफ की नाक में पेशाब की तीखी गन्ध घुसती चली गयी। लतीफ़ को मालूम है कि बिस्तर के कपड़े बरसों नहीं धोये जाते। बदबू नाकाबिले बर्दाश्त होने लगती है तो कभी-कभी धूप में फैला दिये जाते हैं। इनमें जैसे एक नहीं अनेक पीढ़ियों का मूत महकता था।

'बड़ा प्यारा बच्चा है, क्या नाम रखा है इसका?'

'अजहर!' अम्मा जल्दी-जल्दी कपड़ों को उलट-पुलट रही थी। अम्मा की एक ही आवाज से बच्चों की सारी पलटन अन्दर घुस आयी। तमाम

बच्चों ने अपने-अपने साइज़ के कपड़े पहन लिये। लतीफ चुपचाप एक कोने में खड़ा यह सब देख रहा था। मैले-कुचैले बच्चे, नये-नये कपड़े पहन कर मटकने लगे। उसकी छोटी बहनें भी ख़ुशी से फूली न समा रही थीं और अपने भाइयों के साथ-साथ मटकने लगी—

साला, मैं तो साहब बन गया।

इतने में दो बच्चे बदहवास से पतंग थामे हुए कोठरी में दाखिल हुए।

'हमारा कपड़ा कहाँ है ?'

'तुम लोगों के लिए मैं इससे बेहतर कपड़े लाऊँगा।' लतीफ़ बोला।

मगर इस बीच बच्चों में छीना-झपटी शुरू हो गयी थी। असगर की कमीज तार-तार हो गयी। वह चिल्लाते हुए जमीन पर सर पटकने लगा। ताहिरा के कुर्ते का बटन टूट गया और उसने आसमान सर पर उठा लिया। लतीफ़ को यह सब बेहद बुरा लगा। उसने बच्चों को एक-एक रुपया देकर बहकाना चाहा मगर नाकामयाब रहा।

तभी बाहर से अब्बाजान की आवाज़ सुनायी दी, 'यह सब क्या हो रहा है ?'

'आपके साहबज़ादे तशरीफ़ लाये हैं।' अम्माँ ने खटिया से उठते हुए कहा।

लतीफ़ के अब्बा कमर पर दोनों हाथ रख कर भिड़न्त की मुद्रा में लतीफ़ के सामने आकर खड़े हो गये।

'आपको शर्म नहीं आयी इस घर में कदम रखते हुए।' अब्बा ने पूछा। चाहते हुए भी वह 'तुम' का इस्तेमाल नहीं कर पा रहे थे।

'आपसे मिलने की ख्वाहिश खींच लायी।' लतीफ़ ने मुख़्तसिर जवाब दिया।

आस-पास बच्चों को नये-नये कपड़े पहने देख कर उनका पारा तेज़ रफ़्तार से नीचे की तरफ गिर रहा था। लतीफ़ ने कहा, 'अम्माँ के लिए मैंने बहुत प्यारा बुर्का बनवाया है। चलने तक तैयार न हो पाया, मुझे बहुत अफ़सोस है। आपके लिए हुक्का लाया हूँ और यह लुंगी।'

बुर्के की बात सुन कर और हुक्का पाकर अम्मी और अब्बाजान दोनों लतीफ़ के प्रति विनम्र हो गये। अम्मा ने कहा, 'बुर्का लट्ठे का है ?'

'नहीं, टेरीकाट का।' लतीफ़ बोला, 'मुहल्ले में और किसी औरत के पास न होगा।'

अब्बा जान ने उसे बाज़ू से पकड़ा और अपने साथ मर्दाने में ले गये। एक तख़्त पर उसे बैठा दिया और बोले, 'देखो बेटे, मैं तुम्हें रेलवे में भर्ती करा ही देता मगर मुझे लगता है कि तुम आज़ाद ख़याल के आदमी हो। तुम्हें मजबूर करना भी मुझे ठीक न लगा। मगर तुमने एक तवायफ़ की बेटी से निकाह करके पूरे ख़ानदान की इज़्ज़त धूल में मिला दी।' अब्बा जान की आँखें डबडबा

आयी, 'जैदी साहब अपनी बिटिया से रिश्ता तय करना चाहते थे। तुमने तो मुमताज को देखा होगा। अब एक इंजीनियर के साथ उसका रिश्ता तय हुआ है और जैदी साहब ने अटाला वाला तिमंजिला मकान उसके नाम कर दिया है। मेरी उम्मीदों का चिराग तुम्ही थे और तुमने मुझे ऐसा तगड़ा सबक दिया कि मैं जिन्दगी भर याद रखूंगा। दूसरे लडके कमाने लायक होगे, मैं न रहूँगा।'

अब्बाजान जज्बाती हो रहे थे। लतीफ़ के लिए तय करना मुश्किल हो गया कि क्या यह वही शख्स है जो अभी थोडी देर पहले कमर पर हाथ रख कर आक्रामक मुद्रा मे खडा था। लतीफ़ ने कहा, 'अब्बा जान, हसीना भी मेरे साथ घर आना चाहती थी, मेरा ही हौसला नही पड़ा उसे लाने का।'

अब्बा जान हसीना की बात भी नहीं करना चाहते थे। पूछा, 'कब तक के लिए आये हो?'

'रात की गाड़ी से वापिस जाऊँगा।' लतीफ बोला, 'आप लोग कभी कानपुर आइए। मैं सोचता हूँ, हैदर को अपने साथ ले जाऊँ। घर के पास ही एक मदरसा है, दाखिल करवा दूंगा।'

अब्बाजान ने कोई जवाब नही दिया। कुछ देर अपनी खिचड़ी दाढ़ी खुजाते रहे, फिर बोले, 'मैं इस पर गौर करूँगा।'

लतीफ़ को उम्मीद नही थी, उसे घर में इतनी देर लग जायेगी। उसका ख्याल था अब्बाजान उसे देखते ही भड़क जायेंगे और उसे दुत्कार देंगे। वह इसके लिए तैयार होकर आया था। लतीफ़ की जेब मे सौ-सौ के दो नोट थे। उसने एक नोट अब्बाजान की नजर किया, 'बच्चो को मिठाई वगैरह खिला देंगे। खुदा हाफ़िज!'

'खुदा हाफ़िज!' अब्बा जान ने नोट पकड़ कर तहमद में खोंस लिया और दरवाजे तक उसके साथ आये।

अब्बास साहब लतीफ़ को विदा करके सीधे जनानखाने मे घुस गये 'मेरा लड़का बुरा नही है मगर न जाने कैसे तवायफ़ के चक्कर में पड़ कर बर्बाद हो गया। देखो, जाते-जाते सौ रुपये और थमा गया।'

अम्मां जो बार-बार म्यान से तलवार निकाल रही थी, म्यान समेटते हुए बोलीं, 'उस तवायफ ने इसका दिमाग खराब न किया होता तो आज हमारे लिए कितना बड़ा सहारा होता।'

'अजहर की अम्मां तुम घबराओ नही, उसे रास्ते पर लाना हमारा फ़र्ज है।'

लतीफ़ और हसीना लौटे तो दोनों उदास थे। हसीना को रह-रह कर

अम्माँ का और साहिल का ध्यान आता। वह मुहल्ले में हर किसी से कह आयी थी कि साहिल के लौटते ही उसे खबर देना न भूलें! उसे लग रहा था कि उसका पूरा घर जैसे लुट गया है। खण्डहर की शक्ल में मकान रह गया था, जिसमें घुसते ही डर लगता था।

एक दिन दोपहर में हसीना लेटी हुई थी कि अचानक गुलाम मुहम्मद आ टपका। उसे भी हसीना की माँ के इन्तकाल की खबर लगी थी। हसीना चुपचाप बैठी रही।

'आपकी अम्माँ के इन्तक़ाल की खबर से मुझे गहरा सदमा पहुँचा है!' गुलाम मुहम्मद बोला।

हसीना को गुलाम मुहम्मद की उपस्थिति बहुत नागवार गुज़री। और कुछ न सूझा तो रोने लगी।

'रोने से अब वह वापस तो आयेंगी नहीं। क्यों रो-रो कर अपने को बेहाल कर रही हो।' गुलाम मुहम्मद ने हमदर्दी दिखायी।

हसीना ने उसकी तरफ़ ताका भी नहीं।

'सुनते हैं तुम्हारी अम्माँ अपने वक्त की बहुत मशहूर तवायफ़ थीं।' गुलाम मुहम्मद ने कहा।

हसीना को अम्माँ के लिए यह सब सुनना बहुत अटपटा लग रहा था।

'गुलाम भाई आप तब आया करें जब लतीफ़ घर पर हो।' उसने किसी प्रकार अपने मन की बात कह दी।

'तुम मुझे सरासर ज़लील कर रही हो।' गुलाम मुहम्मद ने कहा।

'आप मुझे इसी तरह परेशान करेंगे तो हम लोग दुबारा मकान बदल लेंगे।'

'तुम कितने भी मकान बदल लो, कितने भी शहर बदल लो, मैं तुम्हारा साथ न छोड़ूँगा। मैं तुम्हारे इश्क में बर्बाद हो चुका हूँ। मैं तुम्हारे बगैर जिन्दा न रहूँगा।'

'आप अफ़सोस ज़ाहिर करने आये थे। उसके लिए शुक्रिया।'

'क्या ग़ज़ब की बेरुखी है!' गुलाम बोला, 'इस बेरुखी पर ही मर मिटूँगा।' गुलाम मुहम्मद के मुँह से कच्ची शराब की गंध आ रही थी। हसीना से यह गन्ध बर्दाश्त न हुई तो वह वहीं कमरे में कै करने लगी। हसीना की हालत देख कर गुलाम मुहम्मद का मज़ा किरकिरा हो गया। वह जिस तरह झूमता हुआ दाखिल हुआ था, उसी प्रकार झूमता हुआ बाहर निकल गया। हसीना रोने लगी। उससे गुलाम मुहम्मद की यह क्रूरता भी बरदाश्त न हो रही थी कि वह कैसे उसे यों कै करते हुए उसी के भरोसे छोड़ कर चला गया।

शाम को लतीफ़ लौटा तो उसने गुलाम मुहम्मद के बारे में बताया।

लतीफ़ कारखाने से ही खिन्न लौटा था। गुलाम मोहम्मद ने तमाम साथियों में इस बीच प्रचारित कर दिया था कि लतीफ़ ने एक तवायफ़ से निकाह कर लिया है। यह खबर फ़ोरमैन तक भी पहुँच चुकी थी। फ़ोरमैन की लड़की जवान हो रही थी, उसने सोचा कि बगल में एक तवायफ़ को मकान दिला कर उसने शायद अच्छा काम नहीं किया। उसने लतीफ़ से बात की तो लतीफ़ ने बताया कि उसे इन तमाम झूठी बेबुनियाद और दकियानूसी बातों पर नही जाना चाहिए।

लतीफ़ ने अभी लौट कर कपड़े भी तब्दील न किये थे कि उसके पीछे पीछे उसके साथ काम करने वाले उसके तीन चार साथी चले आये। हसीना ने जल्दी से सब के लिए चाय बनायी। वे लोग कारखाने की यूनियन की बातें करते रहे। किसी ने हसीना के बारे मे कोई जिज्ञासा प्रकट न की।

मगर ज्यों ही लतीफ़ उन्हें विदा करके लौटा, उसे अपनी पीठ पीछे एक ठहाका सुनायी दिया। उसे हल्की-सी शंका हुई कि वे लोग कहीं उसके बारे में कोई बात न कर रहे हों। वह दूसरी सड़क से घूम कर उन लोगो के पीछे हो लिया।

'तवायफ है तो क्या हुआ, माल बहुत जोरदार है।' किसी ने कहा।

'तवायफ़ तवायफ़ ही रहेगी। अभी देखना चकला चालू हो जायेगा। मिल वालो को बहुत तकलीफ़ थी, शायद इसीलिए मिल के नजदीक मकान ले लिया।'

'मुझे तो लतीफ़ भी शक्ल से दल्ला नजर आता है।'

'अरे बकवास बन्द करो।' किसी ने कहा, 'आओ आज हसीना के नाम के ही दो घूंट ले लें।'

वे तमाम लोग लतीफ़ के साथ के लोग थे। उसे उम्मीद नही थी, ये इतने गिरे हुए लोग है। वह वहीं से वापिस हो गया और लौट कर एक कटे पेड़ की तरह बिस्तर पर गिर पड़ा। उसे लगा जैसे पूरी दुनिया उसका मजाक उड़ाने पर तुल गयी है। उसने घर लौट कर खाना भी न खाया और यों ही रात भर करवटें बदलता रहा। हसीना की अपनी तबीयत नासाज थी। दोनों उसी तरह भूखे पेट सो गये।

दूसरे दिन लतीफ़ कारखाने नहीं गया। वह इस बीमार माहौल से बागी हो जाना चाहता था। इतने गिरे हुए लोगों के बीच साँस लेना भी उसे दुश्वार लग रहा था।

'मैं सोचता हूँ, नौकरी छोड़ दूँ।' उसने हसीना से कहा।

'नौकरी छोड़ दोगे तो गुजर कैसे होगा?'

लतीफ़ अपने हाथों की तरफ़ देखने लगा, बोला, 'देखो, हसीना, इन हाथों में बहुत ताकत है। ये हाथ लोहे में जान डाल देते हैं। ये हाथ कोई भी हुनर दिखा सकते है। मगर मैं कमीनों के बीच ज़िन्दा नही रह सकता। मुझे अपने हाथों के हुनर पर पूरा भरोसा है। यहाँ तो मुझे अपने चारों तरफ़ खूँखार भेड़िये दिखायी दे रहे हैं। ये लोग तुम्हें नोच खाना चाहते है। तुम्हारे लिए इनके दिल में इज्जत है न लिहाज है, न हमदर्दी।

हसीना यह सब सुन कर चकित रह गयी, 'मैंने तो ऐसा कुछ नहीं किया कि तुम मुझसे इस तरह की बातें करो।'

'मैं नाराज़ नहीं। जाने आज लोग तुम्हारे बारे में क्या-क्या बातें कर रहे थे।'

हसीना को अचानक बहुत असुरक्षा महसूस हुई। लोग क्यो उसके पीछे पड़ गये है।

'मगर सोचता हूँ, मैंने भागना शुरू किया तो ज़िन्दगी भर भागता ही रहूँगा।' कुछ सोचते हुए लतीफ़ बोला, 'मैं यहीं रहूँगा और इन बदमाशों का डट कर मुकाबला करूँगा। देखता हूँ कौन माई का लाल मेरा बाल बाँका करता है।' वह दिन भर इसी दिशा में सोचता रहा।

शाम को उसके दोस्त फिर चले आये।

'क्यों भाई आज काम पर क्यो नहीं आये?'

लतीफ़ कुछ कहता इससे पहले ही किसी ने कहा, 'इतनी खूबसूरत बीवी को छोड़ कर लतीफ भाई गुस्ल तक कैसे जाते हैं, हमारी समझ में नही आता।'

लतीफ़ ने इतने लोगों के बीच उत्तेजित होना ठीक न समझा। वह उसके साथ-साथ हँसने लगा, बोला, 'बीवियाँ दो तरह की होती है। एक वे जो घर से जाने नही देती और दूसरी वे जो घर में घुसने नही देती।'

सब लोगों ने ज़ोरदार ठहाका लगाया। असलम बोला, 'भई क्या खूब बात की है। हमारी बेगम तो सचमुच दूसरी तरह की है। अव्वल तो उसे देख कर घर में घुसने की तबीयत ही नही होती और खुदा न खास्ता घुस ही जाते हैं तो पाजामा छूने ही हामिला हो जाती है।'

सब बेशर्मी से ठहाके लगाने लगे। इत्तिफाक था, हसीना आस-पास नही थी। लतीफ नही चाहता था कि ये लोग उसकी उपस्थिति में फ़ोहश बातें करें। उसने किसी तरह उन लोगों को बाहर ढाबे पर चाय पीने के लिए राज़ी किया और उनके साथ ही बाहर निकल गया। उसकी समझ में नही आ रहा था कि वह इन हालात का कैसे मुकाबला करे।

हसीना का ससुराल था न मैका, वह उसे कहाँ छिपा ले? वह खामोश ग़मगीन उन लोगों के साथ चाय पीता रहा। उसे लग रहा था, हसीना से निकाह

करके उसने अपने ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेदारी ले ली है। वह अपनी जिम्मेदारी को अन्त तक निबाहेगा। हसीना से उसे बेपनाह मुहब्बत थी। उसके बगैर जिन्दगी का कोई भी मकसद उसे दिखायी नहीं दे रहा था।

दूसरे दिन उसने अपने अब्बा को पत्र लिखा कि वह अपने भाई हैदर को अपने साथ रखके पढ़ाना चाहता है। इससे वह कम अज़ कम एक जिम्मेदारी से तो मुक्त हो सकेगा और उसे भी अपना फ़र्ज़ सरअंजाम देने की तस्कीन मिलेगी।

हैदर लतीफ़ से सात-आठ बरस छोटा था। स्वभाव से वह बहुत ही गम्भीर और पढ़ने में बहुत होशियार था। हैदर के आने से वह अनेक दुश्चिन्ताओं से मुक्त हो जायेगा। इधर हसीना के खयाल से वह ओवरटाइम भी न कर पा रहा था। उसे हर वक्त यही लगा रहता कि न जाने कौन उसके दर पर बैठा हो। भाई के आ जाने से यह चिन्ता तो न रहेगी। लतीफ़ ने तैश में आकर खत तो लिख दिया था, मगर अपने अब्बा हुजूर की प्रतिक्रिया के बारे में आश्वस्त नहीं था। रेलवे में काम करते करते उनका दिमाग भी एक ही पटरी पर चलने लगा था, जिधर का सिगनल मिल जाये। हैदर चूंकि दूसरी बीबी से था, इसलिए वह आशा कर रहा था कि उसकी छोटी अम्मा ठीक सिगनल दे देगी। उसने हसीना से इसका ज़िक्र तक न किया। वह विश्वासपूर्वक कुछ भी कहने की स्थिति में नहीं था, अब्बा हुजूर उसके खत का जवाब देने की ज़हमत भी उठायेंगे या नहीं।

लतीफ़ दो दिन बाद काम पर गया था। रात की पारी थी। रात के ग्यारह बजे के करीब किसी ने अचानक लतीफ़ के घर का दरवाजा खटखटाया। लतीफ की ड्यूटी रात दो बजे खत्म होती थी। हसीना घर पर अकेली थी। वह एकदम दहशत में आ गयी। दरवाजा खटखटाये जाने से वह समझ गयी थी कि यह लतीफ की दस्तक नहीं है। वह उस वक्त गहरी नींद में थी जब उसने पहली बार दरवाजा पीटे जाने की आवाज सुनी। वह हड़बड़ा कर उठी और घड़ी देख कर इस नतीजे पर पहुँच गयी कि लतीफ़ इतनी आकुलता से कभी दरवाजा नहीं खटखटाता। दरवाज़े के बाहर देखने का कोई साधन नहीं था। एक खिड़की थी, जिसे खोलने की हिम्मत उसमें नहीं थी। वह कुछ देर तक तो अशान्त रही बाद में यह सोच कर रजाई में दुबक गयी कि ड्यूटी से लौट कर लतीफ़ ही उस आदमी से निपट लेगा। थोड़ी देर बाद उसने महसूस किया कि बाहर एक नहीं कई लोग हैं। उसने सोचा लतीफ़ को

मिल के तमाम गुण्डे एक साथ चले आये हैं। उसका रंग ज़र्द पड़ गया और भय से उसकी साँस फूलने लगी। पेट में बहुत जोर से दर्द उठा और आँखों के सामने अँधेरा छा गया।

'या अल्लाह ! ये लोग मुझे तबाह करने पर क्यो आमादा है?' वह अल्लाह मियाँ की याद में डूबने की कोशिश करने लगी। मगर लोग थे कि दरवाजा पीटे चले जा रहे थे। हसीना को लग रहा था, इस माहौल में लतीफ़ भी आयेगा तो वह बहुत सोच-समझ कर ही दरवाज़ा खोलेगी। धीरे-धीरे शोर मद्धिम पड़ने लगा। कुछ देर बाद पूर्ण शान्ति हो गयी। जैसे कोई अन्धड़ आया और आकर निकल गया। हसीना एक डरी हुई कबूतरी की तरह दोबारा सोने का उपक्रम करने लगी।

ठीक समय पर लतीफ की दस्तक हुई। वह इस दस्तक को पहचानती थी। एकदम रजाई में से खरगोश की तरह से निकल कर उसने दरवाज़ा खोल दिया। लतीफ़ ही था। वह आज बहुत खुश था। उसने आज मिल में एक करिश्मा कर दिखाया था। एक मशीन अचानक जाम हो गयी थी। उसने जरा-सी अक्लमन्दी से मशीन चालू कर दी थी। फ़ोरमैन ही नहीं, इंजीनियर लोग भी उसकी काबलियत का सिक्का मान गये थे और इंजीनियर ने उसे इशारों में बताया था कि वह जल्दी ही फ़ोरमैन होने जा रहा है। यानी दो सौ पचास रुपये की एक छलाँग।

हसीना ने दरवाज़ा खोला तो लतीफ ने उसे अपनी आग़ोश मे लेकर दाब लिया। हसीना बहुत डरी हुई थी, बोली, 'आज रात भर गुण्डे परेशान करते रहे!'

लतीफ का उत्साह भंग हो गया, बोला, 'क्या कह रहे थे ?'

'मैं क्या जानूँ क्या कह रहे थे, लगातार दरवाजा पीट रहे थे और आवाज़ें कस रहे थे।'

लतीफ़ बेहद उदास हो गया। उसके अब्बा ने भी कोई जवाब न दिया था। वह निढाल-सा बगैर कपड़े तवदील किये कुर्सी पर बैठ गया और बोला, 'हसीना आज मैं बेहद खुश लौटा था।' लौटते हुए वह कैन्टीन से हसीना की पसंदीदा बंगाली मिठाई भी ले आया था, जो उसने बेरुखी से ताक पर रखदी।

'गुण्डे हमारे पीछे क्यों पड़ गये है ?'

'गुण्डे तुम्हारे माज़ी के पीछे हैं। एक तवायफ़ की बेटी को वे तवायफ़ की शकल में ही देखना चाहते हैं।'

तभी दरवाज़े पर फिर खट-खट शुरू हो गयी। लतीफ़ ने आव देखा न ताव फौरन दरवाज़ा खोल कर पहलवान की तरह बीचों-बीच खड़ा हो गया।

बाहर फ़ोरमैन खड़ा था।

'आपके अब्बा हुज़ूर घण्टों दरवाज़ा पीटते रहे। दरवाज़ा न खुला तो मैं उन्हें अपने घर लिवा ले गया।' फ़ोरमैन ने बताया, 'वह सफ़र में थक कर आये थे और इस वक्त मेरे घर पर आराम फ़रमा रहे हैं।'

लतीफ़ बहुत खुश हुआ। फोरमैन से भी पहले उसके घर पहुँच गया। दरवाज़े के पास ही अब्बा हुज़ूर का सामान रखा था। वह भागा हुआ गया और बच्चों की तरह अब्बा जान से लिपट गया। उसने देखा उनके साथ ही उसका छोटा भाई हैदर लेटा हुआ था।

लतीफ़ अपने अब्बा और भाई को बहुत आदरपूर्वक घर ले आया। हसीना उसी समय नाश्ता तैयार करने में जुट गयी।

'मकान ढूँढने मे कोई तकलीफ़ तो नही हुई?'

'मकान तो मिल गया था, मगर मकान पर पहुँचने के बाद बहुत तकलीफ़ हुई। दुल्हन ने दरवाजा ही न खोला।' अब्बा हुज़ूर ने कहा. 'मगर मैं बहुत खुश हुआ कि दुल्हन इतनी समझदार है, वर्ना तुम्हारी ज़िन्दगी तो बर्बाद हो जाती।'

लतीफ़ क्या बताये कि उसे इस बीच कितनी परेशानी उठानी पड़ रही है और उसके दोस्त लोग उसके साथ कैसा सुलूक कर रहे है।

अब्बास साहब दो दिन लतीफ़ के यहाँ रहे। हसीना ने उन्हें अपने मधुर व्यवहार से पूरी तरह जीत लिया। उसे लतीफ़ ने बता रखा था कि वे सुबह उठते ही चाय लेते है और एकाध घण्टे हुक्का पीते हैं। वह उनका हुक्का भर देती। दोपहर के खाने मे गोश्त जरूर बनता। लतीफ़ का छोटा भाई हैदर रसोई के काम में हाथ बँटाता। वह हाई स्कूल में पढ़ता था। इसी बीच पास के एक स्कूल में उसका नाम भी लिखा दिया गया।

अब्बास साहब लौटते समय हसीना को दस का एक नोट भी दे गये। लतीफ़ से जो कुछ हो सकता था उसने किया। अम्माँ का बुर्क़ा भी सिल कर आ चुका था और छोटे बच्चों के लिए होजरी का सामान वह ले आया था। सब लोग जाकर अब्बा को गाड़ी मे बैठा आये।

अब्बास साहब की शख़्सियत मे ऐसा रुआब था कि लतीफ़ के दोस्तों ने भी उसके घर का रुख करना बन्द कर दिया। एक रोज उन्होने लतीफ़ के अब्बा को बाहर हुक्का गुड़गुड़ाते देखा तो चुपचाप पास से निकल गये। अब्बा हुज़ूर के चेहरे पर ऐसा जलाल था कि किसी की हिम्मत न पड़ी कि लतीफ़ के बारे मे उनसे ही पूछताछ कर लेता।

भाई के आ जाने से लतीफ़ बहुत निश्चिंत हो गया। वह जमकर ओवर-

टाइम करने लगा। उसने यूनियन के कुछ काम भी अपने जिम्मे ले रखे थे। वह अक्सर देर-सवेर ही घर पर आता। लतीफ़ को बहुत अच्छा लग रहा था कि उसका भाई अपनी भाभी के लिए बहुत सहायक सिद्ध हो रहा है। वह हमेशा उसे पढ़ते या काम करते ही देखता। एक छोटी कोठरी उसे दे दी गयी थी। उसने अपनी कुर्सी-मेज उसी में लगा ली थी। वही उसकी खाट थी। पढ़ते-पढ़ते थक जाता तो वहीं सो जाता।

हैदर स्कूल से दो बजे के करीब लौटता। तब तक हसीना घर का काम निपटा लेती। हैदर को खाना देकर वह नहाने चली जाती। घर में कोई गुस्ल-खाना नहीं था। रसोई घर में नाली के पास एक चादर की ओट में नहाने का इन्तजाम था। हसीना कपड़े उतार कर उसी अलगनी पर फैला देती जिस पर चादर लटकायी गयी थी। एक दिन हसीना नहा रही थी कि उसने देखा हैदर दरवाज़े के पास खड़ा चादर के कोने से पूरी एकाग्रता से उसे देख रहा है। हसीना सटपटा कर रह गयी। वह तुरन्त तय न कर पायी कि उसे क्या करना चाहिए। चादर की ओट में जितना हो सकती थी हो गयी और जल्द ही पानी डाल कर तौलिया खींच लिया।

हैदर को मालूम था कि भाभी ने उस की चोरी पकड़ ली है। खाना खाते समय उसने बहुत सादगी से कहा, 'भाभी तुम सचमुच बहुत हसीना हो।'

हसीना ने कहा, 'आखिर तुम्हारी भाभी हूँ।'

'हाय कितना अच्छा है तुम मेरी भाभी हो।' वह बोला, 'लोगों की भाभियाँ एक-से-एक बौड़म होती हैं।'

'अच्छा बहुत हो गया। तुम अपनी पढ़ाई की तरफ़ ध्यान दिया करो।'

लतीफ़ रात देर से लौटा। खाना खाते ही सो गया। रात को भी हसीना को एहसास हुआ कि कोई उन्हें देख रहा है। हसीना का ध्यान हैदर की कोठरी की तरफ गया तो उसने देखा दरवाजे की ओट में दो आँखें चमक रही थीं।

हसीना ने लतीफ़ को तुरन्त ही इससे आगाह करना मुनासिब न समझा। वह थका हुआ लौटा था और उस वक्त आराम फरमा रहा था। सोचेगा हसीना रोज़ उसकी जान के लिए कोई न कोई बवाल लगाये रहती है। वह खुद ही हैदर को समझा देगी कि उसे एक अच्छे बच्चे की तरह पढ़ाई में ध्यान लगाना चाहिए और इन फिजूल हरकतों से बाज़ रहना चाहिए।

अगले रोज़ वह हैदर के स्कूल से लौटने के पहले ही नहा-धोकर तैयार हो गयी। हैदर ने अपना बस्ता कोठरी में पटका और बोला, 'लगता है मुझे आज लौटने में देर हो गयी।'

'नहीं तो?'

'आप आज सब काम निपटा चुकी है।'

हसीना उसका अभिप्राय समझ रही थी। न जाने यह पाजी कब से उसे नहाते हुए देखता आ रहा था। उसने कहा, 'तुम्हारी पढ़ाई ठीक चल रही है?'

'हाँ ठीक चल रही है। मगर मेरा मन बहुत उखड़ा-उखड़ा रहता है।'

'तुम हाई स्कूल कर लो तो तुम्हारी शादी कर दें।'

'शादी तो हम न करेंगे।'

'क्यो, शादी क्यों नही करोगे?'

'हाँ, हम शादी नही करेंगे।' हैदर उठा और हसीना के गले में बाँहें डाल दी, 'हम इसी तरह अपनी भाभी के संग रहेंगे।'

हसीना छिटक कर अलग हो गयी।

'यह क्या कर रहे हो? तुम बच्चे नही रहे हैदर। तुम्हारे भाई को मालूम होगा तो क्या सोचेंगे?'

हैदर ने आगे बढ़ कर हसीना को अपनी आगोश में कस लिया और उसके होठों को अपने दाँतों मे। हसीना एक लाचार मुर्गी की तरह उसकी आग़ोश मे छटपटाती रही। हैदर की बाँहों में बला की ताकत थी। उसने हसीना को उठा कर बिस्तर पर गिरा दिया।

हसीना के मुँह से चीख निकल गयी। हैदर ने उसके मुँह में कपड़ा खोस दिया और बलात्कार पर उतर आया। हसीना को यह मंजूर नही था। उसने पूरी शक्ति लगा कर हैदर को अपने से अलग किया और बदहवासी में दरवाजा खोल कर बाहर भागी और घर से कुछ दूर एक पत्थर पर बैठ गयी। उसकी साँस बहुत तेज चल रही थी। बाल बिखर गये थे और अंग-अंग जैसे किसी ने नोच डाला था। पड़ोस में कोई इतना अभिन्न नहीं था कि चली जाती। वह बहुत देर तक बाहर बैठी रही। लतीफ़ के आने में अभी बहुत वक्त था। लतीफ को आज की घटना से अवगत कराने का साहस भी नही बटोर पा रही थी। लतीफ़ अपने भाई से बेपनाह मुहब्बत करता था और हसीना जानती थी कि भाई के बारे में कुछ भी सुनना वह पसन्द न करेगा।

'या अल्लाह! मुझे किन गुनाहों की सजा दे रहे हो?' वह बुदबुदाती।

थोड़ी देर बाद गर्दन झुकाये हैदर कमरे से बाहर निकल गया। हसीना ने अन्दर जाकर हाथ-मुँह धोया, बाल सँवारे और बिस्तर पर औंधी लेट गयी।

'या खुदा मुझे किन गुनाहों की सजा दे रहे हो।' वह घण्टों रोती हुई उसी हालत में पड़ी रही। उसे अपनी अम्माँ की बहुत तेज याद आ रही थी। अम्माँ से वह सलाह ले सकती थी कि इन हालात में उसे क्या करना चाहिए। उसका भाई साहिल भी नही था, जिसके सामने बैठ कर वह कुछ देर रो लेती!

लतीफ़ पर उसे पूरा भरोसा था, मगर वह रोज़-रोज़ के झंझटों से उसका दिल नहीं दुखाना चाहती थी। वह आजकल सोलह-सोलह घण्टे काम कर रहा था। लतीफ़ की इच्छा थी कि कुछ पैसे कमा कर ढंग का घर बना ले या अपनी 'लेथ' लगा ले। वह थका हुआ लौटता और हसीना से लिपट कर अपनी पूरी थकान भूल जाता।

लतीफ़ इन दिनों बहुत खुश नज़र आता था। पहली तारीख से उसे फ़ोरमैन बनाया जा रहा था। मिल में वह पहला मैकेनिक था जो इतनी जल्दी तरक्की कर रहा था। लतीफ़ को मालूम था, उसकी तरक्की से कुछ लोग जलेंगे और उसके बारे में तरह-तरह की अफ़वाहें उड़ायेंगे। मगर उसे इन सब बातों की परवाह नहीं रह गयी थी।

हसीना ने उस रोज़ खाना नहीं खाया। दोपहर भर यों ही लेटी रही। बीच में उसे खयाल आया, हैदर भूखा होगा, मगर उसका खयाल आते ही वह क्रोध, अपमान और वितृष्णा से छटपटाने लगी।

लतीफ ने घर में ऐसा मुर्दा और मनहूस माहौल देखा तो चिन्तित हो उठा।

'क्या हुआ हसीना, तबीयत तो ठीक है?'

'ठीक नहीं है।' हसीना उठते हुए बोली, 'दोपहर से पेट में दर्द है।'

लतीफ़ ने देखा, हसीना की आँखें सूजी हुई थीं। उसने छूकर देखा, उसका जिस्म अंगारे की तरह तप रहा था।

'तुम्हें बहुत तेज बुखार हो रहा है।' लतीफ़ ने कहा, 'चलो जल्दी से कपड़े पहनो और डाक्टर के पास चलो।'

'मेरी तो आँखें नहीं खुल रहीं।' हसीना बोली, 'तुम घबराओ नहीं, ठीक हो जाऊँगी।'

'हैदर कहाँ है?'

हैदर लौट कर चुपचाप कोठरी में लेट गया था। लतीफ़ की आवाज सुन कर उठ गया, बोला, 'जब से स्कूल से लौटा हूँ, ऐसे ही पड़ी हैं।'

'तुमने हैदर को बताया होता, वह तुम्हारे साथ डाक्टर के यहाँ चला जाता।'

हैदर अपनी दोनों बाँहें छाती पर लपेट कर खड़ा था, वह मन ही मन बहुत लज्जित हो रहा था। इस समय वह देखना चाहता था कि हसीना आज की घटना की सूचना भाई को देती है या नहीं।

हसीना तैयार होकर लतीफ़ के साथ डाक्टर के यहाँ चली गयी तो वह चिन्तित हुआ। लतीफ़ सुनेगा तो जान से मार डालेगा।

डाक्टर ने हसीना का गला, नाक, दाँत सब देखे, कहीं इन्फ़ेक्शन नज़र न आया, बोला, 'मौसमी बुखार है। दो-एक दिन में ठीक हो जायेगा।'

लतीफ़ ने हसीना को बहुत हिफ़ाज़त से रिक्शा में बैठाया, जैसे वह काँच की गुड़िया हो और उसके बहुत पास अपना मुंह ले जा कर बोला, 'तुम बीमार या उदास हो जाती हो तो मुझे सारी दुनिया वीरान लगती है।'

हसीना की आँखें भर आयीं।

हसीना अब अपने को रोक न सकी। आँसुओं का बाँध टूट कर बह गया। लतीफ़ ने सोचा शायद अपने भाई या माँ को याद करके रो रही है। उसने कहा, 'मैंने कल ही अपने एक दोस्त को चिट्ठी लिखी है कि साहिल का पता दे।'

मगर हसीना बदस्तूर रोती रही। रोते-रोते उसकी हिचकी बँध गयी। लतीफ़ को समझते देर न लगी कि बात कुछ और है। हो सकता है कि किसी पड़ोसी ने कोई बुरी बात कह दी हो या हैदर से ही झगड़ा हो गया हो।

'क्या हैदर से झगड़ा हो गया है ? उसकी बात का बुरा न मानना, अभी बच्चा है।' लतीफ़ ने कहा।

'वह बच्चा नहीं है।' हसीना ने कहा और रोते-रोते कल और आज की घटनाएँ ठीक-ठीक बयान कर दीं।

लतीफ़ ग़मगीन हो गया। हसीना यही नहीं चाहती थी, बोली, 'मैं इसी से आपको बताना नहीं चाहती थी। मैं आपको यों बेज़ार नहीं देख सकती।'

लतीफ़ की आँखें नम हो गयीं। उसे अपने भाई से ऐसी उम्मीद न थी। वह उसे बहुत मासूम समझता था और उसकी हर ज़रूरत की तरफ़ ध्यान दे रहा था। उसके लिए बीसियों रुपये की किताब कापियाँ खरीद चुका था। दाखिले में पचहत्तर रुपये अलग से खर्च हो गये थे। उसकी इच्छा हो रही थी कि घर पहुँच कर हैदर की ऐसी ठुकाई करे कि उसे ज़िन्दगी भर याद रहे। लतीफ का मन भाई की इस बेहूदा हरकत से इस कदर बदज़न हो गया कि वह उसकी सूरत तक देखने को तैयार न था। वह चुपचाप हसीना के साथ रिक्शे पर बैठा रहा। उसका सर भी घूमने लगा था। उसे लग रहा था, हालात नहीं सुधरे तो वह भी जल्द ही बीमार पड़ जायेगा। थोड़ी देर पहले तक उसे भूख महसूस हो रही थी, अब ऐसा लग रहा था, जैसे उसे कभी भूख न लगेगी।

वे लोग चुपचाप बगैर एक-दूसरे से बातचीत किये घर पहुँचे। हसीना ने दरवाज़ा खटखटाया तो वह ज़रा से दबाव से खुल गया। अन्दर बिजली जल रही थी, मगर हैदर नहीं था। दोनों ने देखा, हैदर के साथ-साथ उसकी किताबें कपड़े, बिस्तर सब गायब थे। लतीफ़ ने राहत की साँस ली, बोला, 'अच्छा हुआ वह बदमाश खुद ही गायब हो गया।'

हसीना ने कहा, 'अकल से रहता तो यहाँ किसी चीज की कमी न थी।'

'ऐसा आदमी ज़िन्दगी में कुछ भी न कर पायेगा।' लतीफ़ ने कहा, 'मुझे एहसास नहीं था कि इस कच्ची उम्र में वह इतना बिगड़ चुका है।'

'मुझे उसके लिए बहुत अफ़सोस है।' हसीना बोली।

'मुझे लगता है तुम्हारी तरह मेरा भी इस भरी दुनिया में कोई नहीं।' लतीफ़ ने एक गहरी साँस छोड़ते हुए कहा, 'मगर यही गनीमत है, तुम मेरे लिए बहुत कीमती हो।'

'तुम्हारे अलावा तो मेरा कोई है ही नहीं।' हसीना ने कहा और अपना सर लतीफ़ की छाती से टिका दिया।

दोनों उस रोज बगैर कुछ खाये-पिये सो गये।

'मालूम नहीं, उसके पास रेल का भाड़ा था या नहीं?' हसीना ने पूछा।

'उस कमीने के बारे में सोचो भी मत।' लतीफ ने कहा, 'उसने मेरा जी बहुत दुखाया है।'

घर में पहली चिठ्ठी आयी थी। हसीना बहुत खुश हुई। उसने जल्दी से लिफ़ाफ़ा खोला, जरूर साहिल की कोई खबर आयी होगी। मगर चिट्ठी उर्दू में थी। वह हिन्दी तो पढ लेती थी मगर उर्दू बहुत मुश्किल लगती थी। उसकी इच्छा हुई पड़ोस में जाकर चिट्ठी सुन आये। मगर पड़ोस में उसकी कोई सहेली नहीं थी और मर्दों के सामने पड़ना उसे मंजूर न था। पड़ोस में एक असलम साहब रहते थे, वे एक बैंक में चपरासी थे, हसीना ने उन्हें कई बार अखबार पढ़ते देखा था। उसकी बीवी सलमा से भी उसकी दुआ सलाम थी। हसीना ने उनके यहाँ जाने के लिए बुर्का ओढा मगर उतार दिया। उसका मन न हुआ दहलीज के बाहर कदम रखने का। वह लतीफ़ का इन्तजार करने लगी।

लतीफ आया तो उसने बहुत चाव से उसे चिट्ठी दी और पूछा, 'किसकी है?'

'अब्बा हुजूर की है।' लतीफ ने कहा और चिट्ठी पढ़ने लगा.

'बरखुरदार!

तुम्हारा भाई सही सलामत घर पहुँच गया है। उसकी बातें सुन कर मुझे गहरा सदमा पहुँचा है। तुम्हारी दुल्हन ने न सिर्फ उसे कई रोज भरपेट खाने को नहीं दिया बल्कि उसके ऊपर डोरे डालने भी शुरू कर दिये। वह खानदानी लड़का था वरना तुम्हारी तरह गन्दगी में फँस जाता और तुम्हारी लाडली तवायफ की बिटिया मेरा एक और लड़का निगल जाती। मेरा इरादा हो रहा था कि हसीना को घर में दाखिला दे दूँ मगर अब मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ

कि तवायफ की लड़की जिन्दगी भर तवायफ़ ही रहेगी।...'

लतीफ़ से आगे खत न पढ़ा गया। उसने खत चिंदी-चिंदी कर दिया और बाहर घूरे पर फेंक आया।

हसीना लतीफ़ के चेहरे से ही समझ रही थी कि अब्बा हुजूर ने कोई बहुत कड़वी बात लिख दी है। उसने दोबारा पूछा, 'किसका खत है?'

'अब्बा हुजूर का।' लतीफ़ बोला, 'उस कमीने हैदर ने अपनी कमीनगी का ही सुबूत दिया है।'

'क्या लिखा है?'

'लिखा है कि तुम उस पर डोरे डाल रही थीं।'

हसीना चुप रह गयी। उसका मन बहुत ख़राब हो गया।

'लगता है सारी दुनिया हाथ धोकर हमारे पीछे पड़ गयी है।' वह बोली, 'हमने कभी किसी का बुरा नहीं किया।'

'हम लोगों ने कभी किसी का बुरा तो नहीं किया, मगर ऐसा काम ज़रूर किया है जो दुनिया को क़ुबूल नहीं। दुनिया को बदलाव मंज़ूर नहीं। समाज की कोई भी चूल हिलती है तो पूरा समाज बौखला उठता है।' लतीफ़ कुछ सोचते हुए बोला, 'हम लोगों को किसी ऐसी जगह जाकर बस जाना चाहिए जहाँ कोई तुम्हे पहचानता हो न मुझे।'

'तुम जहाँ कहोगे, चलूँगी। मेरी जिन्दगी ही तुम्हारे दम से है।'

'चश्मे बददूर।' लतीफ़ बोला।

लतीफ़ ने हाथ बढ़ा कर हसीना को अपने ऊपर गिरा लिया। वह धीरे-धीरे उसका बदन सहलाने लगा और जहाँ-जहाँ उसके बदन पर कपड़ा नहीं था, चूमने लगा, 'मैं इस बेशर्म समाज से तुम्हें क़ुबूल करवा के छोड़ूंगा। फिलहाल मैं इसी शहर मे खूब मेहनत करूँगा, खूब पैसा कमाऊँगा और फिर तुम्हें लेकर दिल्ली या बम्बई चला जाऊँगा। वहाँ नये सिरे से हम लोग जिन्दगी की शुरुआत करेंगे।'

● ●

चकैया नीम के पास एक चमचमाती कार रुकी। ड्राइवर ने उतर कर पीछे का दरवाजा खोला। एक खद्दरधारी वृद्ध सज्जन छड़ी के सहारे कार से उतरे।

सूरज डूब चुका था। इसके बावजूद बच्चा लोग अहाते में क्रिकेट खेल रहे थे। गेंद दिखायी देना बन्द हो गयी तो उन्होंने खेल स्थगित कर दिया। सब लोग नयी तरह की कार देखने में मशगूल हो गये।

खद्दरधारी सज्जन को टार्च की रोशनी दिखाता हुआ उन का साथी आगे आगे चल रहा था। खद्दरधारी सज्जन ने सौ दो सौ मीटर का रास्ता बड़ी मुश्किल से तय किया। अजीजन के दुमंजिले के पास पहुँच कर टार्च लिए हुए सज्जन रुके। उन्होंने जीने पर टार्च की रोशनी की तो नफ़ीस दिखायी दिया।

नफीस भाग कर नीचे आया और बहुत अदब से खद्दरधारी सज्जन को आदाब अर्ज़ किया। उसने उन्हें बहुत एहतियात से कन्धे से पकड़ा और जीना चढ़ने में उनकी मदद करने लगा। नफीस ने उन्हें बैठक में बैठाया और अजीजन को उनके पधारने की सूचना दी। अजीजन के चेहरे पर हल्की सी मुस्कराहट खेल गयी।

वह भागती हुई कमरे में दाखिल हुई, 'जहे किस्मत ! आज इधर की राह कैसे भूल गये। इस नाचीज़ की आज यकायक कैसे याद आ गयी ?'

'बहुत दिनों से तुम्हारा दीदार हासिल करने की तमन्ना थी।' खद्दरधारी सज्जन ने अपने साथी से कहा, 'तुम जा कर कार में बैठो।'

नफीस भी उसके साथ उतर गया।

'कैसी हो ?'

'इनायत है।'

'वैसी ही दिखती हो आज भी।'

'आप की जर्रानवाज़ी है।'

'वही अदाएँ हैं। वैसी ही आवाज। क्या आज भी रियाज चलता है ?'

खद्दरधारी सज्जन ने अत्यन्त आशिकाना नजरों से अज़ीज़न की तरफ़ देखा और छड़ी हिलाने लगे।

'रियाज़ ही ज़िन्दगी है।' अज़ीज़न ने कहा, 'आप तो बहुत बड़े आदमी हो गये इस बीच।'

'तुम ने कभी याद ही न किया।' खद्दरधारी सज्जन ने जेब में हाथ डाला और वहीं पड़ा रहने दिया। जैसे जेब में पहुँचते ही उनके हाथ को लकवा मार गया हो।

'भूल कर देख लिया और याद करके भी। मुझे कोई गिला नहीं ज़िन्दगी से।'

'मुझे है। मुझे ज़िन्दगी से गिला है। सियासत ने मुझ से सब कुछ छीन लिया। एक ज़माना था, मैं दीवानों की तरह तुम्हारे दर पर पड़ा रहता था। तुम्हारी आवाज़ के जादू ने मुझे पागल कर रखा था और अब यह ज़िन्दगी है कि लोग साये की तरह पीछे लगे रहते हैं।'

'आज यकायक कैसे याद फरमाया ?'

'हालात बता रहे हैं, आने वाले वक्त में और ज़्यादा मसरूफ़ हो जाऊँगा। सोचा, उससे पहले तुम्हारा दीदार हासिल कर लूँ। यों कह लो, यादों ने मज-बूर कर दिया। ज्यों-ज्यों आदमी तरक्की करता है, अकेला होता जाता है।' खद्दरधारी सज्जन दीवारों पर टँगी तस्वीरों में अपना अतीत टटोलने लगे।

अन्तिम बार वे एक होली की महफ़िल में आये थे। चारों ओर गुलाबी रंग! गुलाब और खस के इत्र से भरे कुमकुमे! महफ़िल में जैसे टेसू के फूल खिल आए थे! अज़ीज़न की वह छवि श्यामसुन्दर जी के मन में हमेशा के लिए अंकित हो गयी थी : फूल की तरह खिला हुआ गुलाबी चेहरा, बदन पर काली साड़ी, बालों में बेला की कलियों की वेणी। नाक में हीरे की कील। वह जिधर गर्दन घुमा लेती, हीरे की बिजलियाँ कौंध जाती। अज़ीज़न ने अपनी प्रिय 'होरी' सुनायी थी उस दिन। रान पर हाथों से ताली देते हुए :

> होरी आज जले चाहे काल्ह
> जले न जले,
>
> मेरे कुँअर कान्ह मो सों आय मिले
> होरी आज जले चाहे काल्ह
> जले न जले।

अज़ीज़न की आवाज में इतनी मिठास थी कि श्यामसुन्दर अपने पर काबू न रख पाये। पनडब्बा खोल कर पान लगाने लगे और होरी समाप्त होते ही अज़ीज़न के मुँह में पान की गिलौरी रख दी थी।

'क्या लीजिएगा, ठंडा या गर्म ?' अज़ीज़न ने पूछा।

'आज मैं लेने नही, देने आया हूँ।' खद्दरधारी सज्जन ने जेब से सौ-सौ के नये नोटो की गड्डी उसी हाथ से निकाल कर पेश कर दी जो मौके की तलाश में देर से जेब में बेजान पड़ा था।

अजीजन हतप्रभ रह गयी। गड्डी उठा कर अँगूठे की मदद से ताश की तरह धीरे-धीरे नोट छोड़ने लगी, जैसे पंखा कर रही हो।

'लगता है सियासत खूब चल रही है।' अजीजन ने नोटों की तरफ़ देखते हुए इस प्रकार कहा जैसे कह रही हो, वकालत खूब चल रही है।

खद्दरधारी सज्जन मुस्कराये,'ऊपर वाला खुश है। जब से नीलम पहना है, पैसा बरसने लगा है। जब से मुख्यमन्त्री के लिए मेरा नाम आने लगा है, पैसे की बरसात होने लगी है। पैसा आता है तो जाने क्यों तुम्हारी याद भी बहुत आती है। मैं तो बुड्ढा गया मगर तुम्हारा नूर बरकरार है। खिजाब लगाती हो क्या ?'

'मुझे खिजाब की गंध से ही नफ़रत है।' अजीजन बोली, 'खिजाब से मुझे नफ़रत है। पैसे से भी अब वैसा लगाव नही रहा। अब पहले सी कद्रदानी है न दरियादिली। अशर्फ़ियाँ लुटाने वाली पीढ़ी खत्म हो गयी। अब, लगाव है तो सिर्फ़ फ़न से। कुछ सुनिएगा ?'

'अब तो गुल भी गाने लगी होगी ? उसे तो मैंने गोद मे खेलाया था।'

'गुल गाती है, मगर गाने का पेशा नही करती। अब तो बकौल अकबर जमाना यह आ गया है कि :

भरते है मेरी आह वे फोनग्राफ़ में,
कहते हैं फीस लीजिए और आह कीजिए,

"वाह वाह क्या शेर कहा है।" श्यामसुन्दरजी ने पूछा, "गुल तो अब बडी हो गयी होगी ?"

"युनिवर्सिटी में पढती है।" अजीजन ने आवाज दी, "गुलबदन, ! देखो कौन आए हैं।"

गुल बाल सुखा रही थी, खुले बालो में चली आयी। अम्माँ के हाथो में नोटो की गड्डी देखी। सामने बैठा खद्दरधारी उसे बहुत नागवार गुज़रा बुड़भस के मारे हुए एक खारिशजदः कुत्ते सरीखा। गुल ने बडे अदब के साथ तसलीम की।

'किस क्लास में पढती हो ?'

'एम. एस. सी कर रही हूँ।' गुल ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया।

'तुम्हारी अम्मा ने कभी मेरा जिक्र किया है ?'

'आप की तारीफ़ ?'

'बेटा यही हैं श्यामसुन्दरजी। गृहमन्त्री रह चुके है, आजकल मुख्यमंत्री के लिए इनका नाम लिया जा रहा है।'

'देखो, लग तो यही रहा है कि चुनाव से पहले परिवर्तन होगा।' श्यामसुन्दरजी के बूढ़े दिल की धड़कनें तेज हो गयी। गुल का शफ़्फ़ाफ़ चेहरा, शुद्ध तलफ्फुज़, सुनहरी बाल, बिल्लौरी आँखें और जलतरंगी आवाज़! श्यामसुन्दरजी का हाथ दुबारा जेब मे चला गया। इस बार तत्परता से बाहर आया, दस की गड्डी के साथ, 'यह मेरा आशीर्वाद है।'

'मुआफ़ कीजिए, मैं पैसे न लूंगी, आपकी दुआ लूंगी।' गुल ने कहा। वह उठ कर चल दी। अम्माँ को बेहद अच्छा लगा।

गुल चली गयी, अपनी गंध छोड़ गयी। श्यामसुन्दर ने बैठे बैठे बड़ी लापरवाही से नोटों की गड्डी अज़ीज़न की गोद में फेंक दी।

'बहुत ज़हीन लड़की है। मैं खुश हुआ।'

'शुक्रिया।' अज़ीज़न ने कहा, 'मैं जिन्दा हूँ तो इसी के लिए।'

श्यामसुन्दरजी छड़ी के सहारे खड़े हो गये, 'दरअसल मैं आज एक काम से आया था।' वह दीवार पर लटकी एक तस्वीर के सामने जा कर खड़े हो गये, 'मैं आज चोरी के इरादे से आया हूँ।'

'मगर आप तो चोरी करवा के जा रहे है।'

'ऐसे ही कह लो।' श्यामसुन्दर ने अपनी छड़ी से एक तस्वीर की तरफ इशारा किया, 'आज मैं यह तस्वीर चुरा ले जाऊँगा।'

अज़ीज़न ने तस्वीर की तरफ देखा। आज से बीस बरस पहले का दृश्य उसकी आँखों में कौंध गया। श्यामसुन्दर हाथ मे व्हिस्की का गिलास लिए दिलफेंक अन्दाज़ में अज़ीज़न को दाद दे रहे थे। बगल मे सुन्दरगढ़ के महाराज बैठे थे। सुन्दरगढ़ के महाराज तस्वीर में न होते तो अज़ीज़न ने तस्वीर फेंक दी होती और फ्रेम न करवायी होती।

'इस तस्वीर में आप भी है?'

'हम ही हैं।' श्यामसुन्दर के मुँह से बेसाख्ता निकल गया, 'आज यह तस्वीर अखबार में छप जाए तो मेरा भविष्य चौपट हो जाए! कल दिल्ली से फ़ून आया कि आप शहर में ही रहिए तो जाने क्यों मेरे दिमाग में यह तस्वीर कौंध गयी। ब्राह्मणों की लॉबी मुझे तबाह करने पर आमादा है। मगर मैंने भी धूप में बाल सफेद नहीं किए।'

'मगर मैंने तो धूप में ही बाल सफेद किए हैं।' अज़ीज़न ने कहा, 'कल तिवारीजी का बड़का बेटा भी यही तस्वीर माँग रहा था। वह भी मुँह माँगा दाम लगा रहा था।'

श्यामसुन्दरजी छड़ी थाम कर कुर्सी पर बैठे थे। छड़ी के साथ-साथ उनका हाथ हिलने लगा।

'मेरी आत्मा ने ठीक ही आगाह किया था।' श्यामसुन्दर ने एक और गड्डी बगल की कुर्सी पर रख दी और अज़ीज़न से पूछे बग़ैर उठ कर अपनी छड़ी से तस्वीर उतार ली। तस्वीर नीचे फ़र्श पर गिर पड़ी। काँच टूट गया। श्यामसुन्दर ने फ्रेम और काँच वहीं पड़े रहने दिये और तस्वीर निकाल ली।

'मुझे अब जाना चाहिए। दिल्ली से कभी भी फ़ून आ सकता है।' श्यामसुन्दरजी ने कहा, 'बिटिया को मेरा प्यार देना।'

'खुदा हाफ़िज़।' अज़ीज़न ने कहा और नोट समेटने लगी।

'लगता है, मेरा माज़ी आज भी बिकाऊ है।' अज़ीज़न ने नेताजी के जाते ही गुल से कहा, 'तुम्हरा दहेज खुद ब खुद चला आ रहा है। यह श्यामसुन्दर एक रईस बाप का बिगड़ैल बेटा था। बाप और बेटा दोनों मेरी आवाज़ के दीवाने थे। बाप आता तो बेटा बावर्चीखाने में जा छिपता। आओ आज इन्हीं रईसों की बदौलत खैरात बाँट आते है।'

जुमेरात थी। मज़ार के पास बीसियों फ़क़ीर बैठे थे। अज़ीज़न ने मज़ार पर जा कर अगरबत्तियों का पूरा बंडल जला दिया और प्रत्येक फ़क़ीर को दस का एक नया नोट खैरात में दिया। बाद में उसने मज़ार पर माथा नवा दिया, 'परवरदिगार, मेरी बिटिया को दुनिया की तमाम नेमतें अता फ़रमाना।'

वे दोनो घर लौटीं तो देखा सिद्दीकी साहब कश्मीरी टोपी पहने कमरे में बैठे बेसब्री से अज़ीज़न का इन्तजार कर रहे थे।

'आदाब अर्ज है।' उन्होंने उठते हुए अज़ीज़न से कहा, 'मैं आज एक जरूरी काम से आप के पास आया हूँ।'

'फ़रमाइए। यह नाचीज किस काम आ सकती है?' अज़ीज़न ने सिद्दीकी साहब को गली मे अक्सर देखा था। आज तक किसी ने उनकी बुराई भी न की थी। अक्सर वे लोगों की मुश्किलात हल करते ही देखे गये थे।

सिद्दीकी साहब ने सिगरेट सुलगाया, बहुत सलीके से काड़ी ऐश ट्रे मे फेंकी और एक लम्बी साँस भरते हुए बोले, 'अज़ीज़न बी, अपने बारे में कुछ भी कहना बहुत फ़ोहश होता है, मगर मैं आज अपने दिल की भड़ास निकाल के ही जाऊँगा। इसी इरादे से आप के यहाँ आया हूँ। मुहल्ले के लिए मैंने क्या नही किया। गली मे पानी भर जाता था, सड़क तीन फ़ीट ऊँची करवा दी। किसी दारोगा की हिम्मत नही, मेरे मुहल्ले से किसी को बेकसूर पकड़ ले जाए।

सैकड़ों तो राशन कार्ड मैंने बनवा डाले, बीसियों लोगों को सीमेंट दिलाया, कैरोसिन के परमिट दिलाए, पुलिस की ज्यादतियों से कितनों को बचाया, मगर मेरी जाती जिन्दगी क्या है ? एक खला है जिसमे जी रहा हूँ। एक अर्से से सोच रहा था, अज़ीजन बी के पास जा कर अपना सीना चाक कर दूँ। आप एक-फनकार ही नहीं, अज़ीम औरत हैं। मुझे आप के चेहरे पर अपनी मरहूम अम्मी के ताअस्सुर नजर आते हैं। मैं यतीम हूँ, बदकिस्मत हूँ, हालात का मारा हुआ हूँ, मगर एक बेहतर इन्सान बनने की हर वक्त कोशिश करता हूँ।'

अज़ीजन बहुत अच्छे मूड में थी। इतने सारे नोट यकायक पाकर उसका मन बेहद उदार हो गया था। श्यामसुन्दर मुख्यमंत्री हो गया तो बीसियों काम आयेगा।

'सिद्दीकी साहब, आप जज़्बाती हो रहे है। मेरे दिल में आप के लिए बहुत इज्ज़त है। मैं आप के किस काम आ सकती हूँ ?'

'आप जानना चाहती हैं तो बताए देता हूँ। चुनाव सर पर आ रहे है। श्यामसुन्दरजी आप को बहुत मानते हैं। चाह लेंगे तो पार्टी का टिकट दिला देंगे।' सिद्दीकी साहब कुर्सी से उतर कर ज़मीन पर बैठ गये, 'आप के एक इशारे से मेरी जिन्दगी को किनारा मिल जाएगा। मैं भ्रष्ट नही हूँ। इतना अच्छा काम करूँगा कि अगली बार लोक सभा के लिए आप खुद मेरा नाम सुझाएँगी।'

अज़ीजन को समझते देर न लगी कि सिद्दीकी साहब ने श्यामसुन्दरजी को उसका ज़ीना चढ़ते या उतरते देख लिया है, बोली, 'अबकी श्यामसुन्दरजी से मुलाकात हुई तो मैं आप का ज़िक्र करूँगी।'

सिद्दीकी साहब बेताब हो गये, 'जाने उनसे अब कब आप की मुलाकात होगी। उनके नाम एक रुक्का लिख दीजिए और बराये मेहरबानी फ़ोन पर पूरी बात समझा दीजिए। आप इतना भर कर दें, बाकी मैं संभाल लूंगा।'

सिद्दीकी साहब कुछ इस प्रकार अज़ीजन की तरफ देखने लगे जैसे कोई अपराधी न्यायमूर्ति की तरफ देखता है।

'इतना काम मैं कर दूंगी। उम्मीद है श्यामसुन्दरजी मेरी बात टालेंगे नहीं।' अज़ीजन ने कहा, "आपने पहले कभी ज़िक्र किया होता।"

सिद्दीकी साहब भाव विभोर हो गये, बोले, 'मुन्नी कहाँ है ?' मुन्नी से उनका अभिप्राय गुल से था। अज़ीजन के आश्वासन से वे इतनी प्रेरणा पा गये कि गुल की 'स्टडी' में चले गये, 'मुन्नी, मैं तुम्हारे भाई होने का दर्जा तो अभी हासिल नही कर पाया, मगर याद रखना तुम्हारे लिए और अम्माँ के लिए मेरी जान हाज़िर है। ज़िन्दगी में कभी मेरी ज़रूरत महसूस हो तो तकल्लुफ़ न करना।

सगा भाई भी क्या करेगा, जो मैं तुम्हारे लिए कर गुजरूँगा। खुदा हाफ़िज।'

मुन्नी सिद्दीकी साहब की बात समझने की कोशिश करती, इससे पहले ही वे जीना उतर गये। नीचे नफ़ीस खड़ा था, सिद्दीकी साहब ने सदरी की जेब से एक नोट निकाला और उसकी नजर कर दिया। यकायक दस का नोट पाकर नफ़ीस की बाछें खिल गयीं। अभी कुछ देर पहले अजीजन ने भी एक नोट थमाया था। कई दिनों से वह नये मोजे खरीदने के चक्कर में था, मगर जुगाड़ नहीं कर पा रहा था।

श्यामसुन्दरजी के अजीजन के यहाँ आने से मुहल्ले में अजीजन का रुतबा आकाश छूने लगा। सुबह अजीजन पान लगा रही थी कि उसने अचानक नफ़ीस को हिदायत दी कि प्रेम जौनपुरी को बुला लाए। अभी उसने पान मुँह में भी न रखा था कि प्रेम जौनपुरी हाजिर हो गया।

'क्या जीने पर ही बैठे थे?'

'जीने पर कह लीजिए या अपने कदमों पर।'

'मुझे यह सख्त नापसन्द है।'

'मुझे यही सख्त पसन्द है।' प्रेम जौनपुरी बोला।

'तुम्हें मालूम होना चाहिये कि बिटिया बड़ी हो रही है। तुम्हारे चेले चाँटे भद्दी हरकतें कर रहे हैं। उन्हें अगर यह गुमान है कि वे मन्त्री के बेटे हैं तो गलतफ़हमी में न रहें। मैं चाह लूँगी तो मंत्रीजी भी सड़क पर नजर आएँगे।'

अजीजन देर तक प्रेम जौनपुरी से अकेले में बातचीत करती रही। गुल अपने कमरे से सुन रही थी। बीच-बीच में अम्मा की उत्तेजित आवाज़ सुनायी देती, जिसका प्रेम जौनपुरी धीरे-धीरे जवाब देता। अचानक जाने क्या हुआ कि अम्मा जोर-जोर से चिल्लाने लगी। वे रो रही थीं। गुल से यह माहौल बरदाश्त न हुआ। उसे अपने ऊपर बहुत क्रोध आया—वही पूरे फ़साद की जड़ है। अम्मी जरा जरा सी बात से इतना परेशान हो उठतीं कि गुल का जी होता, दुपट्टे में फन्दा लगा कर पंखे से लटक जाये।

सहसा गुल दरवाजा धकेल कर अम्मा के कमरे में घुस आयी। उसके पीछे किवाड़ देर तक फड़फड़ाते रहे। गुल को देख कर अम्मा ने मुँह ढाँप लिया। पास ही प्रेम जौनपुरी गर्दन झुकाये टाँगों के बीच सिगरेट का धुआँ उगल रहा था।

"आपको यहाँ आने की किसने इजाजत दी?" गुल ने तुनक कर प्रेम-जौनपुरी से पूछा।

प्रेम जौनपुरी सर झुकाये उसी तरह बैठा रहा। अम्मा ने आँखें साफ़ कीं

और बोली, "बैठ जाओ बेटी।"

गुल अम्मा के पास ही बैठ गयी और अम्मा को बच्चों की तरह पुचकारने लगी। उसकी इच्छा हो रही थी, रसोई से मिर्च लाकर उस्ताद जौनपुरी के चेहरे पर धूल की तरह झोंक दे। जाने उसने अम्मा से क्या कह दिया था जो वह इस कदर परेशान हो गयी थी।

"मुझे डर लगा रहता है", अम्मा आँसू पोंछते हुए बोली, "कहीं मेरी बिटिया के लिए भी तो वक्त वैसा ही षड्यन्त्र नहीं रच रहा?"

अज़ीज़न की दास्तान सुनकर प्रेम जौनपुरी की आँखें भी नम थीं। सहसा वह अम्मा के क़दमों पर गिर पड़ा और बच्चों की तरह सुबकने लगा। गुल नादान नहीं थी। चीज़ें गुल की समझ में आ रही थीं।

न जाने अम्मा ने कहाँ से प्राप्त करके बाबू की एक तस्वीर दीवार से लटका रखी थी। गुल ने सोचा वह अम्मा की जगह होती तो इस शख़्स की सपने में भी सूरत न देखती। मगर अम्मा के लिए यह तस्वीर एक कमज़ोरी थी। गुल ने दीवार पर लटक रही तस्वीर की तरफ़ बहुत घृणा से देखा, जिसे अक्सर उसकी अम्मा फूल-माला चढ़ाया करती थी।

"अम्मा मैं किसी रोज यह तस्वीर फाड कर फेंक दूँगी। तुम इस तस्वीर को देखती रहोगी, तुम्हारा घाव कभी नहीं भरेगा।"

यह तस्वीर, लोगों का कहना है, महेन्द्रगढ़ के राजा की थी। गुल जानती है, उसके होश में अम्मा ने राजा साहब के यहाँ से आये तोहफ़े और मनीआर्डर कई बार लौटाये थे। मगर अम्मा की कौन-सी ट्रेजिडी थी कि वह हर क्षण इसी शख़्स के साथ अपने को जोड़ कर जिन्दा रहना चाहती थी। शायद यह अम्मा का अकेलापन था, जो हर बार, हर क्षण उन्हें इसी तस्वीर से ला जोड़ता।

"जाओ भैया के लिए चाय लाओ।" अम्मा ने प्रेम जौनपुरी को अपने कदमों पर से उठाया और अपने पास ही सोफ़े पर बैठने को कहा। प्रेम जौनपुरी की सूरत से लग रहा था, वह कई हफ़्तों से बीमार है या नहाया नहीं।

गुल चाय बनाने रसोई में घुस गयी। गुल को लगा वह युनिवर्सिटी की एक औसत लड़की नहीं है। उसके संघर्ष भिन्न हैं। उसकी अम्मा की पूरी ट्रेजिडी उसे लग रहा था, अम्मा की ही ट्रेजिडी नहीं, उसकी भी है। कपिल, प्रेम जौनपुरी और श्यामसुन्दर आदि अनेक लोग भेड़िये की तरह उस पर झपटने को आमादा थे। इस लिहाज़ से गुल अम्मा से भी अधिक निरीह और अकेली थी।

चाय की केतली में पानी ज़रूरत से ज्यादा उबल चुका था, मगर गुल आँसू बहाती एक कोने में खड़ी किसी वीरान जंगल में खो गयी थी। वह अचानक अपने को बहुत भयभीत और असुरक्षित पा रही थी। उसे लग रहा

था कि वह जैसे किसी पर्वत के शिखर पर खड़ी है और अभी उसे कोई इतने जोर से धक्का देगा कि वह सदियो तक गहरी खाई में गिरती चली जायेगी और अनन्तकाल तक गिरती रहेगी। गुल को मौत अपने बहुत करीब लगी। उतनी ही करीब जितना करीब स्टोव था या छत पर लटक रहा कुन्दा। एक तेज धार वाला ब्लेड। उसकी आँखो के सामने एक उपन्यास की नायिका का चित्र उभर रहा था, जिसने चुपचाप अपनी कलाई की एक नस ब्लेड से काट ली थी। खून के क़तरे यके बाद दीगरे नमूदार होते और लुढ़क जाते। पंक्तिबद्ध। एक-एक कर उभरते और क्षण भर इधर उधर बिल्ली की तरह देखकर लुढ़क जाते।

अम्मा ने गुल को आवाज दी। गुल दूसरी दुनिया मे थी, इस दुनिया से इतनी दूर कि अम्मा की आवाज़ भी उसे सुनायी न दी। गुल की जब आँखें खुली तो उसने देखा प्रेम जौनपुरी और अम्माँ उसकी आँखों पर ठण्डे पानी के छीटे दे रहे थे। गुल के आँखें खोलते ही प्रेम जौनपुरी जाने लगा, मगर अम्मा ने उसे खाने तक इन्तजार करने को कहा।

गुल को भूख नहीं थी। अम्मा को भूख नही थी। प्रेम जौनपुरी को भी भूख नही थी। खाना परोसा ज़रूर गया, मगर किसी ने छुआ नही।

प्रेम जौनपुरी जाते समय केवल एक वाक्य कह गया, 'बाईजी, अब मेरे किसी शागिर्द से आपको शिकायत न होगी। मेरी गजले भी अब कोई गुनाह नही करेंगी, मगर नफीस मुझे जीने पर नहीं रोकेगा ? शब-ए-ख़ैर !'

अम्मी ने प्रेम को विदा किया और लौट कर बिस्तर पर जा गिरी। दूसरे दिन सुबह नौ बजे अम्मी ने आँखें खोली तो गुल पायताने बैठी थी—

'अम्मी, हमें आज युनिवर्सिटी जाना है कि नहीं।'

'झट से तैयार हो जाओ।'

दरअसल एक पत्थर की वजनी सिल थी, जो प्रेम जौनपुरी कल ही पूरे परिवार के सिर से उठा कर शहर के गन्दे नाले में विसर्जित कर आया था।

नफ़ीस सीढ़ियो पर तैयार खड़ा था। उसे लग रहा था, घर मे कुछ घटित हो रहा है, मगर क्या घटित हो रहा है, उसे इसकी खबर नही थी। वह किसी से पूछ भी नही सकता था। अजीजन ही किसी रोज बतायेगी। वह जानता था।

नीचे कोई फ़कीर बहुत देर से 'अल्लाह भला करेगा' चिल्ला रहा था। अजीजन ने कल का बचा पूरा भोजन उस फ़कीर के हवाले कर दिया।

उस रोज प्रोफेसर शर्मा ने बहुत बेमन से लेक्चर दिया। वह गुल में इतना डूबा था कि अन्देशा हो रहा था कहीं गलती से उसके मुँह से आक्सीजन की जगह गुल का नाम न निकल जाये। गुल को यों उदास, निराश और हताश देख कर उसे बहुत बेचैनी हो रही थी। कहीं वह अपने को गुल की तमाम हताशाओं के लिए जिम्मेदार पा रहा था।

क्लास के बाद लड़कियों के झुण्ड ने प्रोफेसर शर्मा को घेर लिया :

'हम वी० सी० के पास एक डेपुटेशन लेकर जाना चाहती हैं।'

'जरूर जाइए।' प्रो० शर्मा ने बेनियाजी से कहा।

'हम आपकी राय भी लेना चाहती हैं।'

'जरूर।'

'गुल ने पूरी यूनिवर्सिटी का वातावरण दूषित कर दिया है।' शुभा ने कहा।

'यहाँ तवायफें पढ़ेंगी या हम !' सुधा बोली।

'महारानीजी सिर पर पल्ला लेकर यों चलती हैं जैसे कोई सती सावित्री चली जा रही हों।'

'मैं आप लोगों की क्या मदद कर सकता हूँ ?' प्रोफेसर शर्मा ने पूछा।

शर्मा को वहाँ उपस्थित तमाम लड़कियों से घिन आने लगी। उसे युनिवर्सिटी का पूरा माहौल सामन्तवादी लग रहा था। स्नातक लड़कियों की मानसिकता और आई० क्यू० हाईस्कूल की लड़कियों से बेहतर नहीं था।

'आप हमारा मैमो ड्राफ्ट कर दें।' शुभा ने कहा, 'मैंने अपने डैडी से भी जिक्र किया था, वह हमारी योजना से सहमत हैं।'

'कितना अच्छा हो आप लोग शुभा के डैडी से ही मैमो ड्राफ्ट करवायें।' शर्मा ने कहा 'अगर फ़िजिक्स में मेरी मदद चाहेंगी, मैं जरूर दूँगा।' यह कहते हुए वह चलने लगा।

'सर !' किसी लड़की ने आवाज दी। शर्मा रुक गया।

'आपको कल का किस्सा मालूम हुआ ?'

'न !' शर्मा ने सिर हिलाया।

सब लड़कियाँ होंठों में पल्लू दाब कर हँसने लगीं। कुछ लड़कियों को इतनी हँसी आयी कि प्रो० शर्मा की तरफ पीठ करके हँसने लगीं। प्रोफ़ेसर को लड़कियों का यह नाटक बहुत नागवार गुज़रा। अधिकांश लड़कियों के दाँत साफ नहीं थे। उसकी इच्छा हुई, मंजन के बारे में लड़कियों को कुछ जानकारी दे। उसका दृढ़ विश्वास था कि जो लड़की अपने दाँत साफ़ नहीं रख सकती उसे समाज की नाजुक स्थितियों पर बोलने का अधिकार नहीं मिलना चाहिए।

'आप लोग यह बताइये कि आप में से कितनी लड़कियाँ रोज़ दाँत साफ़ करती हैं।' वह कहता-कहता रुक गया, क्योंकि उसने तभी राधा को शुभा की कमर पर चिकोटी काटते देख लिया।

शर्मा सहसा गंभीर हो गया। शुभा ने कमर को झटका देकर कुछ इतनी बेबाक निगाहों से राधा और तुरत बाद शर्मा की तरफ देखा कि शर्मा को खेद होने लगा, उसने इतनी फूहड़ लडकी को अपने निकट क्यों आने दिया। वह चलने को हुआ कि झुण्ड में से आवाज़ आयी, 'सर, शुभा ही आपको किस्सा बता सकती है।'

उत्तेजना मे शुभा के गाल और कान सुर्ख हो गये। उसके गाल कुछ इस तरह से फड़कने लगे जैसे पशु मक्खी उड़ाने के लिए शरीर कँपकँपाते हैं।

'क्या बात है शुभा ?' प्रोफेसर ने पूछा।

'राधा बताएगी।' शुभा बोली।

'रजनी बताएगी।' राधा बोली।

'मैं तो नही, गीता बता सकती है।'

शर्मा उखड़ गया, बोला, 'यह सब मुझे सख्त नापसन्द है। आप लोग अपना और मेरा समय नष्ट कर रही हैं।'

इतने में बहुत-सी लड़कियाँ कुहनियो से शुभा को छूने लगी।

'सर इसी ने सब को बताया है। इसके भाई ने इसे बताया था।'

'आखिर कुछ बात भी तो बताओ।'

शर्मा को लग रहा था, ज़रूर गुल के बारे में कोई गलीज़ बात है। उसकी उत्सुकता बढ़ रही थी, उसने शुभा से कहा, 'शुभा, अगर तुम्हें मालूम है तो तुम्ही बताओ।'

शुभा ने रूमाल दाँतो में ले लिया और बोली, 'सर गोपी ने बताया कि होस्टल में कल खी ह ह ह...' अचानक वह हँसते हँसते दुहरी हो गयी।

'पगली हो क्या ?' शर्मा बोला।

'सर होस्टल में एक लड़के ने खीह ह ह...'

'क्या होस्टल मे कल किसी लड़के ने आत्महत्या कर ली ?'

लड़कियाँ और भी ज़ोर से हँसी। प्रो० शर्मा जो थोड़ी देर पहले उखड़ रहा था, अचानक इस प्रसंग में दिलचस्पी लेने लगा। उसने शुभा से पूछा, 'बताती क्यों नही, क्या हुआ ?'

'सर वह बच गया।'

'कौन ?'

'कपिल।' शुभा ने मुंह में पल्लू ठूँसते हुए बताया, 'कल रात उनने

इतनी ठंड में पूरे कपड़े उतार दिये और सीने पर जगह-जगह गुलबदन का नाम लिख कर खुली छत पर गजलें गाता रहा। उसकी देखादेखी एक दूसरे लड़के ने भी यही किया। आधी रात को दोनों को निमोनिया हो गया। भैया ने बताया, कल से दोनो अस्पताल में भरती हैं।'

'ओह तो यह बात है।' प्रोफ़ेसर शर्मा ने पूछा, 'गुल को मालूम हुआ?'

'सर गीता ने उसे बता दिया, वह तुरत चल दी।'

'अस्पताल गयी होगी।' गीता बोली।

'नही सर, थाने।' शुभा को फिर हँसी का दौरा पड़ा।

'सर यूनिवर्सिटी का वातावरण बहुत दूषित हो रहा है।' किसी लड़की की आवाज सुनायी दी।

'जरूर।' प्रोफ़ेसर शर्मा ने कहा, 'डी० डी० टी० का छिड़काव किया जाना चाहिए।'

'सर मच्छर तो फिर भी रहेगे।'

'मच्छर रहेंगे, मगर मलेरिया नही। इस समय जो मलेरिया फैला है वह तो शान्त हो जायेगा।' शर्मा बोला।

शर्मा देर तक गुल को बुलवाने की योजना बनाता रहा। आखिर वह अपने कमरे में गया और चपरासी को इशारे से पास बुलाया। वह उससे कहना चाहता था गुल को क्लास से बुला लाये, मगर उसने जेब से एक रुपया निकाल कर उसे थमा दिया, 'बद्री, जरा चार ठो बनारसी पान तो लगवा लाओ,' शर्मा कमरे से बाहर निकल कर टहलने लगा। दिल्ली जाने मे अभी एक सप्ताह का समय था। उसने क्लर्क से एक नोटिस टंकित करवाया और तुरत नोटिस बोर्ड पर लगाने का आदेश दिया कि दिल्ली जाने वाला ग्रुप शनिवार को दो बजे उससे सम्पर्क स्थापित करे।

बद्री पान लेकर आया तो प्रोफेसर शर्मा कमरे में नही था। प्रोफ़ेसर पुस्तकालय की तरफ निकल गया था। पुस्तकालय के बाहर एक बेंच पर नफ़ीस बैठा था। शर्मा का दिल धक से रह गया और वह उससे बिना आँख मिलाये, लैब की ओर चल दिया। आज उसे प्रेक्टिकल लेना था, मगर उसमें अभी पौन घण्टा बाकी था। शर्मा टहलता हुआ डॉ० मुकर्जी के कमरे में घुस गया। डॉ० मुकर्जी शायद क्लास ले रहे थे। उनका चपरासी ऊँघ रहा था। उसने उसे जगाया और बोला, 'जल्दी से एक कप चाय तैयार करो।' चपरासी धीरे-धीरे बाथरूम में जाकर केतली धोने लगा। शर्मा कुछ देर उसे देखता

रहा, पानी उबलने लगा तो बोला, 'देखो अभी पत्ती मत डालना। मैं जरा बॉटनी की तरफ़ जा रहा हूँ।' और वह बॉटनी विभाग की तरफ़ मुड़ गया। प्रोफ़ेसर को कहीं चैन नहीं मिल रहा था। उसकी इच्छा हुई नफ़ीस से पूछे गुल कहाँ है, मगर नफ़ीस की सूरत पर उद्दण्ड कठोरता को देख कर उसे दहशत होने लगी।

आखिर उसे विश्वास हो गया कि गुल पुस्तकालय में ही है, वर्ना नफ़ीस के वहाँ बैठने का क्या तुक हो सकता था? वह पिछले दरवाजे से पुस्तकालय में घुस गया। उसकी आँखें आज किसी किताब को नहीं ढूँढ़ रही थी। उसकी आँखें गुल को खोज निकालना चाहती थीं। उसने पुस्तकालय में दो-एक चक्कर लगाये, गुल कहीं दिखायी न दी। गुल के अलावा बाकी तमाम लड़कियाँ पुस्तकालय में थीं। वह पुस्तकालयाध्यक्ष के कमरे में घुस गया। पुस्तकालयाध्यक्ष की मेज पर किताबों का अम्बार लगा था। वह वहीं उनके सामने बैठ गया और पुस्तकों के बारे में बातचीत करने लगा! वह बहुत देर तक पुस्तकें उलटता-पुलटता रहा।

'कोई नयी किताब आप मँगवाना चाहें तो बताइए।' पुस्तकालयाध्यक्ष ने पूछा।

'कोई अच्छा-सा दीवाने ग़ालिब दिलवाइए।'

पुस्तकालयाध्यक्ष मुस्कराया कि भौतिक विज्ञान का प्रोफ़ेसर और 'दीवाने ग़ालिब' पढ़ने को बेताब।

'ख़ैरियत तो है शर्मा जी?'

'दरअसल ट्रूप ले जाने की जिम्मेदारी मुझ पर है। मैं चाहता हूँ इस बार भी ट्रॉफी लेकर आऊँ। किसी भी आइटम में कोई कमी न रहनी चाहिए।'

'आप उर्दू पढ़ लेते हैं?'

'हिन्दी में कोई अच्छा दीवाने ग़ालिब नहीं है आपके पास?'

'हैं, कई हैं। मुझे जाती तौर पर उम्र का 'ग़ालिब उम्र' पसन्द है मगर वह शायद इशूड होगा।'

'बहरहाल कोई दूसरा दिलवा दीजिए।'

पुस्तकालयाध्यक्ष ने अपने सहयोगी को अन्दर भेजा और वह एक निहायत सादा 'ग़ालिब मेड इज़ी किस्म' का दीवान ले आया। शर्मा ने उलट-पुलट कर देखा और लैब की तरफ़ चल दिया। प्रेक्टिकल में उसका मन न लगा। उसने गंधक की पहचान पर दो-एक परीक्षण करवाये और श्यामपट पर बड़े बेमन से सूत्र लिखने लगा।

शर्मा ने प्रेक्टिकल का पूरा समय किसी तरह इसी में बिता दिया। उसकी इच्छा हो रही थी कि वह तुरन्त स्कूटर उठा कर गुल के यहाँ चला जाये, मगर यह उससे संभव नहीं था। वह ज्यों ही लैब से निकला, उसने देखा पर्दे से ढँका एक रिक्शा जा रहा था। पीछे-पीछे साइकिल पर नफ़ीस। शर्मा रिक्शा रुकवाना चाहता था, मगर उसके पैर जड़ हो गये। वह बहुत देर तक वहीं खड़ा रहा। रिक्शा नजर से ओझल हो गया तो वह बहुत सुस्त कदमों से अपने विभाग की ओर चल पड़ा।

शर्मा के सामने पहाड़-सा दिन मुँह बाये खड़ा था और एक लम्बी काली रात। उसने घर पहुँच कर खाना खाया और लेट गया। कुछ न सूझा तो उसने एक डायरी उठायी और गुल को खत लिखने बैठ गया:

प्रिय गुल,

बहुत दिनों से तुम्हें लिखने की सोच रहा था। लगता है आज तुमसे बात करने में कामयाब हो जाऊँगा।

मैं शुरू से ही आर्य समाजी संस्कारों में पला हूँ। मेरे पिता एक स्कूल के अध्यापक थे। मेरा बड़ा भाई अमरीका में है। आज भी वह अण्डा-गोश्त नहीं खाता। जाने क्यों, इच्छा होती रहती है कि तुम्हारे समक्ष मेरी पूरी शख्सियत एक खुली किताब की तरह पड़ी रहे। कह नहीं सकता, तुम इस बात को किस रोशनी में लोगी, तुम्हारी अम्मा क्या सोचेंगी। मुझे तो वह बहुत प्यारी लगीं। न जाने किन हालात ने उन्हें जिन्दगी में इस पेशे में डाल दिया है। मैं इसके लिए एक व्यक्ति को नहीं, पूरे समाज को जिम्मेदार ठहराता हूँ। मगर तुम्हारी माँ कलाकार हैं। कला की साक्षात प्रतिमा।

मुझे नहीं मालूम तुम्हारे मन में शौहर का क्या तसव्वुर है, जिन्दगी से तुम्हारी क्या अपेक्षाएँ हैं। मेरे बारे में तुम्हारी क्या राय है? मैं निपट अन्धकार में हूँ। मगर मैं जानना चाहता हूँ। मैं लगातार तनाव में नहीं रह सकता। तुम क्या मुझे अपने साथ थोड़ा समय दोगी? मैं तुम्हें पूरी तरह से जानना चाहता हूँ।

मैं जब से तुम्हारे यहाँ से लौटा हूँ, तुम्हारी छवि मेरी आँखों में बस गयी है। तुम्हारा खयाल आते ही तुम्हारे गेसुओं की खुशबू में डूब जाता हूँ। मुझे शायरी नहीं आती, मेरा विषय भी नहीं है, मगर मैं शायरी में सराबोर हो गया हूँ।

तुम मेरे लिए क्या कर सकती हो? कुछ नहीं कर सकती तो भी मुझे कम-से-कम इस तनाव से मुक्त कर दो।...

पत्र लिखते-लिखते शर्मा का मूड अच्छा हो गया। उसे लग रहा था वह गुल को घण्टों खत लिख सकता है। मगर तभी एक व्यवधान आ गया। गोपाल ने बताया—जीप वाली लड़की आयी है। यानी शुभा।

. शर्मा की शुभा से मिलने की इच्छा नहीं थी। शुभा से उसे खास तरह की वितृष्णा हो गयी थी कि जब देखो साये की तरह पीछे लगी रहती है।

अगले ही क्षण पर्दा उठा कर शुभा अन्दर चली आयी। शुभा सुन्दर थी। सभ्य थी। अच्छे खानदान की लाडली बिटिया थी। मगर शुभा के व्यक्तित्व में एक ऐसा फूहड़पन था, जिसे शर्मा सहन ही न कर पाता था। शर्मा ने शुभा को बैठने के लिए कहा और खुद भी बेमन से एक कुर्सी खींच कर बैठ गया।

'मैं आपको निमंत्रण देने आयी हूँ ?'

'क्यों, क्या कहीं शादी तय हो गयी ?'

शुभा सुर्ख हो गयी, बोली, 'आप बहुत खराब है।'

'इसकी ऐसी हरकतों से मुझे वितृष्णा है।' शर्मा मन ही मन बुदबुदाया।

शर्मा ने गोपाल को चाय लाने के लिए कहा तो शुभा खुद उठ कर चली गयी, 'मैं बनाऊँगी।' उसने जाते-जाते पलट कर कहा, 'कब तक गोपाल की चाय पीते रहेंगे ?'

'बेवकूफ लड़की।' शर्मा उठ कर बाहर बरामदे में चला गया।

शुभा एक अतिरिक्त मजिस्ट्रेट की इकलौती लड़की थी। अक्सर कक्षा मे शर्मा की तरफ टकटकी लगा कर कुछ इस तरह देखती कि शर्मा झेंपने लगता। कई बार अपने घर बुला कर खाना खिला चुकी थी। शुरू में उसे लेकर शर्मा थोड़ा भावुक भी रहा, मगर शुभा उसकी यह दीन हालत आज तक नहीं कर पायी थी, जो गुल ने इधर कर रखी है। शर्मा का बस चले तो वह दिन भर घर मे गुल के ही खयालों में खोया हुआ पड़ा रहे। उसके लिए फ़कीर हो जाए। प्रेम जौनपुरी की तरह दाढ़ी बढ़ा कर कुर्ता-पाजामा पहन ले, या शराब में आकण्ठ डूब जाये। मगर इसमें से कोई भी चीज उसे पसन्द नहीं थी—दाढ़ी न शराब।

शर्मा जिस मकान में रहता है, वह शुभा के पिता ने उसके नाम एलॉट कराया था। बड़े-बड़े चार बेड रूम—हर बेडरूम के साथ लकड़ी के कमोड वाले बाथरूम। बाहर लॉन, अन्दर किचन गार्डेन। मगर शर्मा ने अभी तक एक ही बेडरूम खोला है। वह है और गोपाल। गोपाल भी उसके यहाँ एक नौकर की तरह नहीं, छोटे भाई की तरह रहता है। गोपाल प्रोफ़ेसर की हर जरूरत समझता है। शर्मा की पसन्द नापसन्द को समझता है। गुल को घर की कोई चिन्ता न करनी पड़ेगी। दोनों के लिए गोपाल पर्याप्त है। प्रोफ़ेसर को

एकान्त की ज़रूरत होती, तो गोपाल उसे निपट अकेला छोड़ देता। शर्मा अकेलापन महसूस करता तो वह उसे बातों में उलझा लेता। दक्षिण भारतीय लोकगीत सुनाते हुए उसे लोकगीतों की आत्मीय दुनिया में ले जाता। उत्तर भारत में वह नौटंकी करना सीख गया है—प्रोफेसर बने पूरी नौटंकी सुना देता।

शर्मा ने तय किया कि वह अब शुभा से ज़रा रुख ई से पेश आयेगा। मगर रुखाई से पेश आना उसके स्वभाव में ही नहीं था। शुभा के पिता के कई एहसान उस पर हैं। मकान के अलावा कुकिंग गैस उन्होंने दिलवायी थी। यही नहीं, वे मदद न करते तो उसे पाँच बरस स्कूटर न मिलता। यह दूसरी बात है उसे स्कूटर पर चढ़ना पसन्द नहीं। उसके सहकर्मी उससे मज़ाक किया करते थे कि क्या वह अपने दहेज़ के लिए स्कूटर को सहेज कर रखे है?

शुभा बड़े सलीके से चाय ले आयी और तिपाई पर रख कर चाय बनाने लगी।

'सनिवार शाम को पाँच बजे आपको हमारे यहाँ आना है और आप खाना भी हमारे साथ खायेंगे।' शुभा बोली।

'यह तो मालूम होना चाहिए कि सनिवार को क्या है?'

'आपका इण्टरव्यू है।'

'मगर मैंने तो कहीं एप्लाई नहीं कर रखा।'

'पापा कल एप्लाई करेंगे।' शुभा शर्माते हुए मुस्करायी।

'मैं समझ नहीं पाया।'

'पापा समझा देंगे।' वह प्याले में अपना चेहरा देखते हुए बोली, जैसे तेल के कटोरे में अपना चेहरा देख कर शनि देवता से कोई मन्नत माँग रही हो।

शर्मा का माथा ठनका। उसे तुरन्त याद आया, शनिवार को उसकी टूप के साथ मीटिंग है। उसने कहा, 'देखो, शुभा, इस शनि को तो मैं व्यस्त हूँ। 'लीडर आफ द कांटिजेंट' के नाते मेरी एक ज़रूरी मीटिंग है। अगले शनिवार मैं दिल्ली रहूँगा। दिल्ली से लौट कर ज़रूर हाज़िर हो जाऊँगा।'

शुभा एकदम मुर्झा गयी। बोली, 'मैं रविवार के लिए पापा से कहूँगी। मगर मुझे मालूम नहीं, रविवार को वे खाली हैं या नहीं।'

'मैं दिल्ली से लौट कर उनसे ज़रूर मिल लूँगा।'

'दिल्ली में आप कितने दिन रहेंगे।'

'लगभग दसेक दिन। दूसरे यहाँ से निकलना ही कब हो पाता है। सोचता हूँ आगरा-फतेहपुर सीकरी से होते हुए हम लोग लौटें।'

शुभा को शर्मा की बात बहुत उत्साहित करने वाली नहीं लगी। जाने क्यों उसके दिमाग में यकायक गुल कौंध गयी। टूर का सबसे बड़ा आकर्षण वही मानी जा रही थी। मगर दूसरे ही क्षण उसने अपना सिर झटक दिया,

शर्मा जी का इतना पतन नहीं हो सकता।

गुल तमाम लड़कियों की ईर्ष्या का केन्द्र थी। तमाम लड़के गुल के पीछे शैदाई थे। मगर यह तो गुल का कमाल था कि कोई भी लड़का अभी तक उसके नज़दीक नहीं पहुँच पाया था। गुल जब विश्वविद्यालय से लौटती, उसके रिक्शे के पीछे सायकिलों का हुजूम होता। चूँकि गुल का रिक्शावाला और नफ़ीस बहुत खूँखार किस्म के लोग थे, इसलिए आज तक कोई लड़का गुस्ताखी नहीं कर पाया था। लड़के अब एक मातमी जुलूस की तरह चुपचाप गुल के रिक्शे के पीछे सायकिलें दौड़ाते, जैसे किसी शवयात्रा में चल रहे हों।

शुभा ने कहा, 'गुल जैसी लड़कियों ने विश्वविद्यालय का वातावरण बहुत दूषित कर रखा है।'

'कैसे ?'

'आप किसी दिन खुद देखिए। देवीजी का रिक्शा निकलता है कि सीता-जी की सवारी। आवारा लड़कों की पूरी जमात पीछे हो लेती है।'

'किसी दिन देखूँगा।'

'गुल भी दिल्ली जा रही है ?'

'जाना तो चाहिए।'

शुभा हँसी, 'कैसा वक्त आ गया है। गानेवालियाँ युनिवर्सिटी में पढ़ने लगी हैं।'

'वह बहुत टेलेन्टेड लड़की है। पिछले वर्ष भी उसने यूनिवर्सिटी का नाम रोशन किया था।'

'हुँह !' शुभा ने ओंठ बिचकाये। शुभा का चेहरा बहुत विकृत हो गया, 'मैं वाइस चांसलर होती तो उसे तुरन्त रस्टीकेट कर देती।'

'खुदा न करे तुम वाइस चासलर हो जाओ।' शर्मा बोला, 'समाज के हर वर्ग को शिक्षा का समान अधिकार मिलना चाहिए।'

'हुँह।' शुभा बोली, 'तब तो संसद में भी गानेवालियों का कोटा होना चाहिए !'

'समाज के हर वर्ग के लोगों का प्रतिनिधित्व होना ही चाहिए।'

शुभा को शर्मा के विचारों से बहुत निराशा हुई। उसने और अधिक बहस में पड़ना मुनासिब न समझा और यह कह कर खड़ी हो गयी, 'हमारी तो समझ में ये बातें आती ही नहीं ! न जाने मुल्क किधर जा रहा है ?'

'मुल्क गुलामी की तरफ तो नहीं ही जा रहा।' शर्मा बोला, 'हम लोगों को बदले हुए हालात में ही सोचना चाहिए। जो लोग ऐसा नहीं सोचते हैं, वे पिछड़ जाते हैं और राष्ट्र आगे निकल जाता है। ऐसे लोगों से है

एकान्त की ज़रूरत होती, तो गोपाल उसे निपट अकेला छोड़ देता। शर्मा अकेलापन महसूस करता तो वह उसे बातों में उलझा लेता। दक्षिण भारतीय लोकगीत सुनाते हुए उसे लोकगीतों की आत्मीय दुनिया में ले जाता। उत्तर भारत में वह नौटंकी करना सीख गया है—प्रोफ़ेसर को पूरी नौटंकी सुना देता।

शर्मा ने तय किया कि वह अब शुभा से ज़रा रुखाई से पेश आयेगा। मगर रुखाई से पेश आना उसके स्वभाव मे ही नहीं था। शुभा के पिता के कई एहसान उस पर है। मकान के अलावा कुकिंग गैस उन्होंने दिलवायी थी। यही नही, वे मदद न करते तो उसे पाँच बरस स्कूटर न मिलता। यह दूसरी बात है उसे स्कूटर पर चढ़ना पसन्द नही। उसके सहकर्मी उससे मज़ाक किया करते थे कि क्या वह अपने दहेज के लिए स्कूटर को सहेज कर रखे है ?

शुभा बड़े सलीके से चाय ले आयी और तिपाई पर रख कर चाय बनाने लगी।

'सनिवार शाम को पांच बजे आपको हमारे यहां आना है और आप खाना भी हमारे साथ खायेंगे।' शुभा बोली।

'यह तो मालूम होना चाहिए कि सनिवार को क्या है ?

'आपका इण्टरव्यू है।'

'मगर मैंने तो कहीं एप्लाई नही कर रखा।'

'पापा कल एप्लाई करेंगे।' शुभा शर्माते हुए मुस्करायी।

'मैं समझ नही पाया।'

'पापा समझा देंगे।' वह प्याले में अपना चेहरा देखते हुए बोली, जैसे तेल के कटोरे मे अपना चेहरा देख कर शनि देवता से कोई मन्नत मांग रही हो।

शर्मा का माथा ठनका। उसे तुरन्त याद आया, शनिवार को उसकी ट्रुप के साथ मीटिंग है। उसने कहा, 'देखो, शुभा, इस शनि को तो मैं व्यस्त हूँ। 'लीडर आफ द काटिंजेंट' के नाते मेरी एक जरूरी मीटिंग है। अगले शनिवार मैं दिल्ली रहूँगा। दिल्ली से लौट कर ज़रूर हाज़िर हो जाऊँगा।'

शुभा एकदम मुर्झा गयी। बोली, 'मैं रविवार के लिए पापा से कहूँगी। मगर मुझे मालूम नही, रविवार को वे खाली हैं या नही ?

'मैं दिल्ली से लौट कर उनसे ज़रूर मिल लूँगा।'

'दिल्ली में आप कितने दिन रहेंगे।'

'लगभग दसेक दिन। दूसरे यहाँ से निकलना ही कब हो पाता है। सोचता हूँ आगरा-फतेहपुर सीकरी से होते हुए हम लोग लौटें।'

शुभा को शर्मा की बात बहुत उत्साहित करने वाली नहीं लगी। जाने क्यों उसके दिमाग में यकायक गुल कौंध गयी। ट्रुप का सबसे बड़ा आकर्षण वही मानी जा रही थी। मगर दूसरे ही क्षण उसने अपना सिर झटक दिया,

शर्मा जी का इतना पतन नहीं हो सकता।

गुल तमाम लड़कियों की ईर्ष्या का केन्द्र थी। तमाम लड़के गुल के पीछे शैदाई थे। मगर यह तो गुल का कमाल था कि कोई भी लड़का अभी तक उसके नज़दीक नहीं पहुँच पाया था। गुल जब विश्वविद्यालय से लौटती, उसके रिक्शे के पीछे सायकिलों का हुजूम होता। चूँकि गुल का रिक्शावाला और नफ़ीस बहुत खूँखार किस्म के लोग थे, इसलिए आज तक कोई लड़का गुस्ताखी नहीं कर पाया था। लड़के अब एक मातमी जुलूस की तरह चुपचाप गुल के रिक्शे के पीछे सायकिलें दौड़ाते, जैसे किसी शवयात्रा में चल रहे हों।

शुभा ने कहा, 'गुल जैसी लड़कियों ने विश्वविद्यालय का वातावरण बहुत दूषित कर रखा है।'

'कैसे ?'

'आप किसी दिन खुद देखिए। देवीजी का रिक्शा निकलता है कि सीता-जी की सवारी। आवारा लड़कों की पूरी जमात पीछे हो लेती है।'

'किसी दिन देखूंगा।'

'गुल भी दिल्ली जा रही है ?'

'जाना तो चाहिए।'

शुभा हँसी, 'कैसा वक्त आ गया है। गानेवालियाँ युनिवर्सिटी में पढ़ने लगी हैं।'

'वह बहुत टेलेन्टेड लड़की है। पिछले वर्ष भी उसने यूनिवर्सिटी का नाम रोशन किया था।'

'हुँह !' शुभा ने ओठ बिचकाये। शुभा का चेहरा बहुत विकृत हो गया, 'मैं वाइस चांसलर होती तो उसे तुरन्त रस्टीकेट कर देती।'

'खुदा न करे तुम वाइस चांसलर हो जाओ।' शर्मा बोला, 'समाज के हर वर्ग को शिक्षा का समान अधिकार मिलना चाहिए।'

'हुँह।' शुभा बोली, 'तब तो संसद में भी गानेवालियों का कोटा होना चाहिए !'

'समाज के हर वर्ग के लोगों का प्रतिनिधित्व होना ही चाहिए।'

शुभा को शर्मा के विचारों से बहुत निराशा हुई। उसने और अधिक बहस में पड़ना मुनासिब न समझा और यह कह कर खड़ी हो गयी, 'हमारी तो समझ में ये बातें आती ही नहीं ! न जाने मुल्क किधर जा रहा है ?'

'मुल्क गुलामी की तरफ तो नहीं ही जा रहा।' शर्मा बोला, 'हम लोगों को बदले हुए हालात में ही सोचना चाहिए। जो लोग ऐसा नहीं सोच पाते हैं, वे पिछड़ जाते हैं और राष्ट्र आगे निकल जाता है। ऐसे लोगों से ही सुनने

एकान्त की जरूरत होती, तो गोपाल उसे निपट अकेला छोड़ देता। शर्मा अकेलापन महसूस करता तो वह उसे बातों में उलझा लेता। दक्षिण भारतीय लोकगीत सुनाते हुए उसे लोकगीतों की आत्मीय दुनिया में ले जाता। उत्तर भारत में वह नौटंकी करना सीख गया है—प्रोफेसर को पूरी नौटंकी सुना देता।

शर्मा ने तय किया कि वह अब शुभा से ज़रा रुखाई से पेश आयेगा। मगर रुखाई से पेश आना उसके स्वभाव में ही नहीं था। शुभा के पिता के कई एहसान उस पर हैं। मकान के अलावा कुकिंग गैस उन्होंने दिलवायी थी। यही नहीं, वे मदद न करते तो उसे पाँच बरस स्कूटर न मिलता। यह दूसरी बात है उसे स्कूटर पर चढ़ना पसन्द नहीं। उसके सहकर्मी उससे मज़ाक किया करते थे कि क्या वह अपने दहेज के लिए स्कूटर को सहेज कर रखे है?

शुभा बड़े सलीके से चाय ले आयी और तिपाई पर रख कर चाय बनाने लगी।

'सनिवार शाम को पाँच बजे आपको हमारे यहाँ आना है और आप खाना भी हमारे साथ खायेंगे।' शुभा बोली।

'यह तो मालूम होना चाहिए कि सनिवार को क्या है?

'आपका इण्टरव्यू है।'

'मगर मैंने तो कहीं एप्लाई नहीं कर रखा।'

'पापा कल एप्लाई करेंगे।' शुभा शर्माते हुए मुस्करायी।

'मैं समझ नहीं पाया।'

'पापा समझा देंगे।' वह प्याले में अपना चेहरा देखते हुए बोली, जैसे तेल के कटोरे मे अपना चेहरा देख कर शनि देवता से कोई मन्नत माँग रही हो।

शर्मा का माथा ठनका। उसे तुरन्त याद आया, शनिवार को उसकी ट्रुप के साथ मीटिंग है। उसने कहा, 'देखो, शुभा, इस शनि को तो मैं व्यस्त हूँ। 'लीडर आफ द कांटिजेंट' के नाते मेरी एक जरूरी मीटिंग है। अगले शनिवार मैं दिल्ली रहूँगा। दिल्ली से लौट कर जरूर हाज़िर हो जाऊँगा।'

शुभा एकदम मुर्झा गयी। बोली, 'मैं रविवार के लिए पापा से कहूँगी। मगर मुझे मालूम नहीं, रविवार को वे खाली है या नहीं?

'मैं दिल्ली से लौट कर उनसे जरूर मिल लूँगा।'

'दिल्ली में आप कितने दिन रहेंगे।'

'लगभग दसेक दिन। दूसरे यहाँ से निकलना ही कब हो पाता है। सोचता हूँ आगरा-फतेहपुर सीकरी से होते हुए हम लोग लौटें।'

शुभा को शर्मा की बात बहुत उत्साहित करने वाली नहीं लगी। जाने क्यों उसके दिमाग में यकायक गुल कौंध गयी। ट्रुप का सबसे बड़ा आकर्षण वही मानी जा रही थी। मगर दूसरे ही क्षण उसने अपना सिर झटक दिया,

शर्मा जी का इतना पतन नहीं हो सकता।

गुल तमाम लड़कियों की ईर्ष्या का केन्द्र थी। तमाम लड़के गुल के पीछे शैदाई थे। मगर यह तो गुल का कमाल था कि कोई भी लड़का अभी तक उसके नजदीक नहीं पहुँच पाया था। गुल जब विश्वविद्यालय से लौटती, उसके रिक्शे के पीछे सायकिलों का हुजूम होता। चूँकि गुल का रिक्शावाला और नफीस बहुत खूँखार किस्म के लोग थे, इसलिए आज तक कोई लड़का गुस्ताखी नहीं कर पाया था। लड़के अब एक मातमी जुलूस की तरह चुपचाप गुल के रिक्शे के पीछे सायकिलें दौड़ाते, जैसे किसी शवयात्रा में चल रहे हों।

शुभा ने कहा, 'गुल जैसी लड़कियों ने विश्वविद्यालय का वातावरण बहुत दूषित कर रखा है।'

'कैसे ?'

'आप किसी दिन खुद देखिए। देवीजी का रिक्शा निकलता है कि सीता-जी की सवारी। आवारा लड़कों की पूरी जमात पीछे हो लेती है।'

'किसी दिन देखूँगा।'

'गुल भी दिल्ली जा रही है ?'

'जाना तो चाहिए।'

शुभा हँसी, 'कैसा वक्त आ गया है। गानेवालियाँ युनिवर्सिटी में पढ़ने लगी हैं।'

'वह बहुत टैलेन्टेड लड़की है। पिछले वर्ष भी उसने यूनिवर्सिटी का नाम रोशन किया था।'

'हुँह !' शुभा ने ओठ बिचकाये। शुभा का चेहरा बहुत विकृत हो गया, 'मैं वाइस चांसलर होती तो उसे तुरन्त रस्टीकेट कर देती।'

'खुदा न करे तुम वाइस चांसलर हो जाओ।' शर्मा बोला, 'समाज के हर वर्ग को शिक्षा का समान अधिकार मिलना चाहिए।'

'हुँह।' शुभा बोली, 'तब तो संसद मे भी गानेवालियों का कोटा होना चाहिए !'

'समाज के हर वर्ग के लोगों का प्रतिनिधित्व होना ही चाहिए।'

शुभा को शर्मा के विचारों से बहुत निराशा हुई। उसने और अधिक बहस में पड़ना मुनासिब न समझा और यह कह कर खड़ी हो गयी, 'हमारी तो समझ में ये बातें आती ही नहीं ! न जाने मुल्क किधर जा रहा है ?'

'मुल्क गुलामी की तरफ तो नहीं ही जा रहा।' शर्मा बोला, 'हम लोगों को बदले हुए हालात में ही सोचना चाहिए। जो लोग ऐसा नहीं सोच पाते हैं, वे पिछड़ जाते हैं और राष्ट्र आगे निकल जाता है। ऐसे लोगों से ही सुनने

को मिलता है कि हम किधर जा रहे हैं।'

शुभा ने कहा, 'आप लेक्चरार हैं। हर बात समझाना जानते हैं। मैं लेक्चरार होती तो अपनी बात ज्यादा अच्छे तरीके से समझा पाती कि एक तवायफ़ की लड़की लाख कोशिश करने पर भी सती-सावित्री नहीं हो सकती।'

'क्यों नहीं हो सकती ?'

'क्योंकि उसके संस्कार वैसे नहीं हैं।'

'मैं तथाकथित उच्च संस्कार वाली बहुत-सी महिलाओं को जानता हूँ-तुम भी जानती होगी-जो वेश्याओं से भी गयी गुजरी हैं।'

शुभा के दिमाग़ में ऐसी बहुत-सी औरतों का खाका उभर आया। उसके पड़ोस में ही कुछ सभ्य बड़े लोगों की पत्नियों को लेकर अक्सर अफ़वाहें उड़ती थी। वह उठते हुए बोली, 'न बाबा, मैं बहस न करूँगी आपसे कौन पार पायेगी। किसी दिन पापा से आपकी 'डिबेट' करवाऊँगी।'

'तुम्हारे पापा तुम्हारी तरह संकीर्ण विचारों के नहीं होंगे, मुझे विश्वास है।' शर्मा ने कहा

शुभा बिल्कुल निरुत्साहित हो गयी। उसे लगा वह सचमुच बहुत संकीर्ण विचारों की है। गुल के प्रति भी उसके मन में एक अपराध भावना उभर आई। उसने हमेशा गुल का तिरस्कार ही किया है। गुल ने अगर परीक्षा मे ज्यादा अंक भी पा लिये तो शुभा को हमेशा यही लगता रहा कि गुल अपने शरीर के एवज में अधिक अंक पा रही है, जबकि शोभा के कम अंक पाने का एकमात्र कारण उसका सच्चरित्र होना है।

शुभा नमस्कार की मुद्रा में खड़ी हो गयी। शर्मा बाहर तक उसके साथ आया। बाहर सरकारी जीप खड़ी थी। ड्राइवर भी सरकारी था। वह जीप में जा बैठी और एक बार फिर नमस्कार किया।

शर्मा ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। वह कमरे में लौट आया।

कमरे में लौटते ही वह अपना खत आगे बढ़ाने लगा·

'हम लोग अक्सर लड़की की पृष्ठभूमि, शिक्षा, सूरत को देख कर चीज़ें तय किया करते हैं। मगर मैं अपने थोड़े से अनुभव के आधार पर इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि शिक्षा और संस्कार भी आपकी मदद नहीं करते, अगर आप बदले हुए सन्दर्भों के साथ कदम नहीं बढ़ाते। मेरी छात्राओं में ही ऐसी बहुत सी लड़कियाँ हैं जिनका 'आई क्यू' और मानसिकता खतरे के निशान को छू रहे हैं।

मुझे नहीं मालूम, मैं क्यों तुम्हारे अन्दर वे तमाम गुण देख रहा हूँ, जो मेरी कल्पना की किसी भी लड़की के पास होने चाहिए। मैंने तुमसे खुल कर

कभी बातचीत नहीं की, सिर्फ तुम्हें कक्षा में देखा है। मगर मुझे हमेशा यही लगा है कि तुम मेरे लिए पैदा हुई हो, सिर्फ मेरे लिए, सिर्फ मेरे लिए'''

पत्र लिखकर शर्मा की उद्विग्नता कुछ कम हुई। शाम को वह कभी-कभी पड़ोस में बैडमिंटन खेलने जाया करता था। उसने अपना रैकेट उठाया और चल पड़ा।

बाहर सुहावनी शाम थी। निर्मल आकाश पर डूबते हुए सूरज की शुआएँ पड़ रही थीं। आकाश में रंग-बिरंगे पतंग उड़ रहे थे और पतंगों के ऊपर से परिन्दों के काफ़िले रह-रह कर गुज़र जाते। शर्मा को गुल के यहाँ बितायी शाम याद आ गयी। वह भी एक ऐसी ही शाम थी। ऐसा ही आकाश। ऐसे ही परिन्दे !

शर्मा ने बैडमिंटन में जम कर हिस्सा लिया। वह हर पारी जीतता चला गया। इतनी चुस्ती से वह कभी नहीं खेला था। घर लौट कर उसे भूख लग आयी और नींद भी खूब आयी। उसने तय किया, कल गुल को एक और खत लिखेगा। रोज़ एक ख़त लिखेगा और सो जाएगा। आज की तरह। शादी होगी तो तमाम पत्र गुल को पढ़वायेगा।

सुबह विश्वविद्यालय जाने से पूर्व शर्मा ने अपने भाई द्वारा अमरीका से भेजा सफ़ारी सूट निकाला, अच्छी तरह से ब्रश किया। और सूट पहन कर वह देर तक आईने में अपनी सूरत देखता रहा। आज उसने शेव भी नये ब्लेड से की थी, जबकि पुराना ब्लेड अभी फेंकने लायक नहीं था। उसके भाई ने उसके लिए पिछले वर्ष दो-चार चीज़ें भेजी थीं। उसने उन सभी का इस्तेमाल कर लिया। बगलों में डियोडोरेण्ट भी घुमा लिया। जूते उसने चैरी ब्लॉसम्स से आधे घण्टे तक पॉलिश किये। अपनी सूरत को आईने में देखते हुए उसे लगा, अब तक वह अपनी पोशाक के बारे में बेहद लापरवाह रहा है।

विश्वविद्यालय में शर्मा ने दो-एक पीरियड किसी तरह उखड़े हुए मन से लिये। शुभा उसके कान में धीरे से कह गयी—'प्रोफेसर शर्मा आज आप बहुत स्मार्ट लग रहे हैं।' शर्मा ने उसकी बात की तरफ़ ध्यान न दिया। वह गुल में खोया हुआ था। अधिक बरदाश्त न हुआ तो उसने गुल को बुलवाने चपरासी रवाना कर दिया। गुल दो घण्टे तक टालती रही। तीसरे पीरियड के बाद वह स्वयं ही शर्मा के कमरे में चली गयी। लड़कियों ने कपिल को लेकर उसका बहुत मज़ाक उड़ाया था।

'गुल बैठो।'

गुल सामने कुर्सी पर बैठ गई, सिर झुका कर।

'मुझसे कोई खता हुई ?' शर्मा ने पूछा।

गुल ने सिर हिला दिया यानी कि शर्मा से खता नहीं हुई।

'तुम मुझसे खिंची हुई क्यों हो ?' उसने पूछा।

गुल सर झुकाये उसी तरह बैठी रही।

प्रोफ़ेसर की इच्छा हुई उसे बाज़ू से पकड़ कर झकझोर दे। अव्वल तो प्रोफ़ेसर मे इतना साहस ही नही कि गुल को छोटी उंगली से भी छू दे, दूसरे उसे लगता है वह गुल को झकझोर भी देगा तो केवल आँसू टपकेंगे, जैसे बेरी के पेड़ को झकझोरने पर केवल बेर गिरते हैं : टप टप टप।

'दिल्ली जाने की तैयारी कर रही हो ?'

गुल चुप।

'अम्मा कैसी है ?'

गुल निश्चल।

गुल की इच्छा हुई अन्दर की पूरी शक्ति से चिल्ला उठे। मगर वह उसी तरह शान्त बैठी रही। उसका वक्ष साड़ी के पल्लू में भी तेज सांसों की गवाही दे रहा था।

'तुम्हारा मन ठीक नही है।'

शर्मा ने दफ्तर मे रखी सुराही से पानी भर कर एक गिलास गुल को पेश किया।

गुल ने आँख उठा कर भी नही देखा। शर्मा पानी लेकर ज्यादा देर खड़ा नही रह सकता था। कभी भी कोई लड़का या चपरासी स्कैण्डल बना सकता था।

'मन ठीक हो जाये तो चली जाना। मैं एक-दो दिन में अम्मा से मिलूंगा। खाना खिलाओगी ? बोलो !'

गुल को नही बोलना था, नही बोली। प्रोफ़ेसर चिक उठा कर बाहर निकल गया।

गुल ने रूमाल से आँखें मली और धीरे से बाहर निकल आयी। वह क्लास में नहीं गयी, नफीस की खोज में पुस्तकालय की तरफ बढ़ गयी। नफ़ीस पुस्तकालय के पास एक पेड़ के नीचे अक्सर बैठता था। गुल को वह दूर से ही पहचान गया और उसकी तरफ़ बढ़ने लगा।

शाम होते ही शर्मा इकबालगंज की ओर चल दिया। वह गुल की अम्मा से विस्तार से बात कर लेना चाहता था।

शर्मा ने देखा अज़ीज़न के दुमंज़िले का ज़ीना काफ़ी गन्दा हो रहा था।

जगह-जगह पान की पीक से ज़ीने रँगे थे। हर जगह पान की पीक का अलग रँग था। कत्थई। नयी ईंट का रँग और पुरानी ईंट का रंग। नीचे गली से गुज़रते हुए भी उसे काफ़ी गन्दगी का एहसास हुआ था। रास्ते में जुलूस निकल रहा था और वह सिर झुकाये बड़ी मुश्किल से चौक से यहाँ तक का रास्ता तय कर पाया था। भीतर से आवाज आ रही थी :

कुल् हुवल्लाहु अहद्। अल्लाहुस्समद्

शर्मा इस आवाज़ को एकदम पहचान गया। गुल की आवाज़ थी। शायद कुरान पढ रही थी।

वह अन्दर आंगन में दाखिल हुआ तो उसके सामने चटाई पर एक पतले-दुबले मौलवी शेरवानी पहने बैठे दिखायी दिये। उनके गाल पिचके हुए थे और ठुड्डी पर खिचड़ी दाढ़ी बेतरतीव उगी हुई थी। उनके सामने ही एक छोटे से आसन पर गुल बैठी थी। दोनों के बीच में कुरानशरीफ़ लकड़ी के स्टैण्ड पर खुला था। शर्मा की माँ इसी प्रकार के स्टैण्ड मे रामचरित मानस रख कर पढ़ा करती थीं।

मौलवी ने आँख उठा कर शर्मा की ओर देखा और उसके चेहरे पर हल्की-सी खीझ के अलावा कोई प्रतिक्रिया न हुई। वे फिर बोले .

लम् यलिद् व लम् यूलद्।

गुल ने पीछे मुड़ कर शर्मा की ओर देखा और आंखो से ही प्रोफ़ेसर का अभिवादन कर लिया। गुल अभी-अभी नहा कर आयी थी। उसके बाल हल्के से बंधे थे, लाल रंग के रिबन से। बालों के बीचोबीच रिबन उसकी पीठ पर लहरा रहा था। शर्मा कुछ कहता कि दूसरे दरवाज़े से अज़ीज़न दाखिल हुई। वह शायद जल्दी में थी। वह बहुत तेज़ चलती हुई आयी और शर्मा के पास आकर रुक गयी।

'अरे प्रोफ़ेसर साहब, आप? आदाब अर्ज़।' उसने कहा और झट पर्दा उठा कर शर्मा को दूसरे कमरे में ले गयी।

'मैं शायद बेवक्त आ गया हूँ।' शर्मा बोला, 'दरअसल, मेरा आपसे मुलाकात करना बहुत जरूरी हो गया था।'

चेहल्लुम नजदीक आ रहा था। नीचे से गुज़रता हुआ जुलूस अज़ीज़न के घर के पास रुक गया और छाती पीटते हुए लोग एक लय मे मातम करने लगे। सैकड़ों दाहिने हाथ एक लय से उठते और छाती पर वज्र की तरह गिरते। बीच में केवल छाती पीटने की आवाज़ आती। लग रहा था लोग छाती पीट पीट कर दम तोड़ देंगे। एक अनुशासित आवाज़ थी जो केवल सैनिकों के परेड

की हो सकती थी या हुसैन के दीवानों की।

माहौल शान्त हुआ तो उस गमजदा माहौल में एक आवाज लहराने लगी :

तुम लोग छिपाते हो ये क्या होता है लोगो,
गैरों के लिए भी कोई यों रोता है लोगो।

बाद में एक लय के साथ पूरा जुलूस छाती पीटते हुए गाने लगा :

गैरों के लिए भी कोई यों रोता है लोगो

शर्मा ने देखा, उसके पास से ही बुर्के में कोई लड़की बारजे पर जा खड़ी हुई। शर्मा को उसकी स्फटिक एड़ियाँ ही दिखायी दे रही थीं।

शर्मा कुछ न समझा तो अजीजन ने बताया, 'गुल है। आप किसी रोज मजलिस मे गुल को सुनें।'

'मजलिस किसे कहते हैं?' शर्मा के मुंह से बेसाख्ता निकल गया।

'इमाम हुसैन मुहर्रम महीने की दसवीं तारीख को कर्बला के मैदान में शहीद हुए थे। उनकी याद में कोई मजलिस करता है, कोई ताबूत-ताजिया निकलता है। लोग अपने घर में धार्मिक सभाएँ बुलाते हैं, उसे ही मजलिस कहते है।'

शर्मा के संस्कारों में अजीब-सी उथल-पुथल मच गयी। वह भी अजीजन के साथ बारजे पर खड़ा हो गया। एक जुलूस आगे बढ़ गया था, दूसरा उसी स्थान पर आकर रुक गया था। आसपास तमाम घरो की खिड़कियों पर बुर्का नशीन औरतें और बच्चे नजर आ रहे थे।

एक युवक गर्दन को घुमाते और हाथ को लहराते हुए ऊपर से छाती पर बेरहमी से टकराते हुए दर्दनाक आवाज में गा रहा था...

शब को जरा लेट रहो, रोयी हो दिन भर
मैं पास तुम्हारे हूँ, जो बाबा नही सर पर

उसके इतना कहते ही तमाम लोग लयबद्ध रूप से छाती पीटने लगे और दोहराने लगे :

मैं पास तुम्हारे हूँ जो बाबा नही सर पर

जुलूस में हर वय के लोग थे। कुछ लोग बच्चों को भी गोद में उठाये हुए थे। गोद के बच्चे भी धीरे-धीरे छाती पीट रहे थे। चिलमन के पीछे खड़ी स्त्रियाँ रो रही थी। जुलूस में भी कोई-कोई आदमी आँसू पोंछ रहा था। शर्मा को बगल में खड़ी गुल की सिसकियाँ भी सुनायी दी। अजीजन भी अपनी आँखों की कोर पोंछ रही थी।

जुलूस बढ़ रहा था :

छाती पर सुला कर

पाला छह महीने जिसे बाबा नहीं सर पर

मैं पास तुम्हारे हूँ, जो गया। दूसरा जुलूस भी निकल गया

शर्मा को भी पूरा दृश्य करुणार्द्र करवाज़ें आ रही थीं। जुलूस के साथ थे
था और चारों तरफ़ से मातम की ही आफूलों के हार चढ़ा रहे थे। ऊपर खड़ी
ताबूत, दुलदुल, ताज़िये। लोग उन पर फी। जुलूस के आगे बढ़ते ही खोमचे
औरतें अलम को छू लेतीं और हार चढ़ा लगी। हार बेचने वाले एक-एक,
वाले आ गये और गर्म-गर्म पकौड़ी बिकने
दो-दो हार बेचते जुलूस के पीछे हो लिए बने आये। चाय आ चुकी थी। चाय

शर्मा और अज़ीजन अन्दर बैठक में 'आप कैसे आये?'
उंडेलते हुए अज़ीजन बोली, 'फरमाइए! चुका था। अचानक उसका दिमाग़

शर्मा अपने आने का मक़सद भूल
बहुत भारी हो गया। ता था।' उसने किसी तरह वाक्य

'मैं गुल के बारे में बात करना चाह
पूरा किया। ी और चेहरे पर रुखाई आ गयी,

अज़ीजन के माथे पर सलवटें पड़ ग
'क्या उसकी पढ़ाई ठीक नहीं चल रही?' तीजे पर पहुँचा हूँ कि·····' प्रोफ़ेसर

'वह सब ठीक है, मैं दरअसल इस नउभर आये पसीने को थपथपाते हुए
ने जेब से रूमाल निकाला और चेहरे पर
बोला, 'मैं उससे शादी करना चाहता हूँ।' 'बहुत से नौजवान इस तरह की

'हूँ।' अज़ीजन ने बहुत व्यंग्य से कहा,
ख्वाहिश ज़ाहिर किया करते हैं।' हता था, उसे लगा, अज़ीजन को

शर्मा जिस आसानी से बात करना च
वह मंज़ूर नहीं है। की लड़की है?'

'आपको मालूम है कि गुल एक तवायफ़

शर्मा ने हाँ में सिर हिलाया। देगा?'

'आपका समाज आपको इसकी इजाज़तहा। वह नीचे फ़र्श की तरफ़ देख

'मुझे इसकी परवाह नहीं।' शर्मा ने क
रहा था। यों नहीं है। आपको उसी समाज

'क्यों, आपको अपने समाज की परवाह
में रहना है या किसी दूसरे समाज में?' ता हूँ।'

'मैं अपने समाज का मुकाबला कर सकीजन बोली, 'और फिर बेटा, यह

'इसकी रिहर्सल नहीं हो सकती।' अज़ी
तुम्हारे बस की बात नहीं।'

'आप मुझे जानती नहीं···'

'आप अपने आपको भी नहीं जानते। मैं किसी भी उलझन में न आपको डालना चाहती हूँ न बिटिया को।'

शर्मा यह सब सुनने आया नहीं था। उसने सोचा, उसे अधिक तैयारी के साथ आना चाहिए था।

नफ़ीस जाने कहाँ से आकर ठीक शर्मा के सिर पर खड़ा हो गया। शर्मा ने पीछे मुड़ कर देखा तो दहशत में आ गया। उसे लगा नफ़ीस कभी भी उसकी पीठ में छुरा भोंक सकता है। अज़ीज़न ताड़ गयी कि नफ़ीस की उपस्थिति शर्मा को नागवार गुज़र रही है। उसने तुरन्त नफ़ीस को वहाँ से रवाना कर दिया।

'जितना मैं आपको समझ पायी हूँ, आप गुल के साथ सुखी न रह पायेंगे। गुल भी किसी कुण्ठा में ज़िन्दा नहीं रह सकती। मैं गुल के लिए कैसे शख्स की कल्पना करती हूँ, खुद नहीं जानती। मगर यकीनन वह आप नहीं हैं। मेरी बात का आप बुरा नहीं मानेंगे। आपकी मश्कूर हूँ कि आप मेरे ग़रीब-खाने में तशरीफ़ लाये और एक भले इन्सान की तरह पेश आ रहे हैं। आप उन लोगों में से भी नहीं है जो आए दिन खून से रँगी चिट्ठियाँ भेजा करते हैं।'

शर्मा के मुँह पर, माथे पर, होठों पर पसीने की बूँदें झिलमिलाने लगी। वह उन बूँदों का वज़न महसूस कर रहा था। अज़ीज़न भी शर्मा को बड़े गौर से देख रही थी। शर्मा के पैर मोज़ों के भीतर पसीने से तर हो गये थे जैसे कीचड़ में धँस गये हों। उसके होंठ सूखे थे, सूखते चले जा रहे थे। वह बार-बार ज़बान से होंठ तर करता।

शर्मा आँख उठा कर किसी भी तरफ़ देखने का साहस नहीं कर पा रहा था। थोड़ी देर पहले उसे बुर्के में गुल की एड़ियाँ नज़र आयी थीं। सफ़ेद स्फटिक। संगमरमरी एड़ियाँ। उन एड़ियों में कहीं बिवाई नहीं थी, जो विश्व-विद्यालय की अधिकाश लड़कियों की ऐड़ियों में यह देखा करता था।

'मुझे अफ़सोस है, मैं आपके अन्दर विश्वास नहीं पैदा कर पाया। म-म मुझे जाना चाहिए।' वह बोला। वह खड़ा हो गया और माथा पोंछते हुए चलने को हुआ।

'ख़ुदा हाफ़िज़।' पीछे से अज़ीज़न की सधी हुई आवाज़ आयी।

शर्मा अभी ज़ीने तक पहुँचा होगा कि अज़ीज़न ने बहुत प्यार से पुकारा 'प्रोफेसर साहब पान तो नोश फरमाते जाइए।'

शर्मा को अज़ीज़न की आवाज़ बहुत व्यावसायिक लगी। जैसे वह लौटते हुए गाहक को सम्बोधित कर रही हो। वह रुका नहीं, यह कहते हुए सीढ़ियाँ उतर गया कि वह पान नहीं खाता। नीचे उतर कर उसने ऊपर उड़ती हुई

नजर से देखा। एक गोरी कलाई जुलूस के बीच में से गुजरते हुए अलम पर फूल चढ़ा रही थी। । क्या वह गुल की कलाई थी, वह नही जान पाया और धीरे-धीरे जुलूस के साथ कदम मिलाता हुआ चौक की ओर बढ़ने लगा।

शर्मा किसी फेल हुए छात्र की तरह सर झुकाये देर तक गलियों मे भटकता रहा। उसकी घर जाने की इच्छा नही हो रही थी। घर जाकर जो अकेलापन वह महसूस करता उसके लिए वह असह्य था। उसे पहले गुल से बात करनी चाहिए थी, शायद यही गलती उससे हुई। जाने क्यों शर्मा यह मान कर ही चल रहा था कि गुल उस पर फ़िदा है। जितनी बार गुल से उसकी नजरें मिली हैं तो उसने उनमें अपने लिए एक लहलहाती हुई दुनिया की झलक पायी है। यह उसका भ्रम नहीं हो सकता था।

आकाश में बादल घिर आये थे जिससे वातावरण अधिक उदास और बोझिल हो गया था। चौक में वैसी ही भीड़ थी, शहर की परिचित भीड़। स्कूटरों, साइकिलों, इक्कों के बीच इत्मीनान से जुगाली करता एक सांड, अपने आस-पास के शोर से बेनियाज। बीच में लाटरी के टिकटों की लाउड स्पीकरों की मदद से बिक्री। आस-पास सर पर गठरियाँ उठाये देहात के लोग। नंगे पाँव, बच्चों को ट्राफ़िक से बचाते और मुड़-मुड़ कर पीछे देखते हुए। पैदल चलते हुए शर्मा को कई चीजें याद आयीं। यहाँ तालों की चाबियाँ लग सकती हैं, टूटे हुए जूतों और छातों की मरम्मत करवायी जा सकती है। ट्रांजिस्टर व टार्च के सेल खरीदे जा सकते हैं और शेव के लिए ब्लेड। हाजमे के लिए चूर्ण, और तो और बिना तकलीफ़ दाँत भी निकलवाये जा सकते हैं। सारी भीड़ के बीच धम्म-सा फायर ब्रिगेड का इंजन खड़ा था। शर्मा की किसी चीज में दिलचस्पी न थी। उसके भीतर और बाहर एक हाहाकार मचा था।

शर्मा को सिगरेट का व्यसन नहीं था, एक पनवाड़ी के पास खड़ा होकर वह पान खरीदने लगा, फिर उसने एक सिगरेट भी सुलगायी और दुकान पर लगे हेमामालिनी छाप लड़कियों के कैलेण्डर देखने लगा। दो ही तरह के लोग कैलेण्डरों पर हावी थे—सुन्दरियाँ और अवतार।

क्षण भर के लिए उसकी इच्छा हुई अपने मित्र प्रकाश के पास लखनऊ चला जाये और उसके सामने अपनी हारी हुई बाजी बिछा दे। मगर वह प्रकाश पर भरोसा नहीं कर सकता था। वह अप्रत्याशित किस्म का व्यक्ति था। वह किस समय किस से कैसा व्यवहार करेगा, इसका कोई भरोसा नही। प्रकाश उसे घण्टों दफ्तर में इन्तजार में बैठा कर मजा ले सकता था। उसके गम में कुछ इस क़दर शामिल हो सकता था कि परामर्श लेने वाले को लगे कि वह परामर्श देने आया है। फिर उसे यकायक अपने बूढ़े माँ और बाप की याद आयी। वे

भी उसकी कोई मदद न कर पायेंगे। बल्कि मार्ग में 'आगे रास्ता बन्द है' के बोर्ड ही लटकायेंगे। तो कौन है जो उसको कुछ राहत दे सकता है ?

'गुल !' शर्मा ने कहा, 'गुल।'

शर्मा वापिस गुल के घर की ओर मुड़ गया। वह गुल की अम्मां से अभी इसी समय मिलेगा। गुल से बात करेगा। यह एक दूसरी बेवकूफी होगी, उसके भीतर से कोई चिल्लाया। वह लुंगी की एक दुकान पर लुंगियां देखने लगा। लुंगी उसने कभी नहीं पहनी थी, मगर उसे हमेशा लुंगी ने आकर्षित किया था। वह लुंगी को आदमियों का पेटीकोट कहा करता था। उसने अपने लिए एक बारीक लुंगी पसन्द की और दस रुपये देकर खरीद ली। लुंगी उसने बगल में दबायी ही थी कि उसके अन्दर से एक और आवाज आयी, 'तुम एक तवायफ़ की लौंडिया के पीछे तबाह हो जाओगे।'

प्रोफ़ेसर शर्मा ने आवाज सुनी और बोला, ये समाज की आवाजें हैं। मैं इन्हें बखूबी पहचानता हूँ। मेरे सामने ऐसी कोई मजबूरी नहीं। मैं किसी भी अच्छे घराने की खूबसूरत लड़की से शादी करके खाली समय में अपना शोध पूरा कर सकता हूँ।'

शर्मा तेज-तेज कदम बढ़ाता आगे बढ़ा। क्या है गुल मे ? उसकी बिल्लौरी आँखें ? उसका चट्टानी वक्ष ? उसका मासूम चेहरा ? उसका चलने का ढंग ? उसके लम्बे बाल ? उसकी गोरी स्फटिक एड़ियां ? या सदियो से पिसती आ रही उसकी आत्मा ? क्या शर्मा अपने खानदानी आदर्शवाद का शिकार हो रहा है ? क्या उसके आर्य-समाजी संस्कार उसे गुल के उद्धार के लिए उकसा रहे हैं, अथवा यह उसकी कोई व्यक्तिगत कुण्ठा है ? क्या है यह सब ?

चलते-चलते सहसा शर्मा की आँखो के समक्ष गुल का चेहरा उभर आया। हाथ मे किताबें थामे। लिबास औसत लड़कियो से भी सादा। आँखें ऐसी जैसे सदियो से सिर्फ़ आंसू बहाती आ रही हों।

क्या वह गुल पर दया करके उस पर मुग्ध हो रहा है ? क्या वह किसी ऐसी लड़की से शादी करना चाहता है जो जिन्दगी भर उसके उपकार के नीचे दबी सिसकियां भरती रहे ?

नही ! नही ! नही ! शर्मा ने अपनी गर्दन झटक दी। उसे गुल बेहद पसन्द है। वह गुल को बेइन्तिहा चाहता है। यह एक मुख्तसर सी बात है। उसकी खाल उधेड़ना फ़िजूल है।

शर्मा ने तय किया वह कल गुल से आमने सामने बात करेगा। विश्व-विद्यालय में यह संभव नहीं। वह उसे घर पर बुलायेगा। शर्मा का घर उसके रास्ते में पड़ता है। क्या नफ़ीस इसकी इजाजत देगा ? यह गुल की समस्या है। कल वह हमेशा के लिए फ़ैसला ले लेगा।

• •

माघ का महीना था। बला की सर्दी पड रही थी। इस जाड़े में गली के कुत्ते तक खामोश हो गये थे और जगह जगह बीडी के पत्तों की सेज पर दुम दबा कर पड़े थे। नवाव साहब की छत पर बिल्लियाँ रोते हुए जैसे मातम कर रही थी। रात के सन्नाटे में कोई आवाज थी, तो एक ठेले की कर्ण कटु आवाज। जैसे लोहे का कोई जानवर रो रहा हो। पहियों में बहुत दिनो से तेल नही पड़ा था। ठेले वाला बहुत होशियारी से ठेला ठेल रहा था ताकि उसके ठेले से गली की खामोशी भंग न हो। रात बिताने के लिए उसे कही ठौर नही मिल पा रहा था। पिछले महीने उसने चौक मे एक दवाफ़रोश के दारजे के नीचे अपना बसेरा बनाया था, जो आज अचानक उखड़ गया था। वहाँ दो एक पुलिस वाले अलाव जला कर पसर गये थे और उसे भगा दिया था। चलते चलते वह एक टाट में बीड़ी के पत्ते, काग़ज बटोर रहा था ताकि कही एकान्त मे अलाव जला कर रात काट सके।

हजरी बी की कोठरी के पड़ोस मे टीन का एक छप्पर था, जहाँ ताहिर अपना ठेला खड़ा करता था। एक ठेले लायक जगह और थी। ठेले वाले ने बड़ी मुस्तैदी से अपना ठेला ताहिर के ठेले के बराबर खड़ा कर दिया और दियासलाई जला कर जगह का जायजा लेने लगा। ठेले के नीचे टाट बिछा कर सोने का उसका अच्छा खासा अभ्यास था। ठेले के चारों तरफ़ वह तिरपैल बिछा देता जिससे ठेले के नीचे एक अच्छी खासी छोलदारी तैयार हो जाती।

हजरी बी ने बगल में खटर पटर सुनी तो ढिबरी जला कर बाहर निकल आई, 'कौन है?'

'मैं हूँ। एक सब्जीफ़रोश। कही ठौर न मिला तो यहाँ चला आया। आप इजाजत दें तो आज की रात यही बसर कर लूँ। बला की सर्दी पड़ रही है, खून जमा जा रहा है।'

ठेले वाले ने एक ही साँस में अपनी मजबूरी बता दी। हजरी बी उसके

पास चली आयी। उसके पास ढिबरी ले जा कर उसका चेहरा ग़ौर से देखा। एक दुबला पतला सा आदमी था। सर पर अँगोछा बाँध रखा था और रुई की बडी पहने था। नाक पर मोटे काँच का चश्मा चढ़ा था।

हजरी बी को नींद न आ रही थी। कोठरी से दस पाँच उपले उठा लाई। ठेले वाले ने पत्ते, काग़ज़ और लकड़ी का एक कुन्दा उपलों के ऊपर रखकर अलाव बना लिया। दोनों हाथ सेंकने लगे।

'कहाँ रहते हो ?' हजरी ने पूछा।

'जहाँ रात हो जाए।' मल्लू ने कहा, 'कुछ दिनों तक चौक में बारजे के नीचे रात बिता देता था, आज पुलिस वालो ने वहाँ से भगा दिया।'

'ये लाँ के मौड़े गरीबों के दुश्मन हैं।' हजरी बी ने पूछा, 'खाना खाए हो ?'

'हाँ खाना तो शाम को एक होटल में खा लेता हूँ। एवज़ मे सब्जी देता हूँ।'

'आजकल मटर खूब सस्ते होगे।' हजरी बी का मटर खाने को मन कर आया।

'हाँ खूब सस्ते है।' मल्लू ने कहा, 'कहो तो भून कर खाए जाएँ।'

'दो एक आलू भी निकालो।' हजरी बी ने कहा और अन्दर से ढेर सारे उपले उठा लाई।

दरअसल हजरी सुबह से भूखी थी। जाड़ा इतना था कि घर से निकली ही नही। गुदड़ी में लेटी रही। इस वक्त मटर आलू का नाम सुन कर उसको भूख चमक आई थी।

मल्लू ने डलिया भर कर मटर और आलू हजरी को सौंप दिए। हरे चने भी थे। हजरी की दावत हो गयी। वह रात देर तक मल्लू की राम कहानी सुनती रही कि कैसे वह दुनिया में निहायत अकेला है। उस का घर-बार है न दोस्त-अहबाब। होश संभाला तो अपने को स्टेशन पर पाया। वहीं कुछ खाने को मिल जाता तो खा लेता वर्ना प्लेटफार्म पर दरगाह के पास सो रहता। उसे नही मालूम वह हिन्दू है या मुसलमान।

'यह बताना तो बहुत आसान है।' हजरी बी ने कहा, 'पाजामा ढीला करो तो मैं अभी बता दूँ।'

मल्लू झेंप गया। हजरी बीच बीच में कोई ऐसी बात कर देती कि उसे घबराहट होने लगती।

'एक बार स्टेशन पर एक दयालु पंजाबी सज्जन मिल गये थे। अपने साथ घर लिवा ले गये। उन्होंने नये कपड़े सिलवा दिए और मैं भी खूब ईमानदारी से मन लगा कर घर का काम करने लगा। मगर उनकी बीवी अच्छी औरत नहीं थी।' मल्लू रुक गया। उसने कहा, 'अल्लाह उनको उम्रदराज करे। वह खुद बहुत नेक इन्सान थे।'

'उनकी बीवी मे क्या खामी थी ?' हजरी ने पूछा ।

'उनके बारे में कुछ भी कहना मुनासिब न होगा। एक दिन मैंने उनके सामने हाथ जोड़ दिए और कहा कि अब यहाँ न रहूँगा । उन्होंने यह ठेला और पचास रुपये दे दिए । पाकिस्तान से आकर वे इसी ठेले पर शक्कर बेचते थे । उन्हें जान से भी प्यारा था यह ठेला, मगर मुझे दे दिया । अब तो उनके पास गाड़ी है, बँगला है ।'

'गाड़ी बँगला किस काम का ।' हजरी बी ने हाथ नचाया, 'जब औरत ही छिनाल निकल जाए ।'

'मैं अपने मुँह से बीबी जी के लिए ऐसा न कहूँगा ।' मल्लू बोला, 'ख़ुदा उन्हें अक्ल दे ।'

'तुम एक नेक इन्सान मालूम पड़ते हो।' हजरी ने अपनी राय जाहिर की, 'कभी कभी मुझे खुदा की कुछ हरकतें पसन्द नहीं आती। बताओ भला, तुमने क्या गुनाह किया है कि खुले आसमान के नीचे सोने को मजबूर हो ।'

'ऊपर वाले की जो इच्छा ! लगता है वह मेरे लिए अभी तक छत या दीवार का इन्तजाम नही कर पाया ।'

हजरी का मन बहुत उदास हो गया । यह जान कर उसे सन्तोष हो रहा था कि उसके पास कम से कम एक कोठरी तो है ।

'तुमने अपना नाम क्या बताया था ?'

'मल्लू !'

'मल्लू ? यह भी कोई नाम है ? किसने रखा तुम्हारा यह नाम ?'

'मालूम नहीं । अपने बारे मे मुझे कुछ भी मालूम नही । कहाँ से आया, माँ-बाप कहाँ है, कौन मुझे स्टेशन पर छोड़ गया, खुदा जाने ! यह जरूर महसूस करता हूँ कि किसी अच्छे परिवार में ही जन्म हुआ होगा क्योंकि भीख माँगने से मुझे हमेशा घिन लगती थी ।'

'बहुत अफ़सोस हुआ तुम्हारी दास्तान सुन कर ।' हजरी बी बोली, 'ऐसे समय में आए हो कि मैं कोई मदद भी नही कर सकती । सरकार बहादुर ने दफ़ा आठ क्या लागू कर दी, हम लोगों को यतीम बना दिया । मेरे पास तीन तीन कमरे थे, कमिश्नर साहब के साथ नथ की रस्म हुई थी । मगर बड़ी अम्माँ ने कभी पचास फ़ीसदी रुपये से ज्यादा हाथ में न दिए । बाद मे कमिश्नर साहब जाने कहाँ ग़ायब हो गये ? अल्लाह को प्यारे हो गये या किनाराकशी कर गये ।'

अचानक हजरी बी रोने लगी, 'बहुत मानते थे मुझे कमिसनर साब । मेरा एक एक नखरा सर माथे पर उठाते थे । मगर तकदीर मे उनकी पाबन्दी न लिखी थी ।'

मल्लू इस जगत से नितांत अपरिचित था। उसने इस दुनिया की कल्पना मुजरे, संगीत और नृत्य, के रूप में की थी।

'एक जमाना था, मेरे कोठे पर आदमियों की कतार लगी रहती थी। कई लोगों को तो मायूस होकर लौट जाना पड़ता था।'

'आप सिर्फ़ गाती थी या नाचती भी थीं?'

'नाच गाने का ढकोसला हमने कभी न किया।' हुजरी बी बोली, 'जब तक कमिसनर साहब रहे, मैं उनकी पावन्द रही। उन्होंने किनाराकशी कर ली तो मैं आजाद हो गयी। जाने बड़ी अम्माँ ने मेरी मारफ़त कितने पैसे कमाये होंगे! मालजादी को हुजम न हुए और कोढ़ से मरी।'

'उसका पैसा कहाँ गया?'

'हराम की क़माई उड़ते देर नहीं लगती।' हुजरी बी ने बताया, 'बड़ी अम्मा बीमार थीं कि कोई भड़ुआ पूरे जेवरात और नोटों की थैली लेकर भाग गया।'

'नाच गाने का शौक नहीं है आपको?'

'मैंने बताया न कि नाच गाना सब ढकोसला है। जब से छापा पड़ा तमाम मालजादियों ने उस्ताद रख लिए। मगर यह सब धोखा है। दिन में रियाज होता है और रात को क़दीमी पेशा। हमारे जमाने मे दलाल लोग गाहक पकड़ पकड़ कर लाते थे, अब तो गाहक खुद ही सूँघते हुए चले आते हैं। मगर अब दिन बहुत चढ़ा है, साजिन्दे भूखों मर रहे हैं, एक एक कर तवायफ़ें मरती जा रही है, कोई खोज खबर लेना वाला नहीं। एक जमाने में यह गली फूल मालाओं और इत्र से रात भर महकती थी। आज क्या हालत हो गयी है, देख ही रहे हो। मकान ढह रहे है। छत है तो दरवाजा नहीं। दरवाजा हैं तो छत नहीं।'

'खुदा को यही मंजूर था।' मल्लू ने कहा, 'आधी जिन्दगी बिना छत्त के गुजर गयी, बाकी आधी भी गुजर जाएगी। बस जाड़े मे जरा तकलीफ़ होती है।'

'तुम चाहो तो कोठरी के बाहर खपरैल के नीचे रात बिता सकते हो।' हुजरी बी ने कहा, 'अन्दर कहीं एक खटिया भी होगी। सुबह देखूँगी।'

मल्लू को नींद आ रही थी। उसने 'खुदा हाफ़िज़!' कहा और ठेले के नीचे घुस गया। जमीन बर्फ़ की तरह ठण्डी थी। उसके दाँत किटकिटाने लगे। मगर वह इसका आदी था। दो चार टाट बिछा कर लेट गया। थोड़ी देर मे नींद ने उसे दबोच लिया।

हुजरी ने अन्दर जा कर ढिबरी जलाई और खटिया निकालने लगी। खटिया इतनी जर्जर हो चुकी थी कि उसे साबुत उठाकर लाना असम्भव था।

दो तीन बार में वह टुकड़े टुकड़े खटिया बाहर रख आई। बीच में बाद झूल रहा था, मगर खटिया के पावे मज़बूत थे।

सुबह मल्लू उठा तो सब से पहले उसकी नज़र खटिया पर ही गयी। उसने पावे उठा कर देखे, बहुत मज़बूत और मुग्दर की तरह भारी थे। हो सकता है कोई अच्छा कारीगर बढ़ई सस्ते में खाट बना दे। मल्लू उस्मान नाम के एक बढ़ई से परिचित था, जिसके बड़े भाई का सब्ज़ी मण्डी में अमरूद का कारोबार था। यहीं चकैया नीम के आसपास उसका घर था। मल्लू को मालूम था यहीं कहीं अनवर मियाँ का होटल था, जो मुंह अँधेरे ही खुल जाता था। चाय पीने के इरादे से वह चकैया नीम की तरफ़ चल दिया।

इसे संयोग ही कहा जाएगा कि सबसे पहले मल्लू की मुलाकात उस्मान से ही हुई। उसने एक हल्की सी लोई ओढ़ रखी थी और सिकुड़ा हुआ चल रहा था।

'उस्मान भाई, सलामालेकुम।'

'वालेकुम सलाम।' उस्मान मल्लू के पास आकर खड़ा हो गया, 'आज कहाँ डेरा जमाए हो ?,

'आप तो जानते ही हैं, जहाँ शाम हो जाती है, हमारा डेरा लग जाता है।' मल्लू ने कहा और बगैर कमानी का चश्मा नाक पर रख कर कानों पर डोरी लपेटने लगा।

'मेरी मानो तो किसी बूढ़ी तवायफ़ को रख लो।' उस्मान भाई बहुत शरारत से बोला, 'और कुछ न सही, छत तो नसीब हो जाएगी। साली एक एक कर मर रही है, तुम्हारे नसीब बुलन्द हुए तो मकान भी हो जाएगा।'

'कैसी बात करते हो उस्मान भाई।' मल्लू ने कहा, 'मैं तो एक खुदा-तरस इन्सान हूँ। इस तरह के वाहियात खयाल मेरे दिमाग मे उठ ही नहीं सकते।'

'.खुदा कसम सच कह रहा हूँ। ज़रा हौसला चाहिए। चमेली बाई का नाम सुना होगा, जब से अल्लाह को प्यारी हुई है, घर में चमगादड़ बोल रहे हैं। लड़का भाग गया है और लड़की ने एक शरीफ़ खानदान का लड़का पटा लिया और अपना अलैहदा इन्तज़ाम कर लिया है।' उस्मान भाई ने उत्तेजना मे जेब से बीड़ी निकाल कर मुँह मे लगा ली और देर तक सुलगाता रहा, 'मेरा तो मन हो रहा है मैं ही क्यों न मकान पर कब्ज़ा कर लूँ। घर में जगह की भी कमी है।'

मल्लू ने उस्मान भाई के नेक इरादों की ताईद न की, बोला, 'रात को जाड़े से काँप रहा था कि हज़री बी ने पनाह दे दी। वर्ना आज मेरी तो कुल्फ़ी जम जाती।'

'उस पगली के चक्कर में न आना। बेहद जालिम बुढ़िया है। जुबान की भी बेहद फ़ोहश है। यह दूसरी बात है कि मुसीबत में सब के काम आ जाती है। उसे मालूम भर हो जाए कि कोई मुसीबत में है, सब काम छोड़ कर उसी की सेवा में लग जाएगी।' उस्मान भाई ने जानकारी दी।

मल्लू का अपना भी यही अनुभव था। हजरी अचानक क्या कह देगी, इसका कोई भरोसा नही था। मगर दिल की सच्ची थी। रात को हजरी ने अपने बारे में जो जानकारी दी थी, उसमें कहीं झूठ की गुंजायश उसे नजर न आ रही थी। अपने अतीत को ले कर वह शर्मिन्दा थी न भविष्य को ले कर चिन्तित।

'अमाँ यह इस मुहल्ले की रवायत है कि किरायेदार ही कुछ समय बाद मालिक मकान बन जाते हैं। आज नवाब साहब को देखते हो! रब्बन की पूरी हवेली पर कब्ज़ा कर लिये हैं। शुरुआत ड्योढ़ी से ही की थी।'

'उस्मान भाई मुझे यों शर्मिन्दा न करो। हजरी ने कत्त छप्पर के नीचे पनाह दे दी। आज उसने एक खटिया देने का वादा भी किया है, मगर माशा-अल्लाह वैसी खटिया भी मैंने आज तक नही देखी। चमगादड़ की तरह बाद झूल रहा है और एक-एक पावा एक-एक मन का होगा।'

'पुराने बखत की कोई यादगार होगी।'

'जरूर।' मल्लू बोला, 'अगर वक्त मिले तो उस्मान भाई जरा खटिया देख कर बता देना कि मरम्मत के काबिल है या नहीं। अगर मरम्मत के लायक हो तो कितने में तैयार हो जायेगी।'

'क्यों नही, क्यों नही।' उस्मान खुश हो गया। घर मे फूटी कौड़ी न थी। उस्मान इसी चिन्ता मे सुबह-सुबह निकला था कि कहीं कुछ हाथ लग जाये। दिन भर उसके बच्चे खाली पेटियाँ खरीदते और उनके छोटे-छोटे सन्दूक बना कर ठेले-खोमचेवालो के हाथ बेचते थे। इधर कुछ ऐसी मन्दी चल रही थी कि उस्मान के यहाँ लगभग एक दर्जन छोटे-बड़े सन्दूक रखे रह गये थे, कोई ग्राहक ही न मिल पा रहा था।

'देखो जरा दिन निकल आये, मैं जाकर खटिया देख आऊँगा। इधर कुछ मसरूफ़ हूँ। मिलिटरी का एक ठीका ले रखा है। काम खत्म हो तो कुछ पैसे हाथ मे आयें। इधर तो सब उसी में घुसता चला जा रहा है। मगर तुम बेफ़िक्र रहो। मैं आज जरूर कोई-न-कोई बन्दोबस्त करूँगा।'

मल्लू भी नल पर दातून-कुल्ले में व्यस्त हो गया। सामने अनवर मियाँ के ढाबे से धुआँ उठ रहा था, गली में थोड़ी आमदोरफ़्त भी बढ़ गयी थी। एक-दो दूधवाले साइकल पर खटर-पटर मचाते निकल रहे थे और एक

अखबार वाला 'आज की ताजा खबर' कहते-कहते दूर गली में चला गया था। नीम पर परिन्दों का शोर बढ़ गया था। सहसा मस्जिद से अज़ान की आवाज उठी और पूरे माहौल में लहरा गयी। कुछ देर बाद गुरुद्वारे से जपुजी साहब के पाठ की आवाज आने लगी किसी तीसरी तरफ़ से विष्णु सहस्रनाम का रेकार्ड बजने लगा। ईश्वर, अल्लाह और वाहेगुरु के सन्देश ऊपर आसमान में एक दूसरे से बतियाने लगे।

मल्लू को मंडी के लिए देर हो रही थी। आज उसका इरादा सिर्फ़ आलू खरीदने का था। मल्लू एक ही सब्जी खरीदने का कायल था। आलू सस्ते हुए तो आलू, वरना प्याज, गोभी या मटर। इधर हरा चना भी आने लगा था, उसका इरादा था कि अगर हजरी बी चने निकालने में मदद कर दे तो वह चने की चाट भी बेचना शुरू करेगा। हजरी की भी कुछ मदद हो आयेगी। मगर हजरी को समाज सेवा से ही फ़ुर्सत न थी।

'अनवर मियाँ अभी चाय में कितनी देर है ?' मल्लू ने तौलिये से टाँगे पोंछते हुए आवाज दी।

'कोई देर नही है। बस चले आओ।'

मल्लू अनवर मियाँ के चबूतरे पर चढ़ गया। अन्दर स्टूल पर नसीम खाँ बहुत गौर से 'सियासत' पढ़ रहे थे। बगल के स्टूल पर उनकी टोपी रखी थी और एक तरफ़ छडी। अंगीठी जलने से कमरे में धुआँ भर गया था और बाहर दो-एक कुत्ते बड़ी लालसा से अनवर मियाँ की ओर पूँछ हिलाते हुए अपलक ताक रहे थे।

मल्लू अंगीठी ताप रहा था और बड़ी बेसब्री से पानी उबलने का इन्तज़ार कर रहा था। उसे मंडी पहुँचने की जल्दी थी। वह जितनी बार अनवर से पूछता कि चाय में अभी कितनी देर है, अनवर पतीले में उँगली डाल कर पानी छूकर देखता। आखिर पानी उबलने लगा। अनवर मियाँ ने उबलते हुए पानी मे चायपत्ती, दूध मिला कर पतीला ढँक दिया और मल्लू के लिए गिलास धोने लगा। एक गिलास उसने इसहाक मियाँ के लिए धोया और एक अपने लिए। फिर उसने तीनों गिलासों के ऊपर बारी-बारी चलनी रख कर चाय उँडेल दी।

मल्लू अभी गिलास होठ तक भी न ले गया था कि उस्मान भाई नज़र आये। इस बीच उस्मान भाई न सिर्फ़ मल्लू की खटिया का मुआयना कर आये थे बल्कि हजरी से मल्लू की तारीफ़ों का पुल भी बाँध आये थे।

'वह एक अभागा इंसान है। आज तक मैंने उसे किसी से उलझते नही देखा। ऐसा इंसान पेड़ों के नीचे रात बिताये यह किसी भी मुसलमान के'

लिए शर्म की बात है। तुम्हारे इस सुझाव पर कि वह ड्योढ़ी में रात बिता ले, अल्लाहताला बहुत खुश होंगे।'

उसके बाद उस्मान भाई ने खटिया का मुआयना किया। बाद गल चुका था। पायों को कहीं-कहीं से दीमक चाट चुकी थी। मगर लकड़ी चूंकि बहुत मजबूत थी इसलिए दीमक अन्दर तक घुसपैठ नहीं कर पायी थी। दीमक एक सीधी लकीर इधर उधर बना कर रह गयी थी। उस्मान भाई ने खटिया की भरपूर प्रशंसा की, 'ऐसी खटिया आज सौ रुपये में भी न बने। बहरहाल अगर मल्लू कुछ पैसे खर्च करे तो उसकी जिन्दगी भर के लिए तो यह खाट काफी है।'

उस्मान भाई ज्यादा देर तक वहाँ न रुक सके। उन्हें भय था कि कहीं मल्लू उनके पहुँचने से पेश्तर ही मंडी की तरफ़ न चल दे। हजरी से विदा लेकर वह लम्बे डग भरते हुए अनवर मियाँ के यहाँ पहुँच गये।

'अनवर भाई, एक गर्म चाय और दो ठो बिस्कुट तो दो ही, सिगरेट पहले बढ़ा दो।' सिगरेट सुलगा कर वह वहीं सीढ़ी पर उकड़ूँ बैठ गये।

'मल्लू भाई खटिया मैं देख आया हूँ। आज तैयार करवा दूंगा, जबकि काम ज्यादा है। बाद तो पूरा ही बदलना होगा। पायों पर भी कहीं-कहीं दीमक लग चुके है। मेरे पास एक तेल है। वह लगा दूँगा तो दीमक हमेशा-हमेशा के लिए खत्म हो जायेगी।'

'बहुत मेहरबानी होगी उस्मान भाई।' मल्लू ने चाय सुड़कते हुए कहा।

'ऐसा करो अभी दस-पन्द्रह रुपये दे दो। कम-ज्यादा निकला तो शाम को हिसाब हो जायेगा।'

मल्लू सुबह-सुबह दस रुपये देने के मूड में नहीं था। उसका इरादा था कि शाम को लौट कर अपने सामने खटिया बनवा ले। अगर उस पर ज्यादा पैसा खर्च होता नजर आये तो एक नयी खटिया ही खरीद लाये।

'नयी खटिया कितनी की आयेगी?'

'ऐसी खटिया तो जमींदारी के साथ ही गायब हो गयी। अब लेना चाहो तो सौ में भी नहीं मिले।'

'मेरे लिए तो एक छोटी-सी खटिया काफी होगी।'

'बीस से कम में न मिलेगी और मैं तो दस रुपये में ही फिट कर दूँगा।'

उस्मान मियाँ बहुत परेशान हो उठे थे। उन्होंने दस-पन्द्रह रुपये पर जोर न देकर इस बार दस रुपये पर ही जोर दिया। अनवर मियाँ ने उस्मान को यह सोच कर ही चाय दी थी कि उसके पास एकाध रुपया जरूर होगा। दो माह पहले अनवर और उस्मान के बीच ऐसी जंग हुई थी कि दोनों को उम्र

तौहीन की बात थी। उस्मान भाई ने अपने पन्द्रह वर्षों के वैवाहिक जीवन में ग्यारह बच्चे पैदा किये थे। छह बच्चे अल्लाह को प्यारे हो चुके थे। शेष बच्चों पर भी वह कोई खास ध्यान न दे पाते थे। बकरीद पर शादी से पहले भी उनके यहाँ एक ही बकरा कटता था, अब भी एक ही। घर में जो भी कपड़ा आता था, वह यके बाद दीगरे सभी बच्चों के काम आता। दसियों बक्स पुराने कपड़े घर में आज भी दिखायी देते थे।

आखिर उन्हें एक तरकीब सूझी। वह वहाँ से उठ कर सामने हैदर साहब की दीवार के पास पेशाब करने लगे, वहाँ से वह बायें हाथ सरक गये। सन्दर अलवर कुछ व्यस्त हो गया था, क्योंकि एक साथ तीन लोग ढाबे में दाखिल हुए थे।

उस्मान वहाँ से सीधा हजरी के यहाँ गये। हजरी उसी प्रकार बिस्तर में दुबकी हुक्का गुड़गुड़ा रही थी।

'अम्मा सरकार ने बेवा औरतों को वज़ीफा देने की एक योजना बनाया की है। सोचता हूँ तुम्हारा फारम भरवा दूँ। फ़ारम तो फकत दो रुपये का है। तुम्हारी दरख़ास्त मंजूर हो गयी तो हर माह सौ रुपये मिलने लगेंगे। शहनाज़ भी फार्म भरने को कह रही थी। हो सकता है खुदा की इनायत हो जाये।' उस्मान भाई ने बहुत नपे तुले शब्दों में अपनी बात रखी।

हजरी यकायक उत्साहित हो गयी। उस्मान भाई की तरफ हुक्का बढ़ा दिया और बोली, 'सरकार को बहुत पहले यह कदम उठाना चाहिए था। खैर अकल तो आई। उस्मान भाई आप मेरा फारम ज़रूर भरवा दें। खुदा ने चाहा तो मैं जल्द से जल्द दो रुपये का इन्तज़ाम कर दूँगी।' उस्मान मियाँ ने माथा ठोक लिया। उसने हजरी के यहाँ और अधिक समय नष्ट करना उचित न समझा। उसे मल्लू पर बहुत क्रोध आ रहा था, सुबह-सुबह उसकी अपेक्षाएँ जगा कर यकायक गायब हो गया था और उस्मान था कि कर्ज के अपमान में ऊपर से नीचे तक सुलग रहा था। इधर इस तरह की दमघोटू मंदी न होती तो क्या उसकी हैसियत एक प्याला चाय पीने की भी नहीं थी? दस-बीस रुपये घर में हमेशा रहते थे, मगर छोटे बेटे ने यकायक बीमार पड़ कर वे रुपये भी बर्बाद कर दिये। घर में स्त्रियाँ बीड़ी बना कर अपना गुज़र चला रही थी, मगर उस्मान भाई को कोई एक दमड़ी देने को तैयार न था।

सामने सड़क पर इस्माइल खाँ ईंटे जोड़ कर लेई पका रहा था। इस्माइल खाँ के लिए उस्मान भाई ने अभी पिछले सप्ताह कुछ पटरे तैयार किए थे मगर इस वादे पर कि इस्माइल खाँ होली के दूसरे रोज उनको पचीस रुपये का भुगतान करेगा। होली में अभी कई रोज़ थे। इस्माइल खाँ का डिब्बे बनाने

का छोटा-सा कारखाना था। उसके कारखाने में उस्मान का छोटा बेटा अख्तर भी काम करता था। उस्मान का अख्तर पर भी कोई जोर न था। सब लौंडे अपनी माँ के साये में ज्यादा सुरक्षित महसूस करते थे।

उस्मान भाई ने इस्माइल को भी आजमा लेने में कोई हर्ज नहीं समझा। वह उसके पास ही सड़क पर उकड़ूँ बैठ गया और लेई के पतीले में लकड़ी चलाते हुए बोला, 'इस्माइल भाई बीड़ी-वीड़ी हो तो पिलाओ।' इस्माइल बीड़ी नहीं पीता था। दूसरे होली यानी सीज़न के दिन थे, वह अपना एक क्षण भी नष्ट नहीं करना चाहता था, बोला, 'देखो मियाँ, हम बीड़ी पीते तो इतना बड़ा कारखाना खड़ा न कर पाते। बीड़ी तो क्या, कभी पान तक नहीं खाया।'

दरअसल इस्माइल ने उस्मान का चेहरा देख कर ही अन्दाज कर लिया था कि उसके इरादे नेक नहीं हैं। पेश्तर इसके कि उस्मान कुछ और कहता, इस्माइल ने कहा, 'देखो म्या दस बण्डल दफ़्ती आज ही चाहिए वरना मैं हाथ में लिया काम पूरा न कर पाऊँगा। माहेश्वरी पेपर बोर्ड से मुझे हज़ार रुपये तक का उधार ही मिल पाता है। कोई दफ़्ती वाला व्यापारी वाकिफ़ हो तो बताओ। होली के रोज़ पाई-पाई चुका दूँगा।'

उस्मान की वाकफ़ियत किसी दफ़्तीवाले से न हो, यह कैसे हो सकता था। ऐसे में वह जरूर कोई-न-कोई दोस्ती या पहचान अक्सर निकाल लेता। मगर इस्माइल दफ़्ती जैसी फ़िज़ूल सी चीज की बात कर रहा है। उस्मान भाई चाहते तो उसे अभी नूरउल्लाह रोड पर आसान किस्तों पर कोई मकान दिला दे, सेल्सटैक्स आफ़िसर को अपना लंगोटिया घोषित कर देते मगर इस सुबह-सुबह की गर्दिश ने उन्हे मायूस कर दिया था। बोले, 'कैसे दिन आग ये है कि मुसलमान भी होली का इतने चाव से इन्तजार करने लगे हैं। कोई हिन्दू कभी ईद का इस तरह बेसब्री से इन्तजार करता है?'

'तुम्हारा दिमाग़ फिर गया है। मेरे लिए तो होली दीवाली पर सचमुच लक्ष्मी उतरती है। वह तुम्हारा चचाजाद भाई है न, हसन। होली पर रंग और दीवाली पर पटाखे बेच कर ही लखपति हो गया है और तुम्हारे जैसे कुन्दज़ेहन लोग हुनरमन्द होते हुए भी धक्के खा रहे हैं।'

'तुम्हारे अन्दर का मुसलमान मर चुका है।' उस्मान भाई ने बड़ी नफ़रत से कहा, 'तुम जाकर कही से नसबन्दी करा आओ।' वास्तव मे उस्मान भाई बज़ातेखुद धर्म निरपेक्ष किस्म के इन्सान थे, सुबह की गर्दिश उन्हें न जाने क्यों साम्प्रदायिकता की तरफ़ धकेल रही थी।

'टके-टके के लिए मारा-मारा फिरने से कहीं अच्छा है आदमी नसबंदी करा ले। वह देखो सामने अभवर तुम्हारी जान को रो रहा है कि अल्लाह ताला

की कसम खाने के बाद भी तुम हराम की चाय पी गये।'

उस्मान कुछ कहता इससे पहले ही इस्माइल अन्दर जाकर दफ़्ती काटने की मशीन को तेल देने लगा। उस्मान के लिए अब यहाँ बैठना दुश्वार हो चुका था। उसने तय किया यह अब कभी भी सुबह उठकर मल्लू की सूरत नहीं देखेगा। ऐसी मनहूस सूरत तो उसने जिन्दगी में कभी नहीं देखी थी। उसकी इच्छा हुई कि जाकर हजरी को पाठ पढ़ा आये कि यह मल्लू अव्वल दर्जे का बदमाश है और उसकी नजर न केवल हजरी के मकान पर है बल्कि उसके जरिए से वह नजमी को हथियाना चाहता है।'

उस्मान मियाँ से और अधिक अपमान बर्दाश्त न हुआ, तो वे अनवर की दुकान पर गये और अपनी कमीज उतार कर उसे दे दी, 'लो भाई, इसे ही गिरो रख लो!'

'कैसी बात कर रहे हो उस्मान भाई।' अनवर ने कमीज लौटाते हुए कहा, 'आप इस तरह शर्मिन्दा कर रहे हैं कि मुँह दिखाने लायक न रह जाऊँगा।'

सुबह सुबह अनवर की अच्छी बिक्री हो गयी थी। वह आश्वस्त था। अनवर कुशल दुकानदार था। कमीज का वह क्या करेगा। दुकान से उठ गयी तो उस्मान उस पर बीसियों रुपये का दावा कर देगा और दूसरे अभी अभी सामने सिद्दीकी नेता के यहाँ से छह अण्डों के आमलेट का आर्डर आया था। इस्माइल नशे में अण्डे फेंट रहा था। उसने पहले से ही तय कर लिया था कि एक अण्डा बचा कर वह उस्मान भाई की चाय का दाम वसूल लेगा!'

'मगर अनवर भाई आपको पूरे मुहल्ले में इस बात का ढोल नहीं पीट देना चाहिए कि उस्मान हराम की चाय पी गया। इसी बेमुरव्वत इस्माइल से मुझे पचास रुपये लेने हैं और उसकी हिम्मत देखिए कि मुझे एक प्याला चाय पीने पर ज़लील कर रहा था। उसे तो डूब मरना चाहिए था कि वह खुद मेरा कर्जदार है। अल्लाह की इनायत से घर पर पैसों की भी कमी नहीं है। कमीज़ यह सोच कर उतार दी कि इस बीच कहीं अनवर मियाँ का दिल ही न बैठ जाये।'

उस्मान ने कमीज पहनी और मल्लू को गाली बकते हुए अपने घर के सामने पड़ी एक खटिया पर जा बैठा। पास ही एक बकरी बँधी थी। वह धीरे धीरे बकरी को पुचकारने लगा। उसने तय किया कि कल से वह पाँचों वक्त की नमाज पढ़ेगा। लगता है अल्लाह मियाँ किसी बात से ख़फ़ा हो गये है।'

शाम को मल्लू लौटा तो एक नयी चारपाई उसके ठेले पर थी। नयी खटिया नौ रुपये में ही मिल गयी थी। बाँस की हल्की-फुल्की खटिया। मल्लू

ने एक हाथ से ही उठा ली और हजरी बी को आवाज लगायी ।

मल्लू की आवाज सुनकर हजरी बाहर आयी । मल्लू के हाथ में नयी खटिया देख कर वह खुशी के मारे दोनों हाथों से ताली पीटने लगी । मल्लू ने अपना पेट्रोमैक्स जला कर हजरी की कोठरी रोशन कर दी । हजरी ने अपनी कोठरी में पहली बार इतना उजाला देखा था । उसने पहली बार देखा कि छत पर कितने जाले लटक रहे हैं और दीवारों को पुताई की कितनी सख्त जरूरत है ।

'इस बार ईद पर तुम्हारी कोठरी की पुताई करा दूंगा ।' मल्लू ने कहा ।

'न जाने कब से पुताई नहीं हुई ।' हजरी बोली, 'मैं तो दिन भर गायब रहती हूँ । रात बिताने ही यहाँ आती हूँ ।'

'सुबह की चाय और रात के खाने का इन्तजाम कर लो, तो मैं साठ रुपये महीने दे सकता हूँ ।'

'रंडी के घर कभी चूल्हा नहीं जलता ।' हजरी को बी मल्लू की बात पसन्द न आई, बोली, 'ज़िन्दगी भर होटल का खाया है । अब इस उमर में क्या चूल्हा चौका होगा ।'

'मेरी बात का आपको बुरा लगा हो तो मुआफ़ कर दें ।' मल्लू ने कहा, 'सुबह उठकर खटिया आँगन में खड़ी कर दूंगा । आप को मेरी वजह से कोई तकलीफ़ न होगी, इतमीनान रखें ।'

खटिया पर दो-तीन टाट बिछा कर मल्लू अनवर के यहाँ चाय पीने चल दिया । अनवर की दुकान के पास ही उस्मान भाई का घर था । मल्लू को देखते ही अनवर ने सवाल किया कि इसमें क्या राज है कि उस्मान भाई आज दिन भर मल्लू को लेकर अनाप-शनाप बकते रहे हैं । मल्लू ने कुछ भी बताना मुनासिब न समझा । उस्मान भाई का हजरी-मल्लू विरोधी अभियान इतना कारगर साबित हुआ कि हजरी के पास से गुजरते हुए, ताहिर ने एक जुमला जड़ दिया, 'हजरी बी, सुनते हैं, खसम कर लिया है तुमने ।'

हजरी ने आव देखा न ताव ताहिर को गिरेबान से पकड़ कर ताबड़तोड़ दो-तीन घूंसे रसीद कर दिये । ताहिर कौन कम था । वह ताकतवर था और पैसे की गर्मी थी, दो वक्त बेफ़िक्री से भोजन करता था, दड़बे में मुर्गी भी पाल रखी थी । उसने हजरी को बिल्कुल फ़िल्मी अन्दाज़ में उठा कर अपने ठेले के ऊपर पटक दिया और धीरे-धीरे घर की ओर कदम बढ़ाते हुए बोला, 'खसम कर लिया है तो इसमें भड़कने की कौन सी बात है ।''

हजरी ठेले पर से चिल्लायी, 'तुम्हारी बीवी को''' तुम्हारी बहन को
गली के अधिकांश नौजवानों के पास कोई काम न था । [illegible]
होते ही तमाशबीनों की अच्छी खासी भीड़ जुट गई ।'

लोगों को देख कर ताहिर फिर उत्साहित हो गया। वह वापिस मुड़ा और हजरी बी को चिढ़ाने लगा। हजरी ने गालियों की झड़ी लगा दी।

देखने वाले निष्पक्ष थे। वे किसी का भी साथ देना नहीं चाहते थे। आरिफ़ ने अचानक दोनों की भिड़न्त का आँखों देखा हाल प्रसारित करना शुरू कर दिया : ताहिर ने हजरी बी का गिरेबान छोड़ दिया है और पंजे से उसके बाल थाम लिये है। मगर हजरी बी भी कम नहीं। वह ताहिर की टाँगों में अपनी टाँगे फंसा कर उसको गिराने की कोशिश कर रही है। मगर इस कोशिश में हजरी बी खुद ही गिर पड़ी। गिर कर उठी। उठते ही उसने पत्थर उठा लिया। ताहिर संभलता इससे पेश्तर उसका सर फूट गया है। ताहिर एक हाथ से सिर थामे'''यह रेडियो जम्मू-कश्मीर है'''

थोड़ी देर ढिशुं-ढिशुं हुआ।

'लीजिए ताहिर के अब्बाजान भी मैदान में उतर आये हैं। वह भीड़ में ठीक उसी तरह खड़े हैं जैसे पवेलियन एण्ड की तरफ़ आपका यह खादिम कमेण्टेटर। अब खेल बराबरी का है। दोनों के सर से खून बह रहा है। लीजिए अब हजरी बी की कुछ गालियाँ समाअत फ़रमाइए ! अब हाथापाई की जगह गालियों ने ले ली है। गालियाँ देने में दोनों होशियार है। पाकिस्तान से हाल ही में इम्पोर्टिड कुछ नयी गालियां सुनिए।'

मल्लू चाय पीकर लौटा तो हजरी की यह हालत देख कर स्तब्ध रह गया।

'क्या हुआ हजरी बी ?'

मल्लू की तरफ़ देख कर लौंड़ों ने एक ज़ोरदार ठहाका लगाया। मल्लू ने इसकी तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया। वह हजरी को पास के नल पर ले गया और उसका मुँह पोंछने लगा। हजरी ने भी कोई प्रतिवाद नहीं किया। चुपचाप मुँह धुलाती रही। हजरी और मल्लू दोनों सुन रहे थे, ताहिर कह रहा था—साली अपने यार से मुँह धुलवा रही है।

स्थिति को समझने में मल्लू को देर न लगी। वह हजरी के साथ चुपचाप घर की तरफ़ चल दिया। दोनों ने रास्ते में कोई बात नहीं की। मल्लू के कानों में ताहिर के साथ-साथ उसके बाप की भी आवाज़ आ रही थी :

'चलो हजरी का बुढ़ापा तो अब आराम से कट जायेगा। बेचारी कब तक कमिसनर साहब का इन्तज़ार करती।'

ताहिर और उसके बाप पर जवाबी हमला करने के इरादे से हजरी बार-बार खटिया से उठने की कोशिश करती, मगर मल्लू ने हजरी को अच्छी तरह थाम रखा था। वह उठने की कोशिश करती, मल्लू उसे बाज़ू से पकड़ कर बैठा देता।

ताहिर लोग तब तक उस्मान भाई के अहाते की तरफ़ चल चुके थे। उन लोगों का थाना उस्मान भाई का घर ही था।

अगले रोज जब मल्लू की नींद खुली तो उसने अपने ठेले के पास पंडित शिवनारायण दुबे को खीसे निपोरते हुए देखा। पंडित का चेहरा लम्बा था, दांत पान और बीडी से बदरंग हो गये थे। दोनो गालों की हड्डियां देखकर लगता था जैसे खरगोश के कान हों। वह जाड़े में ठिठुर रहा था मगर उसके चेहरे पर असीम प्रसन्नता के भाव थे। पण्डितजी की खाकी कमीज़ के अन्दर से मैला यज्ञोपवीत झलक रहा था।

मल्लू को उसने अनेक बार सड़कों पर सब्जी की हांक लगाते देखा था और आज उसे हुजरी की कोठरी में देख कर बडा आश्चर्य हुआ। वह मुहल्ले वालों से मल्लू का परिचय 'हजरी के खसम' के रूप में कल रात को ही सुन चुका था। उस्मान मियाँ से उसकी खूब पटती थी, क्योंकि एक बार पंडित ने अपने दफ़्तर से लकड़ी के छोटे-छोटे पीढे बनवाने का काम दिलवाया था। उस्मान कल उसे पान की दुकान पर दिख गया था और पंडित को देखते ही बोला, 'पंडितजी, सुना आपने, हजरी बी ने खसम कर लिया।'

'कौन हजरी ?'

'अरे वही तुम्हारी पड़ोसिन। हा हा हा।' उस्मान हँसने लगा।

'च् च् !' पंडित की भावनाओं को बड़ी ठेस पहुँची। वह अपना मुँह उस्मान के कान के पास ले गया और बोला, 'हाय राम वह तो पचास के ऊपर होगी।'

'तवायफ़ कभी बूढ़ी नहीं होती।' उस्मान भाई बोले, 'कैसा जमाना आ गया है। अब अल्लाह ही इस कौम का मालिक है।'

'राम-राम, वह तो भली औरत थी। बेचारी को इस उम्र में क्या सूझा।'

'आप तो शरीफ़ आदमी ठहरे। हर आदमी को शरीफ़ समझते है। वह इस उम्र मे भी चुपके-चुपके पेशा कराती थी और अब एक मासूम सब्ज़ीफ़रोश को फाँस लिया। देखते रहो, साले की जाँघों में मक्खियाँ भिनभिनाएँगी।'

'उस्मान भाई, यह तो बहुत बुरा हुआ। मुहल्ले की बहू-बेटियों पर इसका क्या असर पड़ेगा !'

'मुहल्ले वाले बेहद खफ़ा है। जल्दी ही इन तवायफों को यहाँ से उठा दिया जायेगा। पण्डितजी तवायफ़ों का भी एक मजहब होता है। कभी अजी-जन को देखा है गली में ? कभी गुलबदन को भी न देखा होगा आपने ?

कर्मण्येवा धिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।'

मल्लू ने नल पर हाथ मुँह धोया और भोजन करने रवाना हो गया।

मल्लू के जाते ही हजरी चिल्लाते हुए कोठरी से निकली 'हरामजादो अगर मुझे खसम ही करना था तो तब न कर लेती जब आप लोग नाक रगड़-रगड़ कर मेरी खुशामद किया करते थे और मुहल्ले की सब मालजादियाँ किसी न किसी के साथ बैठ गयी थीं। मैंने बरसों पहले आपकी टांग ऐसे तड़िया दी थी कि आज बीसियों बरस बाद भी आपका चूहा उस बेइज्जती से लहूलुहान हो रहा है। अगर ग़ैरत है तो आकर जरा मुँह तो दिखाओ, अभी छुक-छुक गाड़ी घुसेड़ दूँगी। साले अपने को खानदानी कहते हैं। कल तक इधर-उधर गू-मूत चाटते घूमते थे।' हजरी धारा प्रवाह बोले जा रही थी।

'सुन लो मुहल्ले वालों, कान खोल कर सुन लो। अब यह गुन्डागर्दी नहीं चलने वाली। कमिसनर साहब को पता चलेगा तो एक-एक को थाने में बुलवा लेंगे। हरामी के पिल्लों, अपनी मा-बहन को गाली बकते तुम्हारे ऊपर बुक्क भी नहीं टूटता।...ऐ मेरे हबीब उनसे कह दो कि अल्लाह उनके साथ है जो सब्र करने वाले हैं।

लाशों पर लायी थीं बीबियाँ जैनब को थाम कर
मातम की सफ़ पर गिर पड़ी वो शोल्ला जिगर
बोलीं बक्का के दस्ते मुबारक इधर-उधर
'बच्चे किधर हैं मुझको कुछ आता नहीं नजर।'

हजरी बी छाती पीटते हुए रोने लगी। कुछ लोगों ने हजरी बी के साथ छाती पीटना शुरू कर दिया। एक बच्चा एक हाथ में किशमिश लड्डू चाट रहा था, वह भी चलते-चलते दाहिने हाथ से छाती पीटते हुए आगे बढ़ गया। हजरी बी को यह माहौल मजलिस के लिए उपयुक्त लगा। वास्तव में हजरी बी जहाँ जुल्म देखती थी उसे इमाम हुसैन साहब की याद सताने लगती थी। सहसा वह छाती पीटते हुए गाने लगी :

पीटूँगी पहलुओं में जो तुमको न पाऊँगी।
मैं सब को ढूँढती हुई जंगल में जाऊँगी।

हजरी ने अपनी मजलिस जारी रखी—'इमाम हुसैन के बहत्तर साथियों का खून और उसके छींटे आज भी दुनिया के दामन पर नुमायाँ हैं। करबला का नन्हा मुजाहिद अली असगर शहीद हुआ और प्यासा ही चुका लेकिन आज भी इन्सानियत की दुनिया नौहाख्वाह है। अगर हुसैन चाहते तो खुद सबसे पहले शहीद हो जाते, अजीज दोस्त और बच्चे बाद में शहीद होते, लेकिन इस तरह से सिर्फ हुसैन की कुर्बानी सामने आती, सब के जौहर न खुलते। इसलिए हुसैन ने

क़ुर्बानी का वक्त सबसे आखिर में रखा ताकि ज़माना यह देख ले कि जब बराबर के भाई अब्बास ने आवाज़ दी कि मौला खादिम निसार हुआ तब हुसैन के क़दमों में लरज़िश तो पैदा न हुई। जब जवान फ़रज़द अली अकबर ने आवाज दी बाबा गुलाम रुख़्सत होता है तो इमाम के क़दमों में कपकपाहट तो पैदा नहीं हुई। जब छह महीने के अली असगर के गले पर तीर लगा तो हुसैन के हाथों में राशः तो पैदा नहीं हुआ और जब हुसैन इन तमामो मंज़िलों से गुज़र चुके तो आखिर में अपना सिर भी राहे ख़ुदा में निसार कर दिया।'

हजरी विलाप कर रही थी कि पड़ोस की कोठरियों से 'हाय हुसैन' 'हाय हुसैन' की आवाज़ें उठने लगी।

मल्लू भोजन करके लौट आया। मल्लू को देखते ही हजरी ने बलैयाँ लेनी शुरू कर दीं—'आज से मल्लू मियाँ हम सब के मेहमान हैं। देखती हूँ कौन मादर···बहन···बेटी···उंगली उठाता है। हम लोग दुनिया से भलाई को यों खत्म नहीं होने देंगे। मैं सब जानती हूँ, ये ज़ालिम लोग हैं। यज़ीदी हैं। ऐसे ही लोगों ने इमाम हुसैन साहब को शहीद कराया था।

मल्लू की समझ में यह सब कुछ नहीं आ रहा था। वह अपने ठेले की तरह स्तब्ध, जड़ और निर्जीव-सा हजरी के सामने खड़ा रहा। उसे न तो कुछ हजरी से लेना था न उसके दुश्मनों से।

हजरी ने जब देखा कि मल्लू पर उसकी सहानुभूति का कोई प्रभाव नहीं हो रहा तो वह शलवार उठा कर टाँग खुजलाने लगी। मल्लू ने उसे इतनी बेफ़िक्री से टाग खुजाते देखा तो अपना सामान ठेले से बटोरने लगा। हजरी ने कहा, 'यह ससुरा सरसों का तेल भी अब नसीब नहीं होता। खुश्की के मारे सारा बदन अकड़ा जा रहा है।'

मल्लू चुपचाप नज़रें झुकाए अपनी खटिया की तरफ देखता रहा। हजरी बी को उसका खाना सौंप कर वह चाय पीने के इरादे से अनवर मियाँ के ढाबे की तरफ चल दिया। वहाँ उस्मान भाई पहले से विराजमान थे। मल्लू को देख कर वह दीवार पर चिपका एक इश्तहार पढ़ने लगे। उस्मान मियाँ तय कर चुके थे कि इस काफ़िर को कम-से-कम अपने मुहल्ले में पनाह नहीं लेने देंगे। अगर खटिया नहीं बनवानी थी तो उन्हें इस क़दर जलील क्यों किया ?

उस्मान भाई में बहुत तेज़ी से परिवर्तन आने लगा। वह यकायक पाँचों वक्त की नमाज पढ़ने लगे और खाली वक्त में दीवारों पर लिखते रहते :

मुसलमानों नमाज़ पढ़ो,
मस्जिद को आबाद करो।

ज़िन्दगी उनके साथ बड़ी रुखाई से पेश आ रही थी। एक दिन लोगों ने सुना, उन्होंने कसम खा ली है कि अब ज़िन्दगी में कभी चाय नहीं पियेंगे। देखते देखते उन्होंने बीड़ी सिगरेट सचमुच छोड़ दी। दरअसल उनके पाँच बच्चों में एक ही कमाऊ था और बाक़ी चारों दिन भर आवारगी करते। बड़का दिन भर सन्दूक वगैरह बना बेच कर दस रुपये तक कमा लेता। उसके दस रुपये इतने बड़े परिवार के लिए कोई अर्थ न रखते थे। आखिर आजिज़ आ कर वह घर से भाग गया। उससे छोटा फारूक़ जुए में पकड़ा गया। अगला नम्बर जमील का था। वह दिन भर तवायफ़ों से आँख लड़ाता और न जाने इतनी कम उम्र में कैसे सूजाक का शिकार हो गया। फारूक से छोटा असरार था, उसे तपेदिक ने दबोच लिया। सबसे छोटा मन्जूर था, उसे पोलियो हो गया।

उस्मान भाई की दो लड़कियाँ थी। माँ के साथ मिलकर वे दिन रात बीड़ी बनाती जिससे किसी तरह घरमें चूल्हा जल रहा था। यही वजह थी, उस्मान भाई घर में घुसने से घबराते थे। न जाने बेग़म क्या ताना दे दे। अपने औज़ार तक उन्होंने बेच खाये थे। अब सिर्फ़ अल्लाह मियाँ का सहारा था। घर में तीन तीन बीमार बच्चे। वे ऊब कर घर से निकलते और दीवारों पर मुसलमानों के लिए अपनी अपील लिखते रहते।

मुसलमानो नमाज़ पढ़ो,
मस्जिद को आबाद करो।

एक दिन उस्मान भाई मस्जिद से नमाज़ पढ़ कर लौट रहे थे कि स्कूल के पास उन्हें एक दीवार खाली नज़र आई। उन्होंने जेब से रंगीन चाक निकाला और अपना सन्देश लिख दिया। उस्मान भाई अभी लिख ही रहे थे कि एक शख्स उनके पास आकर खड़ा हो गया। वह शेरवानी पहने था और चश्मा लगाये था।

'बड़ा नेक काम करते हो।' उसने उस्मान भाई से कहा, 'जगयमाश क्या है?'

उस्मान भाई ने गर्दन घुमाकर उसकी तरफ़ देखा, और बोला, 'बदनसीब इन्सान हूँ। खाने पीने को लाचार हूँ। ख़ुदा ने पांच बेटे दिए। तीन बीमार है। कुदरत ने अब तक जितनी बीमारियाँ ईजाद की हैं, मेरी ही औलाद पर चस्पाँ कर दी।'

उस्मान भाई छह फुट के हट्टे कट्टे इन्सान थे। देखने में कोई कह नहीं सकता था कि यह आदमी अन्दर से इतना टूट चुका है। आज वह अपनी

कुर्बानी का वक्त सबसे आखिर में रखा ताकि जमाना यह देख ले कि जब बराबर के भाई अब्बास ने आवाज़ दी कि मौला खादिम निसार हुआ तब हुसैन के कदमों में लरज़िश तो पैदा न हुई। जब जवान फ़रजंद अली अकबर ने आवाज दी बाबा गुलाम रुख़सत होता है तो इमाम के कदमों में कपकपाहट तो पैदा नहीं हुई। जब छह महीने के अली असगर के गले पर तीर लगा तो हुसैन के हाथो में राश तो पैदा नही हुआ और जब हुसैन इन तमामों मंज़िलों से गुजर चुके तो आखिर मे अपना सिर भी राहे खुदा में निसार कर दिया।'

हजरी विलाप कर रही थी कि पड़ोस की कोठरियों से 'हाय हुसैन' 'हाय हुसैन' की आवाजें उठने लगी।

मल्लू भोजन करके लौट आया। मल्लू को देखते ही हजरी ने बलैयाँ लेनी शुरू कर दीं—'आज से मल्लू मियाँ हम सब के मेहमान हैं। देखती हूँ कौन मादर···बहन···बेटी···उंगली उठाता है। हम लोग दुनिया से भलाई को यों खत्म नही होने देंगे। मै सब जानती हूँ, ये जालिम लोग है। यजीदी है। ऐसे ही लोगो ने इमाम हुसैन साहब को शहीद कराया था।

मल्लू की समझ में यह सब कुछ नही आ रहा था। वह अपने ठेले की तरह स्तब्ध, जड़ और निर्जीव-सा हजरी के सामने खड़ा रहा। उसे न तो कुछ हजरी से लेना था न उसके दुश्मनों से।

हजरी ने जब देखा कि मल्लू पर उसकी सहानुभूति का कोई प्रभाव नही हो रहा तो वह शलवार उठा कर टाँग खुजलाने लगी। मल्लू ने उसे इतनी बेफ़िक्री से टाग खुजाते देखा तो अपना सामान ठेले से बटोरने लगा। हजरी ने कहा, 'यह ससुरा सरसो का तेल भी अब नसीब नही होता। खुश्की के मारे सारा बदन अकड़ा जा रहा है।'

मल्लू चुपचाप नज़रें झुकाए अपनी खटिया की तरफ देखता रहा। हजरी बी को उसका खाना सौंप कर वह चाय पीने के इरादे से *अनवर मियाँ के ढाबे की* तरफ चल दिया। वहाँ उस्मान भाई पहले से विराजमान थे। मल्लू को देख कर वह दीवार पर चिपका एक इश्तहार पढने लगे। उस्मान मियाँ तय कर चुके थे कि इस काफिर को कम-से-कम अपने मुहल्ले में पनाह नही लेने देंगे। अगर खटिया नही बनवानी थी तो उन्हें इस क़दर जलील क्यों किया?

उस्मान भाई मे बहुत तेजी से परिवर्तन आने लगा। वह यकायक पाँचो वक्त की नमाज़ पढ़ने लगे और खाली वक्त मे दीवारो पर लिखते रहते :

मुसलमानों नमाज पढ़ो,
मस्जिद को आबाद करो।

जिन्दगी उनके साथ बड़ी रुखाई से पेश आ रही थी। एक दिन लोगों ने सुना, उन्होंने कसम खा ली है कि अब जिन्दगी में कभी चाय नहीं पियेंगे। देखते देखते उन्होंने बीड़ी सिगरेट सचमुच छोड़ दी। दरअसल उनके पाँच बच्चों में एक ही कमाऊ था और बाकी चारों दिन भर आवारगी करते। बड़का दिन भर सन्दूक वगैरह बना बेच कर दस रुपये तक कमा लेता। उसके दस रुपये इतने बड़े परिवार के लिए कोई अर्थ न रखते थे। आखिर आजिज आ कर वह घर से भाग गया। उससे छोटा फारूक़ जुए में पकड़ा गया। अगला नम्बर जमील का था। वह दिन भर तवायफ़ों से आँख लड़ाता और न जाने इतनी कम उम्र में कैसे सूजाक का शिकार हो गया। फारूक़ से छोटा असरार था, उसे तपेदिक ने दबोच लिया। सबसे छोटा मन्जूर था, उसे पोलियो हो गया।

उस्मान भाई की दो लड़कियाँ थीं। माँ के साथ मिलकर वे दिन रात बीड़ी बनातीं जिससे किसी तरह घरमें चूल्हा जल रहा था। यही वजह थी, उस्मान भाई घर में घुसने से घबराते थे। न जाने बेगम क्या ताना दे दें। अपने औजार तक उन्होंने बेच खाये थे। अब सिर्फ़ अल्लाह मियाँ का सहारा था। घर में तीन तीन बीमार बच्चे। वे ऊब कर घर से निकलते और दीवारों पर मुसलमानों के लिए अपनी अपील लिखते रहते।

मुसलमानों नमाज पढ़ो,
मस्जिद को आबाद करो।

एक दिन उस्मान भाई मस्जिद से नमाज पढ़ कर लौट रहे थे कि स्कूल के पास उन्हें एक दीवार खाली नजर आई। उन्होंने जेब से रंगीन चाक निकाला और अपना सन्देश लिख दिया। उस्मान भाई अभी लिख ही रहे थे कि एक शख्स उनके पास आकर खड़ा हो गया। वह शेरवानी पहने था और चश्मा लगाये था।

'बड़ा नेक काम करते हो।' उसने उस्मान भाई से कहा, 'जरायमाश क्या है?'

उस्मान भाई ने गर्दन घुमाकर उसकी तरफ देखा, और बोला, 'बदनसीब इन्सान हूँ। खाने पीने को लाचार हूँ। खुदा ने पाँच बेटे दिए। तीन बीमार हैं। कुदरत ने अब तक जितनी बीमारियाँ ईजाद की है, मेरी ही औलाद पर चस्पाँ कर दीं।'

उस्मान भाई छह फुट के हट्टे कट्टे इन्सान थे। देखने में कोई कह नहीं सकता था कि यह आदमी अन्दर से इतना टूट चुका है। आज वह अपनी

क़ुर्बानी का वक्त सबसे आखिर में रखा ताकि जमाना यह देख ले कि जब बराबर के भाई अब्बास ने आवाज़ दी कि मौला खादिम निसार हुआ तब हुसैन के कदमो में लरज़िश तो पैदा न हुई। जब जवान फ़रजंद अली अकबर ने आवाज दी बाबा ग़ुलाम रुख्सत होता है तो इमाम के कदमों में कपकपाहट तो पैदा नही हुई। जब छह महीने के अली असगर के गले पर तीर लगा तो हुसैन के हाथो में राश' तो पैदा नही हुआ और जब हुसैन इन तमामों मंजिलों से गुजर चुके तो आखिर में अपना सिर भी राहे खुदा में निसार कर दिया।'

हजरी विलाप कर रही थी कि पड़ोस की कोठरियो से 'हाय हुसैन' 'हाय हुसैन' की आवाज़ें उठने लगीं।

मल्लू भोजन करके लौट आया। मल्लू को देखते ही हजरी ने बलैयां लेनी शुरू कर दीं—'आज से मल्लू मियाँ हम सब के मेहमान हैं। देखती हूँ कौन मादर'''बहन'''बेटी'''उंगली उठाता है। हम लोग दुनिया से भलाई को यों खत्म नही होने देंगे। मैं सब जानती हूँ, ये जालिम लोग हैं। यजीदी हैं। ऐसे ही लोगो ने इमाम हुसैन साहब को शहीद कराया था।

मल्लू की समझ में यह सब कुछ नही आ रहा था। वह अपने ठेले की तरह स्तब्ध, जड और निर्जीव-सा हजरी के सामने खड़ा रहा। उसे न तो कुछ हजरी से लेना था न उसके दुश्मनो से।

हजरी ने जब देखा कि मल्लू पर उसकी सहानुभूति का कोई प्रभाव नही हो रहा तो वह शलवार उठा कर टाँग खुजलाने लगी। मल्लू ने उसे इतनी बेफ़िक्री से टाग खुजाते देखा तो अपना सामान ठेले से बटोरने लगा। हजरी ने कहा, 'यह ससुरा सरसों का तेल भी अब नसीब नही होता। खुश्की के मारे सारा बदन अकड़ा जा रहा है।'

मल्लू चुपचाप नजरें झुकाए अपनी खटिया की तरफ देखता रहा। हजरी बी को उसका खाना सौंप कर वह चाय पीने के इरादे से अनवर मियाँ के ढाबे की तरफ चल दिया। वहां उस्मान भाई पहले से विराजमान थे। मल्लू को देख कर वह दीवार पर चिपका एक इश्तहार पढ़ने लगे। उस्मान मियाँ तय कर चुके थे कि इस काफ़िर को कम-से-कम अपने मुहल्ले में पनाह नही लेने देंगे। अगर खटिया नही बनवानी थी तो उन्हें इस क़दर जलील क्यो किया?

उस्मान भाई में बहुत तेजी से परिवर्तन आने लगा। वह यकायक पाँचों वक्त की नमाज पढ़ने लगे और खाली वक्त में दीवारों पर लिखते रहते :

मुसलमानों नमाज़ पढ़ो,
मस्जिद को आबाद करो।

ज़िन्दगी उनके साथ बड़ी रुखाई से पेश आ रही थी। एक दिन लोगों ने सुना, उन्होंने कसम खा ली है कि अब ज़िन्दगी में कभी चाय नहीं पियेंगे। देखते देखते उन्होंने बीड़ी सिगरेट सचमुच छोड़ दी। दरअसल उनके पाँच बच्चों में एक ही कमाऊ था और बाक़ी चारों दिन भर आवारगी करते। बड़का दिन भर सन्दूक वग़ैरह बना बेच कर दस रुपये तक कमा लेता। उसके दस रुपये इतने बड़े परिवार के लिए कोई अर्थ न रखते थे। आखिर आजिज आ कर वह घर से भाग गया। उससे छोटा फारूक़ जुए में पकड़ा गया। अगला नम्बर जमील का था। वह दिन भर तवायफ़ों से आँख लड़ाता और न जाने इतनी कम उम्र में कैसे सूजाक का शिकार हो गया। फारूक़ से छोटा असरार था, उसे तपेदिक ने दबोच लिया। सबसे छोटा मन्जूर था, उसे पोलियो हो गया।

उस्मान भाई की दो लड़कियाँ थीं। माँ के साथ मिलकर वे दिन रात बीड़ी बनातीं जिससे किसी तरह घरमें चूल्हा जल रहा था। यही वजह थी, उस्मान भाई घर में घुसने से घबराते थे। न जाने बेगम क्या ताना दे दे। अपने औज़ार तक उन्होंने बेच खाये थे। अब सिर्फ़ अल्लाह मियाँ का सहारा था। घर में तीन तीन बीमार बच्चे। वे ऊब कर घर से निकलते और दीवारों पर मुसलमानो के लिए अपनी अपील लिखते रहते।

मुसलमानों नमाज़ पढ़ो,
मस्जिद को आबाद करो।

एक दिन उस्मान भाई मस्जिद से नमाज़ पढ़ कर लौट रहे थे कि स्कूल के पास उन्हें एक दीवार खाली नजर आई। उन्होंने जेब से रंगीन चाक निकाला और अपना सन्देश लिख दिया। उस्मान भाई अभी लिख ही रहे थे कि एक शख्स उनके पास आकर खड़ा हो गया। वह शेरवानी पहने था और चश्मा लगाये था।

'बड़ा नेक काम करते हो।' उसने उस्मान भाई से कहा, 'ज़रायमाश क्या है?'

उस्मान भाई ने गर्दन घुमाकर उसकी तरफ़ देखा, और बोला, 'बदनसीब इन्सान हूँ। खाने पीने को लाचार हूँ। खुदा ने पाँच बेटे दिए। तीन बीमार है। कुदरत ने अब तक जितनी बीमारियाँ ईजाद की है, मेरी ही औलाद पर चस्पाँ कर दीं।'

उस्मान भाई छह फ़ुट के हट्टे कट्टे इन्सान थे। देखने में कोई कह नहीं सकता था कि यह आदमी अन्दर से इतना टूट चुका है। आज वह अपनी

हालत से इस कद्र परेशान हो उठे थे कि उस अजनबी आदमी के सामने आँसुओ से रोने लगे।

उस आदमी ने उस्मान को रोते देखा तो उसकी आँखें भी भीग गयीं, 'कुछ काम करना जानते हो ?'

'जी, अव्वल दर्जे का बढ़ई हूँ। मगर सब औज़ार बेचकर खा चुका हूँ।'

'औज़ार कितने के आ जाएँगे ?'

'दो तीन सौ से कम के तो न आएँगे।'

उस आदमी ने जेब से सौ सौ के तीन नोट निकाल कर उस्मान भाई को थमा दिए और बोला, 'इनसे औज़ार ही खरीदना।'

'सरकार आपने मेरे ऊपर बहुत एहसान किया है।' उस्मान भाई जज्बाती हो गये।

'सब ऊपर वाला करता है।' उस शख्स ने कहा, 'बेकारी, बीमारी और बेइन्साफ़ी से मुसलमान को लड़ना होगा, वरना पूरी कौम को टी० बी के जरासीम चाट जाएँगे। कभी सोचा है, टी० बी के जरासीम मुसलमानो पर ही क्यों हमला बोलते है। मुसलमानो के जवान जवान लड़के बेकार घूमते है और हिन्दुओ के मरियल लड़के आसानी से नौकरी पा जाते है। आखिर यह ज़ोरो ज़ुल्म हम लोग कब तक बर्दाश्त करेंगे ? बोलो, तुम्हारे मुहल्ले में कितने नौजवान बेकार हैं ?'

'मुसलमानो के सब लड़के बेकार है।' पैसा और हमदर्दी पा कर उस्मान भाई बोले, 'किसी दिन यह लावा फूट कर रहेगा।'

'इस्लाम पर भरोसा रखो। आज से ही मेहनत पर जुट जाओ। मुसलमानों मे इस्लाम का जज्बा पैदा करो। मेरे रुपयों का यही मुआवज़ा है।' उस शख्स ने कहा और लौट गया।

कौन था वह शख्स ? जरूर कोई दरवेश था, जो अल्लाह मियाँ ने मेरे पास भेजा था। उस्मान भाई ने तय किया, घर पहुँचने से पहले वह दस दीवारों पर नमाज पढ़ने की हिदायत लिखेंगे, उसके बाद घर जाएँगे। डॉ० उस्मानी के कम्पाण्डर से उसका परिचय था। आज उससे मशविरा करके बच्चो का इलाज शुरु करेंगे। औज़ार खरीदने की उनकी तनिक भी इच्छा न थी, अपने पेशे से ही उन्हे नफ़रत हो चुकी थी। मगर औज़ार खरीदने भी जरूरी थे, वरना दरवेश फिर किसी दिन जवाबदेही के लिए आ टपकेगा।

फिलहाल उस्मान भाई ने बच्चों का इलाज करवाना ही मुनासिब समझा। एक बाप और मुसलमान के नाते, यह उनका पहला फ़र्ज था। उस्मान भाई कम्पाउण्डर को लेकर घर पहुँचे। उसने बच्चों को देखा और बताया कि

फारूक़ और असरार को अस्पताल में भरती कराना होगा। जमील के लिए उसने इंजेक्शन मँगवाया।

'दवाओं का इन्तज़ाम मैं सस्ते मे करवा दूँगा। अस्पताल से जो दवाएँ बिकती हैं, वे सस्ते मे मिल जाती हैं।' कम्पाउण्डर ने बताया, 'सौ रुपये महीने भी खर्च करो तो मैं बच्चों को बचा लूँगा।'

'ख़ुदा ने चाहा तो इतना कर लूँगा।' उस्मान ने कहा और कम्पाउण्डर को दस का नोट थमा दिया और उसके साथ साथ बाहर निकल आया। महीनों से गोश्त नसीब न हुआ था, उस्मान भाई ने दो किलो गोश्त, ईंधन, घी, प्याज़, मसाले, साबुन, तौलिया और दस किलो आटा ख़रीद कर रिक्शा पर लदवाया और घर की तरफ़ चल दिए। रास्ते में वे देखते जा रहे थे, कौन दीवार ख़ाली है, जहाँ से मुसलमानों को नमाज़ की याद दिलाई जा सकती है।

उस्मान भाई के लौटते ही घर में चहल पहल शुरू हो गयी। घर की मुफ़लिसी जैसे एकायक गायब हो गयी। सारा घर दावत की तैयारी में जुट गया। बेग़म ने कई दिनों बाद नये साबुन से हाथ धोये, नये तौलिए से पोंछे, सूँघे और लगा जैसे वे अपने हाथ नहीं सन्दल की डाली सूँघ रही है। देखते देखते सब बच्चे हाथ धोने मे जुट गये। लड़कियाँ गोश्त साफ़ करने में व्यस्त हो गयीं। लड़के प्याज़ काटने लगे और बेगम चूल्हा फूँकने लगी। उस्मान भाई की सिगरेट पीने की बेहद इच्छा हुई। उन्होंने फारूक़ को भेज कर कैंची का पैकेट मँगवाया और बड़े विश्वासपूर्वक कश खींचने लगे।

'आज राशन कहाँ से आ गया?' बेगम ने पूछा, 'मन लगा कर काम करो तो घर में किसी चीज़ की कमी न आए।'

'सब परवरदिगार की शफ़क़त है।' उस्मान भाई ने कहा, 'ला इला ह् इल्लल्लाहु मुहम्मदर्रसूललुल्लाहि।'

वर्षों बाद घर भर ने भरपेट भोजन किया। उस्मान मियाँ के पाँव ज़मीन पर न पड़ रहे थे। ख़ुदा ने आख़िर उनकी इबादत कुबूल कर ली थी। आज मुद्दत के बाद वे बेगम का नियाज़ हासिल कर पाये थे। बेग़म के नज़दीक जाकर ही उन्होंने देखा कि उसका कुर्ता जगह जगह से फट गया था। यही हालत शलवार की थी। उस्मान भाई को लगा, जैसे एक मुद्दत के बाद उन्होंने बेगम को देखा है। बेग़म के कपड़ों की बोसीदगी पर उनकी आज पहली बार उनकी निगाह पड़ी थी। उन्होंने फ़ौरन औज़ार ख़रीदने का इरादा मुल्तवी कर दिया और लट्ठे का थान ख़रीदने की योजना बना ली। लड़कियों के कपड़े भी बेगम से बेहतर न होंगे। वह जानते थे, एक थान में बेग़म घर भर के लिए कोई न कोई कपड़ा ज़रूर बना लेगी।

बेगम के पास से उठते हुए उन्होंने दस का एक नोट बेगम को थमा दिया और अपनी योजना बतायी।

'कम से कम पचीस दो तो कुछ काम हो।' बेगम ने कहा, 'दूध वाले के तीस रुपये बकाया है और घर मे एक बूंद दूध नही आ रहा।'

उस्मान मियाँ ने तीस रुपए थमा दिए, 'अल्लाह ने चाहा तो जल्द ही और इन्तजाम करूँगा।'

उस्मान भाई ने अब वहाँ से टल जाना ही बेहतर समझा। न जाने क्या-क्या फ़रमाइश चली आए। वे बाहर छत पर जाकर सो गये।

सुबह उनकी नीद खुली तो बदन और दिमाग को फूल सा हल्का पाया। रात भर बहुत गहरी नीद आई थी। उन्होंने तय किया कि आज वे नमाज़े बाजमाअत पढ़ेगे। वे जल्दी जल्दी फारिग होकर मस्जिद की तरफ़ चल दिये। उन्हे उम्मीद थी, आज सुबह सुबह दरवेश से फिर मुलाकात होगी, मगर दरवेश ग़ायब था।

नमाज़ के बाद उस्मान भाई सीधे अनवर के होटल पर चले आए। उन्होंने अचानक चाय की तलब महसूस की। अनवर हैरत में आ गया कि उस्मान भाई यकायक फिर से चाय कैसे पीने लगे हैं।

'मेरे एक खालाजाद भाई गोरखपुर में खुफिया पुलिस के ऊँचे ओहदे पर है।' उस्मान भाई ने सिगरेट का लम्बा कश खीचा और बोले, 'एक शादी के सिलसिले में आए हुए थे। रात को उन्होंने मल्लू को देखा तो देर तक उससे बतियाते रहे। मुझे आते देखा तो उससे मटर का भाव पूछने लगे!'

'तुम हमेशा राज़ खोजते रहते हो, क्या तुम्हारे खालाज़ाद भाई मल्लू को जानते है?' नवाब साहब सुबह सुबह अखबार पढ़ने के इरादे मे आये थे।

'उन्होंने मल्लू के बारे मे इन्किशाफ किया कि वह खुफिया पुलिस का एक आला अफसर है और सब्ज़ी बेचने के बहाने खुफियागीरी करता है।'

'हुंह।' इस्माइल खाँ ने टोकरी के आकार की सफेद टोपी सर पर ओढ रखी थी। टोपी उठाकर वह सिर खुजाने लगे, 'उस्मान भाई, सुबह सुबह बड़े दूर की कौड़ी लाये हो। आला अफ़सर की सूरत तो देख ली होती।'

'इस्माइल मियाँ, मेरी बात गलत साबित कर दी तो सौ का यह नोट तुम्हारा।' उस्मान ने जेब से सौ का नोट निकाल कर मेज पर रख दिया।

उस्मान भाई की जेब में सुबह सुबह सौ का नोट देखकर सब लोग चकित रह गये। उस्मान भाई यही करिश्मा दिखाना चाहते थे। उन्होने नोट जेब के हवाले किया और बोले, 'मुसलमानों एक बेहद खतरनाक आदमी गली में आ कर बस गया है। मेरी जानकारी मे तो यह भी है कि चमेली की मौत के

पीछे भी उसी का हाथ है। लगे हाथ वह चमेली का मकान भी हड़प लेना चाहता है। उसी ने जहर दे कर चमेली का काम तमाम करवाया है।'

'लाहौल विला कूव्वत।' नवाब साहब बोले। सब लोग उस्मान भाई की बात सुन कर भौंचक्के रह गये।

'यही नहीं,' उस्मान ने अपनी बात जारी रखी, 'उसने हसीना को लतीफ़ के साथ रवाना करवाया और कानो कान किसी को खबर न लगने दी। सच तो यह है कि हसीना को स्टेशन तक वही छोड़ने गया था।'

'क्या बकते हो उस्मान भाई।' इस्माइल ने कहा, 'हसीना तो मल्लू के आने से बहुत पहले लापता हो गयी थी।'

'आप डायरी रखते हैं क्या?' उस्मान भाई ने पूछा और जेब से एक नन्ही सी डायरी निकाल कर दिखायी, 'इस डायरी में एक एक तारीख दर्ज है। पहले-पहल वह यकम जुलाई को गली में दिखायी दिया था। अगस्त में वह रोज रात को चकैया नीम के नीचे सोता था। जनवरी में उसने हजरी को पटा कर साथ मिला लिया। दूसरी काबिले गौर बात यह है कि साहिल को भगाने के पीछे भी इन्हीं साहब का हाथ है। आप खुद ही सोचिए, साहिल और हसीना दोनों को गायब करने के बाद मैदान खाली हो गया कि नहीं? तुम्ही बताओ इस्माइल तुम्हारी अक्ल क्या कहती है?'

उस्मान ने बिस्कुट का आखिरी टुकड़ा मुंह में रखा और ताली बजा कर हाथ झाड़ने लगा।

'लनतरानियाँ हाँक रहे हो।' अब्दुल बोला, 'तुम्हारे पास इस सब का क्या सुबूत है?'

'वक्त आने पर सुबूत भी दूँगा।' उस्मान भाई ने कहा, 'अनवर भाई चाय का मजा नहीं आया। मैं तो उबलती हुई चाय पीने का शौकीन हूँ।'

'उस्मान भाई के लिए एक गर्मा गर्म चाय हाज़िर करो।' नवाब साहब बोले। उन्हे उस्मान की बातचीत में किस्से का मजा आ रहा था। जबकि असलियत यह थी कि उस्मान को खुद ही अपनी बातें अधिक विश्वसनीय न लग रही थीं। उन्होंने बात को एक दूसरे कोण से पेश किया, 'सबसे पहले तो इस बात की खोज की जानी चाहिए कि मल्लू मुसलमान है या हिन्दू। अगर मुसलमान है तो हम उसे क़ुबूल कर लेंगे, हिन्दू है तो साले के चूतड़ पर ऐसी लात जमाएँगे कि फिर कभी खुफियागीरी करने हमारे मुहल्ले की तरफ़ न आएगा।'

'एक बात तो क़ाबिले गौर है। वह किसी को मुसलमान बताता है किसी को हिन्दू। धोखा देने के लिए मुहर्रम के जुलूसों में भी शामिल होता है। मजलिसों में भी जाने लगा है।'

'यह तुम पते की बात कर रहे हो।' नवाब साहब ने कहा, 'हजरी ही बता देगी कि वह काफ़िर है या मुसलमान।' नवाब साहब हजरी से बेहद ख़फ़ा थे। चाहते थे किसी तरह उसकी फजीहत हो जाए।

'हजरी ने उसे पनाह दी है, उसके साथ निकाह नहीं किया।' अब्दुल बोला।

'जाड़े की सरद रात मे किसी को अपनी कोठरी में पनाह देने का क्या मतलब निकलता है? नवाब साहब ठीक फरमा रहे है, हजरी बता सकती है कि वह हिन्दू है या मुसलमान है।' उस्मान बोला

'तो जाओ जा कर हजरी से पूछ क्यों नहीं आते?'

'मुझे अपनी इज्जत प्यारी है। उस बदतमीज और जाहिल औरत से कौन उलझेगा।' उस्मान भाई ने कहा, 'मगर मैं पता करके ही छोड़ूंगा। वह अक्सर जैदी साहब की दीवार से लग कर पेशाब करता है। लौंडों को सहेज दूंगा कि उसका तहमद खींच कर भाग जाएँ। सारा मुहल्ला जान जायेगा कि उसकी मुसलमानी हुई थी कि नहीं।'

'तो हो जाए एक दिन यही ड्रामा।' अब्दुल ने कहा, 'लोगों को कई रोज का मसाला मिल जाएगा।'

'यह ड्रामा नहीं, हकीक़त है कि आज इस्लाम खतरे में है। मुसलमानों को ही इसकी परवाह नहीं, अकेला उस्मान क्या कर लेगा? सौ पचास दीवारों पर यही न लिख देगा कि मुसलमानों नमाज पढो। मस्जिद को आबाद करो।'

नवाब साहब हिन्दू-मुस्लिम सवाल पर नहीं आना चाहते थे। उन्होंने जेब से पैसे निकाल कर गिने और अनवर को अदा करके चलते बने। कौन जाने ये लोग दंगा कराने का इरादा बना रहे हैं। या पुलिस के एजेंट है?

नवाब साहब के जाते ही माहौल यकायक उन्मुक्त हो गया। फौरन तय हो गया कि मल्लू का परीक्षण जल्द से जल्द हो जाना चाहिए। इस काम के लिए नसीर और जावेद को उपयुक्त समझा गया। अब्दुल ने अपने ऊपर जिम्मेदारी ली कि वह नसीर से यह काम करवा लेगा। जावेद को उस्मान भाई तैयार करेंगे। कार्यक्रम तय करते ही उस्मान और अब्दुल की रूह बेताब होने लगी तो वे लोग तत्काल हजरी के यहाँ चल दिए।

वे लोग पहुँचे तो हजरी आलू काट रही थी। मल्लू चूल्हा फूंक रहा था और घर मे कुछ बर्तन और दूसरे सामान दिखाई दे रहे थे। नयी खटिया देखकर तो उस्मान के तन बदन में आग लग गयी। उसने खटिया पर बैठते हुए कहा, 'मल्लू भाई, बुरा न मानो तो एक बात कहूँ। जब से इस गली में तुम्हारे कदम पड़े हैं, अजीब अजीब से वाक़यात हो रहे हैं। चमेली का तो घर ही बरबाद हो गया। जवान लड़की भाग गयी, जवान लड़का

गायब हो गया। अब चमेली भी खुदा को प्यारी हो गयी। मुझे तो इसके पीछे किसी की साज़िश नज़र आ रही है।'

'उस्मान मियाँ अल्लाह को हाज़िर नाज़िर मान कर ही ज़ुबान खोला करो।' हज़री बोली।

'एक बात बता दूँ बाई। वगैर सोचे समझे मैं एक लफ़्ज़ नहीं बोलता।' उस्मान भाई की निगाह दुबारा नयी खटिया पर पड़ी तो बोले, 'तुम दोनों की मिली भगत से ही चमेली की मौत हुई है।'

'क्या बकते हो उस्मान भाई। खुदा का कुछ तो खौफ़ खाओ।'

'तुम लोगों ने उसे ज़हर दिया है। तुम लोग उसका मकान हथियाना चाहते हो।' उस्मान भाई ने शांत भाव से कहा।

हज़री ने चिमटा उठा लिया और खूँखार बाघिन की तरह उस्मान पर टूट पड़ी। अब्दुल ने वहाँ से हट जाना बेहतर समझा। वह हज़री के स्वभाव से परिचित था। मल्लू ने हज़री का हाथ थाम लिया तो हज़री ज़ुबान से हमला करने लगी, 'तुम कैसे मुसलमान हो उस्मान। मैं देख रही हूँ, तुम्हारी अपनी निगाह चमेली के मकान पर है। मैंने तुम्हारा इरादा भाँप लिया है तुम आस्तीन के साँप हो।'

उस्मान ने अब्दुल को साथ छोड़ते देखा तो नर्म पड गया, 'हज़री बी, मैं तो मल्लू भाई को आगाह करने आया था कि मुहल्ले के लौंडे कहीं इसे पीट वीट न दें।'

मल्लू हतप्रभ सा दोनों का वार्तालाप सुन रहा था। चश्मे का फ्रेम जो तार से बँधा था, बार बार नाक पर झूल आता।

'उस्मान मियाँ तुम सीधे दोज़ख़ में जाओगे। यहाँ से तो मैं ही तुम्हें रवाना कर दूँगी। कमीने। कुत्ते। हरामजादे।' हज़री बी का पारा चढ़ने लगा, 'तेरी टाँग में डंडा कर दूँगी तभी होश आएगा तुझे।'

'चुप रह शैतान औरत।' उस्मान गुर्राया, 'अब बुढ़ापे में खसम करने का शौक चर्राया तो शरीफ़ लोगों पर हमला करने लगी।'

'खसम करे तेरी घरवाली।' हज़री ने बेबा नागिन की तरह ज़हर उगला, 'लड़कियों से पेशा कराते हो और हज़री बी पर गुस्सा निकालते हो। कौन नहीं जानता कि तुम्हारी लड़कियाँ बुर्का पहन कर घर से निकलती हैं और नसीबन के यहाँ जाकर पेशा करती हैं। बोलो अब चुप क्यों हो गये। काम न काज। कमाई नहीं करोगे तो यही होगा।'

'तुम्हारी ज़ुबान में कीड़े पड़ेंगे जो मेरी लड़कियों पर तोहमत लगा रही हो।' उस्मान हकलाने लगा।

'तुम्हारी जुबान में कीड़े पड़ चुके हैं जो मेरे ऊपर तोहमत लगा रहे हो।'

उस्मान भाई बहुत तैश से उठे। जाते जाते जानबूझ कर मल्लू को धकिया गये, 'मैं देख लूंगा।'

'मैं भी देख लूंगी।' हजरी बी अंगीठी फूंकने लगी।

मल्लू घबराकर बोला, 'मुहल्ले वालों को ऐतराज है तो मैं न आऊँगा आज से।'

'मुहल्ले वालों की ऐसी तैसी। देखती हूँ, कौन उँगली उठाता है। सिर्फ़ यही कमीना आदमी लोगों को भड़का रहा है।' हजरी ने कहा, तुमने बर्तन खरीदे हैं। खाट खरीदी है। राशन डाला है। अब तुम यहीं रहोगे। तुमने इरादा तर्क कर दिया तो मेरी बहुत फजीहत हो जायेगी।'

उस्मान होटल पर जाकर बोला, 'इस शख्स को मुहल्ले से निकालना ही पड़ेगा। अब हजरी बी पर डोरे डाल रहा है।'

'हजरी बी पर ?' इस्माइल ने कहा, 'उस्मान मियाँ तुम्हारा भी जवाब नहीं। लगता है तुम्हारा दिमाग फिर गया है। हजरी बी साठ से ऊपर होगी और मल्लू की अपनी टाँगें कब्र में लटक रही हैं। मुआफ करना तुम्हारे जेहन में बहुत गंदगी भरी है।'

उस्मान भाई अन्दर तक सुलग रहे थे। हजरी ने उनकी लड़कियों के बारे में ऐसी बात कह दी थी कि उन के मन मे शंका होने लगी कि कहीं दाल में कुछ काला तो नहीं ? वह जानते थे लड़कियाँ जवान हो रही है, अब उन पर कड़ी निगाह रखनी चाहिए। कड़ी निगाह रखने के लिए भी पैसे चाहिएँ। आज तक उसने सोचा ही न था कि बिना किसी कमाई के घर चल कैसे रहा हैं। उस्मान भाई चिन्तित हो गये और थके कदमों से घर की तरफ़ चल दिये।

घर पहुँच कर वे खाट पर लेट गये और अपमान का बदला चुकाने के मन्सूबे गढ़ने लगे।

'इस साले को बेइज्जत करके ही दम लूंगा।' उस्मान भाई सोच रहे थे, 'इस शख्स के इरादे नेक नहीं है। यह मुहल्ले की जासूसी करने आया है। वरना हजरी बी उसकी लड़कियो के बारे में इस कद्र बेखौफ होकर न बोलती।'

• •

लक्ष्मीधर सक्सेना स्वस्तिक कॉटन मिल मे बतौर एक क्लर्क भर्ती हुए थे। पन्द्रह वर्षों मे तरक्की करते-करते वे तीन वरस पहले मिल के मैनेजर हो गये थे। इन वर्षों मे वे चोरी, चुगली और चापलूसी में पूर्णतया निष्णात हो गये थे। पाँच में से तीन डाइरेक्टरों के घर उनका आना-जाना था। मिल के काम के अलावा वे डायरेक्टरों का घर भी सम्हालते थे। मालिकों मे श्याम बाबू सबसे छोटे थे और लक्ष्मीधर से उनकी खूब पटती थी। वे अक्सर शिकार और पिकनिक आदि पर लक्ष्मीधर को भी साथ ले जाते। उनका सामान बाँधने, नाश्ता तैयार करवाने से लेकर उनके साथ जाने वाले मित्रों का श्याम-बाबू के मूड के अनुसार चुनाव करना भी लक्ष्मीधर के काम में शामिल था। श्यामबाबू बहुत तामझाम के साथ शिकार के लिए निकलते। दो शिकारी, पाँच बन्दूकें, बीयर, विस्की के अलावा पूरा रेस्तराँ उनके साथ चलता था, यह दूसरी बात है कि सैकड़ों लीटर पेट्रोल फूंक कर श्याम बाबू अब तक कुछ तीतरों का शिकार ही कर पाये थे। श्याम बाबू की कृपा से लक्ष्मीधर को एक खूबसूरत फरनिश्ड फ्लैट भी मिल गया था। फुर्सत के समय श्याम बाबू निःसंकोच लक्ष्मीधर के यहाँ आते। श्याम बाबू को सूट का कपड़ा खरीदना हो या चश्मे का फ्रेम, लक्ष्मीधर की पत्नी उमा की पसन्द ही अन्तिम होती। उमा दिल्ली विश्वविद्यालय की ग्रैजुएट थी और लक्ष्मीधर से उम्र मे ग्यारह वरस छोटी थी। यह तय है कि अगर बीस, पचीस की उम्र मे लक्ष्मीधर की शादी हो गयी होती तो कोई न कोई देहाती औरत उनके पल्ले पड़ जाती। इस दृष्टि से लक्ष्मीधर शुरू से ही होशियार रहे हैं। उन्होंने तब तक शादी न की जब तक मिल में अच्छा पद हासिल न कर लिया। शादी हुई तो उस समय वे असिस्टेन्ट मैनेजर थे। इससे लड़की और दहेज दोनों ही उन्हें पसन्द के मिल गये। बाद में उमा ने अपनी सूरत, प्रतिभा और वाग्चातुरी से अन्य तमाम अफ़सरों की पत्नियों को मीलों पीछे छोड़ दिया। एक बार श्याम बाबू ने उसे मिल का

पी० आर० ओ० बन जाने का सुझाव दिया था, मगर उमा ने कहा कि वह नौकरी नहीं करेगी। लक्ष्मीधर के यहाँ शादी के दो बरस बाद एक लड़का हुआ, वह अभी छोटा था और एक माण्टेसरी स्कूल में पढ़ रहा था। जब से उमा ने लड़का पैदा कर दिखाया था, वह पति पर शासन करने लगी। एक बार श्याम बाबू के लिए लड़की देखने की बात उठी तो श्याम बाबू ने कहा, 'मैं बिल्कुल उमा जैसी लड़की चाहता हूँ, जिसके साथ सोसाइटी में मूव कर सकूँ और देखने में भी उमा से उन्नीस न हो।' श्याम बाबू उमा को लडकी दिखाने प्राय: अपने साथ ले जाया करते थे। पिछली बार लखनऊ गये थे तो लड़की देखने में दो दिन लग गये। ये लोग एक पाँच सितारे होटल में ठहरे, मगर लड़की पसन्द न आयी। लखनऊ से उमा बहुत ख़ुश लौटी, जबकि वह बेहद थक कर लौटी थी। उमा के पास डायमण्ड नहीं था। वह हमेशा इसके लिए तरसती थी। संकेत पाते ही श्याम बाबू ने एक कैरेट का खूबसूरत डायमण्ड भी भेंट कर दिया। खुशी के मारे उमा के पैर ज़मीन पर न पड़ रहे थे। उमा की इस सफलता से लक्ष्मीधर भी बहुत प्रभावित हुए। कितनी स्मार्ट लडकी उन्हें मिली कि मालिकों तक में उसका सिक्का जम गया। इस घटना के अगले ही सप्ताह लक्ष्मीधर को सौ रुपये की तरक्क़ी मिल गयी। लक्ष्मीधर तो मानो उमा का ज़रखरीद गुलाम हो गया।

लक्ष्मीधर अगर चिन्तित थे तो उनके कारण दीगर थे। लतीफ़ की लोकप्रियता देखते हुए लक्ष्मीधर को लग रहा था कि वह इस बार यूनियन का सेक्रेटरी चुन लिया जायेगा। दूसरे वह हसीना की इतनी तारीफ सुन चुके थे कि उनका मन उसे देखने के लिए मचल रहा था। वह सोच रहे थे कि किसी तरह लतीफ़ से दोस्ती बढ़ा लें। उसके दो लाभ होंगे। यूनियन और हसीना दोनों हाथ मे आ जाएँगे। लक्ष्मीधर जीवन में अन्तिम निर्णय पर पहुँच चुके थे कि बीवी एक ऐसी चाबी होती है जिससे गम्भीर से गम्भीर पति का ताला आसानी से खोला जा सकता है। हसीना की ताली से वह लतीफ़ का ताला खोलने के फिराक में थे।

लतीफ की सबसे बड़ी कठिनाई यह थी कि वह जबसे फ़ोरमैन हुआ उसके बारे में तरह-तरह की अफ़वाहे उड़ने लगी थी। किसी ने कहा, उसकी बीवी के मैनेजर से अवैध सम्बन्ध है। एक दिन सुनने में आया, वह मैनेजर के साथ सिनेमा देखते पायी गयी। ये अफ़वाहे सरकते हुए लतीफ तक भी पहुँचती मगर उसे अपने पर और अपने प्यार पर पूरा भरोसा था। वह मेहनत से अपने काम

में जुटा रहता। लतीफ़ ने अपने परिश्रम, लगन और होशियारी से बहुत कम समय में अच्छे कारीगरों में स्थान पा लिया था। उसकी ख्याति दूसरी मिलों तक भी पहुँच रही थी। एक दिन जब बोनस के सवाल पर यूनियन के प्रतिनिधि मण्डल के साथ लतीफ भी मैनेजर के यहाँ प्रतिवेदन देने पहुँचा तो अफ़वाहें उड़ाने वालों को बहुत धक्का लगा। पूरे प्रतिनिधि मण्डल में केवल लतीफ़ ही था जो मैनेजर लक्ष्मीधर सक्सेना से मजदूरों के अधिकारों पर लगातार बहस कर रहा था।

लतीफ़ की तर्कसंगत बहस से न सिर्फ मैनेजर बल्कि यूनियन के अन्य साथी भी बहुत प्रभावित हुए। समझदार मजदूरों ने उसी समय तय किया कि यूनियन के अगले चुनाव में लतीफ़ को सेक्रेटेरी के लिए खड़ा किया जायेगा। लतीफ़ के तेवर देख कर लक्ष्मीधर भी उसके प्रति सतर्क हो गये। जब उन्हें मालूम हुआ कि यह वही लतीफ है, जिसे साधारण मकेनिक से फ़ोरमैन बनाया गया है तो उन्हें डायरेक्टरों से वर्क्स-मैनेजर की शिकायत करने का मौका अनायास मिल गया। वर्क्स मैनेजर से उनकी कभी न पटती थी। उनका दृढ़ विश्वास था कि मजदूरों के असंतोष के पीछे भी वर्क्स मैनेजर का अदृश्य हाथ रहता है। जिस किसी से वे नाराज़ होते उसे 'कम्युनिस्ट' की उपाधि फौरन अता कर देते। मैनेजर होने के बाद लक्ष्मीधर को यकायक एहसास हुआ था कि उन्होंने अपने छात्र-जीवन में एक ही भूल की थी कि विश्वविद्यालय में वह स्टुडेन्ट्स युनियन के सचिव हो गये थे। वह एक ऐसे सचिव थे जो उपकुलपति की जेब में ही सुकून पाते थे और कार्यकारिणी की पूरी कार्यवाही शाम को उपकुलपति को बता आते थे, मगर अपनी नौकरी के प्रथम इण्टरव्यू में जब उन्होंने उत्साहपूर्वक यूनियन सम्बन्धी योग्यताओं का उल्लेख किया तो वे असफल हो गये थे।

इसी बीच लक्ष्मीधर ने एक सफल मैनेजर की तरह अपने एक विश्वासपात्र मजदूर को बुला कर लतीफ के बारे में जानकारी चाही। उस मजदूर ने लतीफ़ के बारे में कम उसकी बीवी हसीना के बारे में तमाम सुनी-सुनायी बातें उगल दी, 'लगता है साब वह एक बाग़ी तबीयत का नौजवान है। उसने अपने घरवालों की मुखालफ़त के बावजूद एक तवायफ़ की लड़की से निकाह किया। आपने तो साहब हसीना को देखा ही होगा, अरब की हूर लगती है।'

'मैंने कहाँ देखा होगा।' लक्ष्मीधर ने आश्चर्य से पूछा।

'साब वो तो आपके साथ फिलम देखने जाती थी।'

'मेरे साथ ?'

'हाँ साहब, सब मजदूर जानते हैं। बीबी की वजह से ही तो वह फोरमैन हो पाया है।' उस मजदूर का दृढ़ विश्वास था।

मैनेजर साहब को यह सब सुन कर आश्चर्य भी हुआ और आनन्द भी आया।

'मेरे भाई मैं शादीशुदा आदमी हूँ। बीबी सुनेगी तो जीना हराम कर देगी। हसीना का नाम भी मैं आज जिन्दगी में पहली बार सुन रहा हूँ।'

मजदूर हँसा, जैसे विश्वास न कर रहा हो।

'लतीफ़ का बाप क्या करता है?' लक्ष्मीधर ने पूछा।

'वह साब रेलगाड़ी का ड्राइवर है। सुनते हैं उसने लतीफ़ को घर से बेदखल कर दिया है!'

'यूनियन पर लतीफ़ का क्या असर है?

'साब कुछ लोग उसे इस बार यूनियन के चुनाव में भी खड़ा कर रहे हैं।'

'हूँ।' मैनेजर साहब ने मूड़ी हिलायी।

लक्ष्मीधर ने एक दिन श्यामजी से लतीफ़ की चर्चा की और बताया कि आज कल यूनियन के हर आदमी के मुँह पर लतीफ़ का नाम है और उसकी बीबी हसीना पर मिल का हर शख्स फ़िदा है।

श्यामबाबू लक्ष्मीधर से कहीं ज्यादा हसीना के बारे में सुन चुके थे। इच्छा उनकी भी हसीना का दीदार हासिल करने की थी, मगर उन्होंने लक्ष्मीधर से कहा, 'मैं आज ही भाभी से ज़िक्र करूँगा कि तुम आजकल तवायफ़ों के चक्कर में रहते हो।'

'ऐसा ग़ज़ब न ढाइए भाई साहब, वह तो सुनते ही मुझे घर से निकाल देगी।' लक्ष्मीधर बोले, 'मगर हुज़ूर, आप भी तो कम नहीं, क्यों न मैं ही आज आपकी भाभी साहिबा को यह ख़ुशख़बर दूँ कि आप के देवर के चाल ढाल ठीक नहीं।'

'न बाबा न।' श्यामबाबू ने दोनों हाथों से दोनों कान पकड़ लिये, 'ले-देकर मेरी एक ही भाभी है, वह भी मुझे ब्लेकलिस्ट कर देगी।'

लक्ष्मीधर सक्सेना ने श्यामबाबू की तरफ़ झुकते हुए एक अनुभवी मैनेजर की तरह सवाल रखा, 'क्यों न मैनेजमेन्ट की तरफ़ से लतीफ़ को इलेक्शन लड़ाया जाये। लतीफ़ हाथ मे आ गया तो बोनस का सवाल कुछ दिनो तक तो स्थगित रखा ही जा सकता है, आप के परसोनल मैनेजर तो दिनभर ज्योतिषियों के हाथ दिखाते रहते है, उनके भरोसे मत बैठे रहिए।'

'देखो सक्सेना, मैने यो ही तुम्हे मैनेजर नही बनाया। मैं अभी तक तुम्हारी बुद्धि पर तरस खा रहा था कि तुमने कोई धाँसू सुझाव पेश क्यों नही किया?'

'आदाब अर्ज़ है।' लक्ष्मीधर आदाब की मुद्रा मे बोला, 'लेबर प्राबलम्स

को मुझसे अधिक कौन समझेगा हुजूर।'

'देखो हम-तुम इस दिशा में कोई कदम उठायेंगे तो लतीफ़ भड़केगा। इसमें उमा भाभी की मदद ली जानी चाहिए। ताल्लुक बढ़ाने में भाभी का कोई सानी नहीं। इस बार टेस्ट हो जायेगा, भाभीजान में कितनी क्षमता है ?'

बोर्ड आफ़ डायरेक्टर्स की अगली मीटिंग में युनियन के चुनाव के लिए एक गुप्त फ़ण्ड की व्यवस्था हो गयी। लक्ष्मीधर बहुत प्रसन्न हुए। पचीस हज़ार रुपये का पचास प्रतिशत तो उनके घर की ही शोभा बढ़ायेगा। उमा बार-बार शिकायत कर चुकी थी कि सोफे नीलाम करने लायक हो गये हैं। पर्दों का रंग फीका पड़ चुका है। पिछले दो बरस से घर पेंट भी न हुआ था।

उमा ने लक्ष्मीधर से प्रस्ताव सुना तो आगबबूला हो गयी, 'तुम अब मुझे तवायफ़ों के घर भेजोगे। तुम्हें अपनी इज्जत का ख़याल हैं, न श्यामबाबू की इज्ज़त का। मैं ऐसे रुपयों पर लानत भेजती हूँ।'

लक्ष्मीधर को अफ़सोस हुआ कि उन्होंने अतिरिक्त उत्साह में बहुत ही फूहड़ तरीके से यह सुझाव पेश कर दिया था।

'तुम चाहती हो मिल में हड़ताल हो जाये और मेरी नौकरी जाती रहे।'

'किसमें हिम्मत है तुम्हारी नौकरी लेने की।' उमा बोली, 'तुम्हारे डायरेक्टरों में तो यह हिम्मत नहीं है। तुम्हारी नौकरी कोई ले सकता तो सिर्फ़ मैं।'

लक्ष्मीधर अपनी पत्नी की आवाज़ में इतना आत्मविश्वास देख कर बहुत प्रसन्न हुआ। वह उठा और जल्दी से पत्नी को भींच लिया। उमा ने मुँह फेर लिया। लक्ष्मीधर दिन भर सिगरेट फूंकता था और उमा को सिगरेट-तम्बाकू से नफ़रत थी। स्कॉच की गन्ध उसे प्रिय थी मगर तम्बाकू से तो उबकाई आ जाती थी।

'इस मामले में अब तुम्हारा देवर ही तुमसे बात करेगा ?'

'कौन श्यामजी ?' वह भड़की, 'उसमें हिम्मत नहीं कि वह तुम्हारी तरह मुझसे इस तरह की गुस्ताख हरकत कर सके। मैं उसे खूब जानती हूँ वह तुमसे तो सभ्य ही है।'

लक्ष्मीधर ने इस पचड़े में पड़ना उचित न समझा। अब श्यामजी ही इस समस्या का हल ढूंढेगा।

श्यामजी ने लक्ष्मीधर से सारी किस्सा सुना तो वह हँसी से बेहाल हो गया। बोला, 'लक्ष्मीधर बाबू, तुम मज़दूरों के बीच ही अपनी मैनेजरी चला सकते हो, पढ़े-लिखे सभ्य लोगों से तुम्हारा वास्ता ही कब पड़ता है। भला तुम्ही बताओ, कौन भाभी चाहेगी कि उसका देवर तवायफ़ों के चक्कर में पड़ जाये और कौन पत्नी इसकी मंजूरी देगी ?'

'भाई साहब, यह मोर्चा आप ही संभालिए, मेरे बस का नही। आप कहेंगे तो मैं खुद कोई तरकीब निकाल लूँगा कि लतीफ़ को वस में कर लूँ, उसे जिता दूँ या हरा दूँ।'

'तुमने इतना गुड़ गोबर कर दिया है कि लतीफ़ अगर जीत गया तो मेरी भाभी मुझे घर में घुसने न देगी।'

'मगर लतीफ़ तो जीतेगा, यह तय है।' लक्ष्मीधर ने कहा।

'तो यह भी तय है कि मेरी भाभी लतीफ को दास बना लेगी।'

'देवर-भाभी के बीच में मैं कुछ न बोलूँगा।' लक्ष्मीधर बोला और मेज पर पड़े पाँच सौ पचपन के पैकेट से सिगरेट सरकाने लगा।

श्यामजी ने एक दिन उमा को अच्छे मूड मे देखकर लतीफ़ की चुनौती सामने रखी। लतीफ़ का जिक्र आते ही उमा की भृकुटि तन गयी, 'मुझे यह दिन भी देखना था। आज के ज़माने में किसी पर भरोसा करना गुनाह है। मेरी निगाह में लक्ष्मीधर के बराबर तुम्हारी इज्ज़त थी, मगर तुम भी वही निकले। सब मर्द एक से होते है।'

उमा की आँख भर आयी। यह दूसरी बात है वह इस समय रोना नही चाहती थी, क्योंकि मेक-अप ताजा था। आँसू की एक बूँद घण्टों की मेहनत खाक कर सकती थी।

लक्ष्मीधर ने ही बीच-बचाव किया, 'देखिए भाई साहब, दफ़्तर की बातें दफ़्तर मे।'

'तुम चुप रहो जी!' श्यामजी बोला, 'भाभी अगर यकीन मानो तो इसी शख्स ने मेरे सामने वह सुझाव रखा था, वरना मैं यह गुस्ताखी कैसे कर सकता था?'

लक्ष्मीधर ने इस वक्त पिटते जाना ही उचित समझा, बोला, 'मैं अपनी गलती कबूल करता हूँ। अब इस प्रसंग को यही दफ़न कर दीजिए। सिर्फ़ *इतना बता दें कि कबाब 'कोर्जीनुक' के खाइएगा या 'शामियाना' के?'*

श्याम बाबू ने वैराग्य से अपनी पलकें एक जगह थिर कर ली और बोले, 'गुरु तुम्हारे कबाब में हड्डी बहुत आती है।'

उमा हँसते हुए लोट-पोट हो गयी, बोली, 'अब देवर-भाभी के बीच आप भी हड्डी न बनिए। और सुनो, बाबा कितने रोज से पेन्सिलबॉक्स की फरमाइश कर रहा है। उसे कम से कम उसकी पसन्द का पेन्सिलबॉक्स तो दिलवा दीजिए।'

लक्ष्मीधर ने बाबा को पार्क से बुलवाया और बाहर जाकर श्यामबाबू की गाड़ी में बैठ गया।

'सुनो भाई !' लक्ष्मीधर ने कार के अन्दर घुसते ही दरवाजा बंद किया और ड्राइवर से बोले, 'देखो, बाबा कई दिनो से नुमाइश देखने की जिद पकड़े है। पहले नुमाइश की तरफ़ ले लो।'

ड्राइवर ने सलाम अर्ज किया और गाड़ी स्टार्ट कर दी। बाबा ने खूबअच्छी तरह से नुमाइश देखी। झूले पर बैठा। काठ के घोड़े की सवारी की। आग लगा कर पानी में कूदते हुए एक आदमी को देखा तो ताली बजाने लगा, 'पापा यह कैसा बेवक़ूफ़ आदमी है जो अपने बदन में खुद ही आग लगा रहा है।'

लक्ष्मीधर क्षण भर के लिए गमगीन हो गये और बोले, 'बेटा, इस आदमी को इसी से रोटी मिलती है। वरना भूखों मर जाता।'

'झूठ !' बाबा बोला, 'ऐसा बहादुर आदमी भला भूखों कैसे मरेगा ?'

लक्ष्मीधर फ़िजूल की बातों मे दिमाग़ लगाना पसन्द नही करते, बोले, 'चलो बेटा, अंकल के लिए कही से कबाब ले लें।'

बाबा लक्ष्मीधर की उंगली थामे चलता रहा, फिर बोला, 'पापा कबाब तो ड्राइवर भी ला सकता था।'

लक्ष्मीधर ने प्यार से एक हल्की-सी चपत लगा दी और बोले, 'तुम्हारे कबाब में हड्डी आ जाये तो तुम्हें कैसा लगे ?'

'मैं हड्डी चूसने लगूँ।' बाबा बोला, 'हमें हड्डी पसन्द है।'

उन लोगों ने कबाब लिये। ड्राइवर ने लक्ष्मीधर को बिल अदा नहीं करने दिया। लौटते हुए वह बाबा के लिए न केवल पेन्सिल बाक्स; पेस्ट्री और पैटीज़ भी लेते आया।

'पापा, यह ड्राइवर हमारे लिए पेस्ट्री क्यों लाया है ?' बाबा ने पूछा, 'आपको लानी चाहिए।'

'बेटा, सब काम हम खुद क्यो करें ?' लक्ष्मीधर ने कहा, 'इसीलिए तो नौकर-चाकर रखे जाते है।'

वे लोग घर पहुँचे तो श्याम बाबू बहुत व्यग्र हो रहे थे, 'यार तुम भी अजीब शै हो। मुझे आठ बजे रोटरी क्लब की मीटिंग मे जाना था। अब कबाब तुम्ही लोग खत्म करना।'

श्याम बाबू ने ड्राइवर को डिब्बा खोलने का इशारा किया और एक कबाब मुँह मे रखते हुए उमा से कहा, 'अपने पति और बच्चो को संभाल लो, हम चल दिये।'

उमा ने धीरे से हाथ हिला दिया, 'खुदा हाफ़िज।'

कार स्टार्ट हो गयी। उमा और लक्ष्मीधर दोनों ने थोडी देर हाथ हिलाये और लौट आये। उमा ने बाबा को गोद में उठा लिया। पाईनेपल पेस्ट्री खाने

से उसके चेहरे पर क्रीम की मूंछें बन गयी थीं। उमा ने ले जा कर उसे ड्रेसिंग टेबुल के सामने खड़ा कर दिया और बोली, 'मेरा खरगोश कहाँ से आया है?'

मिल में चुनाव का जोर बढ़ रहा था। दो पार्टियां उभर रही थीं। मिल के नेता हीरालाल को एक केन्द्रीय मंत्री का आशीर्वाद प्राप्त था। मंत्रीजी गाहे-बगाहे उसकी मदद करते रहते थे। एक बार तो मन्त्रीजी ने ढेर से कम्बल हीरालाल के पास भेज दिये थे कि अपने समर्थकों में खुले दिल से बाँट दो। हीरालाल ने आधे कम्बल बाज़ार में बेच दिये। एक चौथाई अपने रिश्तेदारों की नज़र कर दिये, शेष कम्बल अपने समर्थकों में तकसीम कर दिये। इतने कम कम्बल बाँटें जाने पर भी हीरालाल का खूब नाम हो गया। कई लोग अब उसे कम्बल वाले के नाम से ही पुकारते थे। मिल के डायरेक्टरों तक यह खबर पहुँची कि हीरालाल कम्बल बाँट कर सस्ती लोकप्रियता हासिल कर रहा है तो उन्हें बहुत नागवार गुजरा। वे तत्काल उसे निकाल बाहर करते अगर सर पर मंत्रीजी की तलवार न लटक रही होती। डायरेक्टरों ने हीरालाल को सबक सिखाने के इरादे से मंत्रीजी तक एक दूसरे चमचे की मार्फ़त खबर पहुँचायी कि हीरालाल ने नब्बे फीसदी कम्बल बेच खाये हैं तो मंत्रीजी ने हँसते हुए कहा, 'वह जरूर बड़ा नेता बनेगा।' डायरेक्टर लोग यह टिप्पणी सुन कर बहुत निराश हुए। उन्हें लग रहा था, हीरालाल नाम का यह शख्स जिस दिन चाहेगा, मिल का चक्का जाम करा देगा। वे जानते थे, कम्बल में बहुत गर्माहट होती है।

डायरेक्टर लोग बहुत दिनों से हीरालाल की काट ढूंढ़ रहे थे। इधर मैनेजमेन्ट की नज़र लतीफ़ पर जा कर टिक गयी थी। लतीफ़ के तेवर कुछ ऐसे थे कि उसे आसनी से समझौते के लिए तैयार नहीं किया जा सकता था। लग रहा था कि अधिकांश मजदूर लतीफ़ को अपनी आशाओं और सपनों का मरकज़ बना रहे हैं। मैनेजमेन्ट ने लतीफ़ की जो फ़ाइल तैयार करवायी थी उससे लग रहा था कि वह आजाद ख़यालों का भला आदमी है, लालची नहीं है। सबसे बड़ी दिक्कत तो यह पेश आ रही थी कि वह विचारों से वामपंथी था। इधर उसकी बगल मे लाल रंग की कुछ किताबें नज़र आने लगी थीं।

'वह एक दुरुस्त आदमी है। हम लोगों की पकड़ में आ गया तो मिल में दो-एक बरस तक अमन-चैन रहेगा।' श्यामजी के बड़े भैया ने कहा।

'पकड़ में नहीं आयेगा तो जिन्दगी भर पछतायेगा।' लक्ष्मीधर बोला,

'आये रोज़ उसे बीवी को लेकर परेशान रहना पड़ता है। हमारी रिपोर्ट में तो यहाँ तक आ गया है कि लतीफ़ के सगे भाई ने अपनी भाभी के साथ बलात्कार करने की कोशिश की।'

'देखिए, उसी पर दाँव लगाइए।' बड़े भैया ने श्याम बाबू से कहा, 'उससे कहिए मैनेजमेन्ट के खिलाफ़ गेट मीटिंग करे, बोनस के सवाल को लेकर तमाम मजदूरों को अपने साथ ले ले। इस काम के लिए पैसा हम खर्च करेंगे। यही नहीं मिल की तरफ़ से लेबर कालोनी में उसे तुरन्त मकान दिलवा देंगे। उसकी बीवी की सुरक्षा के लिए एक चौकीदार तैनात कर देंगे। ऐसा आदमी हाथ से निकलना नहीं चाहिए।'

'वामपंथियों ने इस बीच कोई दूसरा आदमी तैयार कर लिया तो दिक्कत हो जायगी।' लक्ष्मीधर ने कहा।

बड़े भैया ने उत्तर नहीं दिया। लक्ष्मीधर की तरफ देख कर खास काइयाँ अन्दाज़ में हँस पड़े। हँस क्या पड़े, उनकी मूँछें ज़रा सी फैल गयी।

श्याम बाबू ने मीटिंग में बैठे-बैठे ही लक्ष्मीधर से आँख मिलायी और कहा, 'आपने बहुत अच्छी राय दी है।'

मीटिंग के बाद श्याम बाबू लक्ष्मीधर के साथ ही उसके यहाँ चले आये। सुबह ही उन्होंने भाभी से पाम्फ्रेट मछली की फरमाइश की थी। उन्हें यह भी लग रहा था, अब भाभी को पटाना ज़रूरी हो गया है। अगर ग़लत तरीके से लतीफ के पास पहुँच हो गयी तो सब किया-कराया धरा रह जायेगा।

उमा मछली तैयार कर चुकी थी और श्यामजी पर इस समय बहुत ख़फ़ा थी। श्यामजी ने पाँच बजे आने को कहा था, सात तक उसकी कोई सूचना न थी। उसने श्याम बाबू द्वारा भेंट की गयी साड़ी पहनी, उन्हीं द्वारा दिया गया सेट लगाया, डायमण्ड से जगमगाता नेकलैस पहन लिया और एक रूठी हुई महारानी की तरह अपने कोप भवन में बैठ कर अलबर्तो मोराविया का उपन्यास पढ़ने लगी। इस समय वह अपने ही बदन की महक से उत्तेजित हो रही थी। उसे लग रहा था, उसका पोर-पोर महक रहा है। उसकी हर साँस महक रही है। उसके रोएं-रोएं से एक उत्तेजक, मादक और अदृश्य स्राव हो रहा है। बाबा नौकरानी के साथ पार्क मे झूला झूलने गया हुआ था। उमा को श्याम [illegible] पर लगातार गुस्सा आ रहा थी कि यकायक श्यामबाबू की [illegible] सुनायी दी। वह करवट बदल कर अधिक एकाग्रता से [illegible] गयी। पीठ उसने दरवाजे की तरफ़ फेर ली। वह [illegible] मगर नायक या नायिका का नाम तो दरकिनार पुस्तक का [illegible]

'ऐ उल्लू ।' श्यामजी की आवाज़ से वह चौंकी न विचलित हुई ।

श्यामजी ने कमरे की बत्ती बन्द की और पुकारा, 'ऐ उल्लू ।'

उल्लू पढ़ने में बेहद तल्लीन था । लक्ष्मीधर बाबा को ढूंढ़ते हुए पार्क की तरफ चले गये थे ।

श्यामजी ने बत्ती जला दी और एक बार फिर कहा, 'उल्लूजी, आपको उजाले में दिखायी पड़ता है न अँधेरे में । ऐसे उल्लू तो केवल मध्य एशिया में पाये जाते हैं ।'

उमा ने बहुत खुल कर अंगड़ाई ली । श्यामजी को समझते देर न लगी कि उमा ने आज बहुत परिश्रम से अपनी बगलों के बाल साफ किये हैं । अंगड़ाई लेने में विदेशी डियडोरेंट की गंध पूरे वातावरण में समा गयी ।

'लगता है फैक्टरी के बुरे दिन आ रहे हैं ।' श्याम बाबू ने उमा के सिरहाने बैठते हुए कहा, 'लगता है तालाबन्दी होकर रहेगी ।'

श्यामजी को चिन्तित देख कर उमा ने पूछा, 'आखिर बवाल क्या है ?'

'वही, बोनस, मंहगाई भत्ते की लड़ाई । हम कहाँ तक झुकते चले जाएँ ।' श्यामजी ने कहा, 'अब तुम्हीं मदद कर सकती हो ।'

'हम कौन होते हैं ।' उमा बोली, 'सीधा-सीधा क्यों नहीं कहते कि मेरे लिए तुम्हारे पास समय नहीं रह गया ।'

'ऐसा मत सोचो ।' श्याम बाबू बोले, 'तुम कहो तो अपनी कठिनाइयाँ तुमसे न कहा करूँ ।'

इस बात का उमा पर कोई विशेप असर न हुआ, बोली, 'तुम्हें दफ़्तर में भी देर लगती है तो मैं परेशान हो उठती हूँ ।'

'श्याम बाबू चुपचाप कुर्सी पर बैठ गये । वह तय करके आये थे कि आज चिन्तित होने का अभिनय करना बेहद जरूरी है ।

श्याम बाबू को यों पस्ती में बैठे देख कर उमा ने पूछा, 'ईद कब है ?'

'परसों ।' श्याम बाबू ने उसी उदासीनता से उत्तर दिया ।

'सोचती हूँ, लक्ष्मीधर के साथ लतीफ़ और हसीना से ईद ही मिल आऊँ ।'

'ग्रेट !' श्याम बाबू ने उमा को खुशी के मारे दोनों हाथों पर उठा लिया और बोले, 'ऐसी ग्रेट भाभी मेरे जैसे खुशनसीबों को ही मिला करती है ।'

श्याम बाबू ने तुरन्त जेब से सौ-सौ के चार-पांच नोट निकाले और भाभी के तकिये के नीचे रख दिये, 'देखो भाभी, ईद पर कुछ मिठाई वगैरह भी दे आना । लतीफ़ के अलावा दो-तीन और मुस्लिम परिवारों मे हो लेना जिससे, वह कुछ भांप न पाये ।'

उमा ने नोट उठा कर अपने ब्लाऊज में खोंस लिये और बोली, 'मन हो

तो जल्दी से एक छोटा तैयार कर दूँ।'

'छोटे से कुछ न होगा।' श्याम बाबू ने कहा, 'तीन पैग जरा फुर्ती से तैयार करो'

'लक्ष्मीधर अभी इतनी जल्दी न आयेंगे। ड्राई क्लीनिंग के लिए साड़ियाँ दे रखी हैं। वे पहले बाबा को साथ लेंगे और फिर कपड़े लेने जायेंगे।'

श्याम बाबू पर इसका कोई असर न हुआ। वे लक्ष्मीधर के सामने भी पी लेते थे। उमा की जाँघ पर कोई मच्छर काट गया था। वह बार-बार टाँग खुजा रही थी। आज उसे अपनी ही सुडौल मरमरी टाँगें बहुत आकर्षित कर रही थीं। दिन भर उसने झावें से एड़ियाँ रगड़ी थी। पूरे बदन पर सन्दल के तेल की मालिश की थी। 'पैडी क्योर' किया था।

'देखो मच्छर भी कहाँ काट गया।' उमा बोली।

'मच्छर भी असभ्य हो गये हैं।' श्याम बाबू ने एक लम्बा घूंट भरते हुए कहा, 'भाभी तुम्हारी पाम्फ्रेट का क्या हुआ ?'

उमा ने वहीं से नौकरानी को आवाज दी। मगर नौकरानी से पहले लक्ष्मीधर न जाने कहाँ से नमूदार हो गया और पाम्फ्रेट की प्लेट आगे बढ़ा दी।

'वाह वाह !' श्यामबाबू मछली पर पिल गये। जब तक उमा सलाद मँगवाती, आधी मछली वे अन्दर कर चुके थे।

'देखिए लक्ष्मीधरजी। इस बार ईद बहुत धूमधाम से मनायी जा रही है। इस बार आपके यहाँ भी सिवैयाँ बनेंगी। मिल के तमाम मुसलमान वर्कर्ज के यहाँ हम लोग सिवैयाँ ही नही तोहफे भी भेजेंगे। उनके बच्चो में ईदी भी बाँटी जायेगी।'

'सब समझ गया गुरुजी।' लक्ष्मीधर ने हाथ जोड़ दिये, 'साब समझ गया।'

श्याम बाबू ने आँख मारी कि बेटा ठीक ही समझ रहे हो।

ईद के रोज़ पद्मिनी प्रीमियर लतीफ़ के घर के सामने रुकी। उमा बड़ी नज़ाकत से कार से उतरी। उसने कल ही नयी साड़ी, नया ब्लाउज़, नये जूते ईद के मुबारक त्योहार के लिए खरीदे थे। इतनी ऊँची एड़ी का जूता भी उसे पहली बार मिला था। वह हिरनी की तरह चलती हुई लतीफ़ के दरवाज़े तक पहुँची। ड्राइवर ने दरवाज़ा खटखटाया। दरवाज़ा खुला तो सामने हसीना खड़ी थी। हसीना को देखते ही उमा को लगा, यह लड़की नहीं एक चुनौती है। हसीना ने सादा-सा गरारा-कुर्ता पहना हुआ था। बाँहों में काँच की चूड़ियाँ थीं। मुफ़लिसी में भी उसका चेहरा जगमगा रहा था।

'आदाब।' उसने जिस सादगी से सर झुकाया, उमा फ़िदा हो गयी।

उमा ने आगे बढ़ कर हसीना को अपनी आग़ोश में ले लिया और उसका गाल चूमते हुए बोली, 'ईद मुबारक। मैं मिल की तरफ़ से आयी हूँ। ये रही आपके लिए सिवैयाँ। ये आपके लिए एक गरारा कुर्ता और यह लतीफ़ साहब के लिए एक छोटा-सा ट्रांजिस्टर।'

उमा ने ट्रांजिस्टर खोला तो पाकीज़ा का गाना आ रहा था, 'इन्हीं लोगों ने, इन्हीं लोगों ने, इन्हीं लोगों ने ले लीन्हा दुपट्टा मेरा....' उमा ने तुरन्त बन्द कर दिया। क्या मुसीबत है, कैसा गाना आ रहा है।

'आपने बन्द क्यों कर दिया, यह गाना तो मुझे बेहद पसन्द है।' हसीना बोली, 'लतीफ साहब तो यूनियन की मीटिंग में गये हैं। शायद देर से लौटें।'

तभी लक्ष्मीधर अन्दर दाखिल हुए। जेब से तुरन्त ग्यारह रुपये निकाल कर हसीना को ईदी पेश की। हसीना ने रुपये खाट पर रख दिये और बहुत खूबसूरत आदाब अर्ज किया। उमा गुस्से के मारे लाल हो गयी। है तो आखिर तवायफ़ की ही बिटिया। इस वक्त कैसे नज़ाकत दिखा रही है। उमा को लक्ष्मीधर पर भी बहुत क्रोध आया, कैसा बेवकूफ आदमी है, कि बिना सूचना दिए औरतों के बीच चला आया है। दरअसल आज सुबह से ही उमा का मन उखड़ रहा था। उसने आईने में देखा था, कनपटियों के नजदीक उसके बाल सफेद हो रहे थे और दूसरी तरफ यह लड़की थी, कनपटियों के पास उसके बाल अभी तक सुनहरे थे। एक अदने फोरमैन की बीवी के बाल कनपटियों पर सुनहरे क्यों हैं। दूसरे इस समय हसीना का अदब और रूप उससे सहन न हो रहा था।

हसीना 'अभी आयी' कह कर बावर्चीखाने में चली गयी और दो अल्यू-

मुनियम की तश्तरियों मे सिवैयाँ ले आयी! उमा ने जीवन में कभी किसी मुसलमान के यहाँ खाना नही खाया था, न लक्ष्मीधर ने। दोनों के लिए अचानक अजीब संकट पैदा हो गया। तश्तरी और चम्मच का रूप-रंग भी ऐसा था कि दोनों की हालत क़ाबिले रहम हो रही थी। लक्ष्मीधर ने किसी तरह आँखें मूँद कर एक चम्मच कुछ इस अन्दाज से मुँह में रख लिया कि चम्मच उसके दाँत से न छू जाए। उसे सिवैयों का स्वाद बहुत अच्छा लगा, मगर निगलने की इच्छा न हुई। सिवैयों के कौर को उसने पान की तरह दाँतों के उस पार गाल की दीवार से सटा लिया और बोला, 'वाह, कितनी अच्छी सिवैयाँ है।'

उमा ने भी लक्ष्मीधर से प्रेरणा पा कर एक चम्मच होंठों से लगाया। उसे उबकाई सी आने लगी। वह किसी तरह अपने को रोक कर बाहर दरवाज़े की तरफ देखने लगी। 'हे राम! किस मुसीबत में पड़ गये।' उसने दवाई की तरह सिवैयाँ निगल लीं और बोली, 'आप तो बेहद अच्छी 'कुक' हैं।

'यानी आपने बहुत अच्छी सिवैयाँ बनायी है।' लक्ष्मीधर ने अनुवाद किया।

हसीना आश्चर्य से दोनो की तरफ़ देख रही थी। खाने का शऊर तक नही, और बनते हैं मैनेजर। वह मन ही मन दोनों की हरकतों का आनन्द ले रही थी।

'हम लोग दरअसल सुबह से सिवैयाँ ही खा रहे हैं।' लक्ष्मीधर बोला, 'मगर आपकी सिवैयाँ बहुत लज़ीज़ है। आप पैक कर दीजिए, अब तो पेट में जगह नही। हमारा बाबा खायेगा। बहुत खुश होगा।'

हसीना अन्दर गयी। एक कागज में सिवैयाँ डाल कर प्लास्टिक के टुकड़े मे लपेट लाई। हसीना ने आज शामी कबाब भी बनाये थे। उसने लतीफ़ के लिए चार कबाब बचा कर रखे थे, मगर घर में मेहमान देख कर उसने कटोरी में चारों कबाब रखे और ले आयी, 'एक-एक कबाब भी चख लीजिए। आपको खाना ही होगा।'

लक्ष्मीधर इस बीच अखबार के एक टुकड़े पर सिवैयाँ डाल कर ड्राइवर को खाने के लिए दे आया था। अब कबाब देख कर सचमुच कबाब हो गया। हसीना ने इतने अनुरोध मे कबाब लक्ष्मीधर की ओर बढ़ाया कि उसने उठा कर तुरत मुंह में रख लिया। कई धागे एक साथ उसके दाँतो में उलझ गये। लक्ष्मीधर को लगा उसे कै हो जायेगी। वह मुँह हिलाता हुआ बाहर की ओर लपका। हसीना इस बीच कटोरी थामे उमा के सामने खड़ी थी। उमा ने कहा, 'मैं तो गोश्त खाती नहीं। आप मुआफ करेंगी।'

'बहुत भूल हो गयी मुझसे।' हसीना बोली, 'आप मुझे मुआफ़ करेंगी।'

उमा अपनी तेजी पर बेहद खुश हुई, यह कल की लौंडिया क्या जाने, वह अब तक कितने मुर्गे हज़म कर चुकी है। उमा कहा, 'दो बरस पहले तक मुझे परहेज़ नहीं था। एक बार बाबा बीमार पड़ा और मैंने मनौती मान ली कि बाबा ठीक हो गया तो कभी गोश्त न खाऊँगी।' उमा झूठ का आनन्द लेने लगी।

हसीना ने दोबारा अफ़सोस जाहिर किया और बोली, 'थोड़ी सिवैया और लीजिए !'

उमा ने कन्धे उचका दिये।

लक्ष्मीधर ने उठते हुए कहा, 'अब चलना चाहिए। यूसुफ़ साहबके यहाँ भी जाना है।'

'आप ये चीज़े लेते जाइए।' हसीना बोली, 'वह मुझे डाँटेंगे कि मैंने इतने ज्यादा, इतने उम्दा और इतने खूबसूरत तोहफ़े क्यों कबूल किये।'

'वे कुछ कहें तो हमारे यहाँ चली आना। बेझिझक। मुझे अपनी अच्छी आपा समझो।' उमा बोली, 'हाय तुम सचमुच कितनी हसीन हो!'

हसीना बेहद खुश हो गयी। ऐसी ईद तो उसने आज तक न मनायी थी। किसी ने कभी ईदी में फूटी कौड़ी तक न दी थी। वे लोग चले गये तो हसीना नया गरारा पहन कर लतीफ़ के इन्तज़ार में बैठ गयी।

मीटिंग में लतीफ़ ने मैनेजमेन्ट की खूब खबर ली थी। लक्ष्मीधर को तो उसने मालिकों का ज़रखरीद गुलाम और दलाल कहा था। जब उसने घर मे हसीना के तोहफ़े देखे तो भड़क गया, बोला, 'लगता है, ये कमीने लोग हमें खरीदना चाहते हैं।'

'क्या मतलब ?'

'ये लोग सोचते है,ईद के तोहफ़े पाकर हम अपनी माँगें वापिस ले लेंगे।'

'ये तोहफ़े तो इतने खूबसूरत हैं कि इन्हें पा कर कोई भी अपनी माँगें वापिस ले सकता है।'

'तुम बेवकूफ़ हो, तुम क्या समझो इन शातिर लोगों की चालें। ये लोग जानते हैं कि यूनियन मे मुझे आगे किया जा रहा है। मुझे पटा लेंगे तो इनका काम आसान हो जायेगा।'

'अगर ऐसा है तो ये लोग यूसुफ़ के यहाँ क्यो गये ?'

यूसुफ़ लतीफ के विरोधी गुट का आदमी था।

'तुम्हें कैसे मालूम कि वे लोग यूसुफ़ के यहाँ भी गये थे ?'

'मुझसे यूसुफ भाई का पता पूछ रहे थे।'

लतीफ ग़मगीन हो गया। क्या उसके किरदार में कोई खोट आ गया है

जो हर किसी बात को शक की निगाह से देखने लगा है ।

उसे चुप देख कर हसीना ने कहा, 'मेरी अक़्ल में तो यही आता है कि हम लोगों को भी उन से ईद मिल कर आना चाहिए ।'

'न, मैं तो न जाऊँगा ।' लतीफ़ बोला, 'किसी साथी ने देख लिया तो यही उड़ जायेगा कि मालिकों ने मुझे ख़रीद लिया है ।'

'आप कैसी फ़िज़ूल की बातों में पड़े हैं । ईद जैसे मुबारक त्योहार के मौके पर तो ऐसा न सोचिए ।'

'यह मजहब ही सब फ़साद की जड़ है ।' लतीफ़ ने गुस्से में कहा और अपने जूते के फीते खोलने लगा ।

'आपकी जो मरज़ी, आप कीजिए ।' हसीना बोली और रूठ कर बावर्ची-खाने में घुस गयी ।

लतीफ़ ने उसे जाते देखा तो महसूस किया, हसीना इस कदर ख़ूबसूरत तो कभी न थी । लतीफ़ को लगा उसे हसीना के प्रति इतना क्रूर न होना चाहिए, कभी-कभी तो उसका मन रखने के लिए कोई बात मान लेनी चाहिए । हसीना हमेशा किसी विचित्र बात को लेकर ही ज़िद पकड़ लेती । अब यह भी क्या ज़िद कि उन्ही मालिकों के पिट्ठुओं के यहाँ जाकर ईद मिलो और सवैया पहुँचाओ जिनके बारे में वह मीटिंग में जाने क्या-क्या कह कर आया है । अब तक उन्हें इसकी रिपोर्ट भी मिल चुकी होगी ।

वह बावर्चीखाने के दरवाज़े के पास खड़ा होकर बोला, 'सुनो सिवैयाँ हम पहुँचा देंगे मगर घर में इस लायक कोई बर्तन भी है ।'

हसीना ने अल्युमीनियम का टेढ़ा-मेढ़ा कटोरा निकाला, 'इसमे ले जायेंगे ।'

'तुम्हारे कटोरे की सूरत देख कर ही हरामखोर इस ख़ुलूस की क़द्र न करेंगे।'

हसीना ने कटोरा उठा कर देखा । उसे भी लगा, शायद वह कटोरा इस लायक नहीं, बोली, 'बगल से स्टील की एक डिबिया माँग लाती हूँ ।'

'अगर उन्होंने फ़ौरन ही डिबिया न लौटायी तो क्या वापिस माँग सकोगी?'

'अजब आदमी है ।' हसीना ने सोचा, 'मेरी तो हर बात खारिज कर देता है । मगर गलत भी नहीं होता ।'

'बोलो ?'

'मैं क्या बोलूं ?' हसीना बोली, 'हम ग़रीब लोग हैं, इतना तो वे लोग जानते ही होंगे ।'

'ख़ूब जानते होंगे ।' लतीफ़ बोला, 'हो सकता है हम लोगों को हमारी ग़रीबी का एहसास दिलाने ही आज आये हों ।'

'हो सकता है, हो सकता है । मेरी हर बात का जवाब तुम 'हो सकता है'

से ही दिया करो।' हसीना की आँखें भर आयीं। उमा का चमचमाता चेहरा उसकी आँखों के सामने घूम गया। कितने प्यार से मिली थी।

लतीफ को हसीना पर बेहद प्यार आ गया। उसने हसीना को बाँहों में ले लिया और बोला, 'हम सोचते हैं आज तुम्हें अपने मैनेजर साहब का बंगला दिखा ही दें। तुमने इतना अच्छा बंगला न देखा होगा।' 'मैं अभी काँच या चीनी मिट्टी की एक तश्तरी खरीद लाता हूँ, एक नया रूमाल। तश्तरी न भी लौटेंगी तो चलेगा।'

'हम अपनी पसन्द की तश्तरी लेंगे।'

'अच्छा तुम अपनी पसन्द की तश्तरी ही लेना।' लतीफ़ ने उसकी गर्दन पर अपने होंठ धर दिये।

वे लोग घर से कुछ इस अदा से निकले जैसे कोई महत्वपूर्ण चीज खरीदने जा रहे हों। घर में पैसे भी ज्यादा न थे। अभी ईद पर काफ़ी खर्च हो चुका था। ले-देकर पच्चीस रुपये थे। उन लोगों ने घर की समस्त पूँजी जेब में रख ली और पैदल ही बाज़ार की ओर चल दिये।

लतीफ़ चीनी मिट्टी की कोई सादा-सी तश्तरी लेने के हक में था, मगर हसीना स्टील की तश्तरी पर रीझ रही थी।

'क्या हो गया अगर उन लोगों ने तश्तरी न लौटायी।' हसीना ने कहा, 'इससे ज्यादा पैसे तो उन्होंने गरारे की सिलाई के दिए होंगे।'

आखिर सारा बाज़ार घूम कर उन लोगों ने स्टील की एक छोटी तश्तरी खरीद ली। पाँच रुपए में। एक रूमाल भी खरीदा। पचहत्तर पैसे में।

थोड़ी देर बाद मियाँ-बीवी दोनों रिक्शा में बैठ कर लक्ष्मीधर के बंगले की तरफ़ चल दिये। लक्ष्मीधर के बंगले से लतीफ़ परिचित था। अक्सर एक प्यारी-सी रेशमी कुतिया फाटक के पास चिल्लाती रहती थी। लक्ष्मीधर के बंगले के आगे कई गाड़ियाँ खड़ी थीं। गाड़ियाँ देख कर लतीफ़ हिचकिचाया, कहीं डायरेक्टर लोग न आये हों। उसने आज बहुत ज़हरीला भाषण दिया था। यह याद आने पर उसे अन्दर जाना बड़ा अटपटा लग रहा था।

'तुम मुझे कहीं का न छोड़ोगी।' उसने रिक्शेवाले के हाथ में एक रुपये का नोट थमाते हुए हसीना की तरफ़ गुस्से से देखते हुए कहा, 'लगता है मेरी इज्जत धूल में मिला कर ही तुम्हारी रूह को चैन मिलेगा।'

'अगर ईद मिलने से आपकी इज्जत धूल में मिलती है तो मत जाइए।' हसीना ने दुपट्टा ठीक करते हुए एहतियात से वक्ष के ऊपर कर लिया।

'अब इस बटन पर उंगली रख ही दो।' लतीफ ने कहा, 'अन्दर खबर हो जायेगी कि कोई आया है।'

हसीना ने बटन पर उंगली रख दी। बंगले में एक कोयल बोलने लगी और खाकी टोपी पहने दरबान न जाने कहाँ से नमूदार हो गया।

'मैनेजर साहब हैं?'

'हाँ है?'

'उनकी मेम साब।' हसीना ने पूछा।

'वो भी है।'

'साहब क्या कर रहे है?'

'साहब शराब पी रहे हैं।'

'लगता है नये-नये आए हो।' लतीफ़ बोला।

'जी साब!'

'अच्छा देखो अन्दर खबर करो कि ' लतीफ ने सोचते हुए कहा, 'लतीफ़ साहब आये है।'

दरबान ने अचानक बरामदे की तरफ़ का एक कमरा खोला और अन्दर से उमा दोनों बाहे फैलाये गेट की तरफ लपकी, 'हाय! मुझे उम्मीद थी हसीना, मुझे पूरा भरोसा था, तुम जरूर आओगी। आइए, लतीफ़ साहब, अन्दर तशरीफ़ लाइए।'

हसीना हाथ मे सिवैयाँ थामे उमा के साथ कमरे मे घुस गयी। लतीफ़ बरामदे में टहलकदमी करता रहा।

उमा ने ड्राइंग रूम में जाकर तमाम लोगों के बीच बहुत बेशर्मी से हसीना को बाहो मे लेकर गाल पर चूम लिया और बैठे हुए लोगो से मुखातिब होकर बोली, 'मैं जीत गयी।'

हसीना उसी प्रकार तश्तरी थामे निश्चल खडी थी। उमा की साँस से ही उसे लग रहा था कि यह औरत पिये हुए है। उसे बहुत वितृष्णा हुई, ईद के रोज भी ये लोग शराब पी रहे है। उमा तुरन्त सभल गयी, बोली, 'देखिए मेरी बिटिया मेरे लिए सिवैयाँ लायी है।' उसने रुमाल हटा कर तश्तरी तमाम बैठे हुए लोगों की तरफ घुमा दी। सिवैयों के ऊपर चादी का वर्क लगा था।

हसीना ने देखा कि लतीफ़ बरामदे में ही खडा है तो वह दरवाजे की तरफ लपकी। हाल मे सन्नाटा खिच गया। हसीना दरवाजे के पास पहुँची, इससे पहले ही उमा दरवाजा खोल कर बरामदे में चली आयी, जहाँ लतीफ़ एक गमले की तरफ टकटकी लगा कर देख रहा था।

'लतीफ़ साहब आप बाहर क्यों खड़े है?' उमा ने लतीफ का हाथ थामा और लगभग घसीटते हुए अन्दर खीच लायी।

लतीफ़ को देखते ही दो-तीन लोग उठे और कमरे मे 'ईद मुबारक', 'ईद-

मुबारक' की आवाजें आने लगी। सब लोग बहुत प्यार से लतीफ़ के साथ बगलगीर हो कर ईद मिले। उमा ने लतीफ़ और हसीना, दोनो को पाँच इंच के डनलप के ऊपर पास-पास बैठा दिया और नौकर को आवाज दी। बावर्ची ट्रे में खूबसूरत तश्तरियों में सिवैयाँ, कबाब वगैरह लिये हुए दाखिल हुआ और उसने एक तिपाई खींच कर तमाम सामान उन लोगो के सामने परोस दिया।

उमा न जाने गौरैया की तरह कब हसीना की बगल में डट गयी। उमा ने वहीं बैठे-बैठे श्याम बाबू से दोनों का परिचय कराया। श्याम बाबू उस वक्त रोहू मछली के गुणों का बखान कर रहे थे। उन्होंने जरा-सा रुक कर बहुत बेनियाजी और लापरवाही से 'आप लोगों से मिल कर के खुशी हुई' कहा और दोबारा रोहू मछली की चर्चा में खो गये।

लतीफ़ ने मन ही मन वहाँ बैठे तमाम लोगों को गाली दी और कुहनी से हसीना को बताया कि अब उठो, तुम्हारा ईद मिलन हो गया। मगर तभी लक्ष्मीधर बाहें फैलाये लतीफ़ के सामने खड़े हो गये और बोले, 'भैया ईद मिल लो।'

दोनों ने एक दूसरे को बाँहों मे लेकर ईद-मिलन किया। ईद मिलन के बाद जब लक्ष्मीधर श्याम बाबू का रोहू-गान सुनने जा रहे थे तो श्याम बाबू ने बहुत महीन आँख मार कर उसे बधाई दी। लक्ष्मीधर फूल कर कुप्पा हो गया। उसे यकायक उमा पर बहुत लाड आया। वह आँखों ही आँखों में उमा तक अपने मन की बात पहुँचाता कि हसीना और लतीफ़ खड़े हो गये।

'आप जा रहे हैं ?' लक्ष्मीधर ने कहा, 'आप आज हमारे साथ ही भोजन करते तो अच्छा लगता।'

'आज ईद के मौके पर इन लोगों को मत रोको !' उमा ने हसीना के गाल थपथपाते हुए कहा, 'मेरी तो इच्छा हो रही है कि तुम्हें कच्चा खा जाऊँ !'

हसीना का रंग शर्म से सुर्ख हो गया। बोली, 'आप बहुत-बहुत अच्छी हैं।'

'देखो जब घर में बोर होने लगो, यहाँ चली आया करो।'

'जरूर-जरूर।' हसीना ने कनखियों से लतीफ़ की तरफ़ देखते हुए दावत दी 'आप बोर होने लगें, जो आप क्योंकर होंगी, तो ज्यादा बोर होने के लिए हमारे यहाँ चले आइए।'

लक्ष्मीधर बहुत जोर से हँसा। उमा भी मुस्कराई। बोली, 'अभी से चलो। मैं बेहद बोर हो रही हूँ।'

'जन्नत में कोई कैसे बोर हो सकता है ?' हसीना ने कहा।

'अगर यह जन्नत है तो इसमें बोरडम के अलावा कुछ नहीं।' उमा बोली।

'बहरहाल यह एक ऐसी जन्नत है।' लतीफ़ बोला, 'जहाँ बोर होना भी नागवार न गुज़रता होगा।'

लक्ष्मीधर 'हो हो' करके हँसा, बोला, 'भैया, बोर बोर यही लोग होते हैं, जो उमा की तरह ख़ाली रहते हैं।'

'मुझे कहीं काम दिलवा दो।' उमा बोली।

'तुम्हें बीसियों बार काम दिलवाया गया, ऐन मौके पर तुम्हारा इरादा बदल जाता है।'

'दरअसल मुझे बोर होना बेहद पसंद है। बोर होना मेरी हॉबी है। बोर होना मेरी ज़िन्दगी है।'

'आप कितना झूठ बोलती हैं। भला बोर होना कौन पसन्द करेगा।' हसीना बोली, 'मुझे कहीं काम मिले तो मैं फ़ौरन मंज़ूर कर लूँ।'

'आप काम करेंगी?' लक्ष्मीधर ने कहा, 'आप कहें तो अभी आपका एप्वाइन्टमेंट लेटर टाइप करवा दूँ।'

हसीना एप्वाइंटमेंट लेटर का अर्थ न समझ पायी। वह लतीफ़ की तरफ़ सवालिया नज़रों से देखने लगी। लतीफ़ ने कहा, 'कपड़े धोने का काम मैनेजर साब अभी देने को तैयार हैं।'

'वाह वाह लतीफ़ साब, आप भी कैसी बातें करते हैं।' लक्ष्मीधर बोला, 'मेरी भाभी जान के लिए ऐसा मत कहिए। आप कहिए तो कल ही आपके ग्रेड में सुपरवाइज़र बना दूँ।'

हसीना ने घूम कर बड़े आश्चर्य से लक्ष्मीधर की तरफ़ देखा और 'ख़ुदा हाफ़िज़' कह कर गेट की तरफ़ चल दी। उन लोगों को विदा करने लक्ष्मीधर और उमा बाहर तक आये। श्याम बाबू इस आशा में लम्बे लम्बे कश खींचता रहा कि अन्दर आते ही अपनी भाभी को पूरे ज़ोर से भींच लेगा।

'कितना सुन्दर घर था और कितने अच्छे लोग थे।' हसीना ने उत्साहित होते हुए कहा।

'मज़दूरों का ख़ून चूस कर ही इन लोगों ने यह घर खड़ा किया है।' लतीफ़ बोला, 'वह जो आदमी लगातार रोहू मछली की बात कर रहा था, वही मालिक है।'

'हाय, उसने तो खड़े होकर आदाब किया था।'

'बहुत घाघ आदमी है वह।' लतीफ़ बोला, 'बेहद बेरहम दिल।'

'ऐसा क्यों बोलते हो अपने मालिकों के लिए।'

'क्योंकि वे ख़ून चूसते हैं।' लतीफ़ बोला, 'यह साला पूँजीपति

तोड़ना चाहता है, मगर हम उसे ही तोड़ कर रख देंगे। वह दिन दूर नहीं जब एक दिन मिल पर ताला पड़ जायेगा।'

'जाने तुम लोगों के दिमाग पर क्या फ़ितूर सवार है।' हसीना बोली, 'तुम लोग ज्यादा काम करोगे तो ज्यादा मुनाफा कमाओगे। फिर बोनस भी मिलेगा और तनख्वाह भी बढ़ेगी।'

'मुनाफ़ा बढ़ेगा तो इन्हीं लोगों का।' लतीफ बोला, 'एक बार मुझे यूनियन का सेक्रेटरी हो जाने दो। मगर मुकाबला बहुत कड़ा है। हीरालाल अभी से मजदूरों में दारू की बोतलें और नोट बांट रहा है।'

'उसके पास इतना पैसा कहाँ से आता है?'

'उसके एक मित्र केन्द्र में मन्त्री है। अपने हाथ में कुछ यूनियनें रखने के लिए वे दिल खोल कर पैसा बाँटा करते है।'

'तब तो तुम्हारी हार लाजिमी है।'

'मुझे अपने साथी मजदूरों पर पूरा भरोसा है।' लतीफ़ बोला, 'पैसे के बल पर वह जीत भी गया तो क्या कर पायेगा। मजदूरों का भला तो उसके जीतने से होगा नहीं।'

'तब फिर मजदूर उससे पैसा क्यों लेते है?'

'मजबूरी में।' नासमझी में। हमें मजदूरों में यही समझ पैदा करनी होगी कि वे अपने अखलाक का सौदा चन्द सिक्कों से न करें। सब मजदूर एकजुट होकर खड़े हो जायें तो क्या मजाल मालिकों की कि मजदूरों को उनके हक से महरूम कर दें।'

'तुम बिना पैसे के कैसे चुनाव लड़ लोगे?'

'हम लोग चन्दा करेंगे, दूसरे मैं पैसे के बल पर जीतना भी नहीं चाहता।'

हसीना बहुत खुश लौटी थी। यूनियन की चर्चा में उसे कोई दिलचस्पी न थी। उसने जिन्दगी में पहली बार जैसे उस पार की दुनिया देखी थी। वह उसी की चकाचौंध में थी। उसने कहा, 'तुम कुछ भी कहो, मुझे तो उन लोगों के यहाँ जाना बेहद

• •

शर्मा आँखों से ओझल हुआ तो गुल बड़ी तेज़ी से कमरे में आयी। उसने बुर्का उतार कर कुर्सी पर फेंक दिया। अम्मा कमरे में नहीं थीं। वह बाहर गयी तो अम्मा दालान में बैठी खरबूजे के बीज निकाल रही थीं, जैसे कुछ हुआ ही न हो।

गुल अम्मा से बेहद खफ़ा हो गयी। वह अम्मा से उनके जाहिलपन पर कुछ कहना चाहती थी। अम्मा को यूँ इत्मीनान से खरबूजे के बीये निकालते देख गुल को लगा, अम्मा बात करने लायक भी नहीं है। वह उसी तरह चुपचाप अपने कमरे की तरफ़ चल दी और ज़ोर से दरवाज़ा बन्द कर अन्दर चली गयी। वह अम्मा से इस समय सिर्फ इतना ही विरोध प्रकट कर सकती थी। वह नहीं चाहती थी कि अम्मा स्यापा शुरू कर दे। मन ही मन उसे बहुत दुःख हो रहा था कि अम्मा शर्मा से इस कदर बेरुखी से पेश आयीं।

शर्मा की भावनाओं ने उसके ऊपर एक घटा-सी छा दी थी। एक धुंध की तरह शर्मा उसके अस्तित्व के चारों ओर छा गया था। अम्मा की बेरुखी से शर्मा निपट लेगा, मगर गुल सर से पैर तक बदल गयी थी। उसके भीतर एक नयी लड़की ने जन्म ले लिया था। शर्मा से वह जब भी मिली है, हल्की होकर ही लौटी है। शर्मा के होंठों पर मूँछों की एक घनी रेखा है, गुल को लगा, उसके लिए वहीं कोई निधि छिपी हुई है। शर्मा मुस्कराता तो गुल को वह चेहरा बहुत आत्मीय अनुभूति देता। बहुत पहचानी हुई नितान्त निजी अनुभूति। वह अम्मा को चुप रह कर ज्यादा सबक दे सकती है, उसने तय किया। वह अम्मा से नहीं बोलेगी। वह नफ़ीस से नहीं बोलेगी। वह किसी से कुछ नहीं कहेगी और सुबह तक शर्मा के बारे में, शर्मा में रहेगी। सुबह यूनिवर्सिटी नहीं जायेगी, पूछे जाने पर न जाने का कारण भी नहीं बतायेगी।

रात भर बिस्तर पर करवटें बदलते वह फ़ैज़ की ग़ज़ल गुनगुनाती रही :

कब ठहरेगा ए दर्दजिगर, कब रात बसर होगी ।

बीच में अम्मा ने खाने के लिए आवाज़ दी थी । गुल ने दो-तीन आवाज़ों का जवाब नहीं दिया और जब अम्मा ख़ुद चली आयी तो बड़ी बेरुख़ी से कह दिया उसे भूख नहीं है । अम्मा चूर्ण उठा लायी तो उसने कहा, मेज़ पर रख दो, वह ले लेगी । उसके बाद भी अम्मा दो-एक बार उसकी तबीयत पूछने आयी, मगर गुल ने सीधे मुँह जवाब न दिया । अम्मा मूर्ख नहीं थी, समझ रही थी कि बिटिया किसी बात से तुनक रही है । अम्मा भी कारण जानती थी, उसने भी इस विषय पर बात नहीं की । वह दालान में गयी तो नफ़ीस हाथ मलता हुआ सामने खड़ा था, जैसे कह रहा हो, 'बी जान कल दो हाथ अर्ज़ कर दूँ ?'

अम्मा ने आश्चर्य से सर उठाया ।

'वही जो आज आया था, क्या कह रहा था ?' नफ़ीस जैसे पूछ रहा हो ।

'किसकी बात कर रहे हो ?' अम्मा ने नाराज़गी से उसकी तरफ़ देखा ।

'उसी प्रोफ़ेसर की । इजाज़त हो तो दो हाथ अर्ज़ कर दूँ ।' अम्मा नफ़ीस की भाषा समझती थी ।

अज़ीज़न ने कहा, 'तुम निहायत बेवकूफ़ आदमी हो !'

गुल अन्दर कमरे में अम्मा की आवाज़ सुन रही थी, उसके जी में आया, कमरे में जाकर नफ़ीस को ऐसा धक्का दे कि वह ज़ीने पर लुढ़कता चला जाये । वह बाहर आती इससे पेश्तर अम्मा ने ही नफ़ीस डाँट दिया, 'तुम्हारा दिमाग़ फिर गया है । वे गुल के उस्ताद हैं ।'

नफ़ीस की समझ में कुछ न आया । वह उसी तरह हाथ मलता हुआ कुछ देर आश्चर्य से अज़ीज़न के चेहरे की तरफ़ देखता रहा और वैसे ही हाथ मलता हुआ सीढ़ियाँ उतर गया । अज़ीज़न जानती थी, नफ़ीस के हाथ पर खुजली होना कोई अच्छा लक्षण नहीं है । वह बिना मार-पिटाई के आज सो नहीं पायेगा । मगर अज़ीज़न ने बुला कर उसे दस रुपये दिये कि वह कोई खेल देख आये। हाथ मलते हुए ही नफ़ीस ने नोट थाम लिया और ज़ीना उतर गया।

'मुझे तुम्हारा प्रोफ़ेसर शक्ल से ही कायर लगता है । कायर, टिमिड और भला ।'

'अम्मा ये सब क्या बोलती रहती हो ?'

गुलबदन को अपने भविष्य से डर लगने लगा था । अम्मा जिस [illegible] से सब चीज़ों का सरलीकरण करती चलती थी [illegible] एक कुएँ में डूबती चली जा रही है । कई [illegible]

अन्दर इतनी दहशत पैदा हो जाती कि लगता वह चारों तरफ़ भेड़ियों से घिरी हुई है और उसके बचाव का कोई मार्ग नहीं बचा है।

'हटाओ अम्मा, हमें नहीं सुनेंगे तुम्हारी ये सब बातें। हम शादी नहीं करेंगे।'

गुलबदन की आँखें भर आयी थीं। उसे अपने चारों तरफ़ एक भयानक चुप्पी और सन्नाटा महसूस होने लगा था। उसे इस घर की परिचित दीवारों से अजीब-सी दहशत महसूस होने लगी।

अम्मा ने गुलबदन की तरफ़ देखा तो अपने पर काबू न रख सकी। अम्मा ने बाँह फैला कर गुल का चेहरा अपनी गोद मे ले लिया। गुल उस स्थिति में थी कि ज़रा-सा भी हिलती तो आँसू ढुलक पड़ते। माँ की नरम गोद में वह फफक कर रो पड़ी।

अम्मा ने उसका सर उठाया और धोती के पल्लू से आँसू पोंछने लगी, मगर गुल ने आँसुओं की झड़ी लगा दी थी।

गुल को अम्मा की धोती से एक आत्मीय गन्ध आ रही थी। बचपन से यही गन्ध आती है। यही गंध क्यों आती है?

'अम्मा मुझे ज़हर दे दो।'

'फिर कभी बेवक़ूफ़ी की ऐसी बात न कहना। मैं अगर जिन्दा हूँ तो तुम्हारी ही साँसों से। वरना मैं तो बहुत पहले मर गयी होती।' अज़ीजन ने गुल की आँखें पल्लू से मलते हुए कहा, 'तुम्हें मेरी बात बुरी लग जाती है, तुम नहीं समझ सकती, मैं तुम्हें कितनी सुखी देखना चाहती हूँ।'

'हम दिल्ली नहीं जायेंगे।' गुल ने कहा।

'दिल्ली तुम ज़रूर जाओगी और पहला इनाम जीत कर आओगी। जाओ जाकर रियाज़ करो।'

गुल को उठने का बहाना ही चाहिए था। वह उठी और कमरे में जाकर दरवाज़ा बन्द कर खाट पर जा गिरी। वह जी खोल कर रो लेना चाहती थी। बदली में अभी पानी बाक़ी था।

अम्मा उससे क्या तवक़्क़ो रखती है और वह अम्मा को कैसे प्रसन्न रख सकती है, गुल की समझ में नहीं आ रहा था। प्रो० शर्मा क्लास में उसकी तरफ़ इतना ध्यान देते थे कि गुल सहसा अपने को महत्वपूर्ण समझने लगी थी। घुमा तो उसके पीछे पड़ी रहती 'पटाना तो कोई गुल से सीखे।' एक दिन उसने भरी महफ़िल में कहा था।

'क्यों नहीं, क्यों नहीं।' राधा बोली थी, 'यह तो गुल का खानदानी पेशा है।'

और एक बहुत ज़ोर का ठहाका लैब की खिड़कियों को हिलाता बाहर लॉन तक पसर गया। गुल ने जवाब नहीं दिया। उठ कर लैब से बाहर आ गयी। गुल जवाब नहीं देती, गुल जवाब देना नहीं चाहती। अपमान और उपेक्षा से गुल के कान एकदम सुर्ख़ हो जाते, आग में तपे लोहे की तरह पारदर्शी। वह प्रोफ़ेसर शर्मा से नहीं बोलेगी। प्रोफ़ेसर अगर कहीं सामने पड़ ही जायेगा तो कन्नी काट लेगी। इसमें भी उसे एक सुख मिलता है।

'गुल तुम नाराज़ हो?' एक दिन शर्मा जी ने सरेराह पूछ लिया।

'बेहद।' वह कहती है और प्रोफ़ेसर कोवहीं खड़ा छोड़ फाटक की तरफ़ चल देती है। अगले दो पीरियड उसने छोड़ दिये।

दूसरी तरफ़ अम्माँ हैं, सुबह-शाम उसके पर काटती रहती हैं। अम्माँ नहीं जानती, अपनी डार से बिछुड़ कर दूसरा सपना देखना कितना यातनामय है। क्या वह इसी हसन मंज़िल के लिए पैदा हुई थी? क्या उसे यहीं दम तोड़ना है? शायद नहीं। अम्माँ को यह भी मंज़ूर नहीं।

अगले रोज गुल विश्वविद्यालय नहीं गयी। शर्मा नितांत अकेला हो गया। कोई ऐसा स्रोत भी नहीं था कि शर्मा गुल का अता पता मालूम कर पाता। दो बजे तक तो वह इस भ्रम में था कि हो न हो गुल उसकी कक्षा में ज़रूर दिखायी देगी। मगर जहाँ गुल प्राय. बैठा करती थी, आज वहाँ, ठीक वहाँ, शुभा बैठी थी। शुभा दो-एक बार उसे घर आने का निमंत्रण दे चुकी थी, वह जितना ही अनुरोध करती, शर्मा उतना ही दूर भागता। हर बार कोई-न-कोई बहाना बना देता। आखिरी पीरियड के बाद शर्मा बहुत हताश हो गया। वह आज हर हालत में गुल से मिलना चाहता था, मगर उसकी अम्माँ की वकील किस्म की उपस्थिति में कुछ भी संभव नहीं था।

घर लौट कर शर्मा बिना कपड़े बदले खाट पर लेट गया। अपने सर के नीचे उसने दोहरा-तिहरा तकिया ले लिया। वह जानता था कि गुल को पाना उसके लिए इतना सरल नहीं। मार्ग में बीसियों झंझट हैं। उसका परिवार है, उसके मित्र हैं, उसके छात्र हैं, उसका शाकाहारी व्यवसाय है। वह शादी के तुरन्त बाद नौकरी छोड़ देगा, घर छोड़ देगा, दोस्तों को छोड़ देगा। गुल के बग़ैर वह नहीं रह सकता। उसे हर वक़्त गुल अपने नज़दीक चाहिए।

फागुन की बहुत सुहानी सुबह थी, प्रोफ़ेसर शर्मा नीम के खुश्क पीले पत्तों के ऊपर टहलकदमी करते हुए बेचैनी में इधर उधर ताक रहा था। सड़क पर नीम के पत्ते, पीले खुश्क पत्ते, ऐसे बिखरे थे जैसे किसी के स्वागत के लिए प्रकृति ने कालीन बिछा दिया हो। शर्मा ने हल्का-सा स्वेटर पहना हुआ था और अपने आस पास की खुश्की उसे बहुत भली लग रही थी।

लगता था पेड़ों ने रात भर पत्ते बहाये थे। पत्तों से नाता तोड़ा था। पत्तों से नाता तोड़ते जा रहे थे।

गुल का रिक्शा नहीं गुज़रा। गुल इसी रास्ते से विश्वविद्यालय जाती थी। शर्मा ने सिगरेट सुलगा ली और तेज़-तेज़ कदम बढ़ाता हुआ, वहाँ तक चला गया जहाँ सड़क अचानक दोमुँही हो जाती थी।

तभी शर्मा की नजर एक रिक्शे पर पड़ी। शर्मा रिक्शे को पहचानता था। रिक्शे वाले को पहचानता था। रिक्शा की सवारी को पहचानता था। रिक्शा देखते ही उसमे एक नया उत्साह आ गया। उसने दोनों हाथ जेब में ठूंस लिये। मगर ऐन उस समय जब वह आगे बढ़ कर रिक्शा रोकता उसका पूरा उत्साह और साहस तिरोहित हो गया। वह जैसे यकायक अपंग हो गया। गुल से उसकी नज़रें चार हुईं—गुल की उदास, महाकाव्यात्मक, बिल्लौरी, तटस्थ, निरपेक्ष, वेन्याज़ आँखें इतने कम समय में उससे क्या-कुछ न कह गयीं। शर्मा सब कुछ भूल गया। वह उस एक पल की व्याख्या में जीवन बिता सकता था। सहसा वह उन आँखों के भाव की व्याख्या में मशगूल हो गया। पराजय, घृणा, स्वीकार, सन्तोष क्या था, उन आँखों में ?

एक बिजली-सी शर्मा के ऊपर गिरी थी और उससे दूर नीम के सूखे पत्तों को रौंदती हुई आगे निकल गयी। नफ़ीस ने पीछे मुड़ कर शर्मा की तरफ देखा मगर शर्मा ने उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया।

शर्मा ने तय किया, आज विश्वविद्यालय नहीं जाएगा। वह मुस्कराया। अच्छा हुआ उसने रिक्शा नहीं रुकवाया, वह रिक्शा रुकवा ही नहीं सकता था। रिक्शा रुकवाता तो गुल की वह छवि धूमिल हो जाती। ठीक उसकी कल्पना की गुल हवा के झोंके की तरह उसके पास से गुज़र गयी थी। वह एक पल शर्मा के भीतर स्थिर हो गया था।

शर्मा ने पास से गुजरते हुए एक रिक्शे को रोका और घर की तरफ चल दिया। गुल विश्वविद्यालय गयी है तो उसकी कक्षा में ज़रूर आयेगी, शर्मा ने छुट्टी का इरादा छोड़ दिया। गुल ने बेगमी रंग का ब्लाउज़ पहना था। जैसे केसर में रंगा हो। शर्मा के आस पास केसर महकने लगा। सब कुछ केसरिया हो गया। कोयल की आवाज़ शर्मा के रिक्शे का पीछा कर रही थी।

शर्मा घर पहुँचा तो उसे कोयल की आवाज फिर सुनायी दी। उसे लगा पूरी प्रकृति गुल को पुकार रही है। शर्मा ने शेव नहीं बनायी। जल्दी से मुँह हाथ धोकर कमीज-पतलून पहन कर विश्वविद्यालय के लिए चल दिया। नाश्ता वह वहीं करेगा। पहला पीरियड उसकी मनपसन्द क्लास का था। वह आराम से क्लास देकर गुल के ख्यालों में डूबा रह सकता था। तीसरा दर्जा गुल की थी, मगर शर्मा ने बहुत साहस का परिचय दिया जब अचानक पहले पीरियड से निकल कर उसने यकायक गुल को देख कर पास बुला लिया। गुल लड़कियों के झुण्ड में थी। हमेशा की तरह सर झुकाये। अकेले नहीं थी। लड़कियों के उस झुण्ड में शुभा भी थी। शर्मा ने अचानक गुल को आवाज दी और जब तक गुल उसके पास आती उसने एक भी क्षण नष्ट किये बिना उससे कहा, 'सुनो गुल, अभी पीरियड के बाद आज तुम्हें मेरे घर आना है। आना ही है। आओगी ?' मन की बात उगल कर वह पेड़ों की तरफ़ देखने लगा। गुल ने क्या जवाब दिया उसे सुनायी नहीं पड़ा। गुल के चेहरे पर क्या भाव आये, उसने ध्यान नहीं दिया। गुल दो-एक क्षण वहीं डरी हुई मृगी की तरह खड़ी रही और वापिस अपने झुण्ड में कब जा मिली, शर्मा को नहीं मालूम। अचानक झुण्ड पर उसकी नजर गयी तो उसने शुभा को अपनी ओर निराशा और पराजय की मुद्रा में देखते पाया। शर्मा ने तुरत उसे भी बुला लिया, 'सुनो शुभा, यह गुल बहुत दिनों से किसी छात्रा की प्रैक्टिकल बुक माँगने के लिए कह रही थी, तुम दे देना। मैंने उससे कह दिया है।'

शुभा ताल के कमल की तरह खिल गयी, 'वह माँगेगी तो दे दूँगी।'

'ठीक है।' शर्मा बोला, 'देखो, मैं जल्द ही तुम्हारे यहाँ आऊँगा।'

शुभा की नजरों में अचानक झाड़-फानूस जल गये बोली, 'डैडी बहुत खुश होंगे।'

'और तुम ?' शर्मा के मुँह से बेसाख्ता निकल गया। इसका कोई अर्थ नहीं था। वह शुभा के घर जाना चाहता था न उसके डैडी को खुश करना। यह केवल शुभा से बतिया कर अपने को सामान्य कर रहा था।

शर्मा अपनी कार्यवाही से अत्यन्त उत्साहित हुआ। घर पहुँच कर उसने चाय बनवायी और कमरा ठीक-ठाक करने लगा। बिस्तर बेतरतीब था, उसने ठीक से बिछा दिया। बैठक की खिड़कियों के पर्दे बदलवा दिये। कुशन पर नये कवर चढ़ा दिये। फिर वह बाथरूम में घुस गया और शेव बना कर नल के नीचे बैठ गया। पानी की धार ठीक उसकी खोपड़ी पर पड़ रही थी। उसे सुकून मिल रहा था। वह शैम्पू कर रहा था कि दरवाजे पर घण्टी की आवाज सुनायी दी। शर्मा का दिल जोर से धड़का। उसने गोपाल को आवाज

दी। दरवाज़ा खुलने की आवाज़ आयी। फिर सब कुछ शान्त। शर्मा ने फिर गोपाल को आवाज़ दी।

'डाकिया था।' गोपाल ने दरवाज़े के पास आकर खबर दी।

शर्मा निढाल हो गया। मगर उसे आशा थी कि गुल ज़रूर आयेगी। देर तक कोई आवाज़ नहीं आयी। अन्दर रसोई में कुकर की सीटी बज रही थी। बाहर पेड़ों के सरसराने की आवाज़ आ रही थी—ठीक ऐसी आवाज़ जैसे खुश्की हो जाने पर कानो से आती है। एक रेगिस्तानी सन्नाटे की आवाज़। बीहड़ के शून्य से उठती आवाज़!

शर्मा बाहर निकला। खिड़की में से देखा तो गुल सामने सड़क पर किसी से कुछ पूछ रही थी। वह वहाँ से हट गया और जल्दी से बाल सँवार कर बाहर निकल आया। वह गुल को कैसे बुलाये। उसने गुल को आवाज़ देना चाहा, मगर तब तक गुल ने उसे देख लिया। वह मुस्कुरायी और शर्मा के साथ-साथ अन्दर कमरे में चली आयी :

'मकान ढूँढ़ने में तकलीफ़ हुई ?'

'ज्यादा नही।'

गुल कुर्सी पर बैठ गयी।

गुल के ठीक सामने शर्मा बैठ गया।

शर्मा खिड़की से बाहर देखते हुए बोला, 'मैं बहुत बेचैन हूँ, जब से अम्माँ से बात करके लौटा हूँ।'

गुल जिधर से आयी थी उधर ही देख रही थी। बाहर कोयल बोल रही थी और धूप मे पत्ते सरसरा रहे थे।

'अम्माँ ने तुमसे कुछ कहा ?'

गुल ने गर्दन घुमा कर शर्मा की तरफ़ देखा और वापिस सड़क की ओर देखने लगी।

'मैं नही जानता तुम मेरे बारे मे क्या सोचती हो, मगर मैं...मुझे लगता है, तुम्हारे बिना बहुत अकेला हूँ।'

गुल के होंठ फड़फड़ाये।

'तुम्हें मुझ पर भरोसा नही ? बोलो, चुप क्यों हो। कह दो, तुम मुझसे नफ़रत करती हो मगर ज़ुबान तो खोलो।' शर्मा बेहद उतावला हो रहा था।

'आपके लिए मेरे दिल में बेइन्तिहा इज़्ज़त है।' गुल दरवाज़े की ओर देखते हुए बोली।

शर्मा ने उठ कर पर्दा गिरा दिया।

'तुम्हें फ़ैसला करना होगा।'

'मगर मैं एक तवायफ की लड़की हूँ।'

'मुझे मालूम है।'

गुल की आँखें नम हो गयीं। उसके हाथ में एक नन्हा-सा रूमाल था, वह आँखों की कोरें पोंछने लगी।

'बहुत बरस पहले अम्माँ से भी किसी ने ऐसे ही कहा था।' गुल ने कहा और खड़ी हो गयी, 'मैं जाऊँगी।'

शर्मा ने उसे बाजू से पकड़ कर बैठा लिया। उसने पाया वह भीतर तक गुल के स्पर्श से झनझना गया है। जैसे रीढ़ में कोई कोमल तंतु सिहर गया हो। वह आगे बढ़ कर गुल को चूम भी लेता, मगर उसने संयम नहीं खोया।

'मुझे दुःख है, अम्मा को किसी ने धोखा दिया।' शर्मा बोला, 'मैं तुम्हारा नुक़्ता समझ रहा हूँ। मुझे ऐसा नीच न समझो।'

गुल फिर खड़ी हो गयी, 'मैं जाऊँगी। नफ़ीस मुझे खोज रहा होगा।'

शर्मा पूछना चाहता था नफ़ीस कौन है, तुम्हारा क्या लगता है, मगर चुप रहा। बोला, 'तुम्हें सिर्फ़ इतना बताना होगा कि तुम्हें मुझ पर भरोसा है या नहीं?'

गुल को चुप देख कर शर्मा ने व्यग्रता में पूछा, 'नहीं है?'

शर्मा ने गुल के गले में हाथ डाल दिया। गुल शर्मा के सीने पर लुढ़क गयी और फफक कर रो उठी। शर्मा उसकी पीठ सहलाता रहा, फिर उसके होंठ गुल की गर्दन पर रेंगने लगे। मिक़्नातीस के प्रभाव में गुल के पूरे शरीर की रोमावलियाँ लहलहा गयीं। केसर का वन इतराने लगा।

गुल ने अपनी सुर्ख़ आँखों से शर्मा की ओर देखा और नज़रें झुका लीं।

गुल के विदा होते ही शर्मा अपने पिता को ख़त लिखने बैठ गया।

आदरणीय पिता जी,

सादर नमस्कार।

आपको जानकर खुशी होगी कि मुझे ज़िन्दगी में एक अनमोल लड़की मिल गयी है। उसे मैं बेहद चाहने लगा हूँ। मुझे लगता है उसके बिना मैं अधूरा हूँ। उसके बग़ैर मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता। मुझे विश्वास है आप मुझे उससे शादी करने की इजाज़त देंगे। मैं आपसे कुछ भी छिपाना नहीं चाहता, अतः यह कहने में भी मुझे, संकोच नहीं है कि वह एक तवायफ़ की लड़की है, मुसलमान है, मेरी एक योग्य शिष्या है। अम्मा को यह बात पसन्द न आएगी। हो सकता है आपको भी बुरा लगे। मगर मैं मजबूर हूँ। मेरा निर्णय अटल है।

आपका पुत्र,
जितेन्द्र मोहन

शर्मा ने ख़त लिफ़ाफ़े में बन्द किया और ज़ुबान की नोक से लिफ़ाफ़ा गीला करते हुए लेटरबॉक्स की तरफ़ चल दिया। लेटरबॉक्स में पत्र छोड़ कर उसने चैन की साँस ली और वहीं एक ढाबे पर बैठ कर चाय की चुस्कियाँ लेने लगा।

गुल को नहीं मालूम वह घर तक कैसे पहुँची। शर्मा के यहाँ से जब गुल अपने विभाग के निकट पहुँची तो उसने नफ़ीस को अपनी तरफ़ बड़ी ज़ालिम नजरों से देखते पाया था। उसकी आँखें सुर्ख़ हो रही थीं और वह लम्बी-लम्बी साँसें भर रहा था। पास ही गुल का रिक्शा खड़ा था, मगर रिक्शा-वाला अब्दुल वहाँ नहीं था।

गुल ने नफ़ीस की गुर्राहट की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और जाकर रिक्शे में बैठ गयी। पर्दा गिरा दिया। गुल एक नयी दुनिया में पहुँच गयी थी। उसे नहीं मालूम कि वह कब घर पहुँची। प्रो० शर्मा ने जहाँ उसे बाज़ू से पकड़ा था, वह हिस्सा बार-बार फड़क रहा था। उसके पूरे बदन में एक अजीब किस्म की खुमारी तारी हो गयी थी। उसके पूरे व्यक्तित्व पर।

गुल कपड़े तबदील कर जब अम्मा के पास पहुँची तो अम्माँ उसे बहुत गहरी नजरों से देख रही थीं। गुल के पाँव ज़मीन पर न पड़ रहे थे, उसने अम्मा के पीछे जाकर उन्हें अपनी बाँहों में भर लिया। अम्मा ने बहुत बेरुखी से उसकी बाँहें हटा दीं, 'दिन में कहाँ गयी थी ?'

अम्मा के माथे पर गहरी लकीर खिंच गयी थी और वह गर्दन उठाये बड़े क्रोध में गुल की तरफ देख रही थीं।

गुल सावधान हो गयी। अम्मा की बेधती हुई नजरों में न देखते हुए धीरे से जवाब दिया—'प्रोफेसर शर्मा के यहाँ। उन्होंने बुलाया था।'

'तुम अकेले गयी थीं ?'

'हूँ।'

'क्यों' ?

'क्योंकि शर्माजी ने ऐसे ही कहा था।'

'कल अगर वह तुमसे मुँह काला करने को कहेगा।'

गुल को अम्मा की बात सुन कर मितली-सी आने लगी। अम्मा कितनी घटिया बात कर रही थीं। उसके अन्दर जो नन्हें-नन्हें फूल खिल रहे थे, मुरझाने लगे। केसर की बगिया एक ही झटके में सूख गयी। अब इसके बाद वह अम्मा से क्या बात कर सकेगी।

'अम्मा तुम यह कैसी बात कर रही हो ? तुम्हें घिन नहीं आती ?' गुल ने कहा और अपने कमरे की तरफ़ बढ़ गयी।

'सुनो।'

'क्या है ?' गुल ने बेरुखी से कहा।

'तुम कपड़े तबदील कर लो, मैं अभी उसके घर चलूँगी।'

'मगर मैं नहीं जाऊँगी।'

गुल कमरे की तरफ़ बढ़ गयी। कमरे में जाकर उसने सर मेज़ पर टिका दिया। थोड़ी देर में गुल ने देखा अम्मा उसका सर दबा रही थीं, 'प्रोफ़ेसर पर तुम्हे भरोसा है ?'

गुल की आँखो से गालों पर आँसू ढुलक गये। वह उसी मुद्रा में बैठी सिसकियाँ भरने लगी।

अम्मा गुल की बगल में ही बैठ गयी। उसके सर पर बड़े ही स्नेह से हाथ फेरते हुए बोली, 'देखो बिटिया ! तुम्हें खुश देख कर ही मैं खुश रह सकती हूँ, मेरी कोई बात तुम्हें बुरी लगती है तो उसके पीछे मेरा डर ही होता है।'

डर...डर एक ऐसा शब्द था जो गुल के खून मे लगातार गर्दिश करता था। वह इससे मुक्त होना चाहती थी। वह अब और नही डरना चाहती थी, डर से मुठभेड़ करना चाहती थी।

'वैसे तो वह एक जिम्मेदार आदमी है। शायर-वायर भी नहीं है। मगर उसके भी माँ-बाप होगे। क्या वह ऐसा इन्कलाबी कदम उठा पायेगा ? क्या उसकी बहनें नही हैं ? इस शादी का क्या अंजाम होगा, वह सोच रहा है या यों ही हवाई किले बना रहा है।'

अम्मा जैसे अपने से ही बतिया रही थी। गुल को अम्मा के मुँह से यह सब सुनना अच्छा ही लग रहा था। वह खुद इन बातो पर सोचना ही नही चाहती थी; सोचने का साहस भी नही शेष रह गया था उसमे।

'मान लो कि वह बहादुरी से सब कुछ बर्दाश्त करता चला गया, मगर क्या वह ज़िन्दगी भर इस एहसास मे मुब्तिला नही रहेगा कि उसने एक तवायफ़ की लड़की से शादी की है ?'

'अम्मा...अम्मा...!' गुल के कानो पर हाथ रख लिये, 'अम्मा तुमने मेरे बारे मे भी कुछ सोचा है। अम्मा मुझे भी जिन्दा रहने का हक है।'

अज़ीज़न उठ गयी, अपने मन की बात कह कर, 'मैंने एक ऐसे लड़के का तसव्वुर किया था, जिस पर तुम जिन्दगी भर शासन करो। जो तुम्हारा ज़र-खरीद गुलाम हो।'

'अम्मा ऐसे शख्स के साथ तो मैं एक पल भी न रह सकूँगी।'

मगर अम्मा बोलती चली गयी, 'अपनी पूरी जायदाद बेच कर क्या एक हीरे जैसा लड़का नही खरीदा जा सकता ?'

'अम्मा तुम्हारे दिमाग़ में यह खरीदोफ़रोख्त क्या चलता रहता है ? मुझे नही चाहिए तुम्हारी कोई भी जायदाद। बूढ़ा बाकर अस्पताल में दम तोड़ रहा है, *क्यों नहीं उसके लिए कुछ करती ?'*

अम्मा यकायक उदास हो गयी, 'बाकर के लिए मैं सब कुछ करना चाहती हूँ। उससे अच्छा सारंगी बजाने वाला पूरे मुल्क में न होगा। मगर मुझे हमेशा लगता है कि मैं भी किसी दिन बाकर की तरह चल बसूंगी।'

'मगर अपनी उस दौलत को फिर भी खर्च नहीं करोगी। मुझे नही लालच तुम्हारे पैसे का, तुम्हारे मकानो का, तुम्हारे हीरों का।'

अम्मा ने जवाब नहीं दिया। सेफ़ खोलने की आवाज़ आयी और अम्मा सीढ़ियाँ उतर गयी। वह तुरत ही बाकर को देखने चली गयी थी।

अज़ीजन घर लौटी तो वह एक बदली हुई औरत थी। बाकर को यों असमर्थ और निस्सहाय देख कर उसे अपनी मौत भी बहुत पास लगी थी। मगर तुरंत ही अपनी जायदाद का, बैंक के लॉकरों का ध्यान आया तो कुछ आश्वस्त हुई। ज़िन्दगी का क्या भरोसा ? हालात आदमी को कहाँ से कहाँ ला पटकते हैं। उसे अचानक बिटिया के प्रति भी बहुत लाड़ आया। वह उसके कमरे में गयी। गुल कापी पर पेंसिल से कुछ घसीट रही थी।

'बाकर को अस्पताल में कोई तकलीफ़ तो नही', अम्मा ने बताया 'मगर वह बचेगा नही।'

गुल ने देखा अम्मा वाकई बहुत परेशान थी। गुल को वे दिन याद आये जब अचकन और अलीगढी पाजामे में बाकर बेहद आकर्षक लगता था।

अज़ीजन गुल के पास ही बैठ गयी। अज़ीजन ने देखा गुल का शरीर भर रहा था। गुल इधर खुद ही अपने शरीर के बारे में बडी सचेत रहने लगी थी। अम्मा से भी बात करती तो वक्ष पर कपड़ा कर लेती।

*'कल तुम शर्माजी से घर आने के लिए कहना। मैं बात करूँगी।' अज़ी-*जन ने कहा, 'मेरा अब क्या भरोसा, पका आम हूँ, कब टपक पडूँ।'

गुल ने आश्चर्य से अम्मा की तरफ देखा। अम्मा के चेहरे की त्वचा ज़रूर पक गयी थी मगर सर का एक बाल भी सफ़ेद नही था। आवाज़ मे भी बुढ़ापा नही आया था। आँखों में भी वैसी ही शोखी थी जो गुल वर्षों से देखती आ रही थी। आज अम्मा को अचानक यह क्या हो गया था ?

अम्मा के मुँह से शर्मा का नाम सुन कर वह स्तम्भित रह गयी। उत्साह मे आकर उसने पूछा, 'क्या खाने के लिए बुलाऊँ?'

अम्मा यकायक कठोर हो गयी। बोली, 'नही।'

'अम्मा तुम्हें मैं कैसे खुश रख सकती हूँ?' गुल ने प्यार में अपना सर अम्मा की गोद में रख दिया।

अजीजन गुल के बालों पर हाथ फेरने लगी। अचानक एक गर्म-गर्म आँसू गुल के गाल पर गिरा। गुल ने मुड़ कर अम्मा की तरफ़ देखा, वह पल्लू से आँखें पोंछ रही थी।

गुल अचानक जैसे अम्मा से भी बड़ी हो गयी। थोड़ी देर पहले अम्मा ने उसके सीने से जो वजनी सिल उठायी थी, शायद अपने सीने पर रख ली थी, उसे अम्मा पर स्नेह उमड़ आया। अम्माँ को पाँव दबवाना बेहद पसन्द है। वह लाड में आकर अम्मा के पाँव दबाने लगी।

'देखो मेरी राजकुमारी! खुदा करे तुम जिन्दगी मे बेइन्तिहा सुख पाओ। जितना दुःख और जलालत मैंने झेल ली है, वह आने वाली कई पीढ़ियों तक के लिए काफी है। मुझे कत्थक बाजार में ले आया था और खुदा करे तुम्हारा गला तुम्हे सभ्य समाज मे ले जाए।'

'अम्माँ तुम अपने माज़ी को क्यों कुरेदती रहती हो दिन भर। तुम्हें कौन दुःख है अब। मेरी फ़िक्र न किया करो, मुझे अपने ऊपर बहुत-बहुत भरोसा है।

'खुदा करे ऐसा ही हो।' अम्मा की आवाज अचानक भर्राने लगी, बोली, 'एक बात सच-सच बताओ। शर्मा तुम्हे पसन्द है?'

गुल ने अम्माँ से आँखें मिलायीं जो हया से अपने आप नीचे झुकती चली गयीं।

'तुम्हें मालूम है शर्मा हिन्दू है?'

सर झुकाये हुए ही गुल ने हामी भर दी।

'तुम्हें उसके घर-बार के बारे मे कुछ मालूम है?'

गुल ने होंठ बिचका दिए।

'शर्मा के कितने भाई-बहन हैं?'

'मुझे कुछ मालूम नहीं।'

'शर्मा के माँ-बाप कहाँ हैं?'

'यह सब उन्हीं से पूछना अम्माँ।' गुल बोली, 'यह सब जानने की मेरी इच्छा भी नहीं।'

'इच्छा क्यों नहीं, तुम्हें उन्हीं लोगो के साथ रहना है जिन्दगी भर और उन लोगों के बारे में कुछ भी जानना नहीं चाहती।'

'अपने आप मालूम हो जाएगा।' गुल ने कहा, 'मैं कल तुम्हारी तरफ़ से दावत जरूर दे दूँगी।'

'उनसे कहना इसी सप्ताह मिलें। मुझे अब जिन्दगी पर कोई भरोसा नहीं रहा। जब से मैंने वाक़र मियाँ को देखा है एक अजीब-सी दहशत मेरी पूरी शख्सियत पर तारी हो गयी है। खुदा करम करे।'

'अम्मा मुझसे तो उसकी हालत नहीं देखी जाती थी। कई बार तो वह रात को इतनी जोर से कराहता था कि दिल दहल जाता था।'

'तुम्हें इसकी याद है। सिर पर तिरछी अलीगढ़ी टोपी रखे जब कभी बाजार में मिल जाता था, उसकी कमर झुक जाती थी और 'आदाब बड़ी बी' कहे बगैर आगे नहीं बढता था।'

'उसे देखने कल मैं भी अस्पताल चलूंगी।'

'जरूर चलना।' अजीजन ने कहा और उठ खडी हुई।

एक प्रश्नचिह्न था जो अजीजन के भीतर फैलता जा रहा था। कल जो एक छोटा सा नुक्ता था, आज नासूर की तरह मर्मांतक पीड़ा दे रहा था। माँ-बेटी के बीच एक सवाल काले नाग की तरह फुफकार रहा था। पूरा माहौल विषाक्त होने लगा तो अजीजन वहाँ से हट गयी।

मस्जिद से अजान की आवाज आ रही थी। 'अल्लाहु-अकबर-अशहदु अल ला इला-ह इल्लल्लाह अश हदु अन न मुहम्मदर रसूलुल्लाह....।' अजीजन नमाज पढने में मशगूल हो गयी। रुकू के बाद वह खडी हो गयी। उसके बाद वह झुकी और माथा जमीन पर झुका दिया। माथे के साथ-साथ हथेली और दोनो घुटने और दोनो पैर के अंगूठे भी जमीन पर टिके थे। सिजदे की हालत में वह 'सुबहानल्लाह' 'सुबहानल्लाह' कह रही थी।

गुल बिस्तर पर लेट गयी। शर्मा उसके बहुत नजदीक सरक आया था। वह वापिस शर्मा के कन्धों से लिपट गयी। उसकी गर्दन की रोमावलियाँ धान के नन्हे पौधों की तरह उसके शरीर पर छा गयी। वसन्त की पूरी मादकता और स्वच्छन्दता उसकी देह मे समाहित होती चली गयी।

वह अभी खुमारी में ही थी कि उस्ताद रियाज कराने आ गये और उसे उठाने की बजाय नीचे चटाई पर बैठ कर तबले पर हल्की-हल्की थाप देने लगे।

थोड़ी देर मे ही फ़ैज की पंक्तियाँ कमरे में गूंज रही थी

कब ठहरेगा दर्द-ए-दिल
कब रात बसर होगी

अम्मा के मुँह से शर्मा का नाम सुन कर वह स्तम्भित रह गयी। उत्साह में आकर उसने पूछा, 'क्या खाने के लिए बुलाऊँ?'

अम्मा यकायक कठोर हो गयी। बोली, 'नहीं।'

'अम्मा तुम्हें मैं कैसे खुश रख सकती हूँ?' गुल ने प्यार में अपना सर अम्मा की गोद में रख दिया।

अजीजन गुल के बालों पर हाथ फेरने लगी। अचानक एक गर्म-गर्म आँसू गुल के गाल पर गिरा। गुल ने मुड़ कर अम्मा की तरफ देखा, वह पल्लू से आँखें पोछ रही थी।

गुल अचानक जैसे अम्मा से भी बड़ी हो गयी। थोड़ी देर पहले अम्मा ने उसके सीने से जो बगनी सिल उठायी थी, शायद अपने सीने पर रख ली थी, उसे अम्मा पर स्नेह उमड़ आया। अम्माँ को पाँव दबवाना बेहद पसन्द है। वह लाड में आकर अम्मा के पाँव दबाने लगी।

'देखो मेरी राजकुमारी! खुदा करे तुम जिन्दगी में बेइन्तिहा सुख पाओ। जितना दुःख और जलालत मैंने झेल ली है, वह आने वाली कई पीढ़ियों तक के लिए काफी है। मुझे कत्थक बाजार में ले आया था और खुदा करे तुम्हारा गला तुम्हें सभ्य समाज में ले जाए।'

'अम्माँ तुम अपने माज़ी को क्यों कुरेदती रहती हो दिन भर। तुम्हें कौन दुःख है अब। मेरी फ़िक्र न किया करो, मुझे अपने ऊपर बहुत-बहुत भरोसा है।'

'खुदा करे ऐसा ही हो।' अम्मा की आवाज अचानक भर्राने लगी, बोली, 'एक बात सच-सच बताओ। शर्मा तुम्हें पसन्द है?'

गुल ने अम्माँ से आँखें मिलायीं जो हया से अपने आप नीचे झुकती चली गयीं।

'तुम्हें मालूम है शर्मा हिन्दू है?'

सर झुकाये हुए ही गुल ने हामी भर दी।

'तुम्हें उसके घर-बार के बारे में कुछ मालूम है?'

गुल ने होंठ बिचका दिए।

'शर्मा के कितने भाई-बहन हैं?'

'मुझे कुछ मालूम नहीं।'

'शर्मा के माँ-बाप कहाँ हैं?'

'यह सब उन्हीं से पूछना अम्मा।' गुल बोली, 'यह सब जानने की मेरी इच्छा भी नहीं।'

'इच्छा क्यों नहीं, तुम्हें उन्हीं लोगों के साथ रहना है जिन्दगी भर और उन लोगों के बारे में कुछ भी जानना नहीं चाहती।'

'अपने आप मालूम हो जाएगा।' गुल ने कहा, 'मैं कल तुम्हारी तरफ़ से दावत जरूर दे दूँगी।'

'उनसे कहना इसी सप्ताह मिलें। मुझे अब ज़िन्दगी पर कोई भरोसा नही रहा। जब से मैंने बाकर मियाँ को देखा है एक अजीब-सी दहशत मेरी पूरी शख़्सियत पर तारी हो गयी है। ख़ुदा करम करे।'

'अम्मा मुझसे तो उसकी हालत नही देखी जाती थी। कई बार तो वह रात को इतनी ज़ोर से कराहता था कि दिल दहल जाता था।'

'तुम्हें इसकी याद है। सिर पर तिरछी अलीगढ़ी टोपी रखे जब कभी बाजार मे मिल जाता था, उसकी कमर झुक जाती थी और 'आदाब बड़ी बी' कहे बग़ैर आगे नही बढ़ता था।'

'उसे देखने कल मैं भी अस्पताल चलूँगी।'

'जरूर चलना।' अज़ीजन ने कहा और उठ खड़ी हुई।

एक प्रश्नचिह्न था जो अज़ीज़न के भीतर फैलता जा रहा था। कल जो एक छोटा सा नुक्ता था, आज नासूर की तरह मर्मांतक पीड़ा दे रहा था। माँ-बेटी के बीच एक सवाल काले नाग की तरह फुफकार रहा था। पूरा माहौल विषाक्त होने लगा तो अज़ीज़न वहाँ से हट गयी।

मस्जिद से अज़ान की आवाज़ आ रही थी। 'अल्लाहु-अकबर-अशहदु अल ला इला-ह इल्लल्लाह अश हदु अन न मुहम्मदर रसूलुल्लाह....।' अज़ीज़न नमाज पढ़ने में मशग़ूल हो गयी। रुकू के बाद वह खड़ी हो गयी। उसके बाद वह झुकी और माथा जमीन पर झुका दिया। माथे के साथ-साथ हथेली और दोनों घुटने और दोनों पैर के अंगूठे भी जमीन पर टिके थे। सिजदे की हालत में वह 'सुबहानल्लाह' 'सुबहानल्लाह' कह रही थी।

गुल बिस्तर पर लेट गयी। शर्मा उसके बहुत नजदीक सरक आया था। वह वापिस शर्मा के कन्धों से लिपट गयी। उसकी गर्दन की रोमावलियाँ धान के नन्हें पौधों की तरह उसके शरीर पर छा गयी। वसन्त की पूरी मादकता और स्वच्छन्दता उसकी देह में समाहित होती चली गयी।

वह अभी खुमारी में ही थी कि उस्ताद रियाज़ कराने आ गये और उसे उठाने की बजाय नीचे चटाई पर बैठ कर तबले पर हल्की-हल्की थाप देने लगे। थोड़ी देर मे ही फ़ैज़ की पंक्तियाँ कमरे में गूंज रही थी

कब ठहरेगा दर्द-ए-दिल
कब रात बसर होगी

सुनते थे वो आयेंगे।
सुनते हैं सहर होगी
कब ठहरेगा दर्दे-दिल···
कब रात बसर होगी।

उस्ताद के जाते ही गुल को न जाने क्या सूझा, अलमारी से चाँदी की पाजेब निकाल कर पहन ली और खिड़कियाँ-दरवाज़े बन्द करके कत्थक का रियाज़ करने लगी। उसके कदम थिरकते-थिरकते थक गये तो वहीं कालीन पर औंधी लेट गयी। सो गयी। बेहोश हो गयी! श्राप से मुक्त हो गयी। सुबह तक के लिए।

शर्मा के पिता ने तार की गति से उसके पत्र का उत्तर दिया था। शर्मा विश्वविद्यालय से लौटा तो सामने मेज पर एक चिट्ठी पड़ी थी। उसे पहचानने में देर न लगी कि उसके पिता का पत्र आया है। उसने जल्दी से पत्र खोला। पिता ने बहुत संक्षिप्त पत्र लिखा था—

बेटा जी,

खुश रहो!

आपका ख़त पढ़ कर अत्यन्त खेद हुआ। आपकी माँ को 'फ़िट' आ गया और उस रोज़ से मेरा ब्लडप्रेशर भी बढ़ा हुआ है। इस मामले में मैं ज़्यादा बहस नहीं करना चाहता। हमारी किस्मत में ही खोट था कि बड़े लड़के ने हम लोगों द्वारा पसन्द की गयी शीलवती कन्या को त्याग कर एक म्लेच्छ औरत से शादी रचा ली। उसने अपना घर ही नहीं; मुल्क भी छोड़ दिया और दूसरा लड़का उससे भी आगे जाकर एक तवायफ़ की लड़की से शादी करने की सोच रहा है। तुम दोनों भाइयों को इस बात की ज़रा भी परवाह नहीं कि आपकी छोटी बहन का क्या होगा? उससे शादी करने को कौन तैयार होगा। उसके दहेज का प्रबन्ध कैसे होगा। तुम दोनों भाई अपने को बहुत गुणवान् और आदर्शवादी मानते हो मगर तुम लोगों को अपने बूढ़े माँ-बाप का ज़रा भी लिहाज़ नहीं, जिन्होंने अपनी हड्डियाँ गला कर आप लोगों को अच्छी से अच्छी शिक्षा दी और अब इस बुढ़ापे में जब हमारे पैर कब्र में लटक रहे हैं तुम लोग हमारा दूसरा लोक भी बर्बाद करने पर तुले हुए हो।

आपका यह निर्णय अटल है तो हम लोगों को भूल जाओ! समझ लेना आपके माँ-बाप मर गये हैं। हमारी चिन्ता मत करना, मरने पर पड़ोसी लोग क्रिया-कर्म कर ही देंगे।

तुम्हारा अभागा बाप,
उग्रसेन

जितेन्द्रमोहन शर्मा ने एक बार ख़त पढ़ा, दुबारा पढ़ा और कुर्सी पर ढह गया। वास्तव में वह किसी भी सूरत में अपने माँ-बाप को कष्ट नहीं देना चाहता था, मगर यह एक ऐसी भीषण स्थिति थी कि कोई दूसरा विकल्प भी नज़र न आ रहा था। वह देर तक उसी तरह लेटा रहा। देखते-देखते सूरज ग़रूब हो गया, कमरे में अँधेरा छा गया, नौकर दो-तीन बार उसके पास चाय का प्याला रख गया। वह ठण्डी चाय उठाता और गर्म चाय रख देता। शर्मा आँख खोल कर देखता और प्याला देख कर आँख मूँद लेता। उसे अपने माँ-बाप पर लाड भी आ रहा था और क्रोध भी। पूरा बचपन उसकी आँखों के सामने एक फ़िल्म की तरह चल रहा था, जिसमें माँ-बाप के संग बिताये बहुत गर्म और आत्मीय क्षण उसकी चेतना में स्थिर हो रहे थे। उसे अपनी माँ और अपने बाप का झुर्रियो वाला चेहरा बेतरह याद आ रहा था। वह शुरू में अपने भाई की मदद लेने की सोच रहा था, मगर अब पिता के पत्र से ज्ञात हो चुका था कि भाई भी उसकी मदद करने में समर्थ नही रह गया है।

शर्मा ने तय किया कि वह पहली फ़ुर्सत में घर जायेगा और पूरा प्रयत्न करेगा कि माँ-बाप को अनुकूल कर सके। उसे विश्वास था कि वे लोग उसकी भावनाओं की कुछ तो कद्र करेंगे। एक समाधान उसे दिखायी दे रहा था कि बहन की शादी के बाद वह शादी करे। या शादी ही न करे। मगर हर क्षण गुल का चेहरा उसकी आँखों के सामने आ जाता। एक सुन्दर तेजस्वी चेहरा। वह गुल को देखने लगता। ये गुल के दाँत है, ये आँखें है, ये नन्हें सुडौल पाँव, वह करवट बदल लेता। इसी कशमकश में रात निकल गयी।

० ०

लतीफ और उसके साथियों ने रात देर तक कुछ पोस्टर तैयार किये थे। उन्हें खबर लगी थी कि हीरालाल के लिए दिल्ली से पोस्टर छप कर आये हैं। हीरालाल के लोग मिल के तमाम दरवाजों पर पोस्टर चिपका रहे थे। मगर जिस लगन से लतीफ़ के लोग काम कर रहे थे, उससे हीरालाल के कैम्प में बहुत घबराहट थी। लतीफ़ के समर्थकों की एक टोली एक-एक मजदूर के घर जा-जा कर हीरालाल की कलई खोल रही थी। हीरालाल के बारे में सब मजदूरों को जानकारी थी कि वह नेताओं से पैसे पाता है और मौका आने पर मालिकों से भी समझौता करने में संकोच न करेगा।

रात के बारह बजे थे कि छोटेलाल ने आकर खबर दी कि लतीफ़ और उसके साथियों को लक्ष्मीधर ने बुलवाया है। सब लोग एक दूसरे की बगलें झाँकने लगे।

'मिलने में क्या हर्ज है। वह जरूर धमकी देगा, मगर उसकी धमकी से कौन डरता है?' नन्हे बोला।

श्यामलाल बोला, 'उसने कोई बदतमीजी की तो वहीं नारे लगायेंगे। इससे मजदूरों पर अच्छा असर पड़ेगा।'

सब लोग तन्मयता से काम पर जुटे थे। तफ़रीह के लिए ही लक्ष्मीधर से मिलने दफ़्तर की तरफ चल दिये। बीस पच्चीस लोग रहे होंगे। सब एक जुलूस की शक्ल में लक्ष्मीधर के कैबिन के पास पहुँच कर नारे लगाने लगे:

हमारी मांगें पूरी करो

लक्ष्मीधर कैबिन से उठकर बाहर चले आये। लतीफ़ ने देखा, इस वक्त लक्ष्मीधर एक बदला हुआ इन्सान लग रहा था। सूट, जूते, कमीज, यहाँ तक कि उसका चश्मा भी वह नहीं था, जो लतीफ़ कुछ देर पहले देखकर आया था।

लक्ष्मीधर कैबिन के दरवाजे पर हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया और बोला,

'मैं आप लोगों से ज़रूरी बातचीत करना चाहता हूँ। आप सब से एक साथ बात करना तो मुमकिन न होगा, आप किन्ही भी दो लोगो को मेरे साथ अन्दर भेज सकते हैं। मुझे उम्मीद है, कि उससे हम लोग एक-दूसरे को बेहतर समझ सकेंगे।'

सब लोग लतीफ़ की तरफ़ देखने लगे। लतीफ़ ने नन्हें खाँ की तरफ देखा। तय हुआ वे दोनो ही बात करेंगे। बाकी लोग अपना-अपना कुल्हड़ उठाये नीचे सीढ़ियों पर बैठ कर चाय सुड़कने लगे।

लतीफ़ और नन्हे कुर्सियों पर बैठने में संकोच कर रहे थे, मगर, लक्ष्मीधर ने दोनों हाथों से लतीफ़ और नन्हें खाँ की बाँह पकड़कर कुर्सियों पर बैठा दिया।

'कहिए आपको क्या कहना है ?' लतीफ़ ने पूछा।

'मैं तो मिल में शान्ति बनाये रखने का हामी हूँ। डाइरेक्टरो की भी यही राय है। आप लोगो को कोई तकलीफ हो, मुझसे नि:संकोच कहिए। मैं भरसक उसे दूर करने की कोशिश करूँगा, मगर ये सब बातें बाद की है। फौरी मामला तो यह है कि यूनियन के चुनाव को किसी तरह बाहरी ताकतों से बचाया जाए।' लक्ष्मीधर का संकेत हीरालाल की तरफ़ था।

'बाहरी ताकतो से आपका क्या मतलब है ? लतीफ ने पूछा।

'कौन नहीं जानता कि हीरालाल दिल्ली से हजारों रुपये और गुण्डे लाया है। हम लोग नहीं चाहते कि मिल की यूनियन पर बाहर के नेताओ का कब्जा रहे। यह हम लोगों का घरेलू मामला है। आप लोगो की अपनी प्रॉबलम्स है। उन्हें आप लोग खुद ही हल कर सकते हैं। बाहर का आदमी क्या तो आपकी समस्याओं को समझेगा और क्या तो उसका कोई फायदा आप लोग उठा पायेंगे।'

'मगर हम लोग तो हीरालाल की मुखालिफ पार्टी के है।'

'मैं सब जानता हूँ, सब समझता हूँ।' लक्ष्मीधर बोला, 'आप लोग तो जानते ही हैं कि वह पैसे के बल पर चुनाव जीतना चाहता है। मुझे इस बात का भी एहसास है कि आप लोगों के पास उस दुष्ट का मुकाबला करने के लिए पैसा नही है।'

'पैसा ही सब कुछ नही होता मैनेजर साब।' लतीफ़ ने कहा।

'आपके ख़याल जानकर मुझे बहुत खुशी हुई। मेरी दिली तमन्ना है कि चुनाव में आप लोग विजयी हो। हीरालाल छँटा हुआ बदमाश है। अपनी शुभकामनाएँ देने के लिए ही आप लोगों को तकलीफ दी थी। इस नाचीज के लायक कोई सेवा हो तो भूलिएगा नही।'

'आपकी जर्रानवाजी का शुक्रिया।' लतीफ ने कहा और उठने लगा।

'तशरीफ़ रखिए, अभी चाय आती होगी।' लक्ष्मीधर ने कुर्सी पर पसरते हुए कहा, 'मुझे हमेशा अपना आदमी ही मानिए।'

'शुक्रिया।' नन्हे खाँ ने कहा।

'मैं तो इस कदर आपकी कामयाबी की दुआ कर रहा हूँ कि दो-चार हजार रुपये खर्च भी हो जायें तो पीछे न हटूँगा।'

तभी खूबसूरत प्यालों मे चाय चली आयी। साथ में तरह-तरह के बिस्किट, कबाब, नमकीन आदि।

'लीजिए चाय पीजिए।' लक्ष्मीधर बोला, 'यह सब तो चलता ही रहेगा।'

लक्ष्मीधर ने अभी एक ही घूँट पिया था कि लतीफ़ और नन्हें ने चाय खत्म कर दी।

'चाय शायद ठण्डी थी।' लक्ष्मीधर ने उन लोगों के कप दोबारा भरते हुए कहा, 'लीजिए और लीजिए।'

'अब जायेंगे हम लोग।' लतीफ़ बोला।

'यह एक छोटा-सा तोहफ़ा है मेरी तरफ़ से।' लक्ष्मीधर ने दस-दस रुपये के नोटो की नयी-नयी गड्डियां लिफाफे मे भरते हुए कहा 'और जरूरत पड़े तो मुझे न भूलिएगा।'

लक्ष्मीधर ने दोनो की तरफ़ दोस्ताना अन्दाज़ में देखा।

'मगर यह तो हम न लेंगे।' लतीफ़ बोला।

'लतीफ़ ठीक ही कह रहे है।' नन्हे ने उठते हुए कहा, 'यह सब तो हम न कर पायेंगे।'

लक्ष्मीधर को आशा न थी कि वे लोग इस तरह से उसका तोहफ़ा ठुकरा देंगे। उसने सोचा, शायद बाहर खड़े मजदूरो से घबरा रहे हैं।

'आप अभी न ले जाना चाहें, तो जब चाहें ले जाइए। यह आपकी अमानत है।'

'हम लोग इस पर थूकते हैं।' लतीफ़ बोला, 'आप हमें इन टुकड़ों से खरीदना चाहते हैं। यह सब न चलेगा।'

दोनों गुस्से में कैबिन से बाहर निकल आये। उनकी पीठ पर कैबिन के दरवाजे भड़भड़ा रहे थे। बाहर खड़े मजदूरों ने दोनो साथियों के चेहरों पर गुस्सा देखा तो पूरी गैलरी नारों से गूँज उठी।

'गुण्डागर्दी।'

'नहीं चलेगी।'

'लक्ष्मीधर।'

'हाय हाय।'

'मजदूर एकता।'

'जिन्दाबाद।

नारे लगाते हुए मजदूर बाहर गेट की तरफ़ चल दिये। चारों तरफ़ हीरालाल के पोस्टर लगे थे। यहाँ तक कि मिल के बाहर एक ख़ूबसूरत गेट भी तैयार हो गया था, जिस पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था' 'मजदूरों के सच्चे साथी हीरालाल।'

नारों की आवाज़ सुन कर लेबर कालोनी से एक-एक कर मजदूर निकलते चले आये। देखते ही देखते अच्छी-ख़ासी भीड़ इकट्ठी हो गयी। इस ख़बर को फैलते देर न लगी कि मालिक लोगों ने दस हजार रुपये देकर नयी यूनियन को ख़रीदने की कोशिश की मगर लतीफ़ और उसके साथियों ने रुपया ठुकरा दिया। लोगों ने लतीफ़ और नन्हें ख़ाँ को कन्धों पर उठा लिया और लेबर कॉलोनी की तरफ़ चल पड़े।

'जीतेगा भई जीतेगा।'

'कॉमरेड लतीफ़ जीतेगा।'

'लतीफ़ का टेम्पो।'

'हाई है।'

'लतीफ़ हमारा'

'भाई है।'

गेट पर से मजदूर हटे तो मिल के अन्दर से एक कार निकली और फ़ुर्र से बाहर हो गयी। वह लक्ष्मीधर की कार थी।

रात भर ख़ूब जम कर लतीफ़ का प्रचार हुआ। किसी को सन्देह न रह गया था कि अन्तिम विजय लतीफ़ की ही होगी। सुबह जब चार बजे के करीब लतीफ़ घर की ओर चला तो उसकी आँखें नींद और थकान से मुँदी जा रही थीं।

दफ़्तर से लौट कर लक्ष्मीधर सीधे सोने चला गया। लतीफ़ के व्यवहार से उसे गहरा धक्का लगा था। उसे पूरा विश्वास था कि लतीफ़ उसकी मदद स्वीकार कर लेगा और इस सिलसिले में वह भी कुछ न कुछ पैदा कर लेगा। श्यामबाबू को भी लक्ष्मीधर की प्रतिभा पर पूरा भरोसा था। देखते-ही-देखते उसकी योजनाएँ ध्वस्त हो गयीं।

सुबह जब लक्ष्मीधर ने श्यामबाबू को फ़ोन किया और लतीफ़ के व्यवहार की सूचना दी तो वे भी चिन्तित हो गये। बोले, 'आज तक तो ऐसा न हुआ था

कि यूनियन हमारी मुट्ठी में न रहे। लगता है इस बरस कोई नया गुल जरूर खिलेगा।'

'कोई-न-कोई हल जरूर निकाला जायेगा।' लक्ष्मीधर बोला, 'सतीफ़ को इस गुस्ताखी का मजा चखाये बिना मेरी आत्मा को शान्ति न मिलेगी।'

'मगर उसकी जीत को अब कोई रोक नहीं सकता।' श्यामबाबू ने कहा, 'अगर वह जीत गया तो समझ लीजिए मिल चलाना मुश्किल हो जायेगा। आये दिन हड़ताल होगी। मुझे तो खबर मिली है शहर के एक वामपंथी दल का नेता भी उसकी मदद कर रहा है। उस शख्स ने पिछले दिनों डायमंड मिल पर रिसीवर बैठा दिया था।'

'तुम पाण्डे की बात कर रहे हो ? वह तो खुलेआम मालिकों से पैसा खाता है।'

'मगर डायमंड मिल के आगे तो उसने भूख हड़ताल कर दी थी।'

'उस मसले को तुम न समझ सकोगे। भूख हड़ताल भी डायरेक्टरों के इशारे पर की गयी थी। रिसीवर मालिकों की आपसी लड़ाई के कारण बैठा था, उस टुटपुंजिए नेता के कारण नहीं।'

'बहरहाल, मैं अभी नाश्ता करके आ रहा हूँ।' लक्ष्मीधर ने कहा, 'कुछ बातें है जो फ़ोन पर नहीं की जा सकतीं।'

अचानक फ़ोन में से कोई तीसरी आवाज सुनायी दी 'अरे आप जी खोल कर बातें कीजिए, आपको कौन रोकता है।' किसी को लाइन पर पाकर दोनों ने रिसीवर रख दिये। थोड़ी देर के बाद श्याम बाबू का फ़ोन आया कि लक्ष्मीधर सीधा गेस्ट हाउस में चला आये। लक्ष्मीधर गेस्ट हाउस पहुँचा तो श्याम बाबू के अलावा वहाँ जगदीश माथुर भी उपस्थित था। जगदीश को देख कर लक्ष्मीधर को थोड़ा आश्चर्य हुआ। जगदीश मिल के एकाउंट्स विभाग का एक बाबू था और रामलीला-पूजा आदि कार्यक्रमों में खूब जम कर हिस्सा लेता था। वह नित्य सुबह गंगा स्नान करता और माथे पर बड़ा-सा चन्दन और रोली का टीका लगाये रखता। पिछले साल रामलीला के चन्दे को लेकर लक्ष्मीधर से उसकी भिड़न्त हो गयी थी। श्याम बाबू इस बात से परिचित थे। आज अचानक जगदीश को सामने पाकर लक्ष्मीधर सकपका गया।

'कहिए माथुर साहब, आप कैसे ?' लक्ष्मीधर ने उसे इत्मीनान से बरामदे में बैठे देख कर बड़ी बेतकल्लुफ़ी से पूछा।

'बैठिए, बैठिए मैं बताता हूँ।' श्याम बाबू ने कहा, 'आज सुबह गंगाजी से लौटते हुए जगदीश बाबू बंगले पर आये थे। उन्होंने कुछ ऐसी बातों की तरफ़ मेरा ध्यान दिलाया कि मैंने आपका परामर्श ले लेना भी जरूरी समझा।'

लक्ष्मीधर बरामदे में पड़ी एक कुर्सी पर बैठ गया और श्याम बाबू को रहस्यात्मक ढंग से देखने लगा। उसे लग रहा था कोई तिलिस्म उसके सामने खुलने जा रहा है।

'बात यह है लक्ष्मीधर जी.....' जगदीश बाबू ने अपनी कुर्सी लक्ष्मीधर की तरफ़ सरकाते हुए कहा, 'आप तो जानते ही हैं कि परसों यूनियन का चुनाव होने जा रहा है और इस बार लतीफ़ की पार्टी का पलड़ा भारी है...।'

'हाँ हाँ इसमें कोई शक नहीं।' लक्ष्मीधर ने कहा और श्याम बाबू के सामने पड़े सिगरेट के पैकेट से एक सिगरेट निकाल कर सुलगा ली।

'देखिए साब, मैं तो खरी-खरी बातें करने के हक में हूँ।' जगदीश बाबू ने कहा, 'हम लोग हिन्दू हैं, हम नहीं चाहते यूनियन पर मुसलमानों का कब्जा हो। ये मियाँ लोग बहुत खतरनाक होते हैं। हम तो इन लोगों के हाथ का पानी तक नहीं पीते, इन्हें नेता कैसे मान लेंगे।'

लक्ष्मीधर ने सिगरेट का एक लम्बा कश लिया और धुआँ छोड़ते हुए कहा, 'आप बिल्कुल दुरुस्त कह रहे हैं जगदीशजी। इधर मैं भी यही सब सोच रहा था।'

'मिल में ६० प्रतिशत हिन्दू हैं और शेष १० प्रतिशत मे भी मुसलमानों का अनुपात पाँच प्रतिशत से अधिक न होगा।' जगदीश बाबू ने अनुमान से आँकड़े पेश करते हुए अपनी बात जारी रखी, 'हम लोगों की यूनियन का नेता मुसलमान नहीं हो सकता। इन लोगों से हीरालाल ही क्या बुरे हैं?'

'आप तो जानते है, हीरालाल भी राजनीतिक आदमी है। आये दिन मंत्रियों की धाक जमाता है। उसकी जगह काला कुत्ता भी जीत जाये तो हमें मंजूर होगा।'

'किसी को जिताना तो मेरे वश में नहीं, मगर लतीफ़ को हराना मेरे बायें हाथ का खेल है। आप थोड़ी पैसे से मदद कर दें और फिर मेरा कमाल देखें।'

श्याम बाबू अब तक चुप बैठे थे, टाँग पर टाँग धरे। लक्ष्मीधर ने श्याम बाबू की राय जानने के लिए उनकी तरफ़ देखा तो बोले, 'आप बातचीत करते जाइए, मैं सुन रहा हूँ।'

'सिर्फ़ लतीफ़ को हराने से हमारा काम नहीं चलता।' लक्ष्मीधर ने कहा, 'किसी तीसरे आदमी को जिताइए जो मिल के काम में विघ्न न पड़ने दे। जो मजदूरों को हड़ताल और चक्का जाम करना न सिखाये, बल्कि उनके अन्दर कर्तव्य की भावना पैदा करे, उन्हें नैतिक बल दे।'

'मैं उसी बात पर आ रहा हूँ।' जगदीश माथुर ने अपना पानदान खोल

कर एक पान मुंह में दाब लिया और बोले, 'मैं उसी बात पर आ रहा हूँ। आप सुरेश के नाम से परिचित न होंगे। वह किसी राजनीतिक पार्टी का आदमी भी नहीं है। मेरे कहने से वह भी चुनाव में खड़ा होने को तैयार है...।'

'आप उस पगले सुरेश की बात कर रहे हैं, जो परसोनल डिपार्टमेंट में है?'

'हाँ हाँ वही, मगर किसने कहा वह पागल है। माघ के महीने में वह हर साल कल्पवास करता है। वह अपनी संस्कृति, अपने राष्ट्र और अपने आदर्शों के लिए जान भी दे सकता है। दूसरे हड़ताल वगैरह में उसका विश्वास ही नहीं है।'

'मगर पारसाल उसने किसी बेवकूफ़ी की बात को लेकर मिल के सामने अनशन कर दिया था।'

'आप इसे बेवकूफ़ी की बात कह सकते हैं। उसकी छोटी-सी माँग थी कि मिल के अहाते में हनुमानजी का मन्दिर होना चाहिए और श्याम बाबू ने तो उसकी माँग तुरत स्वीकार भी कर ली थी। अब आप देखिए मंगल के मंगल मन्दिर में कितनी रौनक होती है।'

लक्ष्मीधर सोच में पड़ गये। वह शख्स उन्हें कभी न जमा था। फ़ाइलों के ऊपर भी 'ॐ नमो शिवाय' लिखने के बाद नोटिंग करता था।

'किस सोच में पड़ गये भाई?' श्याम बाबू ने लक्ष्मीधर को असमंजस में देख कर पूछा।

'आपकी क्या राय है सुरेश के बारे में?'

'ठीक है।' श्याम बाबू ने ऊबे हुए स्वर में कहा, 'उन गैंगस्टरों से तो बेहतर है।'

लक्ष्मीधर ने अपना ब्रीफ़केस खोला और नये-नये नोटों की एक गड्डी जगदीश के हाथ में थमा दी, 'फिलहाल इस एक हज़ार का चमत्कार दिखाइए। पैसे की चिन्ता न कीजिए।'

श्याम बाबू इसी क्षण की प्रतीक्षा में बैठे थे। उन्होंने खुल कर एक भद्दी-सी अंगड़ाई ली और बाहें सामान्य स्थिति में आतीं, उससे पूर्व ही हाथ जोड़ दिये।

'आज दफ़्तर आइएगा?' जगदीश जी ने जाते-जाते कहा, 'अगर आइएगा तो मेरा चमत्कार देखिएगा। कुछ बैनर तथा पोस्टर तैयार पड़े हैं, बस पैसे का जुगाड़ न हो पा रहा था।'

जगदीश बाबू रवाना हो गये तो श्याम बाबू ने लक्ष्मीधर से कहा, 'कुछ बियर मँगवाओ यार। रात का हैंगओवर अभी तक बना है।'

लक्ष्मीधर ने बियर के लिए ड्राइवर को रवाना कर दिया।

'फैक्टरी में कितने मुसलमान होंगे ?'

'ठीक-ठीक तो परसोनल डिपार्टमेन्ट ही बता सकता है, मगर मेरा अनुमान है पचास से कम न होंगे।'

'ठीक है।' श्याम बाबू ने कहा, 'मगर यह आदमी कोई झंझट न खड़ा कर दे।'

'यह कर ही क्या सकता है ?'

'फ़िरकापरस्ती तो फैला ही सकता है।' श्याम बाबू ने दुबारा बेहूदा तरीके से अंगड़ाई ली और बोले, 'देखो उमा क्या कर रही है ?'

'पुलाव के लिए चावल बीन रही होगी। आज तो आपके लिए रोहू मछली ही आ रही है।'

लक्ष्मीधर उठा और फ़ोन घुमाने लगा। रिसीवर उमा ने ही उठाया।

'हाँ।'

'क्या कर रही हो ?'

'ऊब रही हूँ।'

'हम लोग गैस्ट हाउस में हैं। चली आओ।'

उमा आई तो लक्ष्मीधर को दफ़्तर की पड़ गयी, बोला, 'आप लोग गप्प लड़ाइए मैं चल कर देखूँ जगदीश बाबू क्या गुल खिलाते हैं।'

लक्ष्मीधर अपनी कार में बैठने के बजाय श्याम बाबू की कार मे बैठ गया। ड्राइवर लॉन के पास खड़ा बीड़ी पी रहा था। लक्ष्मीधर को देख कर अपनी सीट पर बैठा और गाड़ी स्टार्ट कर दी।

'फैक्टरी।' लक्ष्मीधर ने कहा।

गाड़ी फैक्टरी की तरफ़ दौड़ पड़ी। लक्ष्मीधर पीछे की सीट पर बैठे खिड़की के बाहर देख रहे थे। वे विचारों में इस कदर खोये थे कि उन्होंने कार के बाहर झाँक कर न देखा। सुबह घर से वे बिना नाश्ता किये चल दिये थे, उन्होंने सोचा क्यों न सिविल लाइन्स जाकर दो-एक अण्डे उदरस्थ कर लिये जायें। उन्होने ड्राइवर से कहा, 'सिविल लाइन्स होते हुए चलो।' लक्ष्मीधर ने न सिर्फ़ नाश्ता किया बल्कि ड्राइवर के लिए भी एक प्लेट अण्डा भिजवा दिया। दरअसल दफ्तर जाने से पहले लक्ष्मीधर को कुछ और काम याद आ गये थे। कई दिनों से कुछ कपड़े ड्राई क्लीनिंग के लिए दे रखे थे, अपने इनकम टैक्स के वकील से मिलना था, पिछले माह कुछ मोटरें खरीदी थी, उनकी कमीशन अभी तक न मिली थी। उन्होंने सोचा, आज गाड़ी फुरसत में है, क्यों न तमाम काम निपटाते हुए चलें। अण्डा खाने के बाद ड्राइवर भी चुस्त नज़र आ रहा था।

लक्ष्मीधर की गाड़ी मिल के फाटक के निकट पहुँची तो ड्राइवर को खूब हार्न बजाना पड़ा। फाटक के आगे मज़दूरों की भीड़ जमा थी और वे लोग बैनर पढ़ रहे थे। शायद लंच का समय था। मगर इससे पूर्व लंच के समय भी इतनी भीड़ जमा न हुई थी। उसने ड्राइवर से कार धीमी करने के लिए कहा और खिड़की के अन्दर से गर्दन निकाल कर एक लम्बा पोस्टर पढ़ा। लाल कपड़ों पर बड़े-बड़े सफ़ेद अक्षरों में लिखा था :

पाकिस्तान के एजेन्टों से सावधान रहिए।
अपना कीमती वोट सुरेश भाई को दीजिए।

लक्ष्मीधर मन-ही-मन मुस्कराया। भीड़ की उत्सुकता देखकर लग रहा था कि पाँसा पलट सकता है। कार से उतरते हुए उसने देखा, मन्दिर में भी श्रीरामचरितमानस का पाठ हो रहा था। मन्दिर के चारों ओर झण्डियाँ लगा दी गयी थी और श्रद्धालु लोग बालकाण्ड का आनन्द ले रहे थे। चुनाव में केवल दो दिन रह गये थे। जगदीश बाबू ने सचमुच एक हज़ार रुपये से चमत्कार कर दिखाया था, क्योंकि इससे पूर्व किसी भी चुनाव में कभी इस तरह पोस्टर, कीर्तन और लाउडस्पीकरों की सहायता न ली गयी थी। लाउड-स्पीकर से लगातार घोषणा हो रही थी कि सुबह पाँच बजे लेबर कालोनी से प्रभातफेरी निकलेगी। सब मज़दूर भाइयों से प्रार्थना की जा रही थी कि वे अपने राष्ट्र, अपने धर्म और अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए सुबह ज्यादा से ज्यादा संख्या में प्रभातफेरी में शामिल हों। इस घोषणा के बाद रिकार्ड लगा दिया गया :

सैयाँ दिल माँगे चवन्नी उछाल के।

अपने कैबिन की तरफ़ बढ़ते हुए लक्ष्मीधर ने मिल के पूरे वातावरण में एक परिवर्तन लक्षित किया। जगह-जगह लोग टोलियाँ बना कर खड़े थे और बहसें हो रही थीं। इन टोलियों में आज मुसलमान-मज़दूर नहीं थे। अक्सर किसी न किसी ग्रुप में दो-चार मुसलमान भी दिखायी देते थे, आज माहौल दूसरा था। लक्ष्मीधर पेशाब करने के बहाने पेशाबघर में घुस गया। वह देखना चाहता था, आख़िर वे लोग कहाँ गायब हो गये। पेशाबघर से निकल कर वह यों ही कैंटीन की तरफ बढ़ा तो उसने देखा कैन्टीन के आगे लॉन में चादर बिछा कर कोई पच्चीस-तीस लोग एक साथ नमाज़ पढ रहे थे। लक्ष्मी-धर की तबीयत बाग-बाग हो गयी। उसने उसी समय तय किया कि शाम तक जगदीशजी के पास एक गड्डी और पहुँचा देगा। उसने इस बदले हुए माहौल की सूचना देने के लिए कैबिन में जाकर तुरत श्याम बाबू को गेस्ट हाउस में फ़ोन मिलाया। फ़ोन मिल गया, मगर किसी ने रिसीवर न उठाया। देर तक

घण्टी बजती रही। लक्ष्मीधर ने सोचा कोई गलत नम्बर मिल गया है। उसने फ़ोन काट कर दोबारा डायल घुमाया। इस बार भी देर तक फ़ोन की घण्टी बजती रही। लक्ष्मीधर देर तक रिसीवर को कान पर लगाये रहा और जब कोई उत्तर न मिला तो उसने तय कर लिया कि वह आज जगदीश माथुर को एक हज़ार रुपये देकर दो हज़ार हिसाब में लिखेगा। न उठाये कोई फ़ोन। श्यामबाबू को यह धृष्टता एक हज़ार की पड़ेगी। एक नन्हें से विचार से एक हज़ार रुपये कमा कर लक्ष्मीधर का मूड कुछ दुरुस्त हुआ। उसने तुरत अपने पी० ए० को बुला कर बेहतरीन रोहू का इन्तज़ाम करने की हिदायत दी और फ़ाइल निबटाने में जुट गया।

फ़ोन की घण्टी बजी तो उसके पी० ए० ने सूचना दी कि जगदीश माथुर बात करना चाहते हैं।

'मैं माथुर बोल रहा हूँ। नमस्कार। साहब किसी के हाथ दो हज़ार और भिजवाइए। दो हजार का इन्तज़ाम न हो पाये तो एक हज़ार ही से कल तक काम चलाऊँगा। दरअसल हमारा प्रचार हीरालाल के पक्ष में जा रहा है। सुरेश भाई का इमेज बनाना होगा। उसके लिए हीरालाल के कुछ कार्टून हम लोग बनवा रहे हैं। एक कार्टून तो यह सोचा गया है कि वह सौ कम्बल ओढ़ कर सोया हुआ है और उसके पास ही मजदूरों के बीसियों बच्चे जाड़े में ठिठुर रहे हैं।'

'आप तीन बजे मेरे घर पर आजाइए।' लक्ष्मीधर ने कहा और रिसीवर रख दिया।

लक्ष्मीधर तुरत ही घर की तरफ़ चल दिया। उसकी इच्छा हो रही थी कि दो-एक बोतल बियर लेकर वह भी सो जाए और तीन बजे उठ कर आगे का कार्यक्रम बनाये। लौटते हुए उसने लोगों को हीरालाल के बड़े-बड़े पोस्टर चिपकाते हुए देखा। कई तरह से छपे हुए पोस्टर फैक्टरी में जगह-जगह चिपकाये गये थे जिन पर हीरालाल की तस्वीर बनी थी। कई पोस्टरों में एक तरफ़ हीरालाल का चित्र था और दूसरी ओर केन्द्रीय मन्त्री का। लतीफ़ के जितने भी पोस्टर लगे थे, वे हाथ से लिखे गये थे। एक अपील उर्दू में भी थी। निकलते-निकलते लक्ष्मीधर ने सुना आज एक वामपंथी नेता गेट मीटिंग सम्बोधित करेंगे।

लक्ष्मीधर गहरी नींद में था, जब नौकर ने जगाया कि जगदीश माथुर आये हैं। लक्ष्मीधर आँख मलता हुआ उठा और ड्राइंग रूम की तरफ़ चल दिया। माथुर साहब एक छोटा-सा झोला थामे कुर्सी पर बैठे थे।

'कहिए माथुर साहब, क्या प्रगति है?'

'वही, जैसा कि हमने फ़ोन पर इत्तिला दी थी।'

'हूँ।' लक्ष्मीधर ने कहा, 'आप क्या सोच रहे हैं, कुछ कार्टून दिखा कर वोट पा सकते हैं? मुझे तो जरा भी उम्मीद नहीं कि आपका सुरेश जीत पायेगा।'

'आप भरोसा रखिए। मुकाबला बहुत कड़ा है। आज लतीफ के कैम्प में घबराहट है। अब हीरालाल से निपटना है।'

'उससे कैसे निपटिएगा?'

'आप देखते जाइए। पैसे की कमी न आने दीजिए। मुझ पर भरोसा रखिए।'

'देखिए एक मेहरबानी कीजिए। अगर आपको जीतने की आशा न हो तो पानी की तरह पैसा न बहाइए।'

लक्ष्मीधर ने ऐसा सिर्फ़ जगदीश माथुर को उकसाने के लिए कहा था। वह जगदीश माथुर की योजनाओं से पूर्ण रूप से अवगत हो जाना चाहता था। लतीफ़ के हार जाने से उसका काम पूरा नहीं हो जाता था।

दो बार तो लक्ष्मीधर स्वयं ही हीरालाल को अपने कैबिन में बुला कर मंत्री जी के पी० ए० का फ़ोन आने पर बात करा चुका था। मंत्री लोगों से लक्ष्मीधर को जन्मजात चिढ़ थी।

जगदीश ने झुक कर लक्ष्मीधर के कान में कुछ कहा और लक्ष्मीधर चुपचाप अन्दर चला गया। लौटा तो उसके हाथ में रुपयों की एक गड्डी थी। लक्ष्मीधर ने बड़ी लापरवाही से गड्डी जगदीश माथुर की गोद में फेंक दी और हाथ जोड़ दिये। उसका फैक्टरी जाने का इरादा तो न था, मगर उसे लगा उसका फैक्टरी में रहना बेहद ज़रूरी है।

लक्ष्मीधर के पी० ए० ने बताया कि इस बीच श्याम बाबू का दो बार फोन आ चुका है। लक्ष्मीधर ने कहा, 'अब फ़ोन आये तो दीजिए।'

फैक्टरी का पूरा माहौल चुनाव की गहमागहमी से लबरेज़ था। चारों ओर चुनाव की हलचल थी। गेट पर ऊँची आवाज़ में बजाये जा रहे लाउड-स्पीकर एक दूसरे को काट रहे थे। कुछ पता न चल रहा था, कौन स्पीकर किस दल का है। लोगों ने स्पीकरों पर फूल-मालाएँ चढ़ा रखी थीं, जैसे बलि के बकरे पर चढ़ायी जाती हैं। लतीफ़ की मीटिंग की तैयारी हो रही थी! छोटा-सा मंच बनाया गया था। लतीफ़ के अलावा नगर के दो-एक ट्रेड यूनियन नेता कुर्सियों पर विराजमान हो रहे थे।

मज़दूरों को आकर्षित करने के लिए एक कवि अपनी कविता पढ़ रहा था :

लड़ रहा मजदूर बाजी हाथ है
वक्त की आवाज अपने साथ है

देखते-देखते ४०-५० मजदूर इकट्ठे हो गये। एक शिफ़्ट अभी-अभी ख़त्म हुई थी। बाहर मेले का-सा माहौल हो रहा था। मजदूर लोग बहुत दिलचस्पी से पोस्टर, कार्टून और बैनर देख रहे थे। हीरालाल का कार्टून देख कर मजदूरों को बहुत आनन्द आ रहा था। वे कार्टून देखते और वहाँ से हट जाते। हर मजदूर के मुँह में पानी आ रहा था। हो सकता है एक कम्बल या साइकिल उसे भी मिल जाये।

लतीफ़ की सभा में जो ४०-५० मजदूर इकट्ठे हुए थे उनमें २५-३० मुसलमान थे। मंच पर से एक आदमी अपनी व्यावसायिक आवाज में बोल रहा था—

'साथियो! जैसा कि आपको मालूम है, स्वस्तिक मिल के मजदूरों की यूनियन का चुनाव होने जा रहा है। इस चुनाव में आपका साथी, तमाम मजदूरों भाइयों का साथी लतीफ़ भी खड़ा है। आपको मालूम ही है, अब तक यूनियन के चुनाव मे मालिकों के दलाल ही जीतते रहे हैं। मालिकों ने लतीफ़ को खरीदने की भी शर्मनाक कोशिश की, मगर कामरेड लतीफ़ ने अपने मजदूर भाइयों के हित को ध्यान में रखते हुए नोटों की गड्डी ठुकरा दी। .

मंच के पास बैठे हुए कुछ लोगों ने तालियाँ बजायी। तालियों की आवाज सुन कर कुछ और मजदूर मंच के सामने खड़े हो गये। तभी दूसरे गेट से प्रभातफेरी के लिए ज्यादा से ज्यादा तादाद में मजदूरों को सुबह पाँच बजे तालाब के किनारे पहुँचने के लिए कहा जा रहा था। शाम को हीरालाल का जुलूस भी निकलने वाला था।

'आप लोग यह बड़ा बैनर देख रहे हैं, जिस पर जहरीली जुबान में हिन्दू-मुस्लिम एकता को भंग करने का प्रयास किया गया है। मालिकों के दलाल चाहते हैं कि मजदूरों का ध्यान उनके अधिकारों से हटा कर फिरकापरस्ती की तरफ़ मोड़ दिया जाये। हर देश में पूँजीपति यही करते रहे हैं। मजदूरों के लिए यह कोई नयी बात नही है। यह शोषकों का आजमाया हुआ नुस्खा है। मजदूर भाई, मालिकों के नापाक इरादों को समझेंगे और सोच-समझ कर अपना वोट कामरेड लतीफ़ को देंगे ··।'

मंच के आस-पास बैठे हुए मजदूरों में हलचल हुई और एक मजदूर बाँह उठा कर खड़ा हो गया और बोला, 'कामरेड लतीफ़ !' जिन्दाबाद !'

'मजदूर एकता।'

'जिन्दाबाद !'

'दुनिया भर के मजदूरो !'

'एक हो जाओ।'

मीटिंग में अब कुछ रंग जम रहा था। देखते-देखते तीन-चार सौ मजदूर बैठ गये। भीड़ देख कर कुछ और तमाशबीन टपक रहे थे।

अब लतीफ़ के बोलने की बारी थी। वह खड़ा हुआ और एक हाथ से माइक को पकड़ कर बोला, 'मेरे हिन्दू और मुसलमान भाइयो! मजदूर की कोई जात नही होती, वह हिन्दू होता है, न मुसलमान होता है, वह इस मुल्क मे सिर्फ घिसने के लिए पैदा होता है। ..

आपको मालूम ही है, आज तक हमारी यूनियन हमेशा मालिकों के पिट्ठुओं के हाथ रही है। यही वजह है कि हम लोगों को न तो कभी बोनस ही मिला और न मँहगाई भत्ता। न ही कोई और सहूलियत हमें दी जाती है। मजदूर बीमार पड़ता है तो उसकी तनख्वाह काट ली जाती है। अगर इस बेइन्साफी के खिलाफ़ कोई आवाज उठाता है तो उसे दूध में से मक्खी की तरह निकाल कर बाहर कर दिया जाता है। ऐसा दूसरे कारखानों में नही होता। आप पूछ सकते है कि ऐसा हमारी ही मिल में क्यो होता है? क्या दुनिया भर के कायदे-कानून हमारी ही मिल पर लागू नहीं होते? जरूर हो सकते हैं, अगर हम मजदूर भाइयो मे एकता होगी अगर हम लोग कन्धे से कन्धा मिला कर अपने अधिकारों के लिए जद्दोजहद करेंगे, संघर्ष करेंगे।....'

लतीफ़ की मीटिंग अब भर गयी थी। मजदूरों में उत्साह देख कर नगर के एक ट्रेड यूनियन नेता ने भी जोरदार भाषण दिया। मीटिंग में उपस्थित मजदूरों ने अन्त में जोरदार नारा लगाया :

'कामरेड लतीफ़।'

'जिन्दाबाद।'

बाद में भीड एक जुलूस में तबदील हो कर कालोनी की तरफ चल दी। नेता लोगो के गलों में हार पहना दिये गये थे।

श्याम बाबू, लक्ष्मीधर और उमा नेताओं के कैसेट सुन रहे थे। लक्ष्मीधर ने हीरालाल, लतीफ़ और जगदीश के साथ अपने लोग लगा दिये थे। ये लोग इन नेताओ के भाषणो को टेप करते, इन लोगों के समर्थकों के नाम लिखते, बातचीत नोट करते। लक्ष्मीधर सब सामग्री लेकर लौटा था। उस समय श्यामबाबू और उमा पपलू खेल रहे थे। श्याम बाबू सीधे अपने कमरे मे गये। उन्होंने टेप रेकार्ड को एम्पलीफायर से जोड़ दिया और ड्राइंग रूम में आकर श्याम बाबू से बोला, 'आप से मिलने के लिए कुछ लोग मेरे कमरे में आपका इन्तजार कर रहे है।'

श्यामबाबू बाजी हार गये थे, उन्हें हारते जाना अच्छा लगता था, बड़ी बेरुखी से पत्ते पटकते हुए बोले, 'चलो।'

उमा भी पीछे-पीछे चली आयी। उसके माथे की बिन्दिया पुँछ गयी थी। लक्ष्मीधर ने देखा तो कहा, 'जाओ मुँह धो आओ।'

'तुम्हें मेरे चेहरे से नफरत हो गयी है।'

'ऐसा मत कहो डार्लिंग,' लक्ष्मीधर बोला, 'तुम्हारे होठों पर टमाटर का बीज लगा है।'

लक्ष्मीधर ने बिन्दिया की बात करना उचित न समझा। उमा उठ कर तुरन्त वाशबेसिन के सामने खड़ी हो गयी और चेहरा देख कर धीरे से मुस्करायी।

कमरे से किसी मजदूर के चिल्लाने की आवाज आ रही थी। उमा नये सिरे से मेक-अप करके साड़ी तबदील कर कमरे में पहुँची तो उसकी तरफ़ किसी ने ध्यान न दिया। लतीफ़ के भाषण से श्याम बाबू बहुत खिन्न हो रहे थे। उन्हें शक था कि अगर लतीफ़ जीत गया तो यूनियन निश्चित रूप से वाम-पंथियों से सम्बद्ध हो जायेगी। यह मिल के हित में न होगा। रोज नयी-नयी माँगें पेश होंगी और मिल चलाना दूभर हो जायेगा।

वे लोग अभी विचार-विमर्श कर रहे थे कि दरबान ने आकर समाचार दिया कि जगदीश माथुर मिलने आये हैं। लक्ष्मीधर ने जल्दी से फ़ाइलें और कैसेट समेटे और जगदीश जी को लिवाने चल दिये।

'कहिए जगदीश बाबू, आपके उम्मीदवार का तो कोई नामलेवा भी नहीं।' श्याम बाबू ने कहा, 'हम तो सोच रहे थे कि आप पाँसा पलट देंगे।'

'आप चिन्ता न कीजिए श्याम बाबू।' जगदीश माथुर ने कहा, 'कल सुबह से माहौल बदलेगा। प्रभातफेरी में शामिल होने के लिए मैंने मजदूरों को पाँच-पाँच रुपये देने का वायदा किया है। सब हमारे कैम्प में चले आयेंगे। कल से मन्दिर में रामायण का अखण्ड पाठ भी शुरू हो गया है। प्रसाद वगैरह में हलुवे की व्यवस्था है।'

'क्या चुनाव इस तरह जीते जा सकते हैं?' श्याम बाबू को यह सब बहुत अव्यावहारिक लग रहा था।

'मैं इसे हिन्दू-मुसलमान का सवाल बना दूँगा।'

'कब बनाइएगा? चुनाव तो सर पर आ गया है।'

'बस कल ही, आप मेरी योग्यता पर भरोसा रखिए और पैसे की कमी न होने दीजिए।'

'और कितना रुपया चाहिए?' लक्ष्मीधर ने बहुत अनिच्छा से पूछा।

'आप दो का इन्तजाम कर दीजिए। कम पड़ा तो लौटा दूँगा।' जगदीश

ने कहा, 'अब मैं कह नहीं सकता, सुबह कितने मज़दूर प्रभात फेरी में शामिल होंगे।'

श्याम बाबू के पास अब जगदीश के अलावा कोई दूसरा दलाल न था। उन्होंने लक्ष्मीधर को इशारा किया कि वह इनकी माँग पूरी कर दे। लक्ष्मीधर ने ब्रीफ़केस खोल कर दो गड्डियाँ जगदीश माथुर के हवाले कर दीं।

सुबह प्रभातफेरी में शामिल होने के लिए सचमुच तीन-चार सौ मजदूर जमा हो गये। जो मजदूर स्वयं न आ पाये थे, उन्होंने अपना बच्चा या भाई भेज दिया था ताकि पाँच रुपये के हक़दार हो जायें। जगदीश माथुर ने ढेर-सी फूल-मालाएँ मँगवा रखी थीं। सुरेश को फूलों से लाद दिया गया और भजन मण्डली कीर्तन करते हुए कालोनी की तरफ़ चल दी।

भोर का समय था। हल्की-हल्की ठण्ड थी। सड़कें सुनसान पड़ी थीं। किसी-किसी घर से अँगीठी का धुआँ उठ रहा था। भजन मण्डली ने प्रातःकालीन कीर्तन से पूरी कालोनी को जगा दिया और भजनमय कर दिया। खंजरी-खड़तालें बज रही थीं। आगे-आगे गर्दन में हारमोनियम डाले श्याम बाबू का टाइपिस्ट सुन्दरलाल आँखें मूँदे गर्दन हिलाते हुए चल रहा था। कालोनी की स्त्रियाँ खिड़की दरवाजों से झाँकने लगीं।

इस आकस्मिक हलचल से छोटे बच्चे भी उठ गये थे। अत्यन्त मधुर स्वर में कोई गा रहा था :

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजुमन हरण भवभय दारुणं
नवकंज लोचन, कंज मुख, कर कंज, पद कंजारुणं

ढोल, मंजीरे और हारमोनियम के साथ पूरा समूह पंक्तियों को दोहराता। समूह की ओर मुँह करके गायक अगली पंक्ति पर उतर आता :

कन्दर्प अगणित अमित छबि, नवनील नीरद सुन्दरं।

प्रभातफेरी ने सचमुच समाँ बाँध दिया था। बरसों बाद लोगों ने इस प्रकार की चहल-पहल देखी थी। स्वाधीनता संग्राम के दिनों में ज़रूर लोगों में इस प्रकार का उत्साह देखा जाता था। आज़ादी के बाद जैसे पहली बार आज लोग नींद से जागे थे।

जुलूस लोगों की प्रशंसा बटोरता आगे बढ़ रहा था, तभी अचानक भजन मण्डली में भगदड़ मच गयी। एक बड़ा-सा पत्थर कहीं से आया और सुरेश बाबू की खोपड़ी पर गिरा। भजन मण्डली ने अचानक गाना बन्द किया और लोग इधर-उधर घरों में घुसने लगे। सुरेश बाबू के सिर से खून की धारा बह रही थी।

'लगता है यह लतीफ़ के लोगों की बदमाशी है।' जगदीश बाबू ने कहा,

'पत्थर गुलाम मुहम्मद के घर की तरफ़ से आया है।'

'गुलाम मुहम्मद की तो लतीफ़ से बोलचाल भी नहीं है।' किसी ने कहा।

'जहां स्वार्थ एक होता है वहां ये लोग एक हो जाते हैं।' जगदीश बाबू ने कहा, 'यह पत्थर सुरेश पर नहीं पूरे हिन्दू समुदाय पर गिरा है, हमारे धर्म पर गिरा है, हमारी संस्कृति पर गिरा है। आप लोग अगर अपनी माँ के पेट से पैदा हुए हैं तो इस अपमान का बदला जरूर लेंगे।'

भजन मण्डली के पीछे-पीछे दरियाँ आदि लादे एक रिक्शा भी आ रहा था। सुरेश बाबू को जल्दी से रिक्शा में बैठाया गया और उन्हें अस्पताल भेज दिया गया।

सब लोग हक्के-बक्के से इधर-उधर देख रहे थे। प्रभातफेरी का उत्साह भंग हो गया था। लोग जगह-जगह झुण्डों में बँट गये थे।

'इस वारदात की रिपोर्ट पुलिस में की जानी चाहिए।' किसी ने जगदीश बाबू के सामने सुझाव रखा।

'पुलिस की सहायता कमज़ोर आदमी लेता है। हमें अपनी बाँहों पर भरोसा है।' जगदीश बाबू भीड़ को सम्बोधित करते हुए बोले, 'जो हमसे टकरायेगा।'

भीड़ में मरी मरी-सी आवाज़ में दस-बारह लोग बोले—'चूर-चूर हो जायेगा।'

'भाइयो! आज हमारे उम्मीदवार के ऊपर कातिलाना हमला किया गया है। हम लोग इसका बदला लेकर रहेंगे। बोलो : 'जो हमसे टकरायेगा।'

इस बार कुछ और आवाज़ों ने साथ दिया 'चूर-चूर हो जायेगा।'

देखते ही देखते प्रभातफेरी एक उग्र जुलूस में तबदील हो गयी और सब लोग मिल की तरफ़ चल दिये। अचानक दो डण्डों में फँसा कर एक बड़ा-सा झण्डा तैयार हो गया जिस पर लिखा था ?

हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए
अपना कीमती वोट सुरेश भाई को दीजिए।

जुलूस नारे लगाता हुआ मिल के दरवाजे तक पहुँचा तो रात की शिफ्ट के मज़दूर बाहर निकल रहे थे। देखते ही देखते यह खबर पूरी मिल में घूम गयी की लतीफ़ के गुण्डों ने सुरेश बाबू पर कातिलाना हमला किया है।

लतीफ़ घर पर था, जब उस तक यह समाचार पहुँचा। वह फौरन कपड़े पहन कर तैयार हो गया और अपने साथियों के साथ मिल की तरफ़ रवाना हो गया।

उसने देखा मिल के गेट पर भारी भीड़ जमा हो चुकी थी। लतीफ़ और

उसके साथी भागते हुए गेट के पास पहुँचे। लतीफ़ और उसके साथियों को देखते ही जगदीश ने नारा लगाया : 'विदेशी एजेंट !'

भीड़ में तिलमिलाहट थी, कई आवाजें एक साथ उठीं : 'मुर्दाबाद !'

लतीफ़ एक स्टूल पर खडा हो गया और लगभग चिल्लाते हुए मजदूरों को सम्बोधित करने लगा :

'मजदूर भाइयो ! आप लोग तैश में न आइए। मालिकों ने अपने कुछ गुर्गे आप लोगो के बीच छोड़ दिये है। ये लोग सरमायादारों के दलाल हैं, मजदूर एकता के दुश्मन हैं। ये लोग हिन्दू-मुस्लिम दंगा कराने पर आमादा हैं ताकि मजदूर भाई अपने हक़ की लड़ाई मालिकों के खिलाफ़ न लड़ कर आपस में कट मरें।'

लतीफ़ पूरे उत्साह और ईमानदारी से बोल रहा था, लोगों पर उसका बहुत अनुकूल प्रभाव पडा। भीड में से किसी ने नारा लगाया, 'कामरेड लतीफ़, जिन्दाबाद।'

'हिन्दू-मुस्लिम एकता !'

'ज़िन्दाबाद !'

वातावरण से प्रभावित होकर एक मजदूर दूसरे मजदूर के कन्धे पर चढ़ गया और गेट के बीचोंबीच टँगा जगदीश बाबू का कपड़े का बैनर पकड़ कर नीचे कूद गया। मगर तभी जाने कहाँ से लाठियाँ आ गयी और पत्थर बरसने लगे। लतीफ़ चूंकि एक स्टूल के ऊपर खडा था, एक बडा-सा नुकीला पत्थर उसकी कनपटी पर लगा। बोलते-बोलते लतीफ़ अचानक चुप हो गया। उसके साथियो ने पत्थरों के बीच लतीफ़ को कन्धे पर उठा लिया। उन लोगों के कपड़े खून से तर हो गये। खून बहने लगा। भीड मे भगदड़ मच गयी। लतीफ़ के भागते हुए साथियों पर लाठियाँ बरसने लगी। कई घायल हो गये। किसी की टाँग, किसी की पीठ, किसी का सिर जख्मी हो गया।

मिल से फोन मिलने पर लक्ष्मीधर पुलिस लेकर मिल की तरफ़ आ रहा था कि उसने लोगों को लतीफ़ को कन्धे पर उठाये भागते हुए देखा। लक्ष्मीधर ने तुरन्त कार रोकी और पुलिस को मिल की तरफ़ जाने का इशारा करके लतीफ के घायल शरीर को कार की पिछली सीट पर रखने में मदद करने लगा। एक मजदूर ने लक्ष्मीधर की कार पर न जाने का सुझाव दिया, बोला, 'असली हत्यारा यही है।'

'यह बहस का मौका नही है।' लक्ष्मीधर ने उस मजदूर के गाल थपथपा दिये और ड्राइवर से बोला, 'फौरन सिविल अस्पताल की तरफ़ गाड़ी मोड़ो।'

● ●

गुलाबदेई के प्रति लोगों की सहानुभूति को देखकर शिवलाल अपनी माँ को लिवा लाया। शिवलाल की माँ एक व्यावहारिक महिला थी। उसने भी जीवन में कम तकलीफें न उठायी थीं। शिवलाल अभी पाँच बरस का भी न था कि वह विधवा हो गयी थी। उसने शिवलाल की बात सुनी तो फौरन साथ चलने को तैयार हो गयी, जबकि शिवलाल अपनी माँ को इतना जलील कर चुका था कि वह शिवलाल का चेहरा देखना भी पसन्द न करती।

'तुमने उसके साथ बहुत जुल्म किया होगा। उसे घर लाना चाहते हो तो सुलह सफाई से ही घर लाया जा सकता है।' शिवलाल की माँ ने कहा, 'तुम्हारा स्वभाव न बदला तो वह फिर बागी हो जाएगी।'

'अम्माँ वह देवी है, मैंने ही उसे सदा सताया।' शिवलाल बोला, 'मुझ में जरूर कोई खामी होगी जो मैं अपनी माँ के साथ भी न निभा पाया।'

'मुझे ईश्वर ने एक और बेटा न दिया होता तो जाने मैं कहाँ कहाँ भीख माँगती, तुमने तो कोई कसर न छोड़ी थी। एक नौकरानी की तरह कान पकड़ कर घर से बाहर कर दिया था।'

शिवलाल माँ की टाँगें दबाने लगा। वह जानता था कि माँ के अगर कहीं दर्द होता है तो टाँगों में ही। माँ को सचमुच राहत मिलने लगी। उसने आँखें मूंद लीं और बोली, 'पैदा तो मेरी ही कोख से हुए हो। भगवान तुम्हारा भला करे।'

'मुझे सिर्फ तुम्हारा आशीर्वाद चाहिए, माँ। उसके बाद ही ईश्वर साथ देगा।'

शिवलाल की माँ सत्यवती मन ही मन रणनीति तय करने लगी। शिवलाल की उम्र ज्यादा न थी, मगर देखने से पचास का लग रहा था। वह जितनी बार उसका चेहरा देखती उसका दिल बैठ जाता। ठुड्डी तो एक

दम सफेद हो गयी थीं। दूसरी तरफ गुलाबदेई थी, जिसके सिर में सफेद बाल जूँ की तरह खोजना पड़ता था।

सुबह सत्यवती उठी तो शिवलाल मुँह खोल कर खर्राटे भर रहा था। सत्यवती मलाई वाली की बिटिया के साथ गंगा स्नान कर आई। लौटी तो शिवलाल उसी मुद्रा में मुँह खोले खर्राटे भर रहा था। सत्यवती को शिवलाल पर गुस्सा आ गया, 'जुह्र की नमाज का वक्त हो रहा है और तुम मुँह बाये पड़े हो। इसीलिए तुम्हारे ऊपर मुसीबतें आती हैं। क्यों नहीं जा कर जमुनाजी में नहा आते। मैं तो गंगाजी में नहा आई।'

शिवलाल ने आँखें खोलीं। दोनों आँखों में कीच भरी थी। सत्यवती विह्वल हो गयी। उसने गंगा जल का लोटा शिवलाल के मुँह पर फैला दिया। शिवलाल हड़बड़ा कर उठा, 'यह क्या कर रही हो माँ।'

'तुम्हें उठा रही हूँ। तुम आलस न छोड़ोगे तो इसी तरह परेशान रहोगे। कैसे इतना मनहूस तरीके से दिन शुरू करते हो?'

शिवलाल की पीठ पर ठंडा पानी रेंग रहा था। उसे नींद तो बेहद लगी थी मगर उसने उठना ही बेहतर समझा। उसने आँखें मलीं। बाहर देखा और बोला, 'जब से इस हरामजादी ने घर में पैर रखा है, मेरी तो बुद्धि ही भ्रष्ट हो गयी है। न काम करने की इच्छा होती है, न सो कर उठने की।'

'मंगलीक लड़की घर में आ गयी है।' अम्माँ ने कहा, 'तुमने पत्तरी मिलवा ली थी?'

शिवलाल हँसा। उठकर सर पर कंघी करने लगा।

'वह एक बदनसीब लड़की थी। कौन उसकी पत्तरी बनवाता। तुम भी कैसी बात करती हो अम्माँ।'

'अब की मैं उसे स्वामीजी के पास ले जाऊँगी।'

'वह आयेगी ही नहीं।'

'वह आयेगी। नहा धोकर भूतनाथ से मिठाई ले आ और थोड़े से फल। मैं जाऊँगी। वह मेरी बात न टालेगी। उस तवायफ का क्या नाम है जिसके यहाँ वह शरन पाये है?'

'अब वह वहाँ नहीं है। उसने जैदी साहब की दुकान किराये पर ले ली है और वहीं रहती है। तवायफ को मैंने ऐसी बददुआ दी कि हरामजादी का घर चौपट हो गया। लड़का भाग गया, लड़की को कोई अगवा करके ले गया। खुद भी सौ की मोटी इस दुनिया से कूच कर गयी।'

'छिः छिः कैसी गिरी हुई बात करते हो। इसीलिए तकलीफ पाते हो। हर किसी का बुरा क्यों सोचते रहते हो।'

शिवलाल शर्मिंदा हो गया। उसने तय कर रखा था कि गुलाबदेई लौट आएगी तो वह शेव बनवायेगा। इस समय उसे लग रहा था यह दाढ़ी नहीं एक मनहूसियत है जो उसके चेहरे पर उग आई है। वह वहशियाना तरीके से दाढ़ी खुजाने लगा।

'जाओ जाकर दाढ़ी बनवा लो।' उसकी माँ ने कहा।

शिवलाल चुपचाप चौराहे की तरफ़ चल दिया। वह लौटा तो उम्र से दस बरस कम लग रहा था। रास्ते में सिद्दीकी साहब मिल गये थे। सिद्दीकी साहब ने उसे खूब ज़लील किया, 'तुम लोग मिलकर एक देवी को सता रहे हो। वह पाकीज़ा है। वह मेरी बहन है। मैं किसी दूसरी जगह उसकी शादी करूँगा, जहाँ वह महारानी की तरह रहेगी।'

सत्यवती ने सुना कि गुलाबदेई ने सिद्दीकी नेता को भाई बना लिया है तो वह तुरत उठ के वहाँ पहुँच गयी, 'हम हिन्दुओं के यहाँ यह नहीं चलता। वह मेरी बहू है और उसे आना होगा इसी घर में। वरना मैं अपने प्रान तियाग दूँगी। अगर आप सचमुच बड़े नेता होना चाहते है तो हम हिन्दू लोगो की तहज़ीब को जानिए।'

हिन्दू-मुस्लिम किस्म की बातों से नेताजी वहुत घबराते थे। न जाने कब क्या तूफ़ान बरपा हो जाए। नेताजी ने अम्माँ के पाँव थाम लिए, 'अम्माँ आप क्या चाहती हैं, मुझे बता दें। एक भाई का फर्ज मैं निहायत ज़िम्मेदारी से सरंजाम दूँगा।'

'मैं अपनी बहू को वापिस चाहती हूँ।'

'इस शर्त पर कि आप का लड़का उसे ज़लील नहीं करेगा।'

शिवलाल ने हामी भर दी, जैसे कह रहा हो अगले जन्म में भी ज़लील नहीं करूँगा।

नेताजी उठे, सत्यवती अपने साथ मिठाई व फलों की टोकरी लेकर चल दी।

'गुलाबदेई। गुलाबदेई।' नेताजी बाहर से ही पुकारने लगे।

गुलाबदेई पसीने से लथपथ गोलगप्पे तल रही थी, नेताजी की आवाज़ सुन कर पल्लू ओढ़ते हुए बाहर आ गयी। नेताजी के साथ अपनी सास को देखकर वह पीछे हट गयी। जब तक अपना हुलिया ठीक करती दोनों खुद ही अन्दर आ गये।

'मेरी बिटिया।' शिवलाल की अम्माँ ने उसे दोनों बाहों में भर लिया,

'मेरी बिटिया।' उसने बालों पर, गालों पर, बाहों पर जहाँ भी संभव हो हो सकता था पुत्रवधू को चूमने लगी।

गुलाबदेई को आर्द्र होते देख नेताजी ने अत्यन्त अधिकारपूर्वक घर लौट जाने की सलाह दी। हजरी भी लाठी थामे न जाने कहाँ से चली आयी।

'अब की किसी ने मेरी बिटिया के साथ बदसूलूकी की तो मुझ से बुरा कोई न होगा।' हजरी ने आते ही घोषणा की।

'कौन करेगा बदसुलूकी बाई जी।' सत्यवती बोली, 'शिवलाल तो चार दिन मे ही बूढ़ा हो गया है। पहचाना नहीं जाता। कितनी तकलीफ पा गया अपनी नादानियों की वजह से।'

'चली जाओ अम्माँ के साथ।' सिद्दीकी साहब बोले, 'आज की चाट रोज़ पर फ़क़ीरों को खिला दूंगा।'

सत्यवती ने बच्चे को गोद में ले लिया था। वह शायद भूखा था और दादी के वक्ष को टटोल रहा था।

गुलाबदेई चुपचाप सास के साथ चल दी। नेताजी सीना ताने सबसे आगे चल रहे थे। बच्चा उन्होंने अपनी गोद में ले लिया था। एक झण्डे की तरह। उनके पीछे एक हजूम बारात की सूरत अख्तियार कर रहा था। नेताजी को देखकर शिवलाल खुशी से चिल्लाया, 'सिद्दीकी साहब।'

'ज़िन्दाबाद।' पूरी बरात ने जवाब दिया।

शिवलाल की माँ पाँच छह दिन तक शिवलाल और गुलाबदेई के साथ रही। शिवलाल ऊपर से शान्त रहता था मगर उसके अन्दर पराजय और अपमान की ज्वाला अहर्निश धू-धू जलती रहती। गुलाबदेई ने जिस तरह खोमचा लगा कर अपने आत्मविश्वास का परिचय दिया था, उससे वह भीतर तक टूट गया था। उसका विचार था कि पुरुष केवल स्त्री को गुलाम रखने के लिए ही पैदा होता है, उसका साया हटते ही स्त्री भूखों मर जाती है, असहाय हो जाती है, मगर गुलाबदेई ने अपने ऊपर आयी विपत्ति को चुनौती के साथ स्वीकार किया था। दोनो के बीच एक विचित्र अपरिचय उग आया था। यह दूसरी बात है कि गुलाबदेई ने लौटते ही पहले की तरह चक्की संभाल ली थी। वह बगैर शिवलाल से बात किये दिन भर काम में जुटी रहती।

एक दिन जब शिवलाल की अम्माँ लौट गयी तो शिवलाल रात को चुपचाप गुलाबदेई के पास जाकर लेट गया और उसे प्यार से सहलाने लगा।

गुलावदेई चुपचाप लेटी रही। शिवलाल के हाथ से वेखबर। शव की तरह निश्चेष्ट। शिवलाल ने हौसला करके गुलावदेई का मुंह अपनी तरफ़ कर लिया और गुलाबदेई के चेहरे पर अपनी दाढ़ी रगड़ने लगा। शिवलाल की दाढ़ी वढ़ गयी थी। दाढ़ी के अधिकाश बाल मफेद हो चुके थे और उसके चेहरे पर दाढ़ी ऐसे लगती थी जैसे चेहरे पर कैक्टस के काँटे उग आये हों। इस बीच उसका एक दाँत भी गिर गया था, जिससे उसका गाल पिचका-सा लगता था।

'हमसे वोलोगी नही?'

गुलाबदेई ने मुँह फेर लिया। जब इसकी इच्छा होती है प्यार करने लगता है, वरना दिन भर ऐसे देखता है जैसे कच्चा निगल जायेगा। वह मान की स्थिति में उसी प्रकार पड़ी रही।

'मुझे माफ़ कर दो।' शिवलाल बोला, 'मुझे जाने क्यों इतना गुस्सा आता है।'

'अभी रात को ऐसा कहते हो और सुबह उठते ही बेइज्जती करोगे।'

'नहीं, नही ऐसा नही करूँगा।' शिवलाल ने गुलाबदेई को अपनी बाँहो में और जांघों में भीच लिया। गुलावदेई उसी प्रकार निश्चल लेटी रही। उसने शिवलाल का साथ नहीं दिया। शिवलाल को यह अच्छा ही लगता था। उसे एकपक्षीय कार्यवाही ही पसन्द थी। उसका विश्वास था कि सच्चरित्र स्त्रियों को इसी प्रकार विनम्रतापूर्वक समर्पण करना चाहिए। कुछ देर बाद वह हाँफता हुआ उठा। अचानक उसे अपना वदन बहुत हल्का महसूस हुआ। उठते-उठते उसने गुलावदेई के गाल थपथपा दिये। गुलाबदेई ने चादर ओढ़ ली।

गुलाबदेई को शिवलाल पर बहुत दया आ रही थी कि बिला वजह अपना जीवन इतना कष्टमय वना रहा है। दाढ़ी वनवाता है न नहाता है। दिन भर मनहूस दरिद्रों की तरह पड़ा रहता है।

शिवलाल के दृष्टिकोण में गुलाबदेई के लौटने पर कोई विशेष अन्तर न आया था। पहले की तरह अब भी अगर कभी-कभी कनस्तर उठाते-धरते गुलाव-देई का पल्लू सरक जाता तो शिवलाल की आँखों में अंगारे सुलगने लगते। बिना यह सोचे कि ग्राहक भी पास मे खड़ा है वह बड़े व्यंग्य से कहता, 'अपने ये कद्दू ढँक लो।'

गुलाबदेई की हँसी छूट जाती। उसे कद्दू का यह प्रयोग बड़ा विचित्र लगता। वह हँसते हुए कहती, 'लगता है तुम्हें भूख लगी है।'

शिवलाल को गुलाबदेई की नादानी पर और अधिक क्रोध आ जाता। इधर डाक्टरों ने उसे चीनी खाने की मनाही कर दी थी, मगर क्रोध आते ही

यह मिठाई के दो टुकड़े मँगवाता और खाने लगता।

'जिन्दगी में गुज़रा एक मीठा ही पसन्द था, वह भी भगवान को मंजूर नहीं।' मीठा खाते हुए वह बुदबुदाता।

शिवलाल की दिनचर्या निश्चित थी। वह दिन भर खटिया पर लेटा रहता, गुलाबदेई से लड़ता और अगर आसपास सन्नाटा होता तो चिल्लाता—'ऐ गुलाबदेइया जरा कमर तो दाब देव। टाँगों में न जाने कौन सैतान घुस गवा है कि अन्दर ही अन्दर घुनात रहत है।'

गुलाबदेई उसकी टाँगें दाबने लगती। टाँगें दाबते-दाबते वह अगर शरारत में जाँघ दाब देती तो शिवलाल भड़क जाता, 'तुम्हारा ध्यान दिन भर यहीं लगा रहता है। शास्तरों मे ऐसी औरत को हथिनी कहा गया है।'

'हथिनी ?' गुलाबदेई हँसती, 'मैं तुम्हें हथिनी दिखती हूँ ?'

'चुप हरामजादी।' शिवलाल कहता।

शिवलाल चाहता गुलाबदेई चुपचाप टाँगें दाबती रहे और अपना मुँह बन्द रखे।

'मैं तुम्हें इतनी ही बुरी लगती हूँ तो अम्मा को बुलाने क्यों भेजा था ?'

'एक हज्जार रुपया खर्च करके बवाल मोल ले लिया।' वह कहता, 'मगर मैं तुम्हारे पर काटे बिना दम न लूँगा।'

'हथिनी के पर नहीं होते।' वह कहती, 'का करूँ राम मुझे बुड्ढा मिल गवा।' वह बच्चों की तरह ताली पीटने लगती।

शिवलाल उसी टाँग से गुलाबदेई को नीचे धकेल देता, जो वह दाब रही होती।

दरअसल शिवलाल की स्थिति दिन-ब-दिन दयनीय और कारुणिक होती जा रही थी। वह पूर्णरूप से निष्क्रिय हो गया था। यहाँ तक कि बिजली का बिल जमा करने भी गुलाबदेई ही जाती थी। पीछे से वह कल्पना करता रहता कि कतार में कोई आदमी बहुत सट कर गुलाबदेई के पीछे खड़ा है, फिर उसे लगता कि गुलाबदेई भी एक कदम पीछे हट कर उससे चिपक गयी है। शिवलाल खटिया मे उठ कर बैठ जाता। उसकी साँस तेजी से चलने लगती। उसकी टाँगों में सैकड़ों कीड़े रेंगने लगते। उसका सर फटने लगता। उसका दिल ज़ोर से धड़कता। उत्तेजना मे उसके माथे पर पसीने की बूँदें उभर आतीं। बैठने की शक्ति न रहती तो वह कटे पेड़ की तरह खटिया पर गिर जाता। उसका समय एक ऊबे हुए चौकीदार के जीवन की तरह बहुत मन्द गति से सरक रहा था। दिन भर वह चक्की के दरवाजे पर तैनात रहता।

शिवलाल को दो-तीन चीजों से बेहद नफ़रत थी। अगर बिजली का कोई फ़ेज़ चला जाता तो वह आपे से बाहर हो बिजलीघर वालों को माँ-बहन की गालियाँ बकने लगता, और जब फ्यूज़मैन आता तो शिवलाल बहुत संयम रखने पर भी इतना जरूर कह देता कि लों के मौड़े अफ़सरों ने जब से अपनी डांग में बिजली भी ले ली है जीना मुहाल हो गया है, कम्पनी के ज़माने में अव्वल तो बिजली जाती ही न थी और अगर कभी .ख़ुदा न ख़ास्ता फेल हो जाती तो मिस्त्री पहले से हाजिर रहता। अपने कर्कश स्वभाव के कारण शिवलाल ने शहर के अधिकांश फ्यूज़मैनों को अपने विरुद्ध कर लिया था। वे शिकायतें लेकर जब बिजलीघर से निकलते तो अन्तिम नाम शिवलाल की चक्की का ही रखते। बिजलीघर से मिस्त्री के आने में ज्यों-ज्यों समय बीतता, वह सरकार के प्रति अपना रवैया कड़ा करता जाता, 'ये लों के मौड़े कहीं चाय की चुस्कियाँ ले रहे होंगे। इनकी चाँ की मूत।'

शिवलाल को दूसरी चिढ़ पट्टे से थी। जब से पट्टे ने उसे बवाल में डाला था वह पट्टे को बिजली की तरह छूने से घबराता था। चक्की की मोटर दस हार्स पावर की थी, दो-चार दिन में ही पट्टा कहीं-न-कहीं से टूट जाता। चलते-चलते चक्की अचानक रुक जाती। शिवलाल गहरी नींद में क्यों न हो, पट्टा टूटते ही उठ कर बैठ जाता, 'फिर तोड़ दिया पट्टा? कितनी बार समझाया है कि पट्टे का काँटा लकड़ी की हथौड़ी से जोड़ा करो, मगर इस लों की मौड़ी की खुजली लोहे के हथौड़े से ही मिटती है। एक रुपये का आँटा नहीं पीसा और तीन रुपये के काँटे की चाँ मोद के रख दी।'

पट्टा जगह-जगह से बेहद बोसीदा हो जाता तो शिवलाल चौक की तरफ़ चल देता। कबाड़ियों की तरफ़ वह पलट कर भी न देखता। पट्टा टूटते ही वह मौलाना शफ़ी को गाली बकने लगता। मौलाना ने उसकी इज्ज़त धूल में मिला दी थी। वह मन-ही-मन तय करता कि मौलाना की हत्या किये बिना उसकी आत्मा को शान्ति न मिलेगी। यह अच्छा ही था कि मौलाना ने उस घटना के बाद मे शिवलाल की चक्की का रुख न किया था। वह सात रुपयों का काँटा खरीदता और गुलाबदेई को सौंपते हुए कहता—'लो इनकी भी चाँ मोद दो।'

चैत के शुरू के दिन थे। दो दिन से बारिश हो रही थी। अचानक ओले गिरने लगे। पूरी गली में भयानक फिसलन हो गयी थी। खपरैल टूटने से चक्की में बेहद चिपचिपाहट हो गयी। गुलाबदेई टाट से पोंछा लगा रही थी जब एक लड़का भागता हुआ आया कि ढाल पर शिवलाल का पैर फिसल गया और सर से खून बह रहा है।

गुलाबदेई बच्चे को छोड़ ढाल की तरफ भागी। कीचड़ के बीच शिवलाल का खून बह कर अजीब सा रंग बना रहा था। शिवलाल बेहोश पड़ा था। कुछ लोग उसे रिक्शा में लाद रहे थे।

गुलबदेई नंगे पाँव शिवलाल के पीछे चल दी। रिक्शा से लगातार खून टपक रहा था। सिद्दीकी साहब न जाने कहाँ से प्रगट हो गये थे। नेता जी रिक्शा मे शिवलाल के साथ बैठ गये। गुलाबदेई को इत्मीनान हो गया कि वे शिवलाल को अस्पताल मे जरूर दाखिला दिलवा देंगे।

रिक्शा आगे निकल गया। हजरी, चमेली, साहिल, ताहिर, महमूद जिसे भी खबर लगी, साथ हो लिया। गुलाबदेई बच्चे को यो ही चक्की में छोड़ आई थी। दो एक बार उसके मन मे आया किसी को घर रवाना कर दे कि बच्चे को उठा लाए, मगर घबराहट के मारे उसका पूरा बदन काँप रहा था। सडक पर जगह जगह शिवलाल के खून के छीटे देखकर उसका दिल बैठता जा रहा था।

लगभग दौड़ते हुए गुलाबदेई ने अस्पताल तक का फासला तय किया। सिद्दीकी साहब बाहर बरामदे मे ही दिखायी दे गये। वे बहुत परेशान नजर आ रहे थे :

'बहुत अफ़सोस है, हम शिवलाल को न बचा सके।'

गुलाबदेई दुहत्था मार कर रोने लगी। उसने अपने बाल नोच डाले, अब मैं कहाँ जाऊँगी। मेरा कोई भी नही इस दुनिया मे।'

'चुप कर बिटिया।' हजरी ने उसे अपनी बाँहो मे ले लिया, 'खुदा को यही मंजूर था।'

शिवलाल की माँ को खबर लगी तो वह भी अपने छोटे बेटे के साथ छाती पीटते पहुँच गयी। बेटे के शव के पास बैठकर वह रोते रोते जमीन पर सर पटकने लगी, 'यह कुलच्छनी जब से आई, मेरे बेटे का सुखचैन खत्म हो गया मेरा बेटा···' गुलाबदेई को इस दुर्घटना से इतना धक्का लगा था कि वह सास के तानो से बेखबर अपने सीने से साल भर का बच्चा चिपकाये शून्य में खोई हुई थी। तकदीर ने उसके साथ एक बार फिर मजाक किया था। पहले मा बाप से और अब पति से बिछुड़ गयी थी।

शिवलाल की मिट्टी उठ गयी तो गुलाबदेई की सास ने झोंटा पकड़कर गुलाबदेई को कोठरी के बाहर फेंक दिया, 'जा, अब यहाँ तेरा कोई काम नही।'

गुलाबदेई रोने लगी 'कहाँ जाऊँ ?'

गुलाबदेई की सास ने बच्चे को गोद में ले रखा था। माँ को रोते देख वह भी रोने लगा था और बार बार अपनी माँ की ओर लपक रहा था। सास ने गुस्से में बच्चे के भी एक चपत लगा दी, 'तू भी अपनी ज़िन्दगी खराब करेगा, इस कलमुँही के साथ जा कर।'

बच्चा जोर से रोने लगा। माँ बेटे को रोते देख सास जी भी रोने लगीं, 'इस छिनाल ने मेरे लड़के का सत्यानाश कर दिया। जा मेरी नज़रों से दूर हट जा, मुझे कभी अपनी शकल न दिखाना।'

गुलाबदेई खम्भे के साथ पीठ टिकाये चुपचाप आँसू बहाती रही। हजरी बी ने गुलाबदेई की सास का व्यवहार देखा तो कोठरी में जा कर उससे गुत्थम-गुत्था हो गयी, 'चल तू ही निकल यहाँ से। जब तक वह जिन्दा था, कभी खबर न ली। जा तेरा यहाँ कोई काम नहीं।'

'जा जा रंडी कहीं की।' शिवलाल की मा ने भी हजरी का झोंटा पकड़ लिया, 'निकल यहाँ से।'

'तू निकल यहाँ से।' मलाईवाली किसी तरह धीरे धीरे वहाँ पहुँची और दोनों बूढ़ियों को अलग किया, 'कुछ शर्म करो। अभी बेटे का संस्कार भी न हुआ कि लगी लड़ने। सत्यवती, यह शोभा नही देता। मरने वाले की आत्मा के लिए कुछ दुआ करो। कुछ भगवान से डरो।'

'यह कंजरी आई क्यों मेरी चक्की में।'

'कंजरी तू।' हजरी ने कहा, 'सरम न आई बहू को बाहर करते।'

'आओ बहू अन्दर आओ। सास के पाँव लगो। अब यही तुम्हारी नैया पार लगायेगी। आओ आओ बेटी।' मलाईवाली ने गुलाबदेई को पकड़ कर टाट पर बैठाना चाहा।

'इस घर में अब इसका मनहूस कदम न पड़ने दूँगी।' गुलाबदेई की सास ने अपना अन्तिम निर्णय सुना दिया, 'चक्की मेरे बेटे ने लगायी थी, अब वह नहीं रहा तो चक्की मेरे छोटे बेटे की हो गयी।'

'वाह, वाह ! छोटे बेटे की हो गयी !' हजरी ने कहा, 'मैंने ऐसी मा नही देखी, जिसे बेटे के मरने का अफ़सोस कम, और चक्की जीतने का चाव ज्यादा है। डूब मर। मरना तुम्हें चाहिए था, मर गया बेचारा शिवलाल।'

'तुम कुछ भी कह लो, मैं इसे चक्की मे घुसने न दूँगी।'

'मैं तुम्हें लम्हे भर के लिए भी यहाँ न रहने दूँगी।'

'चुप रह रंडी ।'शिवलाल की माँ गुर्राई ।

गली मुहल्ले के दूसरे लोग भी जमा हो गये । सब ने गुलाबदेई की माँ को समझा बुझा कर शात किया । गुलाबदेई टाँगो मे सर दबाये सिसकती रही । शिवलाल की मा को चक्कर आने लगा तो वह भी शात हो कर दीवार से पीठ टिका कर बैठ गयी और रोती रही । हजरी ने भी वही आसन जमा लिया । शिवलाल को उसने बतौर इन्सान कभी पसन्द न किया था, मगर वह था तो इन्सान ही । हजरी खोज खोज कर और गढ़ गढ़ कर शिवलाल की अच्छाइयों का बखान करने लगी ।

'पार साल की बात है । पूस का महीना था । बोला, हजरी बी, बिना कम्बल के तुम्हे जाड़ा लगता होगा । मेरे पास एक कम्बल फालतू है, तुम्हें दूँगा ।' हजरी याद करती और रोने लगती ।

'शिवलाल को मालूम था हजरी को रोना बहुत जल्दी आता है, बोला, माँ, तुम्हारी आँखो मे तो जैसे पानी की टोटियाँ लगी हैं, मुझे क्या मालूम था, मेरा लाडला बेटा मुझे बेसहारा छोड़कर यो यकायक चल बसेगा ।' और हजरी बी रोने लगती ।

लोग मिट्टी से लौटे तो शिवलाल के छोटे भाई ने हजरी के आगे हाथ जोड दिये, 'आप सब लोगों ने मुसीबत में बहुत साथ दिया । आप थक गयी होंगी, अब जा कर आराम कीजिए ।'

'मेरा बेटा ही नही रहा तो अब आराम किसके लिए करूँगी ।' हजरी रोने लगी, 'अब मेरी ज़िन्दगी मे आराम नहीं है भैया । अब तो उसी की याद मे रो रो कर बाकी उम्र बिता दूँगी ।'

'इस रंडी को झोटे से पकड़ कर सडक पर फेंक आओ वर्ना यह जान का बवाल बन जाएगी ।' शिवलाल की मा ने कहा ।

'ऐसा न बोलो अम्माँ । यह एक अच्छी औरत है ।' शिवलाल का भाई बोला ।

माँ ने बेटे को पास बुलाया और उसके कान में कुछ फसफुसाई । बेटे ने नाक पर अँगुली फेरी और बोला, 'अब बहुत हो गया हजरी बी, तुम जाओ । चाहो तो गुलाबदेई को भी लेती जाओ ।'

'तुम लोग कहते हो तो चली जाती हूँ ।' हजरी बी ने कहा और सचमुच उठकर चल दी ।

बाहर अंधेरा हो गया था और रह रहकर बूँदाबाँदी हो रही थी । हजरी तेज तेज कदम उठाती अँधेरे में गायब हो गयी । मौका पा कर शिवलाल के भाई और मा ने मिल कर बडी हिकरात से गुलाबदेई को चक्की के बाहर धकेल दिया । गुलाबदेई अब तक पूरी तरह टूट चुकी थी, एक बोरे की

तरह गली में लुढ़क गयी। अन्दर कोठरी से बच्चे के रोने की आवाज़ मुत-वातिर आ रही थी। गुलाबदेई में इतनी भी शक्ति न थी कि उठकर बच्चे को दूध पिला देती।

गली में डरावना अँधेरा था। एक कुत्ता गुलाबदेई के पास सरक गया और थोड़ी थोड़ी देर बार, उसके तलुए चाटने लगा। गुलाबदेई पैर झटक देती।

हजरी को गये अभी आध घंटा भी न हुआ था कि हजरी, नेताजी और कोतवाल साहब के साथ गाड़ी से उतरी। कोतवाल साहब की कार के पीछे कांस्टेबुलों से भरी एक जीप थी।

कोतवाल साहब ने टार्च और बाद में कार की लाइट्स जला कर के नाली से गुलाबदेई को निकाला और कोठरी का दरवाज़ा खटखटाने लगे। शिवलाल के भाई ने दरवाज़ा खोला। सामने पुलिस की गार्द को देख कर उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं।

'यह औरत कौन है?' कोतवाल साहब ने उससे पूछा। कोतवाल साहब का हवलदार वज़नी बन्दूक लिए उन के पीछे खड़ा था। बन्दूकों से लैस आधा दर्जन सिपाहियों को देख शिवलाल के भाई की घिग्घी बँध गयी।

'जी, यह एक कुलच्छनी औरत है। इसी ने मेरे बेटे के प्राण ले लिए।' शिवलाल की माँ पीछे से बोली।

'यह औरत कौन है?' कोतवाल साहब ने पूछा।

'यह चक्की की मालकिन है हुज़ूर।' हजरी ने कहा।

'माँ बेटे दोनों को गिरफ़्तार कर के कोतवाली ले चलो।' कोतवाल साहब ने हजरी से कहा, 'इस औरत को निमोनिया हो जाएगा। आप लोग फ़ौरन इसके कपड़े तब्दील कीजिए।'

शिवलाल का भाई और माँ दोनो थर थर काँपने लगे। आज कैसा दिन चढ़ा था कि दिन भर परेशानियाँ और मुसीबतें उठानी पड़ी थीं। शिवलाल का भाई कोतवाल साहब के पाँव पर गिर पड़ा, 'ऐसा जुल्म न कीजिए हुज़ूर। कुछ तो रहम कीजिए आज ही मेरे भाई की मौत हुई है।'

'राम सिंह।' कोतवाल साहब ने दारोगा को आवाज़ दी।

राम सिंह अफ़सर की आवाज़ का मतलब समझता था। उसने शिवलाल के भाई की कलाई थाम ली, 'चलिए वर्ना उठवा लूँगा।'

शिवलाल का भाई चुपचाप राम सिंह के साथ चल दिया।

'अपनी माँ को भी बुलवा लो।'

'माँ की बेइज़्ज़ती न कीजिए हुज़ूर। मैं आप के पाँव पड़ता हूँ। वह पहले ही बेहद दुखी है।'

'राम सिंह।' कोतवाल साहब ने कहा, सिटी कंट्रोल से बोलो 'कोतवाली से फ़ौरन जनाना पुलिस भिजवाएँ।'

'ऐसा न कीजिए कोतवाल साहब। ऐसा बिलकुल न कीजिए।' गुलाबदेई उनके पाँव पर गिर पड़ी, 'इन से सिर्फ़ इतना पूछ लीजिए कि ये लोग चाहते क्या हैं ?'

'ये लोग क्या चाहेंगे।' कोतवाल साहब कोठरी में घुस गये। नेताजी और हजरीबी भी उनके पीछे पीछे कोठरी में दाखिल हो गये। बाहर बारिश तेज़ हो गयी थी।

'मैं वही करूँगा, जो कानून कहता है। तुम शिवलाल की पत्नी हो। यह कोठरी, यह चक्की, यह बच्चा तुम्हारे हैं। तुम्हारा हक तुम्हें मिलना ही चाहिए।'

'हमे मंजूर है।' शिवलाल का भाई बोला, 'हमें कोतवाली न ले जाइए।'

'राम सिंह इन्हें इनके घर पहुँचा आओ।'

'तेरही तक अम्माँ यहीं रहना चाहती हैं हुज़ूर।' शिवलाल का भाई बोला।

'तेरही आप के घर से होगी। आप लोग एक बेसहारा औरत की नाक में दम किए हैं। तेरही तक तो इसका भी चौथा कर देंगे।'

'हुज़ूर हम अपने आप चले जाएँगे।'

'न।' कोतवाल साहब ने कहा, 'माँजी बेहद थकी हैं। मेरी गाड़ी आप लोगों को छोड़ आयेगी।'

कोतवाल साहब की गाड़ी माँ बेटे को लेकर हार्न बजाती हुई आँखों से ओझल हो गयी। रोशनी में पानी की बूँदे झिलमिला रही थीं। कोतवाल साहब ने जीप रवाना कर दी और ख़ुद बारिश में पैदल कोतवाली की तरफ़ चल दिये।

पुलिस देखकर बाहर गली में सौ पचास लोगों की भीड़ जमा हो गयी थी। कोतवाल साहब चले तो उनके पीछे नारे बुलन्द होने लगे :

'कोतवाल साहब—'

'जिन्दाबाद!'

'गुण्डागर्दी—'

'नहीं चलेगी, नहीं चलेगी।'

लोग खामोश होने लगते तो नेताजी कोतवाल साहब के बगल में चलते चलते पीछे से हाथ घुमा देते जैसे क्रिकेट का गेंद फेंक रहे हों।

● ●

रवीन्द्र कालिया (१९३८), शिक्षित (बी० ए० (आनर्स), एम० ए० (१९६०), विवाहित (१९६५), पत्नी, ममता कालिया। पुत्र, अनिरुद्ध (१९७१) प्रबुद्ध (१९७६) कथा-कृतियां : नौ साल छोटी पत्नी (१९६९), भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा पुरस्कृत। काला रजिस्टर (१९७२), गली कूचे (१९७३), गरीबी हटाओ (१९७६) उ० प्र० शासन द्वारा पुरस्कृत। स्मृतियों की जन्मपत्री (निबंध, १९७९), चकैया नीम (१९७९) उ० प्र० शासन द्वारा पुरस्कृत। कामरेड मोनालिजा (संस्मरण, १९७९), बांके लाल (१९८२), खुदा सही सलामत है, (उपन्यास १९८२)। सम्पादन सहयोग : 'वर्ष', 'भाषा', 'हिन्दी मिलाप', 'धर्मयुग'।